

## सभा-समिति

● कलकत्ता, १८-४-८२। पूर्व घोषणाक अनुसार मैथिली मुक्ति मोर्चाक वैसार स्थानीय उषानगर विद्यालय मे भेल। मोर्चाक संयोजक श्री रामलोचन ठाकुरक पूजनीया माताक देहावसान २-४-८२ के भ जेबाक कारणे ओ अनुपस्थित छलाह। उपस्थित सदस्यगण एहि आकस्मिक एवं असामयिक निधन पर एक शोक प्रस्ताव पारित कएलनि तथा दिवंगत आत्माक चिर शान्तिक हेतु ओ शोक संतप्त परिवार के शाहस आ धैर्य प्रदान करबाक हेतु मां मैथिली सं दू मिनट मौन प्रार्थना कएल गेल।

सभाक अग्रिम कार्यवाही - स्थगित राखल गेल।

(द्वारा—जनार्दन भा, सह-संयोजक)

● धनश्यामपुर (दड़िभंगा), ११-३-८२। दड़िभंगा स्थित साहित्यिक संस्था कौशिकीक तत्वावधान मे पहिल खेप एहि अंचल मे कवि सम्मेलन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमक सोझास सम्पन्न भेल। कार्यक्रमक शुभारंभ श्री उदयकान्त मिश्र एवं तुलसी चन्द भा द्वारा श्री वेद्यनाथ विमल रचित भगवती वन्दना 'पूजा कोना करी हे भवानी' सं भेल जाइ मे तबला वादन क रहल छलाह श्री कृष्ण मोहन भा।

उद्घाटनकर्ता प्रसिद्ध लेखक प्रो० डा० नित्यानन्द भा अपन उद्घाटन भाषण मे ग्रामीण जनता सं अपन भाषाओ साहित्यक प्रति सतत जागरूक रहि मैथिलीक उत्थान लेल अभियानक आह्वान केलथिन प्रो० डा० दयानन्द भाक अध्यक्षता मे एगो भव्य कवि सम्मेलन भेल जाइ मे सर्वश्री कृष्ण मोहन भा, जय प्रकाश चौधरी जतक, प्रो० देवकान्त मिश्र, प्रो० विमल नारायण ठाकुर, वेद्यनाथ विमल आदि भाग लेलनि। कार्यक्रम अर्धरात्रि धरि चलैत रहल। सांस्कृतिक कार्यक्रमक मुख्य आकर्षण छलाह किशोर गायक श्री अरविन्द कुमार भा केदार चन्द्र मिश्र कुमार कान्त ठाकुर ओ अरुण कुमार भक्त गीत सेहो मनोरम छल। संचालनक रहल छलाह कौशिकीक संयोजक श्री वेद्यनाथ विमल।

कौशिकीक अध्यक्ष श्री रमानन्द रेणु अपन सन्देश मे कहलनि जे जाधुरि गामक माटि नहि जागत-ताधरि कोनो क्रान्ति नहि भ सकत। एहि लेल ग्रामीण लोक-जीवन सं सन्नद्ध भ क भाषा ओ साहित्यक उत्थान लेल अभियान करी। ग्रामीण जनता दिस सं सर्व श्री केदार नाथ मिश्र, देवेन्द्र नाथ भा, देवकान्त भा अपन-अपन उद्गार व्यक्त केलनि। 'अन्त मे स्वागत समिति दिस सं श्री शिवकुमार मिश्र धन्यवाद शपन केलनि।

(द्वारा—वेद्यनाथ विमल)

● कलकत्ता-१-५-८२। मिथिला सांस्कृतिक परिषदक द्वारा कवीश्वर चन्दा भा (कवीश्वर जोड़ि देनाइ हम आवश्यक बुझैत छी ले०) जयन्ती स्थानीय श्री सनातन धर्म विद्यालय मे मनाओल गेल जकर अध्यक्षता केलनि परिषदक आयोजन हेतु नियुक्त स्थायी अध्यक्ष डा० श्री मुनीश्वर भा।

प्रधान वक्ता छलाह डा० अशर्फी भा प्रधान अतिथिक रूप मे मंचपर ल गेल गेलाह श्री मिथिलेन्दु जी।

कार्यक्रमक आरंभ मिथिलाक जातीय गीत 'जय-जय भैरवि' सं भेल जकर गायिका छलीह कुमारी हेमा। हेमा अपन गायन क्षमता सं कनेकालक लेल लोक के अपन गामधर ल जेबा मे सफल रहल। ओ आरो कएकटा गीत गओलक। ओकरा मे पूर्ण प्रतिभा छैक आ जे अभ्यास करय त नीक गायिका बनि सकैछ।

कार्यक्रम पूर्ण अव्यवस्थित छल एकटा गीत आ एकटा भाषण आ बीच मे अध्यक्षीय अनुशासन। सभसं अधलाह बात त ई भेल जे कवीश्वरक छवि उपलब्ध होइतहु मंचपर नहि छल आयोजक लोकनि भरिसक एकर खगता नहि बुझलनि सभ सं महत्वपूर्ण भाषण छल प्रधान वक्ता साहेबक। ओ कवीश्वरक खूब प्रशंसा केलनि कारण से केनाइ आवश्यक छलनि—भनहि हुनक रचना पढ़ल नहि छलनि, जे अपनहि गजलाह परञ्च मैथिलीक आधुनिक कविता जे विश्वक कुनू भाषाक कविता सं पाछू नहि अछि तकर धोर निन्दा केलनि। ओ प्र० वक्ता छलाह ते हुनक पौत्रा के ई अधिकार अवस्ते छलनि जे छड़पि के मंचपर चढ़ि जाथि आ अओ बूढ़। हाथ उठाउ। फटाक—पढ़ि लेथि—दस बख धरि डा० लोढ़ाक ओइ ठाम हाट-बजार केलाक पश्चात् पी एच० डी० क उपाधि पओनिहार डा० अशर्फी भा अपन पौत्रक पढ़ाओल पांती के दोहरवैत आबुक कविताक निरर्थकताक बात कहलनि। डा० भा के बुझल चाहियनि जे हाट-बाजार सं भोड़भरि तरकारी कोनि गुस्साइन ला पढ़ुओने पी एच० डी० अवस्ते भेटि गेलनि परञ्च कविता बुझबाक बोध एना नहि भेटैत छैक। तहिता जे प्रधान वक्ताक एहि आरोप सं अध्यक्ष महोदय अपन सह-मति प्रकट केलनि त अचरजे की? हुनको हेतु डिगरीक अर्थ चाकरीएटा छनि जकर आ आधुनिक साहित्यक संदर्भ हुनक ज्ञानक परिचय की इएह सहमति प्रमाणित नहि करैछ?

एहि अवसर पर श्री बाबू साहेब चौधरी अवस्ते कवीश्वरक प्रति असली श्रद्धाञ्जलि मैथिलीक रक्षा, विकासक बात कहलनि जे आयोजनक उपलब्धि मानल जा सकैछ।

खेदक संग लिखए पड़ि रहल-ए जे ई आयोजनी संस्था सभ आधरि आयोजनक महत्ता नहि बुझि सकल-ए। कुनू विभूतिक जयन्ती वा स्मृति दिवस मना के हमरा लोकनि हुनक नहि अपितु अपन, अपन देश समाजक उपकार करत छी। विभूतिक स्मृति दिवस एही लेल आवश्यक जे हुनक व्यक्तित्व-कृतित्व सं शिक्षा लय हमरा लोकनि अपन देश-भाषा-सांस्कृतिक विकास लेल शपथ ली आ काज करी। तें आवश्यक छैक जे मात्र विद्यापति आ कवीश्वर चन्दा भा के स्मृतिथेरा नहि—ग्रीसर्न महोदयक स्मृति पर्व, ज्योतिरीश्वर स्मृति पर्व, महा-कवि डाक आ लाल दास स्मृति पर्व मनाओल जाय। आवश्यक छैक महावली लोरिक, सलहेस दीनामद्री आ रायरण

पालक स्मृति दिवस मनाओल जाय। मिथिलाक एकांगी इतिहासक पुनरावृत्ति आत्मघाती प्रयास थिक—एहि सं निवृत्ति भेनहि मिथिलाक कल्याण छैक।

मात्र अखवार मे नाम छपेवा लेल आ अनहा मे कनहा राजा वनवाक लोभे एहि तरहे कुनू विभूतिक नाम पर मजाक उड़ोनाइ सरिपहु निन्दनीय ओ लज्यास्पद थिक। (द्वारा—अमर्द)

## चिट्ठी-पुरजी

'देसिल बयना' क प्रति भेटल। जे 'देसिल बयना' सब जन मिट्टा' कहले गेल छै ते हमरो मीठ लागल, कही, तं पुनर्-क्षित्ये इयत। ओना, ई कहल जाय कि पत्रिका बड़ जोरगर आ तेवर-बला अछि, तं कोनो अतिशयोक्ति नहि। 'लोचन कविराय' केर कमाल तं देखबे जोग अछि।

—आरसी प्रसाद सिंह, पटना

पत्र दीर्घायु हो, एकर भव्य प्रचार प्रसार हो। मैथिली पत्र पत्रिका में एखन देसिल बयना जे मात्र जन्मे ग्रहण केलक अछि, तखन एहि मे रोचकता, कौतुहलता और विशिष्टताक स्पष्ट छाप अछि। प्रयासक हेतु साधुवाद।

—श्री देव मा, हिन्द-मोटर

सम्पादकी 'भील नहि अधिकार चाही' देखि मन गद-गद भए गेल। हमरा लोकनि

कलकत्ता, १८ अप्रील १९८२। स्था-नीय मिथिला जन कल्याण सं कीर्तन मंडली द्वारा मुझाहाटी (लेक गाईन्स) मे आयोजन चौबीस घण्टा व्यापी अखंड अष्टयाम कीर्तन समारोह बेस धूम-धामक संग सम्पन्न भेल। आयोजनक शेष मे स्थानीय कलाकार लोकनि द्वारा विवाह कीर्तन सेहो बेज जमल आ उपस्थित समुदायक मनोरंजन करवा मे पूर्ण सफल भेल।

के अधिकार दिआवए मे अनेक ई पत्र सदन पथ प्रदर्शक काजेता नहि करत बल्कि मिथिला मैथिलीक अभ्युत्थान लेल प्रबल समलक संग डेग सं डेग मिलाकए जन जागरण आ चेतना प्रदान करत से आशा अछि। आजुक मिथिलाक अनेकानेक सपूत कुम्भकर्णी निद्रा सं प्रसित भए अपना के पंगु बनएने जा रहल छथि। आवश्यकता छल अपने एहन विगुल फुकिहारक से आबि गेल छी प्रवासी भए देसिल बयना लेलक एहि बयना के स्वीकार कए हम अपना के कृत्य-कृत्य आ वन्य बुझि रहल छी।

एना पत्रिकाक आन वस्तु सेहो कम दिव्यगर नहि अछि, आ समाजक लेल अनेक एक-एक आखर राम बाण जकां काज करत से विश्वास अछि।

—अशोक कुमार मा, दड़िभंगा

## बालगीत

### मामा, आब बुझैछी!

मामा, अहांछो कोकटिया से आब बुझैछी।

अहां कतेक सहारा छी से भाब बुझैछी॥

मामा आब बुझैछी।

इसकूल मे माद खैब, बेर बेर कहै छथि।

अहांकेर चमकव, सुरुज के मानै छथि॥

सुरुज भेने तिपत्ता, अहां माम बुझै छी।

मामा आब बुझैछी॥

जं अपनेला लल मामा, हमरा को देव यो॥

कोना चानीक कटोरीसे, दूधभात लेब यो॥

पतेक ताम माम देखि, हमझीह कुचै छी।

मामा, आब बुझैछी॥

मुदा दादीके मुश्किल छै, बातके वृत्तायब।

अहां बिना नै हेतै जद-जटीन गायब॥

अहां अनुकेला कज्जोक बोझ छै छी।

मामा आब बुझैछी॥

मामा अहांछी कोकटिया से आब बुझैछी।

राम मरोस कापड़ि 'भ्रमर'

## कह लोचन कविराय

दूरक ढोल सोहावन कहबी छैक पुरान किन्तु मात्र कहबीए नहि सुनियो रहलहु कान सुनियो रहलहु कान आखि सं देखि रहल छी मैथिलीक दुर्दशा हाल मिथिलाक कहब को कह लोचन कविराय विवेक एहन नवतूरक निश्चित पतनक मूल प्रगति बात त दूरक



# समिति सभना

वर्ष-२ अङ्क-६

जून, १९८२

मूल्य-पचास पाइ

## सम्पादकीय

### सरकारी पुरस्कार आ मैथिली साहित्यकार

कुनू छोट सं छोट आ पैघ सं पैघ आन्दोलन मे साहित्यकारक भूमिका प्रधान रहल-ए। साहित्यकार कान्ति द्रष्टा होइत छथि। ई पुरान परती-परांत के तोड़ि आन्दोलनक नव माटि तैयार करैत छथि आ पुनः आन्दोलनक बीजारोपण करैत छथि। परञ्च एहीठाम दिनक काज शेष नहि होइछ। ई अपन रोपल आन्दोलनक बीज के माटि सं बहार भय विशाल वृक्षक रूप लेबाक, ओकरा फुलैवा-फइवाक समुचित परिवेशक खिचन करैत छथि, आततायीक हाथ सं ओकर रक्षा लेल स्वयं त सतर्क सज्ज रहित छथि, समाजक लोक के सेहो ओकर उपयोगिताक भान करा ओकर रक्षाक लेल सचेतन बनैत छथि। शेष मे जखन कि ओ गाछ फल दैत छैक त ई स्वयं तृप्ति चाहैत छथि। तँ साहित्यकारक ई गरिमा अइ। ई प्रातः स्मरणीय होइत छथि, अनुकरणीय होइत आ अमरता के प्राप्त करैत छथि।

कहल जाइछ जे जे काज तलुआरि सं संभव नहि होइत छैक से साहित्यकार अपन कलम सं सहजहि क खेत छथि। तँ एक दिस जे विशाल मानवताक दृष्टि दिनका कलम दिस-दिशा निर्देशक लेल लागल रहैछ त-दोसर दिस मानवताक शत्रु शोषक-श्रासकक सेहो। पहिल वर्गक हृदय मे जतय आदरक भावना रहैत छैक त दोसर वर्गक हृदय मे आतंकक। तँ पहिल वर्ग-जतय दिनक सहायक होइत रहल-ए त दोसर विरोधी। परंच साहित्यकार जनवल्क सहयोगे समस्त विरोध के भुलंठित करैत अपन लक्ष्य पथ पर अवि-राम चलैत रहैत छथि।

एहि दृष्टि जे आजुक मैथिली साहित्यकार दिस तकैत छी घृणा सं मन भिनकि जाइछ, छाँजे माथा नत भ जाइछ। किछु अपवाद के छोड़ि प्रायः सभ के सभ अपन असली चरित्र छोड़ि स्वान प्रवृत्तिक परिचय द रहल छथि। इएह कारण अइ जे एतो-दिनक पश्चातो मिथिला-मैथिल-मैथिली अपन न्यायोचित अधिकार सं वंचित रहल-ए। मैथिली आन्दोलन जातीय आन्दोलनक रूप मे नहि रूपायित भ सकल-ए।

मानव जीवन मे भाषाक की महत्व छैक से आव लिखबाक खगता नहि। वर्तमान मे कर्नाटक प्रदेश मे चलि रहल आन्दोलन जकर मुख्य माड छैक 'कलङ्क' के त्रिभाषा फर्मुलान्तर्गत प्रथम आवश्यक भाषा बनेबाक—टटका उदाहरण थिक जे केना पघ सं पैघ 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार विजेता साहित्यकार एकर नेतृत्व क रहल छथि। ओतवे नहि समस्त बुद्धिजीवी कलाकार लोकनि एहि मे पूर्ण सक्रिय छथि। परञ्च मैथिली आन्दोलन मे साहित्यकारक सहयोगिताक गण्य त फराक जाओ—विरोधे भेटैत रहल-ए। कुनू-कुनू नवसिखुआ अति प्रगतिशील गीतकार त भुलक प्रधानता देखेवा लेल भाषा आन्दोलन के घृणित राजनीतिक संग जोड़बो सं बाज नहि आयल। पता ने हुनका जखन भूल लागैत छनि खेनाइ भाषा मे मंगैत छथि अथवा पैठ डेङ्गावय लागैत छथि। ओना सत्य ई अइ जे इहो गण्य प्रकाश करै लेल गीतकार महोदय के भाषाएक सहारा लेमय पड़ैतनिहै। सं एक शब्द मे कही त मैथिली आन्दोलन मे सभ सं बाधक ई साहित्यकार नामक कटुद रहल-ए।

रहवा होइतहु से हेतु किछु साहित्यकार सचेतन रहबहार आ तँ हुनका नय अइ करवा लेल मैथिली विरोधी विहार सरकारक नेता कमलाध मिश्र नामा तल्लक बढवैत रचैत रहलाहए। एही षडयंत्रक फलस्वरूप किछु साहित्यकार के पुरस्कार देबाक योजना बनलए। समाचार-सूत्रक अनुसार श्री नागार्जुन (यानी नहि), आरसी प्रसाद सिंह श्रीकन्त ठाकुर विद्यालंकार जयनाथ मिश्र आदिक नाम एहि योजनांतर्गत अइ। जहांधर विद्यालंकार आ जयनाथ मिश्रक बात अइ—इहो लोकनि जे साहित्यकार छथि से एही समाचार सं शात भेल। ओना ई लोक अबसे जनेए जे जयनाथ मिश्र डा० जगन्नाथ मिश्रक ससुर छथिन आ विद्यालंकार सदा सं मैथिली विरोधी आ हिन्दीक प्रबल पक्षधर रहलाहए। सम्बन्ध मे पैघ आ मैथिली विरोधी मे पैघ हेबाक कारणे ई लोकनि अबसे सरकारी पुरस्कारक योग्यता रखैत छथि।

जहांधर महाकवि नागार्जुनक प्रश्न अइ 'इमरजेंसीक' समय मे ओ 'सरकारी चारा' गर्वक संग अस्वीकार केने छथि आ तँ जे एहि खेर स्वीकार कलाह ताइ मे पूर्ण संदेह। 'कविवर आरसी प्रसाद सिंह' के हिन्दी साहित्यकारक रूप मे पांच सेक मासिक वृत्ति कहांदिन भेटिए रहल छनि। परञ्च एहि बेर एकठहुरी दस हजारक 'तोरा' ओ स्वीकारैत छथि

संविधान विनु मैथिलीक ओ  
मानचित्र विनु मिथिला धान  
डाहि जारि सुझाह करब हम  
विद्रोही मिथिलाक जवान

## \* मैथिली \*

मैथिली—माने मैथिली भाषा हिमा-ल्य स गंगा तक आ बंगाल स गंडक तक पसरल विशाल सुजला-सुफला शल्प इयामला मिथिला देशक भाषा, तीन कोटि मैथिलक मातृभाषा।

ओना ई सर्वमान्य अइ जे भाषा कुनू खास व्यक्ति वा वर्णक नहि होइ छइ, परंच मिथिला मे एहन आमक प्रचार कएल गेलए आ एखनो कएल जा रहलए जे मैथिली कुनू विशेष वर्णक भाषा थिक, आ थोड़-बहुत अवोध लोक एहि प्रकारक शिकार भेलए। तँ एहि भ्रम के दूर करैक खगता छैक, हमरा जनतवे।

भाषा पर गण्य करैकाल सर्वप्रथम भाषा थिक की ताइपर विचार क लेब आवश्यक। भाषा के विचारक बाइन कहल गेलए। मनुक्ख सामाजिक प्राणी थिक। ओ मात्र समाज मे रहिते नहि अइ वरन समाजक अन्यान्य सदस्यक संग अपन विचारक आदान-प्रदान करैए, एक दोसराक सुख-दुखक खोज खबरि रखैए, ओकर सहभागी होइए आ ई सभ होइ छइ भाषाक माध्यमे। सुख-दुखक अनुभव पशुओं के होइ छइ परंच भाषाक अभाव मे ओ प्रकट नजिक सकैए जे मनुक्ख बड़ सरजता सकलए। किन्तु भाषा मात्र एतवे नहि, असल मे विचारक वास्तव रूप थिक। मार्क्स भाषा के immediate reality of thought कहलनिहै। भाषाक बिना विचारक अस्तित्व ने रहैए। एहि स इहो पता चलए जे मनुक्खक सामाजिक आ विवेकशील प्राणी हेब भाषाक जन्मक कारण भेल। मनुक्ख के अपन मनक बात दोसर के कहबाक तथा दोसराक बात जनबाक आन्तरिक इच्छाए कहिओ भागा के जन्म देलकै हैत। दोसर जे भाषा एहि रूपे जन्म लेलक हैत वा जाइ भाषा के जन्म देल गेल हैत से निश्चित रूपे समाजक सभ सदस्यक लेख एकैठा छल हैते, अन्यथा उद्येशक पूर्ति संभव नहि छलै। तेसर, भाषा मनुक्खक लेख बनाओल गेल वा एना कही जे भाषाक

आकिर्भाव साधनक रूप मे भेल—साध्य छल मनुक्ख, मनुक्खक कल्याण, एहि संबंध मे स्ताखिन कहै छथि—भाषा समाजक लेख बनाओल गेलए, एकर निर्माण लोकक बीच विचारक आदान प्रदानक माध्यमक रूप मे जे समाजक सभ सदस्यक लेख एकैठा होइए आ सभ सदस्यक एके रंग सेवा करैए।

मनुक्ख विकाशशील प्राणी थिक, ओ मात्र अपन विचार दोसर के बना क वा दोसरक विचार जानि क चुप भ बैसि नहि सकैए। ओ प्रत्येक समस्याक समाधान चाहैए प्रत्येक अनजानल वस्तु के जान' चाहैत नव नव वस्तुक खोज कर' चाहैत कुनू वस्तु के जनबाक जिज्ञासा जे कि विकाशक दौध थिक तथा ताइ लेख उचित प्रयासक निमित्त प्रयोजन होइ छइ शिक्षाक, आ शिक्षा बिना भाषाक भ नहि सकैए। तहिना कुनू विकाशक काज कुनू एक व्यक्ति स संभव नहि, ताइ लेख चाही सामूहिक प्रयास आ तँ सामूहिक शिक्षाक प्रयोजन आ सभक लेख सहज-सरल शिक्षा मातृभाषाक बिना असंभव। आइ विवेक प्रायः समस्त विद्वान एहि मत स सहमत छथि आ मातृ भाषाक महत्ता के स्वीकार करै छथि।

विकाशक मूल थिक संघर्ष। मानव सभ्यताक आदिकाल स आइ तक डेरा-डेरा पर मनुक्ख के संघर्ष कर' पड़लैए आ पड़ि रहल छैक ई संघर्ष जिनगीक विभिन्न क्षेत्र मे। विभिन्न रूप मे होइत रहलैए आ भाषा एहि मे सहायक सिद्ध भेलैए। पहिने कहि आयल छी जे कुनू विकास एकक प्रयासे संभव नहि। स्वभावतः संघर्ष सेह सामूहिक रूप मे भेलैए। स्ताखिनक अनुसार 'भाषा जत्ते वैचारिक आदान-प्रदानक माध्यम थिक, तत्ते संघर्षक आ सामाजिक विकाशक साधन सेहो।'

आव ज विचार करी जे भाषा संघर्षक आ विकाशक साधन केना थिक त फेर शिक्षाक चर्च करब आवश्यक। शिक्षा भेल (शेषांश पृष्ठ ७ पर)

वा नहि से त भविष्ये बइत। ओना सरकारी इति मुकामपर एक साहित्यकार अस्वीकार कर एतौ अस्वीकृत उदाहरण मनुक केने छथि आ अस्वीकृत तब तक अस्वीकृत नहि केने छथि। पांच सेक मासिक इति हिन्दी साहित्यकार (!) कविपद्वन की केने क संगे ल रहल छथि। हुनका ने अपन ए वे पचास सतक एतौ कहे सरकार का रहल-ए जकर सदि सं साहित्यकार लोकनि के पाळ बाइत।

जहांधर विहार सरकारक प्रश्न छैक ओ अपन सदस्यो कल्लक के भंजवा लेल हजारो षडयंत्र करबे करत, मैथिली आन्दोलन के अवफल कए मैथिलीक विनाशक हेतु साहित्यकार के कीनबाक प्रयास करबे करत परञ्च कि साहित्यकार सभ एते नीचे, एहन दयाक पात्र बनबा लेल तैयार अइ? कि विवेकक लेसमात्रो ओकरा लोकनि मे शेष नहि छैक?

ज सरकार टुकड़ी फेकैए त निश्चित ओकर विशेष उद्देश-छैक, ओ प्रतिदान चाहैए आ ई प्रतिदान एक मैथिलीक साहित्यकार सं मिथिला-मैथिली विरोधी सरकार की चाहैए से ककरो सं तुकाएल नहि। इतिहास साक्षी अइ जे मां-बाप भनहि अपन नेना के बैचि लेने हो—कुनू बेठा अपन मां के हाट नहि चढ़ओलक-ए। देखाचाही मैथिलीक साहित्यकार लोकनि की करत छथि परञ्च जनता के, साधारण मिथिलावासी के सचेत रहनाइ परमावश्यक। जगन्नाथक दृष्टि शनिक दृष्टि थिक आ से मिथिला-मैथिली पर लागि चुकलए—से हमरा लोकनि के नहि बिउबाक चाही।



महाकवि गोविन्द दास

लीला सुरुब कि मोदक बर्ब करैत  
 कहैत छथि बेई ने कि बैधान छन्हि दोऊ  
 तें कितव अर्थात् । बे छुनार बाबू  
 कथन तय त कि प्रमाणित होइत बे महा-  
 कवि बैधान छन्हि—आ ते ओ मैथिल  
 नहि छन्हि ? रोखी ने आना कहू लेख-  
 बे विद्यापति बे राजा-कुमार लीला गीत  
 रचबनि से मिथिलावासी स्वीकार नहि  
 करय चाहैत छथि । त कि एकर माने मेळ  
 जे विद्यापति सेहो मैथिल नहि छन्हि ?  
 परब इयंक विषय जे सुकुमार बाबू न  
 बहुत पथ विद्वान सूनीत बाबू सेहो विद्या-  
 ( शेषाष्ट पृष्ठ पांच पर )



कविता

भावात्मक एकता सं सम्बद्ध

तीनटा मुक्तक

( १ )

नहि हो केओ मुस्लिम, हिन्दू  
नहि हिन्दू हो मुसलमान  
"हाशमी" ई अनिवार्य आइ अछि  
हो हुनू पहिने इनसान

( २ )

सभ सं "आदम" केर औलाद  
अथवा "मनु" केर अछि सन्तान  
भाय-भाय मे केहन भगड़ा  
केहन ई घटिया ईमान

( ३ )

सभ मानस ई मही के माता  
"आदम" केर अछि जन्म-स्थान  
पतस "शीश" केर अछि मजार आ  
रक्षा - सखिल गङ्गा सुदान

—फजलुर रहमान हाशमी

‘ले मशाल सभ कलुष जरा दे’

जाग - जाग मैथिल संथाही, भोजपुर - संतान  
सभ मूल छै छटि रहल छौ, घरक साज-समान ।

सभक माय दुक-दुक तकै छौ, अबला बनि छौ ठाढ़ि  
निलज बनि सभ जीवि रहल छै, फुसिये करै अराढ़ि  
आबो नहि चेतवै तऽ जेतौ रहल सहल सम्मान ॥

कनहा-कुबड़ा बहिरा-बोका, मिलि के तोड़ौ माल  
तोहर दुलहना भूखले सूतौ, तोहर हाल बेहाल  
अपन घर मे तोहरे भाषाकेर भेलौ अपमान ॥

तोहर आँखि छौ जाली मढ़ल, देखै नहि निज भेष,  
तोहरे घर सं तोहरे सम्पत्ति पठबौ देश-विदेश  
दिन पर दिन कंगाल बनै छै, ककरो नहि छौ मान ॥

भाइ-भाइ मे लड़ा-भिड़ास हथिओने छौ कुरसी,  
तौ प्रमादवश फूटि रहल छै, रहि-रहि दे छौ घुड़की  
एक्कर ओक्कर पीठ ठोकै छौ, मूरख नै छौ ज्ञान ॥

ठोहि पारिकऽ माय कनै छौ, तैयो नहि छौ लाज  
जे सभ वनटा सिखा रहल छौ, तकरो करै छै काज  
अपन पपर कुरहरी सं काटै, बनल छै नादान ॥

पूरुब मे बिगुल बजै छौ, दही नगाड़ा चोट  
ताल ठोकि मैदान ठाढ़ हो, छोड़ नोट आ भोट  
बठै बठै, आबो तऽ चेतै, कर मे धरै कमान ॥

अपना हक ले सभ लड़ैप, पखनो धरि छै चुप,  
मुँह फुलौने सभ बैसल छै, देख अन्हरिया घुप  
ले मशाल सब कलुष जरा दे, तखने हेतौ बिहान ॥

—अर्जुनलाल करण

दू गोट लघु कथा

गिरगिट

बैशाखक ठहाटही दुपहरिया मे अपन  
आ अपन गर्भवती स्त्रीक आहारक जोगार  
कए जखन श्रीमान गिरगिट अपन डेरा  
पुरलाह त देखैत छथि जे पत्नी घोघना  
लटकओने बैसल छथिन । बेर-बेर एकर  
कारण पुछल उत्तर पत्नीक मओन भंग नहि  
मेलनि त ओ खिसिया के बजलाह—एहिना  
घोघना फुलओने रहब त लोक कि अगर-  
जानी जनए जे अहाँक मनक बात बुझि  
लेत ।

पत्नी ओहिना विधुआएल मनमनेलीह—  
लोक बुझिए क की करत ? जं सरिपहुं  
लोक के हमर कचोटक चिन्ता छइ त तत्त  
करओ ।

—एक सत्त, दोसर सत्त, तेसर सत्त,  
अहाँक कहल जे नहि करए से असी कुँड  
नर्क मे पहुँच । आओ त बाँचव ? गिरगिट  
आत्म समर्पण क देलनि ।

पत्नी खवास करैत बजलथिन—चल  
हमरा लोकनि अखन एइ देश सं चलि  
चली ।

गिरगिट छगुन्ता मे पड़ि गेलाह ।  
‘आखिर कून एहन बात भेलैक जे हमरा  
लोकनि के अपन जन्मभूमि छोड़ि चलि  
जेबाक चाही ?’

पत्नीक पाड़ा राम भ गेलनि । ‘कनियो  
जं शानक छूति रहैत त ई पूछय नहि पड़ैत ।  
आखिर कुनू जाति जन्तुक अपन परिचय  
रहैत छैक, विशेषता रहैत छैक । जं सैह  
नै बंचैत त लोक के लाजे मरि नहि जा  
हैतैक ?’

—अहाँक कहवाक अर्थ हमरा नहि  
बुझै मे आयल ! हमरा लोकनि अपन रंग  
बदलाक लेल विरुधात छी । परिवेशक

अनुसार रंग बदलवाक पड़ता हमरा लोकनि  
मे जन्मजात होइए”

—मुदा ताहू मे हम सभ पाछू पड़ि  
गेलहुं” पत्नी वीचे सं लोक लेलथिन ।

—अहाँ कि नेता लोकनिक बात क  
रहल छी ? गिरगिटक प्रश्न भेल ।

—त आर ककर ? आइ—कलिक  
नेता लोकनिक वरावरी करवाक दक्षता कि  
हमरा लोकनि मे रहि गेलए ?

गिरगिट के बड़ जोर सं हंसी लागि  
गेलनि । ओ ठहाका दैत बजलाह—तँ ने  
कहैत छैक स्त्रीगणक बुद्धि । हमरा लोकनि  
केँ त एहि मे प्रसन्नता हेवाक चाही ।  
कहबीयो छैक जे दस टके नहि नितराइ,  
दस समाझे नितराइ ।

भारत रत्न

शरत्काल पर पड़ल-पड़ल भीष्म पिता-  
मह सोचि रहल छलाह जे अन्यायी कौरवक  
संग दय ओ नीक नहि केलनि । आगामी  
इतिहास हुनका कहियो क्षमा नहि करत ।  
अन्त मे ओ फेर हथियार उठेबाक आ  
पाण्डव दिस सं लड़वाक घोषणा केलनि ।  
ई गप्प जखन हुयोधनक कान तक गेलै त  
पहिने त ओ घबड़ाएल किन्तु पश्चात्  
शकुनीक संग परामर्श कए दोसर दिन हस्ति-  
नापुर मे विराट सभाक आयोजन केलक ।  
एहि सभा मे ओ भीष्म पितामह केँ एगो  
पैष प्रशस्ति पत्रक संग ‘भारत रत्न’क उपाधि  
सं अर्पण केलक । कहल जाइछ जे तकर  
वाद जे भीष्म पितामह मओग त्रत धारण  
केलनि से जा जीलाह मुँह नहि खोललनि ।  
● अग्रदूत

डा० जगन्नाथ मिश्र उर्फ

थैलीनाथ मिश्र प्रकरण

बिहार भारतक सभ सं धनी प्रदेश  
थिक जाइताम भारतक उपलब्ध ‘कच्चा  
मालक’ वालि स प्रतिशत पाओल जाइत  
छैक । परञ्च एते होइतहु एहि ठामक  
जनता सभ सं गरीब आ अशिक्षित अइ  
केन्द्र द्वारा अवेहलित अइ । एकर एक  
मात्र कारण छैक जे एहि ठामक नेता बड़-  
मान होइत आयल-ए जे केन्द्रक चमचा-  
गिरी कए अपन सिंहासन केँ सुरक्षित रख-  
नाइ आ तकरा बले अपन स्वजन पोषण  
केनाइ टा केँ अपन धर्म बना लेत अइ ।  
एहि तरहक नेता मे शीर्षस्थ छनि बिहारक  
वर्तमान मुख्यमंत्री डा० जगन्नाथ मिश्र—  
जे थैलीनाथ मिश्रक नामे ख्याति प्राप्त क  
रहल छथि । डा० मिश्र मे बड़-बड़ गुण  
अइ—कोबड़ छोट कहत अपराध । एक  
दिस जं ई मिथिला मैथिली विरोधीक रूप  
मे ख्यात छथि त दोसर दिस वर्णवादी,  
सम्प्रदायवादी राजनीति करवाक लेल ।  
परञ्च हिनक चर्चक सभ सं प्रधान कारण  
रहल-ए हिनक स्वजन पोषण नीति आ

थैली (सलामी) लेनाक बात । अंग्रेजीक  
बहुप्रचलित पत्र ‘ऑरगेनाइजर’ जे कि  
दिल्ली सं प्रकाशित होइए, तकर २-८ मई  
१९८२ क अंक मे मुख पृष्ठ पर ‘द क्राइ-  
मल ऑफ मिश्र’ शीर्षक सं हिनक विभिन्न  
घोटालाक भंडाकोर कएल गेलए जकर  
संक्षिप्त सार निचा देल जा रहल-ए ।

१) बिहारक स्तिरीट व्यवसायी ५ पाइ प्रति  
लिटर दाम बढ़ेबाक माँड बहुतो दिन सं  
करैत आबि रहल छल जकरा गफूर मंत्री-  
मंडल आ जनता सरकार सोफे अस्वीकार  
क देने रहैक । परञ्च डा० मिश्र एकरा  
एक रुपया पांच पाइ प्रति लिटर यानी कि  
७५ पाइ प्रति लिटर सं १९८० प्रति दाम  
करवा देलथिन । मात्र एकटा व्यवसायी  
के ६० लाखक ल्याक छलैक जे एहि बढ़ो-  
चरी सं एक कोटि नफा कमाएल । एहि  
पुनीत काजक लेल कहाँदर मिश्रा साहेब केँ  
एक कोटिक थैली प्राप्त भेलनि ।

२) साल बीज—१९८० मे बिहार  
राज्य फॉरेस्ट डेभलपमेन्ट कर्पोरेशन मात्र



५०% (४०,००० मेट्रिक टन्स) साल बीज ३ बिहारीक हाथें आ बाँकी ३% कमी-शन द बिहारीक हाथें बेचबाक निर्णय लेने छल परञ्च डा० मिश्रक प्रभावें एकैटा व्यवसायीक हाथें ११७५ प्रति टन भाव सँ बेचि देल गेल जखन कि मध्यप्रदेश से एकर भाव २१८५ छलैक। एहिठाम स्मरण रखबाक थिक जे बिहारक साल बीज सर्वोत्तम होइत अइ। सरकार केँ एहि सँ ७-१२ कोटिक घाटा भेलैक जखन कि मिश्रा साहेब केँ कएक कोटिक आमद।

३) कोइला—कोइला मात्र लाइसेंस बला व्यवसायीक हाथें बेचल जाइत छल परञ्च मिश्रा साहेब नियम परिवर्तन कए किछु ठीकदारक हाथें बेचबा देलथिन—जकरा सँ व्यवसायी कौनत आ तकरा बाद उपभोक्ता भरि जायत। एहि तरहें बीचक लोकक उपस्थिति सँ कोइलाक दाम प्रति मीटल २५ टाका बढ़ि गेलैक। किछु 'कालाबाजारी' जखन एफ० आइ० आर० मे फंसल आ मिश्रा साहेब ओकरा मौखिक आदेश सँ छोड़बा मे असफल रहलाह त लिखित आदेश धरि द देलथिन। बनारसक एगो नामी बढमास पकड़ल गेल छल त हिनक पैरबी सँ ओ सिलीगोरी अस्पताल मे भरती कराओल गेल, फेर बनारस आ ओइ ठाम सँ ओ फिरोजपुर गेल। ओकरा संग सँ बहुतरास कागज पत्र भेटल छलैक। कहाँन ओ एखनो दिल्ली-पटना सीनातानि केँ घूमि रहल-ए आ पकड़निहार एत० पी० (सी० आइ० डी०) क बदली भ गेलैक।

४) शराब—जनता अमल मे नशाबन्दी लागू भेल छलैक। मिश्रा सरकार एकरा तोड़ि एकाइज विभागक नियम के उलंघन करैत 'लीडर शीप ऑक्शन' बन्द कए पुरने ठीकदार केँ टीका देलकें कहाँन दुटा मद्य व्यवसाय त खुलेआम बजए जे मिश्रा केँ मुख्यमंत्री बनेबा लेल ओ दुनू मिलि एक कोटि टाका खर्च केने अइ।

५) कुसियार—१९८० मे मिश्रा साहेब घोषणा केलनि जे कुसियार उपजौनिहार केँ २२ प्रति क्विंटल दाम देल जेतैक। १३ फरवरी १९८१ केँ एकरा ६ मास लेल भ्रमिगत क देल गेलैक। एहिठाम मन रखबाक थिक जे ६ मास कुसियारक पूरा 'जीवन' भ जाइछ। कहल जाइछ जे चिनी मिलक मालिक सभ दिल्लीक किसान सम्मेलन लेल ५० लाख मिश्रा साहेब केँ थेली भेंट केने रहनि—जकरा लोकनिक सलाह पर उपरोक्त स्थगन आदेश बहार भेल छल।

६) बाढ़ि नियंत्रण—१९८१-८२ मे बाढ़ि नियंत्रण नाम पर ८० कोटि खर्च भेलैक जकर अधिकांश नकली बील पर भुगतान कइल गेल। १९७३ मे जखन मिश्रा साहेब सिंचाई मंत्री छलाह तखन एके काज दू गोटा ठीकदार के देल गेल रहैक Estimate committee of Bihar क अनुसार Associated Engineering corporation जे कि मिश्रा साहेबक भाइ कमल नारायण मिश्रक छियनि तकरा 'सिविल वर्क' लेल (१,५७,५०० स्क्वायर फीट) ६१,८३८ देल गेलैक जखन कि दू गो आन ठीकदार केँ २,१४,५०० स्क्वायर फीटक लेल मात्र १३,३६८ देल गेलैक।

## अजगुत-अनटोटल

\* घोडाला शिरोमणि बिहारक मुख्य मंत्री डा० जगन्नाथ (थेलीनाथ) मिश्र केँ पश्चिम बंगालक चुनाव अभियान मे देखि लोक केँ छगुन्ता लागब स्वाभाविक के। स्वाभाविक एहि दुआरे जे जगन्नाथ बाबू पर दर्जनो घोडालाक आरोप छनि, सुप्रीम कोर्ट धरि केस हुनका पर पहुँचि गेल अइ आ एहि तरहक बदनाम घन्य व्यक्ति उपस्थिति अथवा भाषण सँ लोक मे कांग्रेस प्रति आकर्षण बढ़ैतैक त एहि सँ पैघ अजगुत आर की भ सकैछ। परञ्च लोक—साधारण लोक सोझमतिआ होइए, ओ कुनू विषयक तइ तक नहि जाइए नहि जाय चाहैए। परञ्च जे दू-चारि प्रतिशत लोक सभ विषय के खोजिछा छोड़ाक देखैक अभ्यासी अइ—से एकरो तहिना देखलक आ तें ओकरा सँ भितरिया बात नुकाएल रहबे केना करैतैक? ह, ओकरा लोकनि केँ अनटोटल अवस्ते लगलैक।

समितिक अनुसार सँ सँ बेसी irregularities मिश्रा विभाग मे भेलनि।

७) व्यवस्था—१५,०००) तनखा करवा क लेल मिश्रा साहेब प्रति इंजिनियर १००) टाका मङ्गे छलथिन। प्रत्येक बदली पर कराके सलामी छलैक। स्वयं Engineers Association से हो एहि तथ्य केँ स्वीकार केलकए।

८) कर्पूरी ठाकुरक मुख्य मंत्रीत्वकाल मे ६००० Asstt. Engineer केँ पद पर इंजिनियर बहाल कएल गेल छल, १९७८ क बेकार इंजिनियरक आन्दोलनक फलस्वरूप। दू वर्ष बाद मिश्रा साहेब लोक सेवा आयोग द्वारा विज्ञप्ति देलथिन जे उपरोक्त सभ अभियंता केँ फेर सँ आवेदन करय पड़ैतनि। शुरू भेल फेर आन्दोलन। आन्दोलनकारी अभियंता लोकनि जखन मुख्यमंत्री सँ भेंट करै चाहलनि त मिश्रा साहेब अपन Personal Asstt. केँ पठा देलथिन जे अभियंता लोकनि केँ २५ लाखक थेली मुख्य मंत्री केँ भेंट करै लेल कहलथिन। थेली मिश्रा साहेब केँ भेंट गेलनि आ लोक सेवा आयोगक विज्ञप्ति खटाइ मे पड़ि गेल।

९) मिश्रा साहेब केँ बड़ सेहना छलनि जे हुनक बेटी केँ वी० ए० (Eco. Hons) मे फस्ट क्लास फस्ट भेटनि। एहि लेल ओ पटना वि० विद्यालय मे मॉडरेटरस बहाली करबओलनि। परञ्च कपार संग नहि देलकनि। मॉडरेटिंग बोर्डक अध्यक्ष डा० केदारनाथ प्रसाद प्रतिवाद स्वरूप इसीफा दय देलथिन आ छात्र आन्दोलन भइकल। बहुतो छात्र हाजति मे पड़ल आ अन्ततः हुनका बेटी केँ दोसर स्थान प्राप्त भेलनि। ओना शिक्षक लोकनिक अनुसार हुनक बेटी दोसरो श्रेणी पेबाक योग्यता नहि रखैछ।

१०) आ सब सँ प्रधान अइ पटना अरबन को-ऑपरेटिव बैंकक घोडाला जाइ मे ३५ लाख गवन करबाक आरोप मिश्रा साहेब पर छनि। एकर मामिला सुप्रीम कोर्ट तक पहुँचि गेल अइ—देखा चाही की होइए।

साम्प्रदायिक राजनीति करवा मे जगन्नाथ बाबू शीर्षस्थ छथि। गत १२ मई केँ रांचीक रोमन कैथलिक चर्च पहुँचि विशपक समक्ष ठेढ़निया देशक घटना टटके उदाहरण अइ। परञ्च हुनक कलकत्ता आगमन निश्चिते रोमन कैथलिक सम्प्रदाय केँ प्रभावित करबाक उद्येश सँ नहि भेल छल। ओना साम्प्रदायिक सम्भावनाक जेहन सुन्नर आ सुदृढ़ प्ररम्परा बंगालक रहलैए—तेहन भरिबके आनठाम हेटैक। ई निर्विवाद जे एहि सम्भावना के नष्ट करवा मे राजनैतिक दलक भूमिका प्रधान रहलैक-ए आ ताहु मे अगिल्ल रहल-ए कांग्रेस। परञ्च एहिठाम ओकर गोटी आइधरि उफाटि रहलैक। सेजे होउक, मुदा चक्काचि रचनाइर सब किएक हारि मानि लेत?

केन्द्रीय उर्जा मंत्री श्रीमान् ए० वी० ए० गनी खान चौधरी महाशय एहने लोक मे सँ छथि, स्वभावतः हुनका जगन्नाथ बाबू सन कुख्यात लोकक प्रयोजन पड़लनि। एहि दुआरे जे कलकत्ता मे बिहारी आ उत्तर प्रदेशक बहुत रास मुसलमान अइ। भाषा केँ धर्म-सम्प्रदायक संग जोड़ि 'दस प्रतिशत मुसलमान क भाषा उर्दू' के बिहारक दोसर राजभाषा बना अशिष्टित-अव्यवस्थित धर्मांध लोकक बीच सत्ता जनप्रियता जगन्नाथ बाबू अवस्ते हासिल केने छथि आ तकरे काज मे लगावय चाहलनि चौधरी मोशाय। स्वभावतः जगन्नाथ बाबू केँ बीछि-बीछि केँ ओही अंचल मे ल जाएल गेल जाइ ठाम तथा कथित उर्दूभाषीक संख्या बेसी छैक। जगन्नाथ बाबू सेहो उर्दू मे (!) भाषण केलनि। किन्तु चौधरी मोशायक कपाड़े जइल छथि—तेयो चारु नाल चित्त।

कलकत्ताक मैथिलीभाषीक लेल अजगुत क एहू सँ पैघ कारण भेलैक दोसरे। मैथिली आन्दोलनक 'स्वतन्त्रमध्य ब्योवृद्ध सेनानी' श्री बाबू साहेब चौधरी केँ हरलनि ने पुरलनि दू गोटा चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, लक्ष्मण भा सागर आ आओर चारि गोटा युवक केँ ल क दोइलाह दमदम हवाई अड्डा पर माला पहिरा एलाह जगन्नाथ बाबू केँ पता ने ओ केना विवरि गोहाह जे ई उएह व्यक्ति छथि जे मैथिलीक विनाश लेल उर्दू केँ दोसर राजभाषा बनओलनि आ भाई-भाई मे भगड़ा बभओलनि। ई उएह व्यक्ति छथि जनिक लठैत ६ दिसम्बर १९८० केँ पटनाक राजपथ पर मैथिली सेनानी केँ कान-कपार भाड़ि देलक जाइ मे श्री चौधरी सेहो रहथि भनहि चोट नहि लागल होनि ओतवे नहि जगन्नाथ बाबू आन्दोलनकारी मिथिला सभूत लोकनि केँ आर० एत० एत० कहि बदनाम करै सँ सेहो बाज नहि एलाह। श्री बाबू साहेब चौधरी स्वयं आइधरि जगन्नाथ बाबू केँ मिथिला-मैथिली बिरोधी कहि भस्मना-आलोचना करैत आवि रहल छलाह जे बात ओ राताराती केना विवरि गोहाह?

ओना लोक जतय-ततय बजैत सुनल जाइछ जे चौधरी बी बूढ़ भेने दूरि गोहाह,

भसिया जाइत छथि। किछु लोकक कहब छैक जे सुन्दरपुर वाली पं० देवतारायण भा। चौधरी बी सँ मैथिली आन्दोलन मे बाबू रहितों अपना गाम मे मुख्यमंत्रीक सुमाओन करवा हिनक प्रियपात्र बनि गेल—छथि आ निकट भविष्य मे विधान-परिषदक सदस्यता लाभ करै बला छथि। तें चौधरी जी हुनका 'भौवर टेक' करवा लेल ई चालि चल्लाह-ए। ई त भविष्ये कहत जे गोटी प दिने किनकर लाल होइत छथि परञ्च मैथिली केँ दाव पर चढ़ओनाइ लोक केँ अतर्पितात अवस्ते लगैत छइ। ब्योवृद्ध जानि भनहि बेसी किछु लोक नहि बाजओ-दुर छीया नहि करुन परञ्च एतेवरि त कहिते छथि ई नहि उचित विचार।

\* कुनू समाजोच्चक गणतंत्र केँ मुल्ल दारा, मुल्लक लेल मुल्लक सरकार कहने छथि। हमरा विश्वास अइ जे जे ओ आइ नीचेत रहितथि आ भारतीय गणतंत्रक चेहरा देखितथि त निश्चित अपन धियोरी मे एमेन्ड मेन्ट क ओकरा एना कहितथि मुल्लक सरकार मुल्ल दारा ४२०क लेल। विश्वक महान गणतंत्र भारतक विभिन्न प्रदेश मे पश्चिम बंगाल सभ तरहें आंगू मानल जाइए। एहीठामक केनिंग अंचलक एगो मतदात्री गत १६ मई केँ प्रजाइडिंग अपसर ला जा केँ छुटैत छथिन—साइकिल कोथाइ बाबू? आश्चर्य त होइत अपसर प्रति प्रश्न केलथिन—साइकिल! साइकिल की हवे? महिला—केन आमार छेले जे बोललो साइकिल छाप दिते?

एही केन्द्र पर एगो दोसर बृद्धा मोहर आ मतपत्र ल क जखन सपटा सँ घेरल घर मे पहुँचलौह त ओ विवरि गोलीह जे छाप कुनू चेहर पर लोवाक छथि। अपन बेटा केँ शोर पारलनि शंकर। ओ शंकर!! अधिकारी बीच मे दखल देलथिन—काके डाकछेन? महिला केने? आमार छेले शंकर केँ कोथाय जे छाप दिते बल्लो मुख भा गेलाम.....

ई त मात्र ननूना थिक। पता ने एहन कतेको मतदाता एहि देश मे छथि बनिबा लोकनिक मत पर नीति जनप्रतिनिधि शासन करैत छथि।

\*\*\* पश्चिमी देशक कतेको पत्रिका मे भरिपेजक विशासन छपलै—इशुक अवतार भ गेल। हुनक नव नाम छनि—मैत्तैय स्वामी। एहि मे आगा कहल गेलै जे ओ एखन गुप्त छथि आ मात्र हुनक किछु शिष्य ई बात जनेँए। परञ्च दू मासक भीतरे ओ अपन परिचय प्रकाशित करताह आ टेलीविजन सँ विश्वक समस्त लोकक संग-जकर जे भाषा छैक ताही भाषा मे गप-शप करताह।

एहि सम्बन्ध मे विशेष जानकारीक लेल कतेको पता देल गेलैक जाइपर सम्पर्क स्थापित करै लेल कहल गेलैए। एहि मे सँ एक अइ दीतारा मेर, ५६, डार्टमाउथ पार्क रोड, लन्दन।

कहबी कुनू बेजाय छैक जे बीव त की ने देखब।

—उचित वक्ता



महाकवि गोविन्द दास

पति के मैथिल मानि चुकल छथि आ आवत भरिसक कुनू बंगाली विद्वान के मोह नहि रहि गेल छनि। सुकुमार बाबूक दोसर तर्क छनि जे १६५४-५७ मे नकल कएल सजनीकान्त दासक एगो पोथी मे बहुतो पद मेटलैक जाइ मे त पांच टा पद कतौ मुद्रित नहि छैक। गोविन्द दास जे १७म शताब्दी मे मिथिला मे बैसि के कविता रचलनि त एहि पोथी मे हुनक पद रहनाइ असंभव। हुनक इहो तर्क निराधार छनि कारण पहिने त सजनीकान्त दासक नकलक वर्ष संदिग्ध छैक आ दोसर गोविन्द दास जे १६५० धरि विख्यात कवि नहि भ गेल छलाह तकरे कि प्रमाण? सतरहम शताब्दीक अर्थ १६६६ किछहु ने भ सकैछ, विद्यापतिक पद बंगाल मे तते प्रचलित आ प्रिय छलैक जे मैथिलीक नव सं नव कविक गीत जे पदावली-परम्पराक छल—तकरा बंगाल धरि पहुँचवा मे कनियो समय नहि लगैत छलैक—एहि मे अचरज की?

दोसर तर्क देल गेल अइ जे गोविन्द दास श्री वसन्त नामक कुनू बंगाली कविक चर्च अपन कविता मे बेने छथि, तहिना केने छथि श्री वल्लभ कविकचर्च। श्री वसन्तक नामे ५१ टा पद पदकव्यतय मे पाओल पाओल जाइछ तथा श्री वल्लभक नामे २५ टा पद। जे हेतु गोविन्द दास एहि दुनू बंगाली कविक उल्लेख अपन गीत मे केलनि ते ओ बंगाली छलाह। जे नामोल्लेख मात्रो सं केओ कुनू जातिक हो, तेयो गोविन्द दास बंगाली नहि भ क मैथिलीक भ सकैत छथि कारण ओ पूर्ण निष्ठा आ सम्मानक संग विद्यापतिक स्मरण केने छथि।

एवम् प्रकारे अनेको तर्क उपस्थित कएल गेल-ए। हुनका कुनू बंगालक राज-दरवार सं जोड़ल गेल परञ्च हमरा लोकनि जनैत छी जे मिथिलाक विद्वान समस्त 'भारत' मे पसरल रहलाहए आ विभिन्न राजबाड़ा-मे सम्मानित पद पर आसीन होइत आबि रहलाह-ए। एगो तर्क इहो देल गेल-ए जे जे ओ मिथिलाक रहितथि त कि हुनक एको गो पोथी मिथिला मे सुरक्षित नहि रहैत? मिथिला मे जे हुनक पोथी सुरक्षित नहि अइ से विनु पूर्ण खोजक कहलै केना जा सकैछ? दोसर विद्यापतियोक नीक सं नीक पोथी त मिथिला सं बाहरे पाओल गेल-ए। ब्याल भक्ति तरंगिनी' बंगलादेश मे प्राप्त भेलैक। तें कि विद्यापति मैथिल नहि छलाह?

हिनका लोकनिक अन्तिम तर्क छनि किछु शब्द केँ ल क जे वर्तमान मिथिला मे प्रचलित नहि अइ। जे एकरे आधार मानि लेल जाइ त फेर विद्यापतिक चर्च करय पड़त। 'लखय' शब्द तथा 'पारय' प्रचलित नहि छैक तें कि विद्यापति केँ सेहो मैथिल नहि मानल जायत? जे शब्द केँ आधार मानल जाय त निश्चिते तकर प्रतिशत बहार केल जेबाक चाही आ एहि तरहेँ मैथिली वा बंगला भाषा जकर वेशी प्रतिशत शब्द गोविन्द दासक पद मे हो तकरे महाकवि पर अधिकार द देल जाइक त निश्चिते हमरा लोकनि के आपत्ति नहि

हैत। ओना एहिठाम ई कहब आवश्यक जे पोथी बंगाली विद्वान द्वारा प्रकाशित हेबाक कारणे ओकर शब्द मे पूर्ण परिवर्तन क देल गेल छैक, तथापि वर्तमानोक जे रूप छैक से किन्हु बंगला नहि मैथिलीक बेसी लगै छैक। प्रस्तुत अइ उदाहरण स्वरूप एगो पद :—

रति रस-अवश अलस अति पूर्णित  
रतलि निभृत-निकुञ्ज।  
मधु-लोभे भ्रमर भ्रमरिण भँकर त  
विकशित फल-फूल पुञ्ज।  
विनोदिनी माधव-कोर।  
तमाले बेदल जनु कनक लताविल  
दुहु रूप अति उषोर।  
भुजे-भुजे छन्द बन्द करि सुन्दरि  
श्यामर कोक शुभाय॥  
रति-रसे अलसि दुहु तनु दर-दर  
प्रिय सखि चामर डोछाय॥  
सुवासित वारि झारि भरि राखल  
मन्दिर दुहु जन पास  
मन्दिर निकट पद-तले रतलि  
अनुचरि गोविन्द दास॥

एहि गीत मे 'शुभाय' एगो शब्द अइ जे वर्तमान मैथिली मे प्रचलित नहि। जे मात्र एकरा आधार पर एहि गीत केँ बंगला मानल जाय त 'कोर' शब्द बंगला मे नहि छैक (कोल छैक) 'भरि'क बदला 'भर्ती' करे राखा होइ छैक, दर-दर नहि छैक, दुहु नहि छैक, उषोर नहि छैक (आलो होइ छैक) करिक बदला 'करे' होइ छैक एवम् प्रकारे जे सभ तरहेँ मानियो लेल जाय जे महाकवि गोविन्द दासक जन्म बंगाल मे भेल छलनि, भरि जीवन बंगाले मे रहलाह एक शब्द मे जे ओ बंगाली छलाह तेयो इ त किन्हु प्रमाणित नहि भ सकैछ जे बंगलाक कवि छलाह। गोविन्द दास जे कवि छलाह त निर्विवाद ओ मैथिलीक कवि छलाह, विद्यापतिक उत्तरीधिकारी छलाह। ओना स्वयं मजुमदार महोदय सेहो मैथिल गोविन्द दासक अस्तित्व के स्वीकारित छथि तथा हुनक नामे निछाउरवत दू गोट पद शेष मे प्रकाशित कएनहि छथि।

महाकवि गोविन्द दास मैथिलीक कवि छलाह तकर प्रबल आधार इहो अइ जे मात्र मैथिलीए साहित्यक तेहन विशिष्ट परम्परा छलैक, मैथिलीए साहित्य ओतेक विकशित छल जाइ मे पाद लोकनि सं ल क कवि शोखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर महाकवि डाक, कविपति विद्यापति सन युगपुरुष भ गेल छलाह। बंगाली साहित्यक एहन कुनू परम्परा नहि छलैक आ तें इठात् पहिले-पहिल एहन महाकविक प्रादुर्भाव असंभव बुझना जाइछ।

निष्कर्षतः महाकवि गोविन्द दास जे मैथिलीक कवि छलाह ताह मे सन्देह नहि तथापि बंगाली विद्वान लोकनि पूर्वाग्रह मुक्त भ जे हिनकर सम्बन्ध शोध-खोज करितथि त प्रशंसनीय होइत ने कि निराधार 'अपन' कहि प्रचारित क देनाइ। ओनहुना साहित्यक रतिकक लेल सम्पूर्ण विश्वक साहित्य अपने होइत छैक तें विश्वक समस्त साहित्यकार केँ अपन बुझनाइ उदात्त भावनाक परिचायक थिक मुदा पूर्वाग्रह मे परि मात्र अपनहि टा बुझनाइ संकीर्णताक परिचायक।

—मुजतबा अली

## लाल बुभुकरक चिट्ठी

श्रीमान सम्पादक जी !  
जय मैथिली ।

आगा हाल सुरति ई जे देसकोस मे बलाक अभाव त बुभु जे अकालेक स्थिति छैक। सभ ठाम लोक ब्राहि-ब्राहि क रहल-ए। परञ्च जेना कि कहवी छैक ने जे प्रेत चाहय अशौच, से कहै छी तहिना 'काला-बाजारी' सभ दिन-दुबारा राति-चौगुला चीज-वस्तुक दाम बढ़ा मालोमाल भेल जा रहल-ए। जेना सभ चीज मे आगि लागल होइक।

सम्पादक जी अहां त जनिते छी जे लाल बुभुकर के अपना सं बेसी अनके चिन्ता रहैत छमि। माथ दुखाइ छइ ककरो आ बेचन रहै छथि लाल बुभुकर। ओना हमरा बुझाए जे अपनो लाल बुभुकरक एहि पुराना रोगक शिकार भेल छी। ने त हम पुछै छी जे जे विधान सभाध्यक्ष महामहोपाध्याय पंडित प्रवर श्री राधानन्दन भा. ई बाजिए देलथिन जे 'बज्रिका' अट्टाई हजार वर्लक पुरान भाषा थिक त एहि मे महाभारत केना अशुद्ध भ गेलैक? जे राधाबाबू हमरा सं पहिने सम्पर्क केने रहितथि त हम आर विरिया केँ बुझा दितथिन जे 'मैथिली बोली' एकरा सं प्रभावित नहि भेल अइ—अतल मे एही सं बहार भेल अइ। श्रीमान अपना ओइ ठाम त बड़ प्रचलित कहवी छैक जे 'बाप रहै पेट में आ पुत गेल गया'।

हं त कहैत जे छलौ, रामजीक प्रताप सं आ गुरुगंगा आशीर्वाद सं, ओ मंच रहैक बज्रिकाक जाइपर हिनका बजाओल गेल रहनि, तखन अपने इ आशाए केना कएल जे ओ बज्रिका छोड़ि आन भाषाक स्तवन पाठ करताह? कहवीयो छैक जे जे दिए पाकल आम सह ने होथि ईल भा। मिथिला मे पूर्वापर सं भाट लोकनि होइत आएल छथि, जे भरि सूप के कहै, भरि चंगोड़ी धान देखिते जजमानक सातो पीढीक गुणगान नाभिकुण्ड सं जोर लगा केँ करैत छथि। तें जे राधाबाबू ओहि परम्परा केँ उजागर केलनि त वेजाइए की? कम स कम राधाबाबू ओहि श्रेणीक नहि छथि जे खेताह कतौ आ पढ़ा करैत ककरो दुआरिक। ओना अपनेक एहि कथन सं हम भरि छितनी सहमत छी जे राधाबाबू मैथिल छथि, मिथिलांचलक प्रतिनिधि छथि। परञ्च तहिना इहो सत्य थिक जे ओ मैथिल जनताक बल पर नहि 'नोट अथवा सोंट'क बल पर विजयी होइत आयल छथि। दोसर इहो गौवशाली परम्परा त मिथिलांचल के प्रतिनिधिक छनि जे दिल्ली पटना जाइते मिथिला-मैथिलीक विनाशक बड्यंत्र रचे लगैत छथि। डा० जगन्नाथ मिश्र त एकर जीविते प्रमाण छथि। तें ज राधाबाबू एहि परम्पराक निवाह केलनि त अनुचिते की? हम त ओहि दिनक प्रतीक्षा बड़ व्यग्रताक संग क रहल छी जे राधाबाबूक परम भक्त 'मैथिलीक बयोवृद्ध सेनानी श्रीमान बाबूसाहेब चौधरी' जेना दमदम हवाइ अड्डा पर जा जगन्नाथ बाबू केँ माला पहिरा एलथिन तहिना हिनको पहिरा अओथिन। पताने मैथिलीक कान्ति दूत सुन्दरपुर वाली पंडित श्री देबनारायण

भा एखन धरि किष्क चुप छथि? उदू केँ बिहारक दोसर राजभाषाक घोषणा होइते ओ अपन दुआरि पर जगन्नाथ बाबूक चुमा-ओन दहीक मटकुरी ल केँ केने छलाह से राधाबाबू बेर मे पता ने किष्क पतनुकान नेने छथि?

दोसर बात ई जे राजनीति मे एखन फूसि बजबाक प्रतियोगिता लागल छैक। अपने केँ त बुझलै हैत जे विश्व विख्यात फुसियाह हेबाक कारणे जगन्नाथ बाबू इन्दिराजीक प्रिय पात्र बनल छथि आ तें मुख्यमंत्री सिंहासनाब्द छथि। राधाबाबू सेहो राजनीति करैत छथि आ तें नहि दिल्ली त पटना के प्रधान सिंहासन पेबाक लिखा त हेवे करतनि। तें जे ओ एहि प्रतियोगिता मे फनलाह-ए त वेजाय की? हमरा लोकनि केँ त 'तहेदिल' सं आशीर्वाद करक चाही जे यथाशिघ्र राधाबाबूक लिखा पूर होइन आ इहो 'बज्रिका' केँ बिहारक तेसर राजभाषा घोषित करथि।

हं, आर एगो बात। अपनेक पत्रिका मे प्रकाशित अपन प्रिय बन्धु विश्व वंचकक पत्र अपना नामे देखल। छगुन्ता लागल जे विश्ववंचक जी सन पाकल व्यक्ति एते जल्दी केना 'वंचित' भय गेलाह आ दौआ फेरय पर तुल गेलाह। हमर एगो चटिया लिखने छथि—हजारो साल तक नरगिसु अपनी बेतुरी पे रोती है। बड़ी मुश्किल से होता है, चमन मे दीदावर पैदा ॥ से कहबाक आशय मे तात्पर्यक मतलब ई जे विश्ववंचक जी केँ एते जल्दी नहि घबरेबाक चाहियनि। जे ओ हमर सलाह मानथि त किछु दिनक हेतु लाल बुभुकरक आखाड़ा पर नंडौटा बान्हि उतरथु आ बेयरपनाक अभ्यास करथु। प्रमाण पत्र मेटलाक बाद किछु दिनक हेतु वंचक कुल भूषण डा० जगन्नाथ मिश्रक पाठशाला मे शिक्षा लेथु आ ताईखन व्यावहारिक क्षेत्र मे उतरथु। अन्यथा खाली विश्ववंचक नाम राखि लेने काज चलनिहार नहि, एहिना सभठाम ठकाइत रहताह। हुनका त भरिसक इहो पता नहि हैतनि जे मिथिलांचलक गली गली मे जगन्नाथ मिश्रक पड शिष्य सभ घुरि रहल-ए आ अवसर पविते केहनो दिग्गज केँ चारु नाल चित्त क सकैए। जहां धरि ओ हमरा सलाह देलनिहें, से हुनका बुभुकर चाहियनि जे जे जगन्नाथ मिश्र कुनू अखाड़ाक खलीफा छथि त लालबुभुकर सेहो कुनू अखाड़ाक। एतवे किष्क, बेयरपनाक अभ्यास ओहो हमरे मरवादा पर केने छथि आ एहि तरहेँ हमर पटिया भेलह। तें गुप्त कतौ चटिया सं डेराय? दोसर बात, डर त जगन्नाथ बाबू केँ हेबाक चाहियनि जे कहीं कुसी ने छिना जाइन आ ओ विशंकु बकां बीचे मे लटकल रहथि। लाल बुभुकर केँ कथीक डर? ने भारतक नक्शा पर मिथिला छनि आ ने संविधान मे मैथिली—जे छीनेतनि। कहबाक माने मतलब ई जे जखन घरायीयो लोक हथि-आइए नेने छनि त प्रीति कि चोरक डर भगवो तुकओरलोही नहि? से सम्पादकजी अपने कने ज्ञानभाँक जोग दक हमर प्रिय बन्धु के बुझा दियनि से आग्रह।

पत्रोत्तर नहि पेबाक प्रबल आकांक्षी  
श्रीमान लाल बुभुकर  
बुभुकर ग्रामवासी



## सभा-समिति

कटिहार, २२-२३ मई, १९८२। स्थानीय राजाराम विद्यालयक सभागार मे विद्यापति-स्मृति पर्व समारोह मनाओल गेल। पहिल दिन भाषण, कवि सम्मेलनक आयोजन भेल आ दोसर दिन गीत-नाटक।

एहि आयोजन मे सर्वप्रथम दृष्टि के आकर्षित करैत छल कविपति विद्यापतिक भव्य चित्र जे कलाकार श्री प्रणव कर्मकारक सफल चित्रकारीक परिचयक छि।

दोसर दिन सांस्कृतिक ७-३० सं कार्यक्रम आरंभ भेल स्थानीय कलाकार द्वारा मिथिलाक चाँदीय गीत 'बन-बन मेरवी' सं उत्कृष्ट श्रुतिकारण सुवाकान्त, (रहिनगं) श्री उमाकान्त मिश्र (कलकत्ता) क अतिरिक्त कतिपय स्थानीय कलाकार अपन कल गीत द्वारा लोक मनोरंजन करैत स्थानीय कलाकार श्री यमुना प्रसाद मंडल, तबला श्री लक्ष्मण झा 'सागर' (कलकत्ता) सेहो एगो गीत गबोलनि।

एहि अवसर पर मैथिली मुक्ति मोर्चा कलकत्ताक संयोजक श्री रामलोचन ठाकुर कविपति के अपन श्रद्धांजलि देत उपस्थित जनसमुदाय सं मातृभाषा मैथिली विकासक लेल सभा होइवाक आग्रह केनि तथा मैथिली के व्यवहारिक रूप देबाक अनुरोध केनि।

मंचक संवादन करै रहल छल पुन साहित्यकार श्री जयंत चौधरी। कार्यक्रम सांस्कृतिक १०-३० बजे खेले रहल कारण एकरे बाद मैथिली के विकासक लेल सभा होइवाक आग्रह केनि।

कटिहार सीमावर्ती क्षेत्र होइवाक कारण एहि ठामक प्रत्येक छोट पैघ कवि विशेष महत्त्व लेबैत अछि आ ताह मे कविपतिक स्मृति सर्वोपरि रहैत अछि। परन्तु जेना कि देखल गेल अछि तस्यो संस्थाक कला एह ठाम प्रत्येक कलाकार पर गहर छथि ओ देना अछि तस्यो मे एहि तरहक आयोजन सफलतापूर्वक क भेबाक जरूरत प्रतीत होइत अछि। हुनक संगे मिलि एहि रहल अछि जे 'बन-बन मेरवी' कलाकार द्वारा लोकनि मिथिलाक चाँदीय गीतक मनाई देने छी ओ ओ अह-कहिक हुनक लोकनि नहि कनेत छथि। पत्नी देखि गीत-गायन स्वभावतः ककरो अनुरोधक संगतक तथा बहरिया के निश्चित छगुन्ता लगैत। ओना हम आशा करै जे गायक बन्धुक भविष्य मे अपन एहि खाति के दूर करताह आ एहि संदर्भ मे सजग कार्यकर्ता लोकनि अग्रसरताह। कटिहार क्षेत्र मे मैथिलीक लेल बहुत कार्य केनाइ छैक परन्तु सभ सं पैघ काज छैक जे बाट-घाट सं निरन्तर मेथिलीक पुन स्थापना केनाइ। विस्मय अछि जे मैथिली सेनाजी लोकनि स्मृति सर्वोपरि लिखित नहि रहि मैथिली मे अपन जीवनक समस्त क्षेत्र आ विशेष के बाट-घाट, कोट-कहरी मे स्थापित करताह। एह लेल ते त सरकारी आदेशक अपवा नै। प्रयोजन छैक—मात्र चेतना आ अर्थ विस्वातक लगात छैक आ मैथिलीक विकास क लक्ष्य-संशुद्ध बरातल निर्विवाद इच्छा प्रमाणित होइत।

## मैथिली

साहित्यिक-सांस्कृतिक विकासक आधार आ से भाषाक बिना संभव नहि। साहित्यक बिना चेतनाक विकास असंभव आ अचेतन लोक सं कुनू संघर्ष वा आन्दोलन सफल नहि भ सकैछ। एहि सम्बन्ध मे माओ त्से तुंग कहै छथि—जनता के बिना जग ओने आन्दोलन केनाइ एबमैचर छोड़ि आर किछु नहि थिक—आ जनता के जगेबा लेल ओकरा अपन संग अनबाक लेल ओकरे भाषा मे सम्बोधन करै अनिवार्य। सांस्कृतिक चर्च करै ओ आन ठाम कहै छथि 'असंख्य सेनादल बोगस सेना दल थिक आ बोगस सेनादल कहियो खु के पराजित नहि क सकैछ'।

मिथिला आर बिहारो नहि बीकानो-पार्वतक हेल सेहो आवश्यक अछि आ ते आवश्यक अछि भाषा। भाषा मनुष्यक प्रत्येक क्रियाक संग जुड़ल अछि। अस्तित्व रक्षार्थ आवश्यक अछि संगहि सर्वांगीण विकासक आधार अछि। एकर व्याख्या करैत स्तालिन कहै छथि—भाषा मनुष्यक उत्पादनक क्रिया सं प्रत्यक्ष रूपे जुड़ल अछि। आ मात्र मनुष्यक उत्पादनक क्रिया सं नहि ओकर जिनगीक सभ क्षेत्रक समस्त क्रिया, उत्पादन सं ल क निर्माणक चरम पर्यंत तक। इहो कारण थिक जे समाजवादी देश सभ मे भाषा के अधिकार देल गेल छै तथा ओकर विकासक निमित्त सभ संभव प्रयास केल गेल अछि। एह मे आन्दोलनक बाद गौरवादी भाषा के, कुरा ने त अपन लिपि छल आ ते लिखित साहित्य, लिपि बनबा देल गेल छै, व्याकरण आ शब्दकोश बना देल गेल छै आ एहि मे कतेक एहनो भाषा छल जकर बजनिहारक संख्या हजार मे सीमित छल।

माओ जलन बेर-बेर लेखक लोकनि के जनता संग जेबाक आ ओकरा सं लिख-वाक आग्रह करै छथि त हुनक प्रधान इंगित भाषा दिश रहैछ। एकर लेखक 'पब्लिक कोरिन्' सुवा चाँदीय लेखक (National artist) के परिभाषित करै कहै छथि—सुवा चाँदीय लेखक ओ थिक जे अनिवार्य रूपे अपन लोक संग जुड़ल अछि, ओकर ऐतिहासिक रूप आ पथ सं परिचित अछि समर्पित अछि अपन देशक स्वार्थहित आ अपन अनुभव एवं विचार के अपन मातृभाषा मे व्यक्त करैछ।

जनभाषा के दशैक प्रयास मात्र साम्राज्यवादी धनात्मिक देश मे होइए कारण शोषक-शासक नहि चाहैए जे जनता जागओ/जनता के जगने ओकर आशान सुरक्षित नहि रहि सकै छै। शोषणक पहिया नाम भ-बा सकै छै। तँ दक्षिण अफ्रीका हो वा भारत वा पाकिस्तान—एक दिश सरकार द्वारा जनभाषाक कठोरक प्रयास त दोसर दिश जनता द्वारा अपन भाषाक रक्षार्थ संघर्षक प्रयास रूप देखल जा सकैछ/तथा कथित स्वतंत्रक नाम पर १५ अगस्त १९४७ क जे एहि भारत मे हिन्दी साम्राज्यवादक स्थापना भेल से ठीक एकर विपरीत विभिन्न जनभाषा सभ के उदरस्थ कर' लागल। एहि भू-भोड़ भाषाक विकासक नाम पर कोटि-कोटि टाका पाइन जकां बह्य लागल आ

जनताक खून पसेनाक कमाइ ओकरे कंठ मोकवा लेल खर्च होइत रहल। मैथिलीक संगहि नेपाली राजस्थानी कोंकणी, डोगरी, संथाली आदि कतेको भाषा एहि साम्राज्यवादक प्रत्यक्ष शिकार भेल आ एहि सं मुक्ति लेल, अपन अस्तित्व रक्षार्थ संघर्षरत अछि। तँ आइ प्रत्येक चेतन वर्गक आ विशेषक साहित्यकार वर्गक ई प्रधान कर्तव्य भ जाइ छै जे ओ प्रत्यक्षतः हिन्दी साम्राज्यवादक विरोध करै आ एहि समस्त भाषाक मुक्ति संघर्ष के तबल सफल बनेबाक सभ संभव प्रयास करै—सभ भाषाक प्रतिनिधि ल क संयुक्त-मोर्चाक निर्माण करै अन्यथा मुनि-बीक सुगा ककां साम्यवाद-समाजवादक रट ब्याबि होइत, कार्यत किछु मेनिहार नहि।

—रामलोचन ठाकुर  
(अप्रैल-१२ सं सप्ताह)  
१९८२

## देसिल बयना

पाठकीय परिवारक (संलग्न) सदस्य  
५२. श्री वी० चौधरी, कटिहार  
५३. " महाधर झा, "   
५४. " उपेन्द्र नारायण झा, "   
५५. " नित्यानन्द ठाकुर, "   
५६. " श्रीमती इरा मल्लिक, कलकत्ता

## आदर्श विवाह

बाबू पाली ग्राम निवासी श्री. शुक्रदेव ठाकुरक पौत्री ओ श्री लक्ष्मीकान्त ठाकुरक जेठ कन्या सुश्री सुधीराक शुभ-विवाह महुनमा गामक श्री मानेश्वर मिश्रक एक मात्र पुत्र चिरंजीवी प्रेमकान्त मिश्रक संग बाबूपाली मे भेल। देह प्रयास कइपित कलक सं मुक्त ई विवाह पूर्ण रूपेण आदर्श छल।

## बाल गीत

## चेत कबड्डी

चेत कबड्डी रमना  
सबहक एकहि अक्षना  
सभ अपने केओ नहि अदना  
मायक सन्तति छोट-पैघ के  
के अछोप के बभना।

छोट-पैघ कहि मागद लगावे  
थिक ओ सत्यानाशी  
कान ने कखनो दीहें तों सभ  
सुन बेचन, सुन काशी  
कुदने घर गमारो लुटै  
रखिहें मन, मन रखना॥

एह माय के कष्टा सन्तति  
केओ गोरे केओ कारी  
केओ पढ़ा मे महाचन्दागर  
केओ सुसकौलक टारी  
माइक सिनेह समाने सभ छै  
आर समाने बेदना॥  
—राम लोचन ठाकुर

मैथिली पोथी/पत्र कीनू आ पढ़ू  
नेपाल सं प्रकाशित मैथिली द्वा मासिक  
अर्चना  
संपादक :—राम भरोस कापड़ि भ्रमर  
सरस्वती सदन, जनकपुरधाम मैथिलि + हिन्दी मासिक  
मिथिला दीप  
सम्पादक : बच्चन बिहारो  
१४६, ललितपुर कोलोनी ग्वालियर-४७४००६

## देसिल बयना चन्दाक दर :-

१ प्रति ५०) पइसा  
१ बर्षक ५) टाका  
५ बर्षक २०) टाका

## पाइ पठेबाक पता :-

श्री जनार्दन झा,  
१७६/६, उषा नगर,  
कलकत्ता-७०००६८

अवगोदय प्रकाशन, ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०००३३ क लेख श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा परिचित अछि प्रिन्टिङ ३२ वी वृन्दावन बैशाख-२०३०  
कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक—श्री जनार्दन झा



# समिति रचना

वर्ष—२ अङ्क—१०-११

जुलाई अगस्त, १९८२

मूल्य—पचास पाइ

## सम्पादकीय

### बाजब धिक अपराध

३१ जुलाई १९८२ स्वातंत्र्योत्तर बिहारक इतिहास मे एगो अविस्मरणीय तिथिक रूप मे अंकित होएत। कहबी छैक जे कुकृतिये नाम कि कुकृतिये नाम। से बिहारक वर्तमान सरकार, जकर नेता मातृभक्त-भ्रातृभक्त डा० जगन्नाथ मिश्र छथि, भनहि कुनू कुकृति नहि क सकल हो, परञ्च एकर कुकृतिक से सूची बनाओल बाबू त निश्चित भारतीय संविधान सं मोट पोया तैयार भ सकैछ। एहि मे जून पेव आ जून छोट लेहो निर्णय केनाइ सहज तकिहूँ नहि होएत। धर्म-सम्प्रदायक संग भाषा के जोड़ि मुलमानक भाषा उर्दू कहि तकरा बिहारक दोसर राजभाषा बनओनाइ एहने एक कुकृति छल वा कही घृणित अपराध छल, जकरा एखनो कम सं कम मिथिलाक जनमानस बिसरि नहि सकलए। एमहर ३१ जुलाई के एगो प्रदर्शन भेल विधान सभा मे मात्र ५ मिनटक आ नव विधेयक पास भेल सरकारक आलोचना केनाइ देडनीय अपराध। माने प्रेसक स्वाधीनता के गद्दनि दबा देल गेल। ओ प्रेस जकरा गणतंत्रक प्रहरी कहल जाइछ। आ जखन प्रहरीए नहि रहत तखन गणतंत्रक स्थितिक अनुमान सहजहि कएल जा सकैछ।

ओना त भारतीय प्रेसक चरित्र आ विशेष के स्वाधीनताक पश्चात, बड़ उखल नहि रहलकए। ई उएह प्रेस थिक जे राजकुमारक लखीक रंगक वर्णन करैत नहि अवाइत रहलए आ महारानी साहिबाक सुआक रंग-पाड़िक वर्णन मे पेजक पेज रंगि दैत रहलए-परञ्च एकर विपरीत, भनहि तकर संख्या नगण्य किएक ने होइक, किछु प्रेस अवस्ते अइ जे राष्ट्र आ लोककेँ सर्वोपरि मानैत रहलए आ जखन कवनो ओकरा पर प्रहार भेलक, ओकर विरुद्ध काज भेलकए त ओ सजग प्रहरीक रूप मे 'जगले रहब' टाहि दैत रहलए। आ निर्विवाद एहने प्रेसक मुंहपर ताबा लगैवाक प्रयास थिक बिहार सरकार प्रेसविधेयक—जे 'काला कानून' क रूप मे चर्चत भ रहलए।

कहबी छैक जे कनाह केँ कनहा कहने ओकरा लगैत छैक। परञ्च ई मात्र कहबी नहि कइ सत्य अइ। तें जे जगन्नाथ मिश्र भगवती पर १०८ छांगर केँ चूदा आ ओकर रक्त मे स्नान केलनि—कुनू तांत्रिकक सुभाष पर आ से प्रेतबला छापि देलकैक त हुनका लगनाइ स्वाभाविके। स्वाभाविक छैक जे हुनक सुपुत्री केँ फल्ट क्लास फल्ट मेडको ने केलनि आ त ई लेल ओ जते चक्रचालि चललनि सभ प्रेसवला प्रकाशित क जन-जन तक पहुँचा देलक—तें प्रेस पर खिसिनाइ। ई उएह प्रेसवलाका काज थिक जे हुनक छोट सं छोट किरदानी केँ देखार क देख। (विशेष विवरणक लेल देखू—देसिल बयना—जून, १९८२—डा० जगन्नाथ मिश्र उर्फ थैलीनाथ मिश्र प्रकरण) तें भरिसक जगन्नाथ बाबू सोचने होथि महाराष्ट्रक भूतपूर्व मुख्य मंत्री अंतुलेक स्थिति सं उबरबाक हेतु प्रेसक मुँह बन्न केनाइ छोड़ि दोहर उपाय नहि।

ओना बिहार ई कयना नव नहि बडब बा सकैछ। एहि सं पहिने तमिलनाडक सरकार एवं उड़ीसा सरकार एहि तरहक आइन बना चुकलए। उड़ीसा मे त एक पत्रकारक स्वीक संग जाइ बरताक संग बलात्कार कइल-गेल ओ ओकर इत्या कइल गेल। तकर चर्चे की? परञ्च जगन्नाथ बाबू एमहर किछु दि. सं प्रेस पर बड़ बेसी खिसिआइल छलाह। गत वर्ष त ओ कम सं कम एक दिनक लेल आर्यावर्त इण्डियन नेशन केँ दखल कइए लेने रहथि। परञ्च जखन एहि सभ उपाय सं ओ हारि गेलाह त गत मार्च मे तीनटा अपसर केँ तमिलनाड पठओलनि—ओइठाम प्रेसक मुँह केना बन्न भेलए से उपाय जनबाक लेल आ जुलाईक शेष दिन ओकरा कार्यरूप मे अनलनि।

आनठामक अपेक्षा बिहार सरकार एहि चालिक विरोध बड़ तीव्र भेलए आ भ रहलए। १ अगस्त के बिहारक पत्रकार लोकनि जगन्नाथ मिश्रक बहिष्कार क निर्णय लेलनि। २ अगस्त के लगभग १०० पत्रकार केँ पत्रकार गैलीक पास रहितों संसद मे नहि प्रवेश करय देल गेलनि आ लठिआओल गेलनि। ६ दिसम्बर १९८० केँ मैथिली सेनानी लोकनि अपन वाकस्वाधीनताक दावी मे प्रदर्शन केने रहथि त एहिना लठिआओल गेल छलाह। २ अगस्त केँ एहि स्वाधीनताक दावीदार प्रेसकमी लोकनि अन्यायी जगन्नाथी लठैत द्वारा लठिआओल गेलाह। ३ अगस्त केँ एहि करिया विधेयक विरुद्ध मे लोक सभा सं समस्त विरोधी नेता बाहर भ गेलाह। विदार विधान सभा आ विधान परिषद मे तुमुल नाद चलैत रहल। ५ अगस्त के बिहारक पत्रकार, छात्र-युवा वर्ग, राजनैतिक दलक नेता-कमी (विरोधी), शिक्षक, श्रमिक संगठन सभ के सभ बाट पर पहरा एहि 'काला

संविधान बिनु मैथिलीक ओ  
मानचित्र बिनु मिथिला धाम  
छाहि-जारि सुझाह करब हम  
विद्रोही मिथिलाक जवान

लोक कथा

## एकटा रहथि राजा

एकटा रहथि राजा। ओ जेहने परा-कमी रहथि, तेहने प्रजा वसल। राजाक नाम-यश अपन राज सं बाहरो पसरल छल। परञ्च सभ रहितहुँ राजाकेँ मानसिक शान्ति नहि छलनि। कारण तेसरपन बीति रहल छलनि मुदा कुनू सखा-सन्तान नहि भेलनि। एकरे चिन्ता मे राजा-रानी दुनू बेकती सतत खिन्न रहैत रहथि।

एहिना एक दिन दुनू गोटे उदास बैसल रहथि ता एगो बाबाजी जुमलाह। एका खबरि पबितहि बाहर बा बाबाजीक नीक बकौ स्वागत कइलनि आ इच्छित दान देबाक घोषणा केलनि। बाबाजी एनीक हाथे एक मुठ्ठी अरवा चाउर-टा लेवक इच्छा प्रकट केलनि।

जखन रानी सूप सं एक मुठ्ठी चाउर बाबाजीक भोड़ी में दैत छलथिन त बाबाजीक नजरि रानीक उपर एकटक लागल रहल-परञ्च राजा-रानी धार्मिक प्रवृत्तिक हेबाक कारणे एकरा अन्यथा लेवे किएक करितथि। बाबाजी चाउर केँ अपन भोड़ी मे रखैत राजा सं बजलाह—हे राजा! हम अहां लोकनिक मनक व्यथा बुझैत छी। तें हम जेना कहैत छी तेना करू। आहां लोकनि केँ निश्चित सन्तान लाभ होएत। परञ्च स्मरण राखू जे इ बात तीनू आदमी छोड़ि चारिम नहि जानि सकय। अगिला मंगल दिन बेरखन अहां अपन गाछी जाएब आ सितुरिया गाछ सं एगो आम तोड़ि लायब। मन रहय जे आम माटि पर नहि खसय। दहिना हाथे भट्टहा फेकर आ बाय हाथे आम लोकन आ ओहिना नेने आइन चलि आयब। बाट मे कतबो केओ टोकय त बाजी नहि। रानी मा ओ आम अपन खोंछ मे ल ओ फेर बिलौट-लोढ़ा सं ओकरा कुच्चा बना खा लेती। आर एगो बात—पूर समय भेनहि जे प्रसव करतीह ताह मे प्रथम त बालक जन्म लेत, किन्तु दोसर एगो शंख होएत। ओइ शंख के अहां थो-थोड़ि पक्कि काह पर राखि देवेक आ रोच बांखन ओकरा धू-दीप देवा देब करियेक। अपन बाबाक शेष मे हम जखन धुरव त ओ हमरा द दी। हमर कहल मे मिसियो भरि अत्यथा नहि हो—ने त भयंकर अनिष्टक संभावना।' एतबा कहि बाबाजी विदा भ गेलाह।

कानून' क विरुद्ध अन आवाज बुलन्द केलनि आ ११ अगस्त 'काला-दिवस' क रूप मे पालन करबाक निर्णय लेलनि।

आन्दोलनक चिनगारी नीक जकाँ सुनगि रहलए। आन्दोलन कर्ता लोकनि अपना केँ वेजाय सं वेजाय स्थितिमे लेबैत रहवाक लड़ाइ केँ विजयतोरण धरि ल जेबाक लेल प्रस्तुत क रहलाहए। ओमहर लाठी-गोलीक बल पर चलेवला सरकार सेहो अपन लाठी मे तेल लगा रहलए बन्दुक मे गोली भरि रहलए। बेसी त भविष्ये कहत—परञ्च ई धरि सत्य जे जगन्नाथलोकक समस्त केहनो अन्यायी सरकार केँ भुक्त पड़लए त जगन्नाथ मिसर कुन खेतक मुरे छथि। 'जय प्रकाश-आन्दोलन' केँ एखनो लोक बिसरि नहि सकलए। तखन बिहार के पथ प्रदर्शक कहल गेल छलैक। कि बिहार अपन एहि खयाति केँ पुनः पाबि सकत ?

● जय मैथिली

सन्तान सुखक कल्पना मात्रे सं राजा-रानीक आनन्दक सीमा नहि रहल। अगिला मंगल केँ जेना-जेना बाबाजी कहने रहथिन राजा केलनि आ रानी गर्भवती भेलथिन जे थोड़े दिनक बाद स्पष्ट परिलक्षित भेल। समय पुरला पर रानीक गर्भ सं एगो दिव्य राजकुमार आ दोसर शंख जन्म लेलक। नगर उत्सव सं दलमल्लित भ उठल। फेर नेना दिनानुदिन पेव होइत गेल। एहि तरहें दिन केना बीतैत गेल से हुनका लोकनि के ख्यालो ने रहनि।

किछु दिनक बाद जखन नेना छेदगर भेलक आ अल साए लागलक त एगो अजगुत भेल। राजा-रानीक संचार लागि सभ दिन हुनक सूतबाक घर-मे राखल रहनि। एक दिन जखन कने विलम्ब सं ओ लोकनि धुरथि त देखै छथि जे रानीक थाड़ीक भात छिटल रहनि—जेना कुनू नेना छिटि-छाटि क खेने हो। दुनू गोटे छगुन्ता मे रहथि परञ्च निखुकी हेवे ने करनि। एकर बाद सं ई कम प्रायः चलैत रहल। अचरजक बात ई जे दिन पर दिन भात बेसी खलिआय लागलक। परञ्च ई बात ओ लोकनि बजबो ने करथि।

किछु दिनक बाद राजा कतौ बाहर गेल छलाह। एक राति रानी पलंग पर पड़ल रहथि आ खवासनी संचार लगा गेलनि। हुनकर आँखि कने लागि सन गेल छलनि ता देखलनि जे एगो नेना पीढ़ी पर बेसि क खा रहल अइ खेलाक बाद गिलास सं कने पानि पीवि आ हाथ घो ओ शंख मे घुसिया गेल। रानी केँ भेलनि जे ओ भरिसक सपना देखलनिहुँ मुदा उठला पर संचार देखि सपनाक वास्तविकता पता चललनि—परञ्च फेर ओ चुपे रहलीह। आनदिन त दुनू बेकती एके थारी मे खा छैत छलीह—से आइ एके थारी हेबाक कारणे हुनका मुखले खय पड़लनि।

दोसर दिन जखन एका जुलहा त एनी सभ इतना कइलथि। दुनू बेकती नीलि कोचना कओकनि आ ओइ राति घरे मे मुकाएल रहल। फेर जखन खवासिन संचार लगाक केबाड़ बन्न क चल गेल त थोड़ेक कालक बाद देखै छथि जे ओही शंख सं एक दिव्य नेना बहार भेल आ आसन पर बैसि भोजन क रहल ए। जखन



ओकरा थोड़ेक खायल भ गेले त राजा दोग सँ बहरा लपकि के नेना के पकड़लनि। ओ अकचकावन गेल। राजाक संगदि रानी सेहो जुमि गेलीह। राजा मुखलिन—अहाँ के छी बाउ ? एना चोरा के रोज किएक संचार अइठा देत छी ?

नेना बाजल—हम आन केओ नहि—अहीं लोकनिक छोट संतान थिकी—जे शांख रूप में जन्मल रही। रहल बात संचार अइठेबाक—से संतानक अइठ माँ के त नहि लगवाक चाही। तै इम समदिन माइएक थाड़ी ने खाइत छी। आ चोरा क त हमरा खाइए पड़त—शांख लेट कतौ संचार लगलै ? माइएक दूबो त हम राति में चोराइए क पीवैत रहलहुँ आ माँ ओकरा सपना बुझैत रहलीह।

—किन्तु आव त हम अहाँ के शत्रु मे नहि जाय देव। रानी वजलीह।

—से तइखन हैत जे शांख के तुका क कुनू पेटी-बाकस मे बज क दियौक। ओना महात्माजी त तयो बुझिए जेताह—तखन ?

‘तकर भार हमरा पर अइ’—राजा वजलाह।

ओइ दिन सँ बाउक बाहरे रहय लागल परउच बात फेलि नहि जाय तै राजा दुनू बाउक के महलक भीतरे लेख-घुप, पढ़-लिख के व्यवस्था केलनि। जे जे दिन बीतैक एक दिन सँ राजा-रानीकेँ बड़का सँ छोटका नेनाक संस्कार आ तेजस्विता पर प्रसन्नता होनि तहिना महात्माजीक आगमन सँ सम्भावित अनिष्टक बात सोचि चिन्ता सेहो। आखिर एक दिन महात्माजी आबिए गेलथिन आ अपन धरोहरक याचना केलथिन। राजा-रानी दुनू बेकती हुनका पूर्ण अद्राक संग प्रणाम केलनि आ शांख आनि हाथ मे देलथिन। महात्माजी शांख हाथ मे लिहलि बुझि गेलाह आ आखि लाल करैत वजलाह—राजा ! बात त एहन नहि छल। शांख खाली अइ तै एहि संल सँ जे बहरा एल हो—तकरा शिष हमरा सोझा उपस्थित करू ने त हम शाप देव।

बेचारे राजा के त काटू त शोणित नहि भट द दुनू नेना के उपस्थित करैत वजलाह—हे महात्मा, इएह दुनू संतान थिक—अपनेकेँ जे इच्छा हो चुनि लिअ।

महात्मा छोटकाक हाथ पकड़लनि आ उठि विदा भेलाह। राजा-रानी उदास मने घर जा पड़ि रहलनि।

ओमहर महात्मा जी ओइ बालकक संग गाम-घर सँ बहराईत एगो छोट सन पांतर मे पहुँचलाह, जाइठाम सँ बाउ दू दिस जाइत रहैक। महात्माजी बालक केँ पुछलथिन—बाउ, एहिठाम सँ ई दुनू बाउ हमर कुटी बरि जाइए। एगो ६ मासक आ दोसर बरल दिनक बाउ छैक। छ मासक बाउ मे पर्वत-पहाड़, नदी-नाला त छैके संगहि बाघ-सांपक से हो भय छइ, जखन कि बरल दिनक बाउ निष्कण्टक छैक। आव अहीं कहू जे कून बाउे जाइ ?

महात्मा जी छए मासक बाउ चले ने। बाघो-सांप देखवाक अवसर भेटत आ जल्दी पहुँचियो जयव। बालक बाजल।

महात्माजी आश्चर्यित होइत बालक दिस देखलनि आ वजलाह—चलू, हमरा लोकनि आपस चली। बालक चतुर छल आ

ओकर दाब लहि गेलैक। महात्माजी ओकरा संग फेर राजाक ओइठाम पहुँचलाह आ छोट नेना केँ राखि जेठ जनक माळ केलथिन। शांपक डरे भीतु राजा बिना कुनू आनाकानी केनहि महात्मा जीक प्रस्ताव स्वीकार कए जेठजन केँ संग क देलथिन। महात्मा जी ओकरा ल विदा भ गेलाह।

फेर जखन ओइ पांतर मे पहुँचलाह त महात्माजी ओकरो सँ उएह प्रसन्न केलथिन। जेठका राजकुमार कने ठरपोक स्वभावक छल तै बरल दिनक बाउ जेवाक स्वीकारलक। महात्माजी प्रसन्न भ विदा भेलाह।

महात्मा जीक आश्रम एगो बनघोर जंगलक बीच विशाल महल छल। एगो सुन्दर कमरा मे राजकुमार के ओ राखि देलथिन आ आदेश देलथिन जे ओ अउगर महलक बाहर नहि जाए। जे जेबो करय त सभ दिस जाए मुरा दक्षिण दिस नहि जाए।

महात्माजी सभ दिन प्रातःकाल स्नान पूजा क क बहरा जाथि आ फेर दोसर-तेसर सोभक आपस आवथि। एहि बीच राजकुमार सभ दिस घूमय परउच आदेशानुसार दक्षिण दिस नहि जाय। एक दिन ओकरा इठाल कि कुल्हेक की ने, ओ दक्षिण दिस चल गेल। दक्षिण दिस एगो विराट बड़क गाछ रहैक आ ताइठाम एगो पेघ इनार। इनार मे हुकरी देते ओकर अचरजक ठेकान नहि रहलैक। इनार मे पानि नहि रहैक—खाली लोकक माथ भरल रहैक। राजकुमार केँ देखिते मुँड सभ ठहाका मारि हंसय लागल।

हंसवाक कारण जिज्ञासा केला पर मुँड सभ कहलैक—बाउ, दू दिनक बाद तोरो इएह गति हेतह—तै हमरा लोकनि केँ हंसी लागि गेल ए। जे महात्मा तोरा अनलकहे, से असल मे कसाइ थिक। ओ एहिना गाम घर सँ लोक केँ बन्ना क अनेछ आ महा-कालीक समस बलिप्रदान करैछ। मुँड के एहि इनार मे च देख आ देह केँ माउत राखि देवी के भोग लगवैछ आ अपनो खाइछ।

—मुदा एहि सँ बचवाक उपाय ? राजकुमार आकुलताक संग पुछलैक।

मुँड सभ बाजल—बचवाक उपाय छैक अबस्से, जे तोरा सँ पार लाग ओ तखन। परस शनि छैक आ महात्मा भरि दिन व्रत राखत आ पूजा-पाठ करत। सोभखन ओ तोरा वजओतह—स्नानादि करा नव वस्त्र पहिरा केँ। पूजा जखन भ जेत त देवी प्रतिमाक दहिनाकात बड़का कराह मे तेल टहकैत रहतैक। ओ तोरा देखे लेल कहत जे बाउ देखहक त तेल गर्म भेल वा नहि। तौ जखन मुँही सुका कराह मे देखवह तखन देवीक पथर लग मे तकरा रीखल छैक ताइ सँ तोहर माथ छोपि लेतह। तै तोरा जखन ओ तेल देखय लेल कहत त तौ कहियहक जे केना देखल जाय से कने बुझा देथुन। ओ तोरा देखवैक लेल अपन पूरा गरदिन सुका क कराह मे ताकत आ तो कुर्ती सँ तकरा रीखल छैक ओकर गरदिन पर प्रहार करिह मन राखी जे एके छओ मे ओकर माथ देह सँ कात भ जाइ आ माथ केँ वाम हाथे लोकि लिह आ कालीक पथर पर राखि दियहुन। फेर ओकर शरीर के कराह मे द टुकड़ी-टुकड़ी काटि खूब नीक

जकां भुजि देवी के बड़का थाड़ी मे भोग लगा दियहुन। सभ काज विधिवत भेने देवी प्रसन्न भ वरदान माँले लेल जे कहथुन त पहिल वरदान हमरा लोकनिकेँ जीवित करवाक मजिइ, दोसर देवी केँ एहि अभि-शत जगह छोड़ि आनठाम चलि जाइक, आ तेसर अपन जे मन होअ। तीन स बेसी नहि देवाक चाही।—संगहि मन राखी जे महात्मा बड़ पहुँचल छथि—तोहर माव-मंगिमा सँ ओ बुझि ने जाथुन। आव तो बह। हमरा लोकनिक दुःखकामना तोरा संग अइ—नीके ना रहने काबू राति मे भेट होइत।

राजकुमार अपन कमरा मे घुरि आयल। ओइ राति ओकरा नील नहि भेलैक। ओ बड़ व्यग्रता सँ शनि दिनक बाउ जोहय लागल। परउच ओ तते सतर्क छल जे महात्माजी केँ एहि सभक भनको नहि लगलनि।

अन्ततः शनि दिन एलै। महात्माजी भरि दिन पूजा पर बैसल रहलाह। राजकुमार केँ सेहो उपास कराओल गेलैक। आ ठीक जखन सोभ पड़लैक—महात्माजी स्नान कइ गेवआ वस्त्र बारब केलनि आ राजकुमार के सेहो स्नान कराव नव वस्त्र पहिरवा देलथिन। ओ फेर पूजा पर बैसलाह त राजकुमार केँ सेहो अपना दगल मे बैसा लेलनि। अगमग पहर भरि पश्चात महात्मा जी ध्यान तोड़लनि आ राजकुमार दिस देखैत वजलाह—बाउ देखियौक त जे कराहक तेह गर्म भेल वा नहि। राजकुमार केँ त जेना वाण मारि देखलैक। किन्तु ओ अपना केँ एहि स्थिति सँ मुकाबला करैक हेतु तैयार केनहि छल। भट द बाजल—त, भ गेलैक। महात्मा जी ओहिना शान्त भावें कहलथिन—कने उठि केँ देखियौक ने।

राजकुमार उठि केँ दूरहि सँ देखि बाजल—खौलैत छैक।

‘एहिना लोक देखैत छैक ?’—महा-त्माजीक शिंकायत भेलनि।

राजकुमार वेश गम्भीरताक संग बाजल—समा करव, हमरा नहि बुझल अइ। एक खेप जे अपने देखा दी त फेर भूल नहि होइत।

महात्माजी तरुआरि सँ आँखि हटा राजकुमार के देखैत आस्ते सँ उठलाह आ कराहक लग जा पूरा गरदिन नमरा कराह मे तकैत वजलाह—हे एना.....

एहि बीच राजकुमार तरुआरि ल हुनक माथ देह सँ फराक क देलक। ओ अपन बात पुराओ ने क सकलाह। आ जेना मुँड सभ कहने छलैक वाम हाथे माथ छोड़ि देवीक पथर पर राखि देखलैक। भरि दिन सखल रहलाक बादे जानि ने कथय सँ ओकरा ओतेक कुर्ती आ जोर आवि गेलैक। ओ महात्माजीक छपट करैत देखैक उठा कराह मे च देलक आ ओही मे तरुआरि सँ छोट-छोट टुकड़ी काटि नीक जकां भुजि थाड़ी मे ल भगवतीक सामने परसि देलक आ कलजोड़ि बाजल—माँ भगवती जे कुनू गलती भेल हो त नेना जानि क्षमा करव अहाँ के प्रसाद परसल अइ—भोग लगाउ।

एतवा कहिते एक अद्भुत शब्द सँ मंदिर गनगना गेलैक आ सभ दीप मिभ गेलैक। राजकुमार डरे संवस्त—जाइठाम

छल ताहीठाम कल जोड़ने ठाढ़ भेल रहल। कनेके कालक बाद जेना भगवतीक शब्द ओकरा सुनाइ पड़लैक—आइ सरिपहुँ तौ स्वादीष्ट मांभ भोग लगओलै। बहुत दिनक पश्चात् आइ मन तृत भेल। आइ तोरा जे वरदान लेवाक छौक माँडि ले।

राजकुमार बाजल—माँ ! जे सरिपहुँ एहि अंगोच पर प्रसन्न छी त हमरा तीन गोट वरदान दिअ। पहिल त ई जे महात्मा जी द्वारा बनेक लोक के काटि अहाँक भोग लगओल गेल-इ आ ककरा लोकनिक मुँड दक्षिणवर्तिका इनार मे पड़ल छैक ओकरा सभ के बीचा दियौक। दोसर—अहाँ एहि अभिमत मंदिर केँ छोड़ि आन ठाम चल बाउ आ तेसर जे जखन हमरा कुनू गाढ़-विपत्ति पड़य आ अहाँ के स्मरण करी त अहाँ उपस्थित होइ।

भगवती कहलथिन—तहिना हैत। आ फेर एकटा विचित्र सन शब्द भेलैक—दीप सभ अपनहि जरि गेलैक आ चारुभर ततेक इजोतसन भ गेलैक जेना दिन होइक। राजकुमार ओहिना मंदिर सँ बहरा इनार लग गेल त सभ ओकर स्वागत केलक आ बहार करैक लेल होरीक व्यवस्था करावक आग्रह केलक। राजकुमार फेर मंदिर मे गेल आ कतेक तकलाक बाद एगो मोटगर रस्ती भेटलैक—जाइ छक सभ केँ ऊपर केलक। सभ ओकरा घेरि लेलक आ जेना एगो अभिनव उत्सवक रूप ल लेलक। देखैत-देखैत राति बीति गेलैक आ पूवकात मे सुषज भगवान उगि एलथिन। तखन राजकुमार के भूखक अतुभव भेलैक। सभ केओ मीलि मंदिर मे आयल—भोजन बना बनभोज केलक। सभक संग परिचय-यात भेलैक—तखन राजकुमार जनलक जे ओ सभ कुनू ने कुनू देशक राजकुमार छलैक। सभ बाइकाल इकरा अपना ओइठाम जेवाक नोट देखलैक। छगे ने घोड़शाला छलैक जाइ मे महात्माजी विभिन्न देश सँ नीक घोड़ा संग्रह केने छलह। सर्व प्रथम राजकुमार केँ मनोदुःख घोड़ा चुने लेल कहल गेलै आ फेर सभ केँ सभ एक-एक टा घोड़ा पर चढ़ि अपन-अपन देश विदा भेल। राजकुमार सभ के विदा क सोचलक—घर त जेबे करव, किएक ने आर कने दिन-दुनियां देखल जाय। ई सोचि ओ घोड़ा पर चढ़ि विदा भेल—जेम्हरे घोड़ा ल जाय। ओइ अभिशप्त जगह पर एक मात्र घोड़ा—जे ककरो कान मे नहि लगलैक—घात चढ़ए लागल.....

बाइत-बाइत जखन ओ कतेको दूर गेल त बाउ मे दू गो बाघक बन्ना खेलाइत भेटलैक। जेठका राजकुमार सँ कहलैक—हे राजकुमार, हमरो अपना संग नेने ने चढ़।

राजकुमार बाजल—तौ छै त बाघ, के जानय कहीं हमरे पर ने चोट करे।

बाघ कहलैक—हे राजकुमार, हम बाघ क बन्ना अबस्से छी—मुदा विश्वासवात नहि करव। बेर विपत्ति मे मदतिए करव।

राजकुमार के मन मानि गेलैक। ओकरा घोड़ा पर बैसा लेलक आ विदा भेल। छोटका बाघ उदास भेल देखैत रहल।

ओ सभ आर जखन किछु दूर गेल त एगो गाछक डारि पर दू गो बाघक बन्ना



खेलाइत छल। फेर जेठका बाजल—हे राज-कुमार हमरो अपना संग नेने चले ने। छी त हम बाभ विदे, मुदा तयो कहियो काज मे लागि सकै छी।

राजकुमार ओकरा दिव देखलनि आ कहलथिन—चल आ बेस एही घोड़ा पर आ ओकरो बैसा लेलनि। छोटका फेर खिन मने हिनका लोकनिक बाट दिस तफैत रहल।

जाइत-जाइत जखन सोभ पड़ि गेलैक त राति-बीच विश्राम कर लेल राजकुमार एगो गाम मे पहुँचलाह। गामक कात मे एगो धोबीक घर रहैक। धुइछुइछा एगो बुढ़िया के ठाढ़ देखि ओ कहलथिन—गे मौसी, राति बीच हमरा रह्य देवे। भोरे फेर त चलैत जायब।

बुढ़िया बाजल—रहए किएक ने देव। अहाँ कि हमर घर उठा कल जाइब। बड़ भाग सं ककरो ओइठाम बेओ अन्वगत अवे छइ। रहू ने।

बुढ़िया एगो पटिया आनि आबन मे ओछा देलकनि आ एक छोटा पानि आनि देलकनि। राजकुमार गोठला घरक ओसारा से घोड़ा के बाहिं हाथ-पहर पो पटिया पर बैसि गेलाह। कात मे बाघक आ बाभक बच्चा पड़ि रहलनि। बुढ़िया मानव-भात मे लागि गेल। मुदा ओ जते बेर घर जाय त कानय लागय आ आबन आवय त हंसय लागय। राजकुमार के ई देखि बड़ छरुन्ता लगलनि। अन्ततः ओ पुछि देलथिन—मौसी एगो बात-पुछियौक?

—किएक ने पुछब? बुढ़िया बाजलि।

राजकुमार पुछलथिन—तौ जते बेर घर जाइ छै त कानय लगै छै आ आबन एने हंसय लगै छै—एकर की कारण?

बुढ़िया बाजलि—बाउ, अहाँ एक दिनक पाहुन छी, ई सब बुझि क की करवैक।

राजकुमार के बड़ हठ केला पर बुढ़िया कहलनि—बाउ, हमरा एके गो बेटा अइ, जेकर काहि गौना छइ—आइ बरियाती गेलै ए। तँ ओही खुशी मे हम जखन आबन अवे छी त हंसै छी। मुदा परस हमर बेटा देख पेट मे चलि जाएत सेह सोचि क कनैत छी—जखन घर जाइ छी।

राजकुमार आश्चर्य प्रकट करैत पुछलथिन—देख पेट मे। ई देख की मेलेक?

बुढ़िया बाजलि—से अहाँ केना बुझबे। बुझैत छैक एहि नगरक लोक, जकर तँ बेटा ओकर पेट मे पड़ि चुकल छैक। राजा क काबूत छैक—बेरी-बेरी सभक घर सं एक गोटे क सभ दिन देखक पेट मे जेतैक। से नहि भेने त देतबा एके दिन मे कतेको के खा जाइ छलै।

राजकुमार कहलक—ठीक छै—परस तोरा बेटाक बदला मे हम जाएब, मुदा ई बात तौ कतौ बाजै नहि, आ ने एखन सं कनवे कर।

बुढ़िया कनैत बाजलि—से कोना हैत बेटा—अहूँ त ककरो बेटे हैवे ने। हम अपन बेटा खातिर अहाँ के कोना मरवा देव?

—आइ सँ हमरा तौ अपने बेटा बुझै। हम तोरा मा कहबौक। मुदा ई गप्प दोसर केओ नहि बुझै।

बुढ़िया मानि त गेल मुदा ओकरा मन मे कचोट रहबै करैक। ओमहर राजकुमार

एक बेर फेर व्यग्रताक संग परसूक बाट जोइय लगलाह। बुढ़िया जखन चैन सं घर मे भास करय लागलि त राजकुमार बाघ सं पुछलनि—बाउ, आब कहै—देख सं केना सामना करबिही?

बाघ बाजल—हम लपकि क ओकर बाइ घ लेबे आ टस स मस नहि होमय देबे।

बिनु पुछने बाभ कहलकनि—हम त फट द दुनू आंखि पोजि देबैक।

राजकुमार बाजलाह—तखन हमरे तब-आरि सं ओकर घंट कटैत कते देरी लागत। मुदा सभ केओ सावधान भ जाइ जो।

राति मे भोजन भात क सभ सूतल आ भोर मे राजकुमार घूमि-फिरि नगर दर्शन केलक आ फेर राति मे बुढ़ियाक आबन जा विश्राम। भिनसरे डिगडिगिया पड़लैक जे आइ बकरा पारी छैक से पुबुरिया मोल-रिक भीड़ पर देखराब छै ठीक समय पर चले जाय ने त राजा ओकरा बाळे-बच्चे भाकसी भोका देथिन।

राजकुमार तैयार भेल। घोड़ा पर बाघ आ बाभ पहिने सवार भेल आ ओ बुढ़िया सं आशीर्वाद लेलनि। बुढ़िया कनैत बाजलि—बेटा हमरो अरदा ल क तौ जीबै-मुदा मन कहैत छलै जे ओ सुरत नहि। राजकुमार विदा भेल—पुबुरिया पोखरि दिस।

राजकुमार जखने पोखरिक समीप पहुँचल त ओकरा भयंकर गर्जन सुनाइ पड़लैक जकरा ओ देखक गर्जन मानि आर सतर्क भ गेल। जखने भीड़ पर पहुँचल त ओ विशालकाय विकराल देख मुह बाचि छुटलैक। बघवा लपकल। उड़ल बाभ। आ चमकि उठलैक राजकुमारक तब-आरि। दक्षिण में दिवरा भीड़ सन देखक लहास छै भ गेलैक आ शोणितक बोमकार छूटय लगलैक। राजकुमार अपन संगीक संग दोसर दिस विदा भ गेल।

राजकुमार फिरलो ने छल मुदा नगर मे देखक मरवाक खबर पसाही जकाँ पसरि गेलैक आ कतेको लोक देख के मारनिहारक रूप मे अपना के प्रचारित करैत राजदरबार मे हाजिर भेल। एकर कारण ई छल जे राजा देख के मारनिहार के आधा राजक संग अपन बेटी बियाहि देबाक प्रतिज्ञा केने छल। मुदा दावीदारक संख्या बेटी देखि हुनका सदेह भेलनि आ तँ आइ ककर पर छलैक तकर पता लगवैत धोबिनियाक ओहिठाम सिपाही पठाओल गेल। सिपाही धोबिनिया के पकड़ि दरबार मे उपस्थित केलक। राजा पुछलथिन—आइ तोहर बेटाक पार छलौक, ओ गेल छलौक कि नहि?

धोबिनिया बाजलि—महाराज, हमर बेटा काहि गौना कराक आयल-ए तँ हमर बहिनपुत ओकरा नहि जाय देखक आ ओकरा बदला मे अपने चल गेल।

राजा पुछलथिन—ओ छोक कहाँ। देखक पेट मे हैत, आर कतय। एतबा कहि ओ हवोटकार भ कानय लागलि। राजा ओकरा संखना देत कहलथिन—आइ देख मारल गेल-ए मुदा के मारलक तकर निस्तुकी नहि भ पबैछ। तँ तोहर बहिनपुतक जरूरति। तौ जो, मुदा जाधरि ओ नहि अवेछ तोरा घर पर सिपाहीक पहरा रहतौक आ ओकरा अविदे एतय पठा दही।

राजा पुछलथिन—ओ छोक कहाँ। देखक पेट मे हैत, आर कतय। एतबा कहि ओ हवोटकार भ कानय लागलि। राजा ओकरा संखना देत कहलथिन—आइ देख मारल गेल-ए मुदा के मारलक तकर निस्तुकी नहि भ पबैछ। तँ तोहर बहिनपुतक जरूरति। तौ जो, मुदा जाधरि ओ नहि अवेछ तोरा घर पर सिपाहीक पहरा रहतौक आ ओकरा अविदे एतय पठा दही।

राजा ओकरा संखना देत कहलथिन—आइ देख मारल गेल-ए मुदा के मारलक तकर निस्तुकी नहि भ पबैछ। तँ तोहर बहिनपुतक जरूरति। तौ जो, मुदा जाधरि ओ नहि अवेछ तोरा घर पर सिपाहीक पहरा रहतौक आ ओकरा अविदे एतय पठा दही।

धोबिनिया के नेने एमहर सिपाही सभ ओकरा घर पहुँचल त ओमहर सं राजकुमार सेहो जुमि गेल। ओ अविदे हंसैत बाजल—मौसी मधुर खुआ। आइ तोहर देतबा के यमपुर पठा देलैक। आइ सं ककरो सँ-बेटा ओकरा पेट में नहि जेतैक।

सिपाही सभ आश्चर्य सं ओइ विचित्र राजकुमार के देखलक जकरा घोड़ा पर बाघ आ बाभ शोभायमान रहैक तथा तब-आरि एखनो शोणित मे रंगल रहैक। धोबिनिया खुशी सं राजकुमार के पजिया ओकरा चुम्मा लेत राजाक आदेश सुना देलैक। राजकुमार सिपाही सभक संग राजदरबार बिदा भेल।

राजकुमार के दरबार पहुँचिबे मुहुरा दावीदार सभ सहटि गेल। राजकुमार सं गप्प केलाक बाद राजा विश्रवत भ गेलाह जे देखक मारनहार ई युवक धोबिनियाक बहिनपुत हो वा नहि कुनू देशक राजकुमार थिक। ओ अपन बचनक अनुसार राजकुमार क संग अपन बेटी के बियाहि आधा राज दय देलथिन आ मुहुरा दावीदार सभ के पकड़ि फाँसी देबाक आदेश सुना देलथिन। राजकुमार स्त्री आ राज पावि चैन सं रहय लगलाह।

एहिना मास ६ मास बीति गेल। आब राजकुमार जेना घर-आबनक वातावरण सं उबि गेलाह। एक दिन ओ राजाक समक्ष शिकार खेलाय जेबाक प्रस्ताव रखलनि। राजा एहि प्रस्ताव के स्वीकार करैत सुभाव देलथिन ओ सभ दिव शिकार खेलथि, मुदा दक्षिण दिस मुलियो केँ ने जायि। राजकुमार सुभावक पालन करैक बात गछि तैयारी मे लागि गेलाह। राजा हुनका संग आर किछु चतुर शिकारी केँ तैयार कए विदा केलक। संग मे राजा बाजा से हो रहैक।

राजकुमार भरिदिन घोड़ा दौड़वत रहलाह परञ्च एकोटा शिकार हाथ नहि लगलनि अवरजक बात त ई जे जते जे शिकार उठैक से दक्षिण जंगल दिस पड़ा जाइ—आ ई अपन सन मुह लेने छुरि आवथि। दिन लगचिआयल जाइत छलै। अन्ततः ई निर्णय लेलनि जे आव जे कुनू शिकार भेटतनि—से जतय किएक ने जाओ ई पछोर करतह आ बिनु मारने नहि फिर-तह। संयोग सं एगो हरिण हिनका देखे छनि आ ओ पाछा केरनि। हरिण सोने दक्षिण दिस पड़ाइल आ इहो पछोर केने गेलाह। आन सभ शिकारी कतय छुटि गेल से पतो ने लगलनि। ओमहर सूर्य लवंगु करैत रहै आ तखन हरिण हिनक आंखि सं अढ़ भ गेलनि। एमहर पियासे कंठ सुखा रहल छनि। किछु दूर पर एगो पोखरि सन बुझना गेलनि आ ई ओमहरे घोड़ा दौड़लनि। ठीके एगो विशाल पोखरि रहैक मुदा चारु कात सं घेरल—मात्र एक टा बाट—जल-तक जेबाक सिद्धी। राज

कुमार घोड़ा सं फनलाह आ खट-खट सिद्धी उतरि जइखन आंजुर मे जल लेवय लगलाह तइखन दोसरकात बैसल एक रूपती कुमारि कन्या पर नजरि पड़लनि जे हिनका हाथक इशारा सं जल नहि पीबाक लेल कहि रहल छलनि। राजकुमार कातर दृष्टि ओकरा दिस तकैत अनुनय केलथिन—हे देवी। पियासे हमर कंठ सुखा रहल-ए आ मन व्याकुल भेल अइ। जं शिघ्रे जल नहि पीवि

सकलौ त पाणे छुटि जायत। एहना अवस्था मे अहाँक निषेध कि उचित भेल?

युवती बाजलि—हे आगन्तुक, हम आहाँक स्थिति बुझि रहल छी, परञ्च हमरा संग बाध्यता अइ।

—जं कुनू असुविधा नहि हो त कि हम ओहि बाध्यताक सम्मुख जानि सकैत छी? राजकुमार पुछलथिन।

युवती बाजलि—जं अहाँ जानए चाहैत छी त सुनू। अहाँ देखि रहल छी जे हम कुमारि छी आ हमर एकमात्र सम्बल ई पोखरि थिक। हम प्रण केने छी जे एहि पोखरिक उपयोग उएह व्यक्ति करताह जे हमरा संग विवाह करवाक लेल राजी होथि। आ हमर विवाह हुनके संग होएत जे हमरा पाशा खेलाय मे हरा देथि। कि अपने एहि लेल तैयार छी?

राजकुमार प्यासे व्याकुल छलाह। ओ पाशा खेले लेल तैयार भ गेलाह। युवती कहलकनि—आ जं अपने शरि बाइ तखन?

तखन की? हुनक प्रश्न भेलनि।

तखन हम अहाँ के, अहाँक घोड़ा, बाघ आ बाभक संग पाथर बना एहि भीड़ पर स्थापित क देव। बाजू तैयार छी?—युवतीक प्रश्न छलैक।

राजकुमार स्वीकृति दय पाशा खेलाय लेल बैसि गेलाह। पाशा तीन बेर चलल परञ्च तीनू खेप राजकुमार हारि गेलाह। युवती हुनका सभ के पाथर बना देलकनि।

ओमहर जं जं राति बीतै राजा-रानीक संगहि राजकुमारक पत्नी चिन्ता सं व्याकुल रहथि। महल मे कला-रोहटि आरम्भ भ गेल आ भोर होइत-होइत सगरो हल्ला भ गेलैक जे राजाक जमाय जे काहि शिकार खेलाय गेलथिन से नहि फिरलथिन। मरिसक दक्षिण भर चल गेलथिन आ तँ फिर-वाक आशाओ नहि।

ओमहर जे मुह लभ नवजीवन प्राप्त क केँ अपन-अपन देश फिरल छल अपन-अपन जीवाक खिस्ता लोक के कहैक। ई बात पसरैत-पसरैत राजकुमारक माय-बापक कान तक गेलैक। ओकर छोटका भाइ के जखन ई रहस्यमय घटनाक पता चललैक त ओ माय-बाबू सं प्रस्ताव केलक—भाइ के खोज मे जेबाक। पहिने त राजा-रानी आनाकानी केलथिन परञ्च सोच मे अनुमति देलथिन। छोट राजकुमार घोड़ा कलक आ बिदा भेल। एहि लेन ओ बर्र दिनक बाद बेलक कारण ओकरा मन छलैक जे उ नाच क नाच जेबाक गप्प कहलक बाद महलना जी ओकरा आपस द बदला मे जेठ भाइ के ल गेलथिन। आ जेठ भाइ निश्चित बर्र दिनक बाद जायब स्वीकारने होएतैक तँ ल गेलथिन। परञ्च बर्र दिन बाद ओकर सरैसा घोड़ा मात्र एक मास मे चलि गेलैक। मंदिर धरि जेबा मे असुविधा नहि भेलैक कारण ओ रास्ता मंदिर तक जाइत रहैक। मुदा मंदिर ओकरा एकदम सुन्न-मशान बुझलैक जेना कतेको बर्र सं एहिठाम लोक नहि आयल हो। आ चारुकात घूरि-फिरि देखि लेलक आ जाइ बाटे आयल छल से बात छोड़ि जे एकटा दोसर बात रहैक ताइ बाटे घोड़ा हँकलक। जाइत-जाइत जं किछु दूर गेल त जंगल सं एगो बाघक गर्जन सुनेलै। ओ सावधान भ तब-आरि धेलक ता बाघ बहुत लग आवि गेल रहैक। बाघ



कहलकै—हे तेजहरी युवक, हमरा लेल तसभारिक प्रयोजन नहि। असल मे आइ सं कतेको दिन पहिने अहीसन एगो राजकुमार एहिना घोड़ा पर चढ़ल जाइत रहति। हमर जेठ भाइ हुनका अपन संग ल जेवाक आग्रह केलकनि आ ओ लेने गेलथिन। तहिवा सं हम एसगरे एहिठाम ओकर फिरवाक प्रतीक्षा करत छी से जे अहाँ उइह व्यक्ति छी त हमर भाइ कहाँ अह ?

राजकुमार कहलथिन—हे वनराज हम त ओ व्यक्ति नहि छी—तखन म लेखे जे ओ हमर भाइ रहल होथि, बिनकर खोज मे हम बसल छी। देखत-सुनत मे हम हुनका एके रंग छी। वीर हेवन कारणे नाने लेख ओ लेख जा हम छोट छी।

बाबू बल्लभ—तखन हमर निवेदन जे हमरो अपना संग लेने चली। केर विनति मे हम अहाँक मदति करव।

राजकुमार के मन मानि गेलनि आ ओकरा अपना संग ल लेलथिन। किछु दूर गेलाह पर एहिना एगो गाछक डारि सं बाभ भण्ट भारि आएल आ बाधे जका पूर्ण वृत्तान्त कहि संग ल जेवाक आग्रह केलकनि। राजकुमार ओकरो संग ल विदा मेलाह।

एहिना धुमैत-फिरैत एक दिन राज कुमार ओही राजाक नगर मे पहुँचलह जाइठाम हुनक माइक बिबाह मेल रहनि। नगरक कते मे घोबिनियाक घर रहैक। दूरे सं देखि घोबिनिया हिनका चीन्हि गेल—माने जेठ राजकुमारक रूप मे। आबन मे पटिया ओछा हिनका सं हाव-समाचार आ निपचा हेवाक मादे पुछय लगलनि। ओमहर ओ अपन बेटा के राजा क ओइठाम पठा देलक—हुन समाचार देवा लेल।

घोबिनियाक मुँह देल्य मरवाक कथा आ राजाक बेटी सं विवाहक कथा तथा शिकार पर जेवाक कथा सब जेना राजकुमार क लेल बुझौअलि होइत, मुदा एते त निस्तुकी भइए गेलनि जे हुनक भाइ एहि ठाम तक आयल छलथिन आ उइह राज कथा सं बिबाह केने रहथिन। परजब भाइ के खोजबाक समस्या रहि रहलनि। एही गुनधुत मे रहति ता राजाक सिपाही तम बुमि गेल आ हिनका ल गेलनि। राजा-रानी कनेत-कनेत बताइ लन मेल। ई कतबो कहथिन जे हम नहि छी, ओ हमर भाइ छल हेताह—केओ माननिहारै नहि। एहिना ओजन-भात मेल आ हिनका सुत-बाक व्यवस्था धरे मे भेलनि। राजकुमारी अविने कानि-कानि नाना उलहन उपराग देवय लगलथिन आ लाख बुझओलो पर नहि बुझलनि जे ई हुनक स्वामी नहि छनि। आकार-प्रकारक एहन सामान्य दूत भाइ मे रहति जे हिनक बात पर ककरो विश्वास नै होइक। अन्ततः शरीर खरापक बहना बना कते संपत द क राजकुमारी के एक रातिक खातिर फराक सुतबाक आग्रह केलथिन जे बाध्य भ हुनका माने पड़लनि।

भोरे उठि राजकुमार शिकार पर जेवाक आज्ञा राजा सं मळलथिन। राजा कहलथिन जे एक खेप शिकार खेलाइ लेल गेलाह सेत एते दिनक बाद किण्ण ओ फेर आइए शिकार मे केना जेताह। मुदा राजकुमार तते ने हठ केलथिन जे बाध्य भ राजा के आज्ञा देमय पड़लनि। जाइत-जाइत राजा कहलथिन—सभदिस जइहवि मुदा दक्षिण दिस कुनू हालत मे नहि जाइक। संगहि किछु चतुर शिकारी के संग ल जाथि। मुदा राजकुमार असगरे जेवाक बात कहलथिन आ घोड़ा हकलनि।

जंगल मे प्रवेश करिते ओ सोभे दक्षिण दिख घोड़ा दौड़लनि। ओ घोड़ा दौड़ने जाइथ मुदा जंगल जेना कुनू ओरे-छोड़ ने भेटनि। आखिर हुनका पियास लगलनि आ से तते जोर सं जे मन मेंछन्त भ गेलनि। आ चावभर बलकरक तलाश मे नजरि लिहौलनि त किछु दूर पर एगो पोखरि देखल पड़लनि। घोड़ा के आर जोर सं हाँकि पोखरि पर पहुँचलह आ भीड़ पर घोड़ा क्वा बाट पर उतरिते केर ओही कुमरि कथा पर नजरि पड़लनि। सब चीजक धरि ओ युवती ओहिना हिनका आ लखनि आ एही एही होइत राजा केला लगलह। तीन केन युवती हारि गेल आ शतक अंतुवन ई युवती के पत्नी क्वा लेलथिन। युवती अपनहि हाथे हिनका पानी पियोलकनि। त युवती सं कहलथिन—हे रूपसी ओना त हम अहाँक सम्भव मे किछु नहि जनैत छी परजब जखन पत्नी बनाइए लेल तखन जनबाक प्रयोजनो नहि। चल् आव हमरा लोकनि एहिठाम सं चली। दुनू गोटे विदा मेलाह त युवतीक नजरि ओह चाव पाथरक देरी पर अंकि गेलक। राज-कुमार क्वा करैत कहलथिन किछु ताकि रहल छी की ?

युवती कहलनि—हे पतिदेव अहाँ सं काय की ? किछु दिन पहिने यननेन अहाँ कन एगो लोक एहिठाम आयल छल—बहिना अहाँ मियासे संवध रही तहिना ओहो छल। अहीसन घोड़ा पर तबार आ ओकरो संग एगो बाघ आ एगो बाभ रहैक। जे सच पूछी त अहाँ के देखिते हम पहिने त भ्रम मे पड़ि गेल छी। त सं कहैत छी जे बेचारा तीन खेर पाया हारि गेल आ शतानुसार हम ओकरा लोकनि के पाथर बना देलियेक। ई जे देखैत छी से उइह चाल पाथर थिक।

एतवा सुनिते त राजकुमार सब रहि गेल। ओ मने मन विचारक जे हो न हो ओ ओकरे लेट भाइ छल होइतैक जका खोज मे ओ पर सं बहार मेल अह आ ताकि क संग ल जेवाक वचन मा-बाबू के देने छैक। राजकुमार के एना चिन्तामन देखि युवती टोकलकै—इठालू लगेछ जेना अहाँ कुनू चिन्ता मे डूबि गेल होइ। कि हम नहि जानि सकैत छी ?

राजकुमार बाजल—जखन अहाँ हमर ल्पी छी त निश्चिते अहाँ के सब जनबाक अधिकार अह आ हमरो कर्तव्य जे किछु नुकाबी नहि किन्तु अहाँ के जनने कि समस्याक समाधान भ सकैल ?

युवती बाजिथ—बिनु बुझने हम कहबे की कंरी तखन एतेधरि अवल्ये जे हमरा जे जानो देने अहाँक समस्याक समाधान होइत त हम इच्छे-इच्छे द देव। एक नारीक लेल एहि सं पेश गर्वक बात की होइतैक जे ओ अपन स्वामीक लेल अपन जान अर्पित क देलक।

राजकुमार बाजल—हे प्रिये जे अहाँक कथा सत्य त एहि चाव पाथर के अहाँ पुनः जीवित बना दियौक कारण हमरा पूरा विश्वास भ रहलए जे ई हमरे जेठ भाइ छथि।

युवती बाजलि—एहि छोट सन बात लेल अहाँ एते चिन्तित छलौ ? हे छिभ हम एहखन हिनका लोकनि के जीवित क दैत छी।

एतवा कहि ओ पोखरि सं सुबक मे पानी ल मंत्र पढ़ि पाथर पर छीटि देलकैक

आ चाव जीवित भ गेल। दुनू भाइ सोझा-सोझी होइतहि चिन्हवो मे विलम्ब नहि मैलेक। एक दोसर के भरि पाज क घेलनि एमहर पुन बाघ आ दूत बाभ सेहो धड़ा धड़ी करय लागले।

जेठजन छोटजन सं गाम पर समतचरक संगहि एहिठाम तक केना पहुँचल से जिज्ञासा देखैक आ ओहो संछेप मे सम कहि लुनलै। अन्त मे ओहो कहलकै जे केना ओहो इह सन मे क्या देते राजाक कथन बनि गेल आ कल कुलमेको पर लोक नहि विश्वास देखैक। अन्त त अपन राज-रानी के ओकरा अपन कथन बुझ-थिन आ कबोनी ओकरा अपन भाव मे लुनलकै देखैक एतकक तक—

अन्तर मळ मे सुबकक बात सुनिते जेठजनके सदेह भेलनि जे हो ने हो ई हमरा पत्नीक संग अनुचित व्यवहार केने होइत। ओ बिनु किछु पूछने तसभारि खीचि छोटका के दू दूक करैत ओकरा ल्पी, घोड़ा बाघ आ बाभ सम के काटि देलनि आ अपने घोड़ा पर तबार भय विदा मेलाह। ओ जखन राजमहल पहुँचलह त लांभ पड़ि गेल छलैक। अन्ति राजा, कहलथिन हम त केर चिन्ता मे छलौ जे सन पड़ल बाइत छल आ अहाँ चिन्तलू नहि।

सोझ-पठा मेलाक बाद राजकुमार अपन कुलक पर मे पहुँचलह। पत्नी ओ देरी सं एखीपर आ बात केकरा अन्त क-थिन बात ई पड़ा सं बा हुनका मरिणस क प लेलथिन। पत्नी गंजब छोट अन्त-थिन काठि राति जइना केने छल। इनात होइत छल जे सैक म नेहलू—एको के हँओ हँ त लोक क्वा कहि ने। एते दिन पर चिराई आ अहाँ के हमर मुँहो देखबाक इच्छा नहि मेल जे ओना मुँह भांगि रहि रहलौ। अहाँ के मलाइ इच्छा नहि मेल परजब हमरो त अहाँ अपन मुँह देखल गिलौ। एहन कठोर केना बनि गेल रहिह।

राजकुमार पत्नी के छोड़ि बसत सं पठा पर परि रहलह। हुनका आलि सं ने बदन कलथिन आ ओ हिचुक हिचुक कानय लगलह। इनात हुनका परिजनि देखि पत्नी आर बसरा गेलथिन। ओ अतुनय करय लगलथिन जे आखिर हुनका सं हुन एहन गलती भ गेलनि आ जे मेवे केलनि त स्वामी के अधिकार छनि पत्नी के डंड देवाक मुदा हुनक ई स्थिति ओ नहि देखि सकैत छथि।

राजकुमार बाजलह अहाँक कुनू दोष नहि भिय दोष हमर कपारक थिक। आइ एक युगक बाद अपन सहोदर भेटल—ओ सहोदर जे हमरा लेल रते बने जौआइत एहिठाम आएल अपन जानक बाबो क्वा के हमर जान बचओलक—तकरा हम—

पत्नी के किछु हुनने ने ने अन्ति व्याकुलताक संग पुछलथिन—ई की तम बाजि रहल छी अहाँ ? कहाँ छथि अहाँक भाइ—की भेलनि हुनका—

राजकुमार आर जोर सं कानय लगलह—आब ओ एहि दुनिया मे नहि अह हम अपना हाथ ओकरा हत्या केने छी—ओकर उपकारक बदला सरिपहुँ हम केहन नीच छी जे अपना सहोदरो के विश्वास नहि क सकलहु।

पत्नी हुनक पाथर पकड़ैत कहलथिन—दोहाइ अहाँक, हमरा किछु ने बुझाइ पड़ि रहल-ए। हमरा सफ-साफ कहू ने त हम बताहि भ जायव।

राजकुमार ओहिना हिचुकैत बाजलह—काठि हम नहि रही प्रिये—काठि जे आयल छल से छल हमरा छोट भाइ हम त जाइ दिन शिकार पर गेलौ बाबू जी क मना केलाक परचातो दक्षिण दिस चल गेलौ आ ते आइ धरि पाथर बनल पोखरिक कात मे पड़ल छलौ। जखन छोट भाइ पहुँचल त हमरा पुनः जीवित कएलक मुदा ताइ आइ पर अविश्वास कर हम ओकर हत्या करल—

राजकुमार बलन बलितर सम कथा पत्नी के कहलथिन त पत्नी सेहो हुनक छोट भाइ होइतक ओहोना केलेथिन। सकार उइह सन भेटैत कहलथिन—अहाँ क्वा छी से जे आपसी मतभेद देते छथि जे पुनः गड़ बिनति मे बसल ओहो ओ अन्तिम होइतह। तखन चिन्त कयिह। यदि आपन लेने छैक। घोड़ा लेवाक क—स्वोदय सं पहिने हमरा ओकरा पोखरि पर पहुँचि जाइ।

राजकुमार धरकरा के उठलह। घोड़ा कसलनि आ संग लेलनि बाघ आ बाभ के। राजकुमारी सेहो अपन घोड़ा कसलनि आ सभ सं नजर बचा राजमहल सं बहार भ गेलाह। पोखरि पर पहुँचैत छथि त। पूह मे छलिन द देने रहैक। बहान ओहिना राजाक रहैक। घोड़ा सं उठि राजकुमार बाजलह—मेलाह आ प्रार्थना केलेनि—हे नृपसिंहा आइ हम चिन्ति मे जूँ, अहाँ छोड़ि देला के उम्माव। तिम तीन देल आ अपन बचनक पड़ा लह।

एगो अद्भुत रूप देखैक आ राजकुमार अपन सन म देखैक। राजकुमार लुलक जे मरवाही बरि कल छथिन—कह इना की कहैत छी ?

राजकुमार सब जोरि बाजल न, अहाँ त सभ कनिते छी तखन केर छोट की छी। हमरा माइ, मायलू ओकरा बौदा, बाघ, बाभ सम के बीसक सन द दिवस। एतन रहि सं मेरी किछु ने चली।

विनन दोह इच्छा—एतन कथनक संगहि दू एगो मरकट हन मेलेक आ नृपसिंहा अन्तर्धान भ गेलैक। इनात पत्नी मेलेक आ छोट राजकुमार ओकरा पत्नी राजमहल कोत उठि गेलक। घोड़ा, बाघ आ बाभ सेहो उठे के उइह म मेलेक।

बोझ छोटजन के मरि गेल कहि कोनैत बाजल—माइ हमरा क्वा क दे—हम के तोरा पर विश्वास नहि कर महान पाप कएल से त क्षमा योग्य नहि किन्तु तौ हमर सहोदर छै—

छोटका बिनु सैत बाजल भाइ भाइ अह बताह मेलेहैं। गलती त लोक सं होइते छैक। देख ने हमरी केना भरि राति भौजीक कोठली मे—की भौजी हमरा मात नहि करली ?

राजकुमारी बिनु सैत आ लजलत सन कहलथिन भरि राति भौजीक कोठली मे नहि रहने एहन उद्देग छित जे पठा के छोड़ी लाकर पड़ल। भौजी के त इच्छा गिलौ गेवाक सेहना रहिह गेलनि बाद मे ने पठा चकत। एतन विदा त होइ जाइ बाउ। कते दिन चढ़े मां बाबू चिन्ता मे हेथिन।

सम अपन-अपन घोड़ा कलथिन—दुनू दिवादिनी एक घोड़ा पर बैसि विदा मेली। एमहर नगर मे शोर। भ गेलैक जे राजाक बेटी-जमाइ राति विपत्ता भ गेलैक। परजब हिनका लोकनि के पहुँचिते आ अपन बेटीक मुँहें सब बात सुनिते राजा उत्तवक तैयारी मे लागि गेलाह। राजकुमार गामर पठा-ओल गेलैक। ओहो राजा बरियाती ताजि एलाह आ हुनू बेटा-पुतोइ दू ज आनन्द मगन भए अपन राज फिरला है।

प्रस्तुति—अप्रवृत्त



पुस्तक समीक्षा ?

## विदेशी कविता क 'प्रतिध्वनि'

श्री रामलोचन ठाकुर मैथिली क तेजस्वी रचनाकार छथि। अग्रदूत, कुमारेश काव्यप आदि विभिन्न नाम सँ विभिन्न विधा मे लिखि ओ मैथिली साहित्य क श्रीवृद्धि कऽ रहल छथि। हुनक कविता संग्रह 'इतिहासहंता' एवं हास्य व्यंग्य क 'संकलन 'बेताल कथा' हुनक रचनाधर्मिताक नीक जकाँ परिचय देछ। 'प्रतिध्वनि' मे ओ १५ टा विदेशी वामपंथी कवि क छोट-छोट कविता क मैथिली काव्यानुवाद प्रस्तुत केने छथि।

उपासना क क्षेत्र मे सिद्धक लेल विहित दूटा मार्ग मे सँ दक्षिण मार्ग दीर्घकालिक साधना ओ सात्त्विक मन क थिक संवर्धन ओरुआ करैत मुदा वामपंथी अत्यन्तकालिक साधना सँ कामे लिहैत कहैत छैक। वाम मार्ग तामसिक इच्छा पोरुत 'सुखस वारा' होइछ—कते को संतुलन बिगड़ल। पर या त जीवन सँ हाथ धोमथ पड़ैत छैक किंवा विक्षिप्त अथवा छागर बनि केँ जीवन बितवऽ पड़ैत छैक। राजनीतिक वाममार्ग मे साहित्यकार केँ छागर बनि केँ रहऽ पड़ैत छनि। साम्यवादी देश क आधुनिक साहित्य क इतिहास केँ यदि तटस्थ भऽ केँ पढ़ल जाय त ई तथ्य स्पष्ट भऽ जाइछ जे वामपंथी व्यवस्था मे साहित्यकार मात्र प्रचार-यंत्र होइछ। ओकरा अपन मान्यता, अपन दृष्टि कोण आ दर्शन स्थिर करवा क कोनो अधिकार नहि छैक। सदिखन ओकरा राजनेता केँ मुँह ताकऽ पड़ैत छैक। स्वतंत्र चेतनाक अभाव मे वामपंथी रचनाकार अपना भीतर ओ काव्य-गुण विकसित नहि कऽ पवैछ, जाहि सँ रचना सार्वदेशिक आ सार्वकालिक बनेछ।

'प्रतिध्वनि' क कविता एकटा एहन निष्ठावान कार्यकर्ताक दृष्टिकोण सँ संकलित कैल गेल अछि, जेकरा प्रत्येक कम्युनिस्ट रचनाकार क रचणोदक तीर्थजले जकाँ पवित्र बुझाईत छैक। कविताक अनुवाद एक सीसीक गंगाजल दोसर सीसी मे डारब जकाँ कठिन होइछ। यदि अनुवादक कविताक भाषा सँ सुपरिचित नहि होइछ, तखन ते ई काम एतेक कठिन भऽ जाइछ जे अनुवाद केर सामानिकते संदिग्ध भऽ जाइछ। 'प्रतिध्वनि' क कविता सभ अनुवाद क अनुवाद थीक तेँ मूल कविता सँ बहुत दूर चलि गेल अछि। प्लेटो क शब्द मे ई 'नकल क नकल' रहलाक कारण आंशिक सत्ये केँ सुरक्षित राखि सकल अछि। एहि तरहक काव्यानुवाद मे मूल कविताक पचीसो प्रतिशत अंश नहि रहि जाइछ तेँ मैथिली काव्यानुवाद प्रदि केँ पाठक केँ मूल कविता क गुणवत्ताक कतेक परिचय भेटतनि, से कहव कठिन अछि। निस्संदेह श्रीठाकुर अपना दिस सँ परिश्रम मे कोनो कोताही नहि केने छथि, मुदा अनुवाद क जे अभिशाप छै, ताहि सँ ओ विमुक्त कोना भ सकताह।

पुस्तक क भूमिका एकटा एहन अपदृष्टि द्वारा लिखल गेल अछि, जेकरा ने त अपना देश क इतिहास सँ परिचय छै आ ने साहित्य सँ। आदिकवि वाल्मीकि

सन यथार्थवादी रचनाकार विश्वभरि मे केओ नहि भेल अछि। तिनका प्रति भूमिका-लेखक क ई उक्ति जे 'ओही अलौकिक सत्ता, फुसियाही मर्यादा क पाछाँ भासि गेहाल' ई प्रदर्शित करैत अछि जे भूमिका लेखक 'वाल्मीकि रामायण' केँ देखनहुँ नहि छथि। भूमिका लेखक क इहो कथन एकटा अर्धविक्षिप्त क अनर्गल प्रलापे बुझाईछ जे 'कविता राजदरबार मे नचैत देवदासी क संग सुर-ताल मिलवैत छल।' राजदरबार मे रहिकेँ कवि सर्वसाधारण लेल नहि लिखि सकैत अछि, एहि भ्रमकेँ काटऽ लेल अन्तरे विद्यापतिये क नाम प्रयोग अछि। हिन्दी साहित्य मे हुनक कविता क जे विकसित ऐति-कर्मक साधना मे देखे, से वास्तवी रूप मे कहियो नहि देखे। हिन्दी क एक एक दोहा कोनो प्रगतिशील कविक सम्पूर्ण रचनाक तुलना मे अधिक मूल्यवान आ जनप्रिय अछि। राज्यदरबार क प्रति ई खुरसा कम्युनिस्ट रचनाकार लोकनिक लेल कोनो अर्थ नहि राखैत अछि, कारण कम्युनिस्ट देश मे रचनाकार केँ या तेँ राश्याश्रित भऽ केँ अन्नदाताक निर्देशानुसार रचना कऽ पड़ैत छैक आ लेनिन क आदेश पर गोर्की सन प्रतिनिधि साहित्यकार केँ अपना कथा संग्रह सँ 'स्काइ ब्लू' आ 'अनरिकोवायेड लव' सन् कथा केँ बुझाओ लेखन मानि केँ निकालि देमऽ पड़ैत छैक, अथवा कम्युनिस्ट यंत्रणा-शिविर क यथार्थ चित्रण कयला पर सोल्जेनिसिन सन चेतनाशूल आ निर्भीक रचनाकार केँ देश त्याग कऽ पड़ैत छैक। तेँ राजदरबार क कवि क आलोचना करवा क मुँह कोनो कम्युनिस्ट लेखक केँ नहि छै।

रहल मंदिर मे उपजल कविताक गप। ताहि संदर्भ मे एतवे निवेदन जे विद्यापति, सुर, तुलसी, कबीर, मीरा आदि क कविता विश्वक श्रेष्ठतम साहित्य मे गनल जाइछ। विद्यापति, सुर आ तुलसी क कविताक समाहर तथाकथित पूँजीवादी आ तथाकथित साम्यवादी दूर देश मे भऽ रहल छै। रामलोचन जी केँ यदि अपन अज्ञानलेक बवारस प्रगतिशीलता हुनि पड़ैत छनि, तेँ कस्तुन ओ प्रगतिशील लेखक छथि। हुनक ई कहव जे 'अनुक कवि राश्याश्रित वा देवाश्रित नहि, अपन हुता पर आश्रित अइ' मात्र एकटा अनटोल गप अछि। आफिस अदालत आ खान फारखाना मे काज कऽ वला व्यक्ति कोना 'स्वाश्रित' अछि से हुनकेँ बुझल छनि। वर्तमान व्यवस्था मे यदि सरकार शोषक अछि तेँ आफिस अदालत ओकर शोषणक माध्यम। तखन आफिस मे काज केनिहार कोना अपना केँ 'धवल चरित्र' कहि सकैछ, से स्पष्ट करवाक चाही छल।

भूमिका क तेसर पैराग्राफ कम्युनिस्ट चिन्तन क बमन मात्र थिक। ओहि मे कोनो एहन बात नहि अछि जे वामपंथी चिन्तनके कोनो नव अर्थ देक। कविता ने तेँ वारा-गना होइछ, आने जीवन संगिनी—ओ मात्र आत्म क अभिव्यक्त रूप थिक—ई बुझवा क लेल रामलोचन जी के गाल बजा-यब छोड़ि अध्ययन कऽ पड़तनि तखने हुनका इहो स्पष्ट हेतनि जे हिन्दी भाषा

मैथिली क लेल सुरसा नहि थीकी भाषा बाग्देवताक भिन्न-भिन्न रूप-रंग कला थीक। तेँ कोनो भाषाक प्रति वैमनस्य नहि होयवाक चाही। हमरा संघर्ष मात्र ओही प्रवृत्ति क विरुद्ध अछि जे दादी-नानी केँ बेटी कहि केँ अपन आधिपत्य स्थापित करऽ चाहैत अछि। मैथिली हिन्दी क लेल दादिये-नानिये जकाँ अछि। तेकरा हिन्दी क बेटी (बोली) कहव दुष्टता क सिवाय आर किछु नहि। हमारा लोकनि ओहि समुदायक विरोध करैत छी जे मैथिली केँ हिन्दी क अंग कहिकेँ मैथिली क हित केँ दंशित करवाक कुचेष्टा करैत अछि। हिन्दी भाषा सँ हमरा लोकनि केँ कोनो वैमनस्य नहि अछि, बल्कि राष्ट्रभाषा तथा तृतीय विश्व भाषाक रूप मे ओकरा प्रति हमरा लोकनिक हृदय मे स्तुति आदर क भाव अछि।

'प्रतिध्वनि' क पहिल दू टा कविता सभमे से हुनक अछि केनो एक अछि किनो कविता क अंदी कविता क कुंठित्व' सँ अधिक उच्च नहि अछि। कविता क कथ्य प्रथम आ अंतिम वक्ति सँ बुझा जाइछ :

लाल फांज निभीक दीर्घपथ  
यात्रा बहु बाधाक।  
कय गेल पार लाल सेना  
विजयक आनंद फराकी

एहि संग्रहक सभ सँ बड़का दोष ई अछि जे सर्वसाधारण क दुःख केँ बुझवाक दावा केनिहार रूपान्तरकार मैथिली क सामान्य पाठक क कण्ठ केँ नहि खुमि सकलाह। नहि तेँ कविगण क संक्षिप्त परिचय आ 'खन जुन' 'सिजर' 'उल्लवार्थ' 'कांगो' 'सुआन-युवान' 'नानकिड' आदि सन संदर्भपेक्षी शब्द क परिचय अवश्य दितथि। अनुवाद क अप्रामाणिकताक कारण कविता क शिल्प कथ्य आ गुणवत्ता पर विचार करव अन्याय होयत। तथापि एतवा तँ कहले जा सकैछ जे 'प्रतिध्वनि' मे संकलित कविता सभ कोनो तेहन नहि अछि जेकरा विश्वस्तर पर छोटि केँ मैथिली पाठक क समक्ष राखल जाय। अधिकांश कविता क स्तर अपना देश मे सुदृष्टाक स्तरपर चर्चित कविक रचनाक समतुल्य अछि। संक्षेप मे, एहि प्रकारक संकलन सँ अंतरराष्ट्रीय वामपंथी लेखन क छवि घुमि होइछ।

—बुद्धिनाथ मिश्र

□ ई परिचय पुस्तकक समीक्षा थिक वा व्यक्ति आलोचना अथवा अने किछु, तकर विचार पाठके लोकनि आ विरोध केँ जिनका लोकनि केँ चर्चित पोथी पढ़ल छनि, करथि सएह नीक। परञ्च एतेधरि सत्य जे एहि मे कागज टा जियान भेल अछि। तथापि एकरा छपवाक कारण पहिल त लेखक क पुरजी जे 'समीक्षा' क संग संलग्न छल (पाठक लोकनिक जानकारीक हेतु निचा छापल जाइछ) आ दोसर मैथिली मे एहनो साहित्यकार समालोचक होइते छथि जिनका कविता बुझवाक बात किहय श्रद्धा भ केँ एक पांती लिखवाक अवगति नहि छनि—से त पाठक लोकनि जनताह। तेँ 'समीक्षा' अक्षरशः छापल गेलह।

—सम्पादक ॥

□ वंशुवर जनार्दन जी,

आइ एक मास पर 'प्रतिध्वनि' क समीक्षा पूरा कऽ केँ पठा रहल छी। हम

जनैत छी जे ई अत्यधिक कठु भऽ गेल अछि, लेकिन इहो मानैत छी जे हम वैह लिखलहुँ अछि जे लिखवाक हार्दिक इच्छा भेल। तेँ निवेदन जे या तँ एकरा अक्षरशः छापल जा, यथावत् लौटा देल जाय। हमरा कोनो कष्ट नहि होयत कारण अपन आलोचना सुनवाक घेय सभ मे नहि होयत छैक।

अहीक  
—बुद्धिनाथ

## अजगुत अनटोल

सोन चिड़या नामे विख्यात ई महान-भारत, छुटेरा तैमुर लंग सँ ल महानायक विक्रमोदय शाह धरिक आक्रमण केँ देखि-मोगि तुलल अइ। परञ्च सभ मे पड़े होइतहुँ, जो कबो आ लोक लोक रहि से केँ लिखल जाव कीनकर कहल जे दोहा नहि। हुनक कथा—जो लेखक केँ कि जिनो ई से। लगे कयले प्रयास थिक।

वय २० जुलाईक थिक। भारतीय कनला दलक श्री माइ महवीरक अनुयाय १९३० मे अंग्रेज शासक द्वारा बनाओल गेल मैनुअल पंजाब प्रदेश मे एखनो लागू होइछ आ तकरा अनुसार 'गांधीटोपी' पर रोक लागल छैक। गांधीटोपी—जे कि स्वयं त गांधी जी कहियो ने पहिरलनि परञ्च नेता जी ने मात्र अपने पहिरलनि अपितु ओकर नाम गांधीटोपी राखि ओकरा तते सम्मान देखओलनि आ लोक प्रिय बनओलनि जे ओ पराधीन भारत मे स्वाधीनता संग्रामीक चेन्ह बनि गेल आ कांग्रेसदल मे त भरिस्के केओ छल होएत जे विनु 'टोपी' क हो। नेता जीक मुँह सँ बहराएल 'जय हिन्द' आ गांधीजी केँ 'बापू' क सम्बोधन जकाँ इहो 'टोपी' लोक प्रिय भेल आ स्वभावतः अंग्रेजक लेल आंखिक कांट आ तेँ एहिपर आइन बना रोक लगाओल गेल। टोपी पहिरनाइर 'देश द्रोही' मानल जाय शासकक नजरि मे आ अचरज कि जे अंग्रेजक उत्तराधिकारी वर्तमान शासक जे अपन पूर्वजक पदचिन्हक अनुसरण क रहल हो। आजुक शासक भनहि गांधीक माला कपओ परञ्च सत्य इहो छैक जे देश-देशकालीन परिस्थिति अथवा अवस्था अनुसार अंग्रेजक टोपी-मुनास रचना 'सिद्धार्थ' काल देव काजर आ अखीरु लेटल गेल, विचार केँ आ 'कलशपाती' मे सवेत रहैर।

अनो महकस मुँह कौनकर प्रणत करैत राज्य सभाक उपाध्यक्ष श्री स्वामिनाथ यादव जवाब मे कहलथिन जे गांधी टोपीक सन्दर्भ जे नियम मैनुअल मे छैक से लागू नहि कएल जाइत छैक। जे से सत्य त कि आई ३५ वर्ष मे सरकार के एते पल्लवति नहि भेलैक वा एहन उहि नहि भेलैक जे एहि धृणित 'नियम' के काटि सकैत आ स्वतंत्र भारतक अपन जेल मैनुअल बना सकैत? जेना कि उपाध्यक्ष बजलाहए—स्पष्ट अइ जे गांधी टोपीक संदर्भ जे नियम अइ सेटालागू नहि कएल जाइछ बाकी सभ पूर्ववते लागू होइछ। अर्थात् अंग्रेज शासक नजरि मे जे 'देशद्रोही' छल आ जे कृयाकलाप देश द्रोहिताक अन्तर्गत अवैत छल वर्तमान स्वाधीनो भारतक शासक नजरि मे से पूर्ववते अइ। 'सत्ते सेलुकश ! कि विचित ई देश !'



## सभा-समिति

विद्यापति कला परिषद, किरिबुरु, मेधाहातुबुद क. तत्वावधान में अप्रिल "८२" क अंतिम सप्ताह में विद्यापति स्मृति पर्व धूम-धाम से मनाओल गेल। कार्यक्रमक आरंभ कुमारी सुन्नी, कुमारी रीता, कुमारी, मधु, कुमारी माला तथा कुमारी वेवी क "जय-जय भैरवि मंगलाचरण सं मेल। मंगलाचरणक प्रस्तुतीकरण श्रीमती इन्दु प्रसादक द्वारा मेल।

निम्नलिखित व्यक्ति विद्यापतिक चित्र पर श्रद्धापूर्वक मास्यार्पण कयलनि।

(१) सर्व श्री जी. डी. सिंह (महा-प्रबन्धक किरिबुरु)

(२) एस. के. दास (चीप सुमीन्टेन्डेंट, गुआ माइन्स)

(३) एस. सी. चौधरी (कार्यकारी महाप्रबन्धक मेधाहातुबुद)

(४) जे. एल. भसीन (उपाध्यक्ष स्पोर्ट्स एण्ड रिक्रियेशन काउन्सिल मेधाहातुबुद)

(५) यू. के. प्रसाद (अध्यक्ष विद्यापति कला परिषद)

एहि अवसर पर स्वागताध्यक्ष श्री सी. एस. सिंह उपमुख्य कार्मिक प्रबन्धक उपस्थित जन समुदायक स्वागत करैत बजलाह जे कवि कोकिल एक महान विभूति छलाह। विद्यापतिक अनुसरण हुनक काव्य प्रतिभाक कारणे सम्पूर्ण देश में मेल। बंगाल, आसाम आ उडिसा त प्रत्यक्ष रूपे प्रभावित अछि। बंगाल त ऐतेक प्रभावित अछि जे हाल धरि लोक विद्यापति के बंगाली सुनैत रहल। तकर कारण ई छल जे विद्यापतिक गीत के प्रचारित करवा मे महाप्रभु चैतन्य सन व्यक्ति योगदान छल।

ओ इहो बजलाह जे जखन हम विद्यापतिक श्रृंगारिक गीतक सुनैत जयदेवक गीत सं करैत छी तऽ विद्यापतिक गीत बेसी सुस्त आ सभ्य बुझावैत अछि।

सभाक अध्यक्षता करैत श्री जी. डी. सिंह (महाप्रबन्धक किरिबुरु) बजलाह जे विद्यापति एक महान आत्मा छलाह आ हुनक व्यक्तित्व जाति आ सम्प्रदाय बिहीन छल। विद्यापति अपन रचनात्मक प्रवृत्तिक कारणे कोनो खास क्षेत्रक नहि छलाह। विद्यापति पर सम्पूर्ण देशवासी के समान रूप सं गर्व छनि। प्रसन्नताक बात जे विद्यापति कलापरिषद द्वारा आयोजित ई पर्व जाति आ सम्प्रदाय बिहीन अछि।

आगत अतिथि के धन्यवाद देत संस्थाक अध्यक्ष श्री यू. के. प्रसाद (संयुक्त सलाहकारविच किरिबुरु) अपन उद्गार व्यक्त कयलनि जे स्मृति पर्वक आयोजन मे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूपे जे व्यक्ति वा जे संस्था सहयोग देलनि, तिनका सभ के ई संस्था धन्यवाद देत अछि। एहि अवसर पर ओ आग्रह करैत बजलाह जे एहिना सहयोग बनल रहय।

एहि अवसर पर स्पोर्ट्स एण्ड रिक्रियेशन काउन्सिल मेधाहातुबुद के विशेष सहयोगक हेतु विशेष रूपे धन्यवाद देल गेल। संस्थाक दिस सं श्री. जी. आर. सिल, श्री. बी. आर. शाहा श्री ए. एम. भट्टाचार्या,

श्री एस. के. तरफदार, श्री जी. के. लाहिड़ी तथा श्रीमती डी. अप्पाराव के सहायनीय सहयोगक हेतु धन्यवाद देल गेल।

अंत मे सहयोगी कर्मठ व्यक्ति जनिक परिश्रमे ई आयोजन सफल मेल चर्चा नहि करब कुतश्नता होयत।

संस्थाक महा सचिव श्री एस. आर. पी. सिंह, महबूब आलम (उपाध्यक्ष जे. पी. दास (सदस्य) बी. सी. मंडल, सदस्य डा. सी. डी. मिश्र, सत्येन्द्र भा. सी. डेटे, अनिरुद्ध भा. उग्रेश भा. सहदेव सिंह, उग्रमोहन भा. आर. पाठक, दिगम्बर ठाकुर विन्देश्वर भा. सहदेव भा. गंगाधर भा. के. बी. तिरिया, टी. चाकी आर. सी. दास, बच्चा सिंह, अशोक कुमार भा. एस. के. भा. बी. के. सिंह, यू. एन. भा. एच. के. चौधरी आदिक सहयोग आ परिश्रम के नकारल नहि जा सकैत अछि।

—जयदेव मोदी

## बाबू भोला लाल दास स्मृति समारोह

विगत १ जून के साहित्य-संस्कृति कला मंच कौशिकीक तत्वावधान मे एम. एल. एकेडमी लहेरिया सरायक परिसर मे मैथिली दधीचि बाबू भोला लाल दास जीक पुण्य स्मृति मे एक भव्य समारोहक आयोजन मेल। समारोहक प्रारम्भ भगवती वन्दना, गतिकार नवल द्वारा मिथिला-वर्णन आ श्री रमानन्द रेणुक स्वागत भाषण सं मेल। डा. ब्रजकिशोर वर्मा मणिपदम क सभापतित्व मे सम्पन्न श्रद्धांजलि कार्यक्रमक उद्घाटन करैत श्री बाबू साहेब चौधरी मैथिलीक विकास मे बाबू भोला लाल दास जीक योगदानक चर्चा करैत मैथिलीक वर्तमान दुःस्थितिक दिस उपस्थित श्रोताक ध्यान आकर्षित करैलनि। मुख्य वक्ता डा. रामभूनाथ चौधरी मिथिलाक सर्वांगीण विकासक लेल सम्पूर्ण मिथिलावासीक एकजुटता के बाबू भोला लाल दास जीक प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि बतौलनि, मुख्य अतिथि दरभंगा जिला उद्योग केन्द्रक महाप्रबन्धक श्री रामेश्वर पाठक मिथिलाक प्रति अपन अपार प्रेमक प्रदर्शन करैत मिथिलाक सांस्कृतिक महत्ताक गुणगान केलनि। बाबू भोला लाल दासजीक सुपुत्र श्री जगदीश प्रसाद कर्ण द्वारा श्रद्धांजलि अर्पणक उपरान्त अपना अध्यक्षीय भाषण मे श्री मणिपदम दासजीक व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर विस्तार सं चर्चा करैत सम्पूर्ण मिथिलाक जागरणक आह्वान केलनि।

श्रद्धांजलि कार्यक्रमक उपरान्त श्री मणिपदमक अध्यक्षता मे सम्पन्न कवि सम्मेलन मे भाग लेनिहार प्रमुख कवि छला सर्व श्री प्रदीप मैथिली पुत्र, मिहिर शिवाकान्त पाठक गीतकार नवल, चन्द्रमणि, जीतेन्द्र सिंह, कामेश दीपक। एहि अवसर पर एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन सेहो छल। समारोहक समापन श्री सुरेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा धन्यवाद शायन सं मेल।

—सम्पादक रेणु

## बाया-बवि

जेना कि ज्ञात मेल अइ 'मैथिली फिल्मस, दरभंगा एवं बम्बईक बैनर मे 'भीजल आंचर' नामे मैथिली सिनेमा बनि रहल अइ जे अक्टूबर ८२ धरि तैयार भ जायत। एकर निर्माता छथि श्री पुष्पोत्तम बोहरा। स्व. शारच्चन्द्रक कथा पर बनि रहल एहि फिल्मक संवाद एवं गीत रचना केलनिहें प्रो. श्री लोमदेव। संगीत श्री गौरांग व्यास एवं श्री एल.एन. त्रिपाठीक छनि आ निर्देशन श्री मेहुल कुमार क। कलाकार लोकनि मे अरुणा इरानी, किरण कुमार, एस. एम. दूबे, कल्पना दिवान, देवयानी ठाकुर मास्टर विट्टू आदि छथि। गायक-गायिका छथि—महेन्द्र कपूर, अलका यात्री ओ चन्द्राणी मुखर्जी। फिल्म सम्पूर्ण रंगीन ३५ एम.एम. मे बनि रहल।

मैथिली मे कतेको फिल्म बनबाक चर्चा यदा-कदा हमरा लोकनि सुनेत आबैत छी, किछु त आधा-छिदा आ किछु सम्पूर्ण बनि के तैयारो मेल परबच दुर्भाग्यक बात जे दर्शक धरि आइबि नहि पहुँचि सकल। 'कन्यादान' मैथिलीक नाम पर भनहि जते पाइ किछक ने पीटने हो, परबच ओ जे मैथिली फिल्म नहि छल से मानवा ने किनको दुविधा नहि होएतनि। 'ममता गायक गीत' क रिलीज हेवाक सोरहा सभ

ठाम-अवस्ते मेल परबच रिलीज नहि भ सकल—पता ने कि कारण छैक। एहिना 'ललका पाग' क चर्चा छल परबच ओकरो कोनो निस्तुकी नहि ज्ञात होइत अइ। एहना स्थिति मे जे 'भीजल आंचर'क संवाद पर लोक विश्वास करत तकरे सून ठीक। परबच हमरा लोकनि के जाइ सूत्र सं संवाद प्राप्त मेलइ, मरौस अवस्ते अइ जे ई दर्शक धरि पहुँचि सकत आ अविश्वासक स्थिति पर धनिका पति करत।

मैथिली सिनेमाक लेल बड़ नीक 'स्कोप' छैक परबच बाबि एक गोट रिलीज नहि होइछ ताधरि निर्माता लोकनि के विश्वास केना हेतनि। तें ज ओ लोकनि एहि क्षेत्र मे पदार्पण करवा सं धलाइत छथि त अनुचित नहि, परबच ई धरि निर्विवाद जे एक गोट फिल्मक पश्चाते निर्माता लोकनिक 'लाइन' लागि जायत।

आजुक सुग मे फिल्मक की महत्व छैक से कहबाक प्रयोजन नहि। आवा करैत छी जे 'भीजल आंचर' मैथिली फिल्म मे गति-रोचक स्थिति के तोड़त आ निष्पिच्छक हेरायल-मुतिआवल प्रतिभा के आलोक मे अएबाक अवसर भेटतैक।

—जयदेव लाभ

## चिट्ठी-पुरजी

'देसिल बयना' खूब नीक बहार भऽ रहल अछि। खूब स्वस्थ। मिथिला-विभूति परिचयमाला बड़ आवश्यक छल छापब। कम बन्द नहि करू। कतेक चैन छैत छी तखन अपन रचना पढावब। —सोमदेव

जून अंकक सम्पादकीय बड़ चिचारो-तेजक—मुदा मैथिलीक साहित्यकार लोकनिक लेख नहि। 'गाम सं दूर मिथिलाक मजदूर' ओ 'मिथिला-विभूति' स्तम्भ के अखन पाठक लोकनि जे महत्व देथि, मुदा एकर सही सूचकांक होएत भविष्य मे। ओना ई बात जे सत्य पूछी तऽ एहि पत्रिकेक सम्बन्ध मे कहल जा सकैत अछि। 'बालगीत' आइबि जे प्रकाशित मेल अछि तकर जते प्रशंसा करी थोड़ होएत। की एहिना 'बालकथा' सेहो नहि देल जा सकैत

अछि? चर्चित अंक मे 'लोचन कविराय'क अभाव बड़ खटकल। 'गिरगिट' आ 'छाछ बुभुकरक चिट्ठी' पढ़ि छारल जेना राधा बाबू हुनू ठाम बिराजमान होथि। ओना हम मानैत छी जे 'गिरगिट' कथाक आवाज निश्चिते पैब छैक। 'भारत रत्न' इमरजेन्सी के मोन पाड़ि देखल। बेसी नहि लिखि एतवे कही जे एकर सभ रचना महत्वपूर्ण अछि आ सभ रचनाकार प्रचलनीय छथि। मुदा 'धेलीनाथ मिश्र प्रकरण' नहि रुचल—एकर कोनो उपयोगिता नहि। मैथिली मे एकटा कहावत छैक—जकरा लेल चोरी करी सैह कहय चोर—से तकरे परि अपनो लोकनिक होयत।

—विष्णुदेव भा

### कह लोचन कविराय

लाठी जकर सहिस तकरे छड़ के नहि जानय  
भनहि नाम गणतंत्रक ल बलगोंगे ठानय  
ल बलगोंगे ठानय सरिपहुं आन ने नेता  
लाठीक बलपर जोत कहाबय वोट विजेता  
कह लोचन कविराय सत्य-शिव-सुन्दर लाठी  
गण-भक्षक तंत्रक रक्षक गणतंत्रक लाठी



# समाचार

अङ्क-१-२

जनवरी फरवरी ८४

मूल्य-पचास पाइ

## देसकोस सँ देसकोसधरि

देसकोस—हँ इहँ नाम थिक एक पत्रिकाक जरूर सम्पादकीय लिखवाक छैक हम बेसब छी । एहिना एक दिन आर वैसब रही, आई सँ बगमग अट्टाइ बजै पहिने । ओहो पत्रिकाक नाम छैक देसकोस । मई, १९८१ मे प्रकाशित भेल छल । स्वभावतः ओह दिनक बात मन पड़ि रहल । परञ्च से बात लिखवा सँ पहिने हम कहि देब उचित बुझैत छी जे सम्पादक ने त हम ओह देसकोसक रही आने अइ देसकोसक छी ओहो दिन हम नेपथ्य मे रही आ आइयो नेपथ्य मे छी । किन्तु, सम्पादनक भार तहियो हमरहि छल ( जे तीन अंकधरि रहल ) आ आइयो हमरहि अछि ।

मई, १९८१ मे जे देसकोस प्रकाशित भेल छल तकर सम्पादकीय मे पत्रिकाक प्रयोजनक सन्दर्भ मे हम लिखने रही ।

“...ई प्रायः सभ मानैत कहैत छथि जे मैथिली मे पत्र-पत्रिकाक प्रयोजन छैक । निश्चित हमरो लोकनि मानैत छी जे मैथिली मे एक नहि अनेको नीक पत्र-पत्रिकाक प्रयोजन छैक—जे अवहेलित मिथिलाक विभिन्न समस्या पर प्रकाश द सकै, तकर समाधानक सूत्र द सकै, जे जातीय चेतना आ एकताक खंख फूँक सकै, आ दबचेतनाक आलोक पसार सकै, जे मैथिली जाति केँ अपन गौरवशाली अतीतक स्मरण करा सकै आ अतीतक प्रियुवन विख्यात मिथिला केँ भविष्य मे विश्व विख्यात बनेबाक कहरनाक बन्म द सकै, जे पुनर्जागरणक संवाहक बने आ मैथिली जाति केँ नव मिथिला निर्माणक प्रेरणा शक्ति प्रदान क सकै, आ तेँ देसकोसक प्रयोजन छैक ।”

ई बात अहूँ पत्रिकाक सम्पादक हम कहि सकैत छी । अथवा एना कही जे एहि सभ विषय केँ ध्यान मे राखि एकर हमरा लोकनि देसकोस प्रकाशित करवा छैक बाध्य भेल छी । पत्रिकाक दीर्घबीचन बहुत किछु पाठक पर निर्भर करैत छल । अहि सन्दर्भ मे हम लिखने रही—“बर्हावरि पाठकक प्रश्न अछि जे मैथिली ( मैथिली-भुज सं छपल-छल ) पत्र पत्रिका कीनेत छथि आ पढ़ैत छथि । हुनका जे देश-विदेशक विभिन्न समाचार जे हिन्दी-अंग्रेजी पत्रिका मे सेटैत छैक, अपने भाषाक पत्रिका मे सेटैत जाइन त निश्चित हृषिक कितना आ पढ़ता । देसकोस एहि विषयक आचार पर बहार भ रहल अछि तथा पाठक लोकनि केँ विश्वास दियबैत अछि जे अन्यान्य भाषाक नीक सँ नीक पत्रिकाओ सँ नीक पत्रकारिता मैथिली मे देवाक प्रयास करैत ।” नीक वा बेबायक

निर्णय त पाठकक काज थिक परञ्च प्रयास हमरा लोकनि अवसरे बेने रही । इहँ कारण छल जे प्रवेशक मे सम्पादकीयक अतिरिक्त-परिवर्तनक पथपर चीन, घोषणा देवाय नहि, मैथिली आन्दोलनक केँ कतय, आरक्षण, देसकोस विशेष मे गोदावरी देशीक संग साक्षात्कार, विद्यापुता स्तम्भ छल बुझलक चिह्नक अतिरिक्त पोथी परिचय, अभिनन्दन सभ हमरा अपनहि लिखय पड़ल छल । इहँ कारण छल जे छेल्कक नाम-कथा / कविता छोटि—नहि देख गेल छल । जे हो, एहि देसकोसक सन्दर्भ मे से आश्वासन हमरा लोकनि नहि द सकै छी, कारण देश-विदेशक विभिन्न समाचारक निमित्त पत्रिकाक जे कलेवर देवाक चाही आ ताहि छैक जे अर्थक प्रयोजन छैक से हमरा लोकनि पाव नहि अछि । ओनहुना हमर पचास अर्थ पछिल्ले देसकोस मे व्यय भ चुकल अछि । तथापि जाइ प्रयोजन केँ ध्यान मे राखि ई पत्रिका बहार म रहल, तकर पूर्तिक प्रयास अवसरे करत । सोभ शब्द मे कही त जेना ‘देसिकवयना’ अक्टूबर १९८१ सँ अक्टूबर १९८२ धरि बहराबल ओही रूप-गुणक संग ई बहार होएत । असल मे देसिकवयना क नव नाम थिक ‘देसकोस’ जे पंजीकरणक कारणे परिवर्तित भ गेल ।

आब बखन देसिकवयनाक चर्चा भइ गेल त भरिसक इहो कहिये देव उचित जे साहित्य विशेषांक ( अक्टूबर १९८२ ) क बाद ओ किछक वन भ गेल । एकर प्रचलन कारण मे रचनाक अभाव, छेल छ लोकनिक असहयोग । स्वभावतः अ स श धरि अपनहि लिखय पड़ैत छल । कहियो-काह एक आघाट बाहर सँ भेटि गेल त भेटि गेल । ओना भाइ बनचक, उपेन्द्र दोषी आ जीवकान्तक सहयोग केँ विसरल नहि आ सकैत छल । ओना बखन फेर बहार करय जा रहल छी त ई आशय निश्चित अछि जे छेलक लोकनि सहयोग करता । पाठक लोकनि आ विशेष केँ देसिक वयना क ग्राहक । पाठक लोकनिक सहयोग-सद्भाव पहिनिह जसँ प्राप्त होएत से विश्वास अछि आ सएह विश्वास हमरा लोकनिक प्राथम्य थिक ।

जय मैथिली  
—रामलोचन ठाकुर

संविधान बिनु मैथिलीक ओ  
मानचित्र बिनु मिथिला धान  
छाहि-जारि सुझाह करव हम  
विद्रोही मिथिलाक जवान

देश

## शिक्षाक माध्यम आ मैथिली

अपन मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षाक अधिकार भारतीय संविधानक अनुसार प्रत्येक नागरिकक मौलिक अधिकार छैक । ओतवे नहि संविधान मे आर स्पष्ट रूपेँ कहल गेल छैक जे सरकार एहन कोनो आइन नहि बना सकैत जाहि सँ एहि अधिकार पर आघात पहुँचै । एहि लेल संविधानक सातम संशोधन द्वारा राष्ट्रपति केँ विशेषाधिकार देल गेल छैक जे जे सरकार एहि तरहक कोनो प्रयास करय त ओ ताइपर रोक लगावथि । परञ्च एतना होइतहुँ तथाकथित स्वधीनताक जगभंग सँतीस बर्लक बादो जे मिथिलांचल मे नेना सुटका केँ अपन मातृभाषाक माध्यम शिक्षा नहि देल जाइत छैक आ बलबोझी कोठाक भाषाक काढ़ा पिआओल जाइत छैक त तकरा की कहल जाय । अखल मे संविधान थिक सरकारक रखैल बकरा ओ बखन जेना चाहिए उपयोग क सकै, व्याख्या क सकै । परञ्च सभ दोष सरकारक नहि छैक । हमरा लोकनि सभ सँ बेसी बिस्मैदार छी अपन भाषा-संस्कृतिक अद्योगतिक लेल । शोधक-शासक सदा सँ जनताक भाषा संस्कृतिक विरोधी रहल । ओ जनताक बौद्धिक रीढ़ तोड़ि अपन पछ-जगुआ बनेबाक प्रयास करबै करत आ तेँ ओकर एगो फाँकेँ भाषा होइत छैक । ई भाषा कहियो संस्कृत छल, कहियो उर्दू-फारसी छल । कहियो अंग्रेजी छल, आ आइ कोठाक भाषा हिन्दी अइ । सरकारी भाषा हिन्दीक साम्राज्यवादो आकांक्षा के देखिय-परखि के भारतक अन्यान्य जाति सभ चेतल आ तकरे परिणाम मे १९५६क राष्ट्रक पुनर्गठन — भाषाभाषा प्रान्तक निर्माण । हम मैथिल जाति एहिठाम चुकि गेलहुँ जे महान ऐतिहासिक भूल छल आ तकरे फल भोगि रहल छी ।

परञ्च भूल कि हमरा लोकनि एकलेर बेने छी । एखनो बखन-तखन माळ कएल जाइ जे मिथिलांचल मे शिक्षाक माध्यम मैथिली हो अथवा मैथिली भाषा नेना के मैथिलीक माध्यमे शिक्षा देल जाय । ई माळ केहन अव्यवहारिक थिक से विचारवाक पछलति माळ केनिहार लोकनिकेँ भरिसक नहि छनि अथवा प्रतिक्रियाशील तत्व जे ऊपर-ऊपर त मैथिली भक्तक स्वांग रचै परञ्च वस्तुतः ओ मैथिलीक विनास चाहैये तकरे ई माळ छैक । कहवाक प्रयोजन नहि जे वर्तमान मे ई तत्व बेसी सक्रिय अइ ।

आब कने एहि माळक व्यवहारिकता पर विचार करू । मानि लेल जे सरकार एहि माळ केँ मानि लेल । एहना अवस्था मे एकै वर्गक छात्र जे मैथिली माध्यम सँ पढ़त तकरा लेल अलग शिक्षक चाही, हिन्दी उर्दू, बंगला आदि भाषाक माध्यमे पढ़-निहारक लेल अलग-अलग शिक्षक चाही । एहिठाम ई कहय नहि पड़त जे सरकारी

रेकर्डक अनुसार मिथिलांचल मे ई सभ भाषाक बर्तनहार रहैत ।

दोसर समस्या थिक पोथीक । बिहार मे स्कूली पोथी बिहार टेष्ट बुक कापीरेशन छपैत जे सरकारी संस्था थिक आ तेँ हिन्दीक पक्षधर वा मैथिलीक विरोधी थिक । स्वाभावतः जे हिन्दी पोथी सत्रक प्रारम्भ मे बाजार मे आवि जाइत छैक जेना एहू खेप आवि गेल होएत, त मैथिली पोथी तकर ६-७ मास बाद मे पठाओल जाइत छैक । विचारणीय थिक जे बखन बर्लकदिन मे आइकाछि कोर्स समाप्त नहि भ पवैत छैक तखन ५६ मास मे केना होइतक आ एते दिन छात्र केना प्रतीक्षा करत ? एहि सन्दर्भ किछु संस्था सभ अविभावक आ शिक्षक लोकनि सँ अपील करैत छथि जे बच्चा लोकनि के मैथिलीक माध्यमे शिक्षा दियावथि । देखि—सेहो कि बच्चावस नहि थिक ? जे अभिभावक एखनो स्कूल बिदा भेल छात्र के पहिने इरवाहक पनपिआइ द बवाक वा महिस के नहा अनवा लेल कहैत तकरा सँ कतेक आशा कएल जा सकैत ? दोसर एतेदितुका विभातीय भाषा संस्कृतिक प्रभाव मे जे अपन भाषा जेतना मरि सेरायल छैक सेहो कि ककरो सँ तुकाएल अइ । बर्हावरि शिक्षकक बात अइ—दोसर विषय हुनको संग बालू होइत अछि । दोसर बात जे मिथिलांचल मे शिक्षावृत्ति ओहने व्यक्ति चयन करैत छथि जिनका आन चाकरी नहि भेटैत छनि अथवा खेतौवारी आ अन्यान्य पारिवारिक भतेजा बेसी रहैत छनि आ एहि चाकरी मे गामक जगपास रहियो अनायासे सभ काज सम्भारि लेत छथि । कोहुआ बड़द सभ एहि शिक्षक सभुदायकेँ हिन्दी छिल पर बुझैत सबब बुझि पड़ैत छनि आ मैथिलीक नव लिख कष्टकर । तेँ अवरजक बात नहि जे मैथिलीक चर्च सुनिने अजिबाद शिक्षक लोकनि अपन नाक सुनि लेत छथि—संकीर्णताक गन्ध मे जागि जाइन । मिथिलाक शिक्षक बंगालक शिक्षक नहि थिक जे भाषा लेल इतना करत जुलूस बाहर करत आ अनशन करत । ई बात हमरा लोकनि केँ मन राखैक चाहि ।

तेसर बात थिक पोथीक दाम । एके विषयक हिन्दी पोथीक दाम जे एकटका रहैत छैक त मैथिलीक चारि टाका । इहो चाछि मैथिली विरोधी सरकारी संस्थाक थिक । मिथिलाक लोक जरूर बौद्धिक नहि अर्थिको रीढ़ टूटि चुकल छैक से बिबहु तीन टका बेसी द क अपन भाषा प्रेम नहि देखाओत । एहिठाम ईहो बात लिखब भरिसक आवश्यक जे जाइठाम पोथी विक्रेता केँ हिन्दी, उर्दू पोथिक निमित्त माना एक सए टाका जमा देव पड़ैत छनि ताहीठाम मैथिली पोथीक निर्मिच पाँच सए टाका ।

( शेर्पाथ पृष्ठ ४ पर )



## याज्ञवल्क्य

प्राचीन ग्रंथसमूह में बाह्य मुनिक चर्च सर्वाधिक अहं से आन के ओ नहि मिथिलाक सन्तान योगीश्वर याज्ञवल्क्य छथि। अवधी भाषाक महाकवि गोश्यामी तुलसीदास अपन रामचरित मानस में सेहो हिनक चर्च कएने छथि—याज्ञवल्क्य मुनि परम विवेकी, भारद्वाज रहहु पदटेकी।

ई जे कैहन पेश ब्रह्मज्ञानी छलाह ताहि सम्बन्ध में बृहदारण्य कोपनिषद् में कहल गेल्ले जे एक खेर वेदेह जनक अश्वमेध यज्ञ कएलनि बाह्य में विभिन्न देशक ब्राह्मण सब इच्छा भेलाह। हिनका लोकनि में विशिष्ट ब्रह्मज्ञानी के छथि से जनबाक निर्मित ओ एक हजार गाय वन वा देवभिन आ घोषणा करवा देवभिन से जे विशिष्ट ब्रह्मज्ञानी होखि से सब गाय छ जाय। परदेसी कोनो पंडित के बखन साहस नहि भेलनि तखन याज्ञवल्क्य अपन शिष्य सामभवा के गाय सब हाकि छ जेवाक आज्ञा देलनि। गाय सब हकिते परदेसी विद्वान लोकनि तमसा गेलाह आ श्रुत भेल आश्चर्य। विषयी भेलाह इहो मिथिलाक सन्तान योगीश्वर याज्ञवल्क्य आ पराजित प्रदेशी पंडित अपना सन मुह छ आपस भेलाह। ताहि दिन सँ ओह राजवंशक ई कुलक भेलाह। कहवाक प्रयोजन नहि जे ओह वंशक राजा लोकनि जे ओहन ब्रह्मज्ञानी होइत गेलाह से हिनकहि पसादे।

याज्ञवल्क्य देवरातक पुत्र छलाह। हिनक समयक सम्बन्ध में एखनहुँ विद्वान लोकनि में मतान्तर अछि तथापि भविकांश विद्वानक मत ई ३०० ई० पूर्वहि भेल छलाह।

हिनका सम्बन्ध में जे बात समसं बेसी फरिछाएल अहं से ई जे ई मिथिलाक छलाह—मैथिल छलाह। एहिठाम ई लिखल भरिसक अनंग नहि होइत जे मैथिल जातीक उदासीनताक कारणे अनेको विभूति एखनहुँ हेरायल छथि या आन देशक लोक हुनका आपनेवाक निर्मित प्राणपण चेष्टा करइल। कविपति विद्यापति पर हेमनिधरि बंगाजी लोकनि दावी करैत छलाह आ गोवीन्द दास के त भलनहुँ अपनओनहि छथि। काबिदास के उजैनक कहल जाइछ। उदयनाचार्य के बंगाजी कहल जाइत छल। बिछुए दिन पहिने एगो निबन्ध पढ़ैत रही बाह्य में कुमारिभट्ट के तमिल लिखल गेल्ले। परजव याज्ञवल्क्य संग एहि तरहक विवाद नहि भेल तकर प्रबान कारण जे संहिता में स्पष्ट लिखल अहं—‘मिथिलाभ्याः स योगीन्द्रः’। मिथिला तब विमर्शक अनुसार अधुना नेपाल में अनुषाङ्ग कुमुता गाम में याज्ञवल्क्य मुनिक आश्रम अहं।

कहल जाइछ जे याज्ञवल्क्य वैशाखायन मुनिक शिष्य छलाह परजव गुरु सँ खटपट भ जेवाक कारणे हुनका सँ पदक समस्त विद्या के ओ त्यागि देल। एही सँ प्रमाणित होइछ जे मिथिलाक सन्तान कैहन आत्मा-भिमानो होइत छलाह। तकर बाद ओ सूर्यक उपासना कए शुक्लयजुर्वेद प्राप्त कएलनि आ पश्चात याज्ञवल्क्यस्मृति, योगी

याज्ञवल्क्य, योगशास्त्र आदि विभिन्न ग्रंथक रचना कएलनि।

भारतक प्राचीनतम स्मृतिकार में हिनक नाम आदरक संग लेल जाइछ। मनुक अतिरिक्त एहन सामाजिक दार्शनिक दोसर नहि भ सकलाह। इहो कारण ‘थिक सर्वा-थिक टीका’ हिनकहि ग्रंथर लेखल गेल जाइ मे मिताक्षरा बाळकीडा आ दीप-काविका विशेष प्रसिद्ध अहं। एहिठाम इहो उल्लेख केनाई भरिसक आवश्यक जे मनुक अपेक्षा याज्ञवल्क्य बेसी प्रगतिशील आ व्यवहारिक आ स्पष्ट छथि। परवर्तीकाल में शंकराचार्य बाह्य अद्वैतवादक प्रचार कएलथि यद्यपि तकर आधार वादरायण व्यास कृत वेदान्त दर्शन के कहल जाइछ, किन्तु वस्तुतः तकर प्रवर्तक याज्ञवल्क्य छथि।

याज्ञवल्क्य स्मृति जे हेतु सामाजिक दर्शन थिक आ ताह सामाजिक आधार थिक मनुकस तें एहि में मनुकसक जन्म (भर्माजान) सँ मृत्यु पर्यन्तक काल कला परक निरूपित कएल गेल्ले। ओतवे नहि, मुहकका बादो तकरा निमित्त कएल जाइत आइ-एकोदिष्ट पार्वनादि विषयपर सेहो विस्तार पूर्वक विचार कएल गेल्ले आ पथनिर्देश कएल गेल्ले। आइयो मिथिला देश में प्रचलित आचार व्यवहारक आधार वस्तुनः हिनकहि ग्रंथ थिक।

एहि ग्रंथ में आचार व्यवहार प्रायश्चित्त तीनों विषयपर फराक फराक विस्तार पूर्वक स्पष्ट विचार राखल गेल्ले। सामाजिक विभिन्न वर्णक लोकक हेतु उचित अनुचित काल पर प्रकाश देल गेल्ले जे एहि सँ पहिने वा पश्चातो भरिसके कोनो विद्वान क सकल छथि। पुरुष स्त्रीक वैवाहिक योग्यता, एक दोसरक प्रति कर्तव्य, पिता पुत्रक सम्बन्ध तथा एक दोसरक प्रति कर्तव्य, राजा प्रजाक सम्बन्ध ओ कर्तव्य आदि सब विषय विवेचन भेल्ले। राजा स्वैराचारी नहि होखि तें तकरा लेल उचित योग्यता तथा राजधर्म निरूपित भेल्ले। मनुस्मृतिक अनुसार बाह्य ब्रह्मण के सर्वोपरि मानि अपराध कएलहुँ सन्ता दण्डक भागी नहि कएल गेल छल तथा श्रुतक सन्दर्भ में कठोर दंडक विधान अहं—याज्ञवल्क्यस्मृति ठीक तकर विपरीत विचार रखैत। एकरा अनुसार आइतक नजरि में समाजक सब अंश समान अहं केओ पेश वा छोट नहि आने केओ एकरा परीष सँ बाहरे छथि। तें वर्णक आधार पर केस के प्राथमिकता देनाह तथा दंड में पार्थक्यक ई खण्डन करैत छथि। कोनो अपराधक लेल दंडादेश वा फँसला सुनेवा सँ पहिने अपराधक विवरण अभियुक्तक बयान अभियोगक प्रमाण आदि के आवश्यक अर्थक रूप में निरूपित कएल गेल्ले। आइतक समस्त अवहेलित महिमा वर्ग के पुरुषक समान दर्जा सर्वप्रथम याज्ञवल्क्य स्मृति द्वारा देल गेल्ले।

जेना कि पहिने कहि आयल छी, याज्ञवल्क्य स्मृतिक टीका सम में सर्वाधिक चर्चित अहं एगारहम शताब्दीक मिताक्षरा हिन्दू आइन (Hindu Law) क रूप में समस्त प्रामाणिक इहो ग्रंथ थिक जकर

इज्जत माय-बाप !

जे कहव सत्त-सत्त कहव, सत्त छोड़ि बिछु नहि कहव। कळमक सत्त खाल क कहि छी। ओना ई बात दिगर भेल जे हमर सत्त मान हमरेटा हो आ अहं के ओह स कोनोटा सरोकार नहि हो। असल में सत्त छह की तकरो त आइवरि निष्ठुकी नहिजे भ सकल-ह। जे आखि सँ देखे छी जे सत्त थिक आकि जे कान सँ सुने छी से सत्त थिक ? जे अनुभव करे छी से सत्त थिक आकि दिमाग जकरा उचित बुझैत से ? तें इज्जत, सत्त की छह से हमहुँ नहि बने छी। एतवेना बने छी जे जे आखि सँ देखल, कान सँ सुनल आ हृदय सँ अनुभव कएल—सह्य कहव। रहल गण्य दिमागक त से इज्जत, फँट नामक वस्तुक एहि खोपड़ी में नितान्त अभाव छह। तें एहि अभाव के अनठवैत वंदाक गळती के अपन कंठ सँ उतारि ली वा माथक उपर सँ सवरि जाए दियेक—वंदा सदा अहांक आभारी रहत।

पाठकक इच्छास में कोनो लेखकक बाहिर भेनाह तरुआरिक चारपर चञ्चल सन छह, सीताक अग्न परीक्षा सन आ विशेष क ओकरा लेल जे कविता लिखैत हो। आर अपनैत बनिबै छी जे कवि सँ वेकार एहि देश में गदहो के ने चुभल जाइ छह। इज्जत, गदहो तैयो काबल होइत जे घर सँ घाट आ घाट सँ घर घरि बोवीक कपड़ा खोइत, किन्तु ओह कवि के की कहल जाइ जे ने त घरक अहं ने घाटक। ओना एह देश में किछु लोक अवसे छथि जे यदा-कदा कहियो केँ दू आहुण बास ओगारि दैत छथि। परजव एहन लोक आ एहन कवि छथि के कतेक ?

किछु कवि केँ हास्य वंग्य अथवा सस्वर पाठ करैक बढौलत कहियोकाल दू-चारि केँजवा भेटि जाइत छनि, अथवा भल होइक फिडिमवाला समक जे कोनो कविक तुकबन्दीपर वाह वाह क दैत छह किन्तु ताहुठाम कविक कपारे काल करैछ वा गोटी सुतारैछ वात कहि सके छी। ने त

मान्यता बंगाल आ आसाम छोड़ि समस्त भारतीय ज्वायालय में छैक। बंगाल आ असम में ब्रूमूतवाहनक ‘दयाभाग’ स्वीकृत अहं। एही आइतक अनुसार सर्वप्रथम पत्रिक संपत्ति में विधवा स्त्रीक हिस्सा स्वीकृत भेल्ले। ओतवे नहि एहि आइतक अनुसार मुश्निहारक कोनो बेटी कुमारि होइक तकर विवाहादिक खर्च लेल संपत्ति फराक क देवाक सेहो विधान छैक आ बंचक संपत्तिक विभाजन वेटा लोकनिक बीच होइत।

दान विषयक सर्वाक कम में याज्ञवल्क्य स्मृति समसं पेश दानक रूप में ज्ञान-दान केँ निरूपित कएने अहं।

विद्वान लोकनिक मते याज्ञवल्क्यस्मृति महत्ता केँ देखैत गुप्तकाल में—जकरा कि साहित्य-कला विकासक स्वर्णयुग कहल जाइछ राजकीय मान्यता प्राप्त छल्लेक आ एही ग्रंथक आधारपर समस्त राजकाज चलेत छल जेना कि मौर्यकालीन शासनक आधार कौटिल्यक अर्थशास्त्र छल।

—मुजतबा अली

आखि लोक में त निराशा, मुक्तिबोध आ कतेक ने नामी-गिरामी कवि या त वताह भ गेलाह या विनु औषध-बारीक चलि देखनि। ई बात फराक थिक जे मुहकका बाद हुनको लोकनिक लेल एकावटा थोक समान भ जाइत।

इज्जत, हम हुनके लोकनिक खानदानक एगो कवि छी। कतौ गोटी नहि सुतरक आ ने कपारेक जोरगर छी—तें केओ बावो नहि ओगारक। पहिने एहि बातक कचोटो हुअए जे केओ कवि ने पुछैत ? परंच जेना जेना समय चितैत गेल्ले, बुझि ठेकान जगैत गेल। माने इज्जत हमरा त कोनो ठर ठेकान नहि भेटल मुदा बुझिबेरि ठेकान लागि गेल। भेले एना कि शुरू-शुरू में बखन कि हम नवे एहि शहर में आइल रही, हमरा मन में कविताक समुद्र उमड़ि पड़ल छल आ हम ओह में हुबही-मारि मोटी बहार क क लोक केँ देखल-तिपेक आ चढा मे वाह-वाहीक इनाम पवितहुँ। ओना हम वाह-वाही चारैत नहि रहि। चारैत रही जे जाइ समाजक हेतु हम कविता लिखै छी, हमर संगी सब सेहो ओह में भाग लिअए। परंच भेल कि इज्जत, ओहवे दिन में हमरा समक नेताक पता लागि गेल। ओकरा समक कविता स कम अपना नाम सँ बेसी चिनेल छल्लेक। ओ सम कोनो मूखपर अपन नाम छामोनाह आ प्रचारित केनाह में अभिरुचि रखैत छल। एक दिव त ओ सम लोकक दुख दर्द क संघर्षक बात करै छल त दोसर दिव ओकरा लोकनिक सब समय सुविधा बढोरवा में वीति जाइत छल।

इज्जत, हम बेसी पढ़ल-लिखल नहि छी। किन्तु नेना में हम जते पेश लोक केँ पढ़ने छी ताह सँ एते अवसे चुभलहुँ जे विनु निष्ठाक बिनगी में किछु पओनाह असंभव। परंच जेना-जेना नमहर होइत गेलहुँ—देखलहुँ कि जे केओ किछु हासिक केनहि ताह में हुनका लोकनिक तोड़-बोड़, गोटी सुतारनाह बेसी छलनि।

इज्जत, हम मानै छी जे आजुग युग आदर्शक युग नहि थिक। हम इहो मानै छी जे सत्त, ईमानदारी आ मानवीय मूल्य भगवानेसन अगोचर छह। आजुग युगक संग ओकर कोनोटा सम्बन्ध सरोकार नहि। हमरा इहो चुभल अहं जे लोक उगैत सूर्य के नमस्कार करैत। जे चिन्हार भ जाइत। जकरा कुर्वी भेटि जाइ छह, जकरा कोनो प्रमाण-पत्र वा पुरस्कार भेटि जाइ छह—तेकरे समठाम मान्यता भेटैत छैक। किन्तु इहो कि एहिठाम सब संयोग प्रधान छह इज्जत, चांसक बात छह सब।

अहां सोचैत होयव इज्जत जे कि हमरा कतहु चांस नहि भेटल—तें हम एना कहि रहल छी। इ इज्जत, एकदम सत्त छह जे हमरा कतहु कोनो चांस नहि भेटल आ भरिसक भेटवो नहि करत। किन्तु इज्जत, एक बात पुछू, अपने जवाब देव ? की एही लेल हम अपन बाट छोड़ि दी जे सब भोतिया गेल अहं ?

ॐ



## लाल बुभुकरक चिट्ठी

जीमान् सभादक भी महोदय !

नमस्कार सह जय मैथिली !

आगा हाब सुरति की बिबू ? विरहित बन के सदा वसंत—तकरे परि छनि बाब बुभुकर के । असब मे जे पुछी त बाब बुभुकर विदेह भूमिक सुनवा सन्तान छथि ने, ते तरबा सं टिकासनवरि विदेह छथि । कैओ गारि पदनु वा आशीर्वाद देउन, वा दू चाट लगाइए देउन—हुनका लेखे जन सन ।

हं, अहाँ बिबे छी जे 'देसिक वयना' क डिप्लोमेशन नहि मेडि 'देसकोष'क भेटक, ते ओही नाम सं पत्रिका बहार करय पड़त । एहि मे चिन्ताक कोनो कारण त हमरा नहि बुझि पड़ेए । देसिक वयना हो वा देसकोष—बात एकै मेक । अखने देसकोष अइ त देसिक वयना रहवेटा करत—से एक जगजाय मिश्र के कहए हमारो जगजाय मिश्र ओकरा नहि मेटा सकैत छथि । अहाँ कने ज्ञानभाक जोग द क विचार आ अपन नाक दावि स्मरण करू जे आइ सं छ सख बखल पहिनिह बाबा विद्यापति की कहि गेल छथि—बाबचन्द्र विद्यावह भाषा

हुहु नहि आगइ दुखन हावा ओ परसेसर हर सिर सोइह ई विचर नाथर मन मोइह

से हुजने सभ जते किछक ने नाइछि पट-पटावओ—बाबचन्द्रमा सन हमर ई भाषा चारिकोटि मैथिली भाषीक हृदय रूपी निर्मल आकाशपर आर द्विगुन तेज सं समचमाइत रहत—बाबरि ई पिरभी रहैत । ते अहाँ चिन्ताकमुक्त भ क कान मे गणेश छाप खाटी सरिवोक तेह द सूति सकैत छी ।

आब अगिला विषय—राष्ट्रपर संकटक सम्बन्ध मे । सभादक भी, श्रीमती गांधी अखन किछु वजत छथि त तकर ओ अर्थ नहि होइत छैक जे हम—अहाँ बुझैत छी । ते ओ अखन कहैत छथि जे राष्ट्रपर बहरिया आक्रमणक संभावना छैक आ तकर समर्थन करैत महान मार्क्सवादी श्रीमान नरसूदरी-वाद कहैत छथि जे सुहरि कग युद्धक नखाइ बाबि रहल ए त तकर अर्थ ई कथ-मपि नहि जे हम सभ गोटे बाओ भाबा क शत्रुक सामना करै छैक वाटपर बहरा जाइ । एकर सोझ अर्थ होइ छैक जे अहाँ आओन मे जे पथार पसरल अइ वा अजक देरी जागल अइ, कोटी-वसारी मे जे किछु अइ, पौती-पेटारी मे जे गहना-गुदिया अइ—से सभ सर्व प्रभानमंत्रीक लुखा कोश मे दान द दिएक । जं ताइ मे कष्ट हो त सोके घर मे जा कान मे ठुठके द चहरि सं सुई भापि सूति रहू—वांकी काब देशक स्वयं-सेवक ओकनि अपनहि क जे । सभादकभी जेना कहवी छैक ने जे हुहु भ गेबा आ नाक जगले छनि से तकरे परि अहाँ के अइ । हेओ श्रीमान्, शब्द भनहि बदा होइत होइक परंच ई के कहइक जे ओकर अर्थ सेहो बहम होइत छैक । अर्थ त देश-काब मानक अनुसार बदलेत रहैत छैक । जं सच पुछी त इह सभ सोचि क हम राजनैतिक शब्दकोश तैयार करवाक काब हाथ मे लेइए आ थोड़-बहुत काबो भेइए । असब मे प्रायः बखल दिन सं हम श्रीमती गांधीक समस्त भाषणक प्रत्यक्ष

ओता छी । अहाँ कहू ने जे ई दुटपुनिया विरोधी दलक नेता सभक पाछा घुमनाइ सं श्रीमतीक पाछा घुमनाइ नीक की नहि ? कहवियो छैक जे सए चोट सोनार के आ एक चोट ओहार के । विरोधीदल सभ कतबो एकठा भक चिकरपु—पार जगतनि ओते फुसिह बाबज बते श्रीमतीजी असगर एके मंत्र सं बाबि छैत छथि । सभादकभी-हमरा त पुरे पसेरीभरि विश्वास अइ जे फुसि बच-वाक हेतु जं कोनो नोबेक पुरस्कार रहितैक त सर्वप्रथम ओ श्रीमती गांधी के भेटितनि आ लेना कि कहवी छैक जे सुकिरिह नाम कि कुकिरिह नाम—से राष्ट्रक त नाम होइतैक ।

हमर श्रीमती जी राष्ट्रक अखंडताक रक्षा लेख सेहो बेवी चिन्तित बुभुका जाइत छथि आ ते ओ प्रायः लोक के विच्छिन्नता-वादी तत्व सं सावधान रहवाक चेतानी दैत छथिन । एहि तत्व मे ओ बम्भू-चमरीक क्षमताशौल दल, नेशनल कामफरेन्स, आसामक आन्दोलनकारी तथा पंजाबिक अकाबो दल के मानैत छथि । परञ्च जं अहाँक स्मरण शक्ति बिभाजल नहि होत मने इह त जे इह कनफरेन्स श्रीमतीजीक मंजूर छैक—विगत चुनावक पूर्व आ जे हेतु विगत चुनाव मे मंजारी दूटि गेलनि । आ कनफ-रेन्स अपन खेती सभारि लेखक आ ई दुसि गोडी त ओ विच्छिन्नतावादी आ साक्षरवादीक भ गेल । तहिना जनता सरकारक अलमदारी मे भइकल असम आन्दोलन के दिनकैदल ने वसत केने छैक परञ्च जे हेतु ओ दिनका मुठो सं बाहर भ गेल ते राष्ट्रविरोधी थिक । तहिना पंजाबोके आगि कि दिनके पबारल नहि थिकनि ? एखनो प्रायः कोनो दिन वाम नहि जाइल बहिया एकपाटा निरपराध हिन्दूक हत्या नहि कएल जाइत होइक—परञ्च, सरकार लेखे जन सन । त्रिपुराक उपजाति संगठन जे कतेको खून-खरापीक बिस्मेदार अछि जे श्रीमती जीक भंजारे छनि ।

असब मे श्रीमती जी तेहन माहिर खेबाही छथि जे घाव कतौ आ प कतौ करैत छथि । किछुए दिन पहिने विहार भ्रमणक दौरान ओ बबलीइह जे ककरोपर 'हिन्दी' माने कोठाक भाषा बादल नहि जा रहल छैक । अहाँ के छगुन्ता जागि सकैए जे जं श्रीमती जीक कथन ठीक छनि त विहारक भाषा हिन्दी भेवे केना केले ? तथाकथित आबादी सं पहिने जाइ मैथिली-भाषीक संस्था डेढ़ कोटि छलैक से आबादीक वाद पवपन हमार केना भ गेलै ? प्रश्न आर छैक जे अखन सभ भारतीय समान अइ त देसक भाषा संविधान मे छैक आ समस्त सरकारी सुख-सुविधा पवैए तखन हमरा ओकनिक भाषा मैथिली किछक चारल अइ ? एहि सभ प्रश्नक जवाब लेख कने आर पाछू जाइ पड़त । किछु दिन पहिने ओ बाबल छबीह जे भाषा-वर्म-क्षेत्र आदि नगण्य विषय के विसरि ओक राष्ट्रीय अखण्डताक लेख केन्द्र के शक्तिशाली बनावए । एहिठाम स्मरण रखवाक थिक जे ई बात ओही लोक सं कहइ गेलैए जे दोसर स्तरक नागरिक अइ—जकर भाषा-भूमिक चर्च भारतीय संविधान मे नहि छैक,

कविता

## देश मगर महान छइ

अपाठक के देश हिन्दुस्तान छइ  
आर जे किछु हो मगर महान छइ

बारवधु अइ एतय पटरानी बनल  
कुलवधु बलपत छइ बनबास मे  
आइ भरआ पर एतय अभिमान छइ

जतय कज पर चले सरकार छइ  
शक्तिशाली हाथ सभ बेकार छइ  
देश बढ़िते जा रहल आगू मगर  
बंचल हजुतक ने साबुत राष्ट्र के  
की हेतै, साबुत बंचल त शान छइ

गीध-गीधर मनावैए महोत्सव  
देश के सेवक बनल जलछाद छइ  
नाक जुनि सिङ्गड़ी सडांध एतय कहां  
बीस सूत्री इन के पैगाम छइ  
ठोक सं देखू शमशान न ई थिके  
अरे एकर नाम हिन्दुस्तान छइ

की कहल ? कुकुर जेना भूकैत छइ  
अरे ई त छैक भाषा राष्ट्र के  
आर ई सभ श्वान नहि छथि राष्ट्र कवि  
राष्ट्र नायक के गवै छथि आरती  
बात भनहि विचित्र छइ खासियत  
तखन ने ई देश हिन्दुस्तान छइ

—रामलोचन ठाकुर

कारण ओकरा अविचार मेडि गेल छैक से त छोड़ि नहि सकैछ । भाषा विसरवाक सोझ अर्थ मेक पशु बनि गेनाइ आ सुविधाक लेख पशुओ मे गदहा सभ सं उपयुक्त होइए । बर्म विसरि जाउ—माने माझिक—मतलब सरकार अपन इच्छानुसार कखनो अहाँपर कपडाक मोटा बादि सकैछ, कखनो ऊस बादि सकैछ आ कखनो अपने चढ़ि सकैछ—अहाँ कान जुनि पटपटावी । भूमि विसरि जाउ—माने अहाँ के पोखरि वा हाट-बजार वा पहाड़ पर छ गेल बा सकैए—घास चरवाक पक्षितियो मेडि सकैए ।

अहाँ के हमर ब्याख्या सुनि-पढ़ि अवबज जागि सकैए । अहाँ कहि सकै छी जे कोनो देशक प्रभान मंत्री एहन बात केना बाबि सकैछ ? परञ्च सत पुछी त अपन देशक बात त हम नहि कहि सकैत छी परञ्च भारत सन विश्वक बृहत्तम गणतंत्रिक देश मे एहन बात प्रभान मंत्रीष्टा क सकैछ । जं दोसर केओ लोक के गदहा बने लेख कहै त ओकरा मारि रोड़ा सं कपार फोड़ि देख जेतैक, कुकुर हुक्का देख जेतैक आ हड्डी मे जं नहियो ठोकरल जाइ त काँके अवबसे पठा देख जेतै । ओना ई बात सत्य होइतहुँ कोनो महत्त्व नहि रखैय जे श्रीमती जीक अपन कहिके भूमि-भाषा बर्म-संस्कृत किछुओटा नहि छनि । महत्वपूर्ण त ई छैक जे माटि सं अक्षय्यक रहितहुँ ओ समस्त भारतीय भाषा-संस्कृतिक विद्याक कुलवारी पर अमरकती जकाँ पसरल छैथ ।

हं त जेना कहैत छहुँ ज ई समस्त लोक जकरा चर पर श्रीमती जी केँ राबसिहासन प्राप्त छनि गदहा बनि जाइछ त राष्ट्रक अखंडता सदा सदा लेख बरकरार रहत । जेना कि देश विभाजित भइयो केँ अखंड अइ, किछु भाग पकिस्तान घकिया लेखक आ किछु चीन दवा लेखक, किछु लंका केँ दान द देल गेल आ किछु बंगला देश केँ दान केँ अगो मेँ देशो केँ राष्ट्र अखंडित अइ-

तहिना हमार दुकड़ी होइतहुँ ई अखंडित रहत । जं आर सोझ शब्द मे कही त राष्ट्रक अखण्डताक अर्थ भेक नेहए परिवारक शासन परंपरा केँ अखण्डित रखनाइ ।

बारह जनवरी के अपन दिवसीक भाषण मे अशोक आ अकबरक प्रशंसा मे पंचमुख श्री मती जी स्पष्ट कहलनि जे जेना अकबर आ अशोकक समय मे केन्द्र शक्तिशाली छल-तहिना ओ चाहैत छथि । ओना ई कथा भिन्न जे महाराणा प्रताप सन देशद्रोही अकबरोक समय मे छलै । एहि सन्दर्भ मे अधोक महान छलाह जे कलिंग के ठंढा क देलनि ।

अहाँ के त मने होइत जे विहारक वर्तमान सर्वमंजी श्रीमान चन्द्रशेखर सिंह स्पष्ट शब्द मे घोषणा केलनिहैं जे केन्द्रक अर्थ होइछ नेहए परिवार आ तेँ केन्द्र के शक्तिशाली बनेवाक अर्थ भेक नेहए परिवार के शक्तिशाली केनाइ आ नेहए परिवार के शक्तिशाली बनेनाइ—माने जेना नेहएक वाद श्रीमती गाँधी तहिना श्रीमति गाँधीक वाद आजुक नेता कास्टिक आशा (Today's leader tomorrow's hope) राबीव गाँधी केँ विशासनरुद केनाइ आ राबीव गाँधीक वाद कास्टिक नेता परलक आशा (tomorrow's leader day after tomorrow's hope) राहुब गाँधी के विशासन-रुद केनाइ आ राहुब गाँधीक वाद.....

आशा अछि जे हमर एहि ब्याख्या सं अहुँक राजनैतिक बुद्धिक किछु विकास होइत । ई पत्र नितान्त वैयक्तिक आ गोपनीय थिक—तेँ एकरा छपवाक कष्ट नहि करी ?

पत्रोत्तर नहि देवाक प्रबल आकांक्षी  
श्रीमान् लालबुभुकर  
बुभुलुक ग्राम बाबो



## किल्लु देखल : किल्लु सुनल

विगत ३४ दिवस के अ० मा० मिथिला संघ कलकत्ता, अपन रखत जयन्ती वर्षक उपलक्ष्य में मिथिला-विभूति पर्वक आयोजन केने छल-स्थानीय रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालयक सभागार में। एहि अवसर पर एगो समारोह सेहो बहार कएल गेल कम सं कम दोसर दिन मंचपर कवि सम्मेलनक समय अपनहि हाथेगोर देखेक समारोहक विवहलन संघक प्रोप्राइटर श्री बाबू साहेब चौधरी। समारोहक देव। सं पहिले लोकक सुइ नौक जकां निहारि लेनाइ आवश्यक छलनिह—कहीं अपात्रक हाथक हाथ ने पड़ि जाइक। ओना विवहलक बाद कहि देखलनि—सम तैयार नहि भ सकलै। ओना ई बात दिगर मेळ के समारोहक उपर मे छल छैक—मिथिला विभूति पर्वक अवसर पर उपस्थित समस्त मैथिली प्रेमी के सन्देश। जे हो समारोह मे कार्य-क्रमक विवरण नहि छैक। पहिल दिन जे एगो पचां विवहल गेल छलैक तकर नमूना देखू—अखिल भारतीय मि० संघ कलकत्ताक रखत जयन्ती आ' मिथिला विभूति पर्वक कार्य-क्रम। ३-१२-८३ यानि ४ बजे सं। १. मनोनीत अध्यक्ष ओ अन्य अतिथि के मंचपर स्थान ग्रहण २. माध्य प्रदान ३. गोसाउनिक गीत ४. स्वागतार्थक भाषण ५. संघ अध्यक्षक भाषण ६. उपाध्यक्षक भाषण ७. प्रधान अतिथिक भाषण ८. प्रधान वक्ताक भाषण ९. मान-पत्र अर्पण १०. विशिष्ट व्यक्ति क भाषण ११. अध्यक्षीय भाषण १२. कवि सम्मेलन १३. कंठ संगीत :—(अ) चन्द्रमणि (ब) सरस-रमेश (स) पवन गोविन्द (द) रमण (प) प्रदीप (क) रवीन्द्र महेंद्र। मनमोहन-विजय वृद्धनारायण आ।

पचां मे छपल तिथि के बाद देख जाइ सएह नौक, कारण इहए कार्यक्रम प्रायः दुनू दिनक छल। दोसर दिन अतिरिक्त मे मुख्य आयोजन छल आ से नौक छल त रमण, प्रदीप, मनमोहन-विजय आ वृद्धनारायणक कंठ संगीतक लोक वाट तकित रहि गेल। कविकोनि के पहिल दिन विवहल नहि कराओल गेलनि।

जेना देखल, मिथिला विभूति मे किरण बी मणिमदन मिश्रकेन्द्र बी देवनारायण बाबू आ विन्देश्वर मंडल सम्मानित भेल। जेना सुनल, मधुप बी आ उदिन बाबू के सम्मान भी० पी० सं पठा देल जेतनि।

दोसर दिन जे कवि सम्मेलन भेल तकर अध्यक्षता केलनि अखंड किरण बी आ भाग लेलनि सर्व श्री मायानन्द मिश्र वीरेन्द्र मलिक, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, रमण प्रदीप मैथिलीपुत्र, उदयचन्द्र आ 'विनोद' राम कोचन ठाकुर, विभूति आनन्द, कक्षमण आ बागुर अर्जुन ठाकुर, विनोद कुमार आ, सरस, चन्द्रमणि, रमेश, सनेही प्रेमनन्द दास, कृष्णकान्त आ आदि।

भाषण कचां मे प्रमुख उद्वाह श्री भोगेन्द्र झा, श्री शिवचन्द्र झा, श्री वैष्ण आदि।

एहि विभूति पूर्वक विशेषता छल—जे पचां सं भाषण करे 'विभूति' लोकनिक नाम चर्च नहि भेल। मान पत्र भेटि गेलनि वर।

जे जाइ मैथिल कुटुम्बक डॉ० अग्रनाथ मिश्रक लेल ई आयोजन छल से नहि जाइ आ आयोजक लोकनिक स्थिति गाल स खसल सक भ गेलनि।

जे जाइ मिश्र वरुण चर्च समारोह सं आयोजक लोकनिक ओरपर चक्रमात्र देत छल तार मे एगो त इवे नहि देल जा आ दोसर वस्तु जय नारायण मिश्र के इवो केलाइ त तिनका दर्शक ओता लोकनि तेहन सम्मान केलकनि जे विनु वक्तव्य वचनरहि अपन गेष्टहाउसकीरि गेलाइ। मन्त्रह हथार टका पानि मे।

जे कलकत्ता मे पहिले-पहिले मैथिलीक मंच सं हिन्दी मे भाषण भेल। जे व्यक्ति पाठनाक चेतना समितिक मंच सं हिन्दी भाषणक विरोध केने छल—अपना मंच पर देश मनोयोग सं सुनैत रहल—कानो नहि पटरलओलनि।

जे कलकत्ता मे सभदिन जय मिथिला, जय-मैथिली, जय मैथिलक आवाज सुनल जाइत छल एहि बेर जय भारत आ जय हिन्दी बेसी ध्वनित भेल।

—जयदेव झाभ

## शिक्षाक माध्यम

की ई मैथिलीक विषय विहार टेक्स्ट बुक कमेरेसनक पदबंध नहि ?

ते हमरा लोकनिक माऊ देवाक वाली मिथिलांचल मे निम्नतम स्तर सं उच्चतम-स्तरपर शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली हो, जेना प० बंगाल, उड़ीसा, तामिळनाड आदि विभिन्न प्रान्त मे छैक। जं मिथिलांचल मे दोसर भाषा-भाषी छात्र छथि त एक पत्र हुनक मातृभाषाक अवसरे पढ़ाओल जायत—छठम वर्ग सं जखन कि मैथिली भाषी छात्र सेहो एकटा अपर भाषा हिन्दी वा. अंग्रेजी वा अन्ये कोनो—पढ़ता—जेना आन प्रान्त मे अछि।

—सुजतबा अली

बालमंच

## अटकन मटकन

अटकन मटकन दहिया चटकन  
बजै छौ हिन्दी त मार दू चटकन  
मिथिला मे रहि क हिन्दी बजै छौ  
खा तोरे अन्न अपमानो करै छौ  
सहै चुपचाप लगी लाजो ने कनियो  
गरबनि पकड़ि क लगा दही पटकन  
बिनु राज्य मिथिला खिचिल भेल रहब  
भाषा विहीन भेल बौक तो मरब  
मायक ई लाज काज तोरे से जाति के  
जाति पाति भेद बिसरि आबो त बढ़ब  
आइ ननि बिगार गीत प्रीतक प्रयोजन छइ  
रणचंडीक आइवान करै मने मन

—रामलोचन ठाकुर

## मैथिली पोथी/पत्रिका कीनू आ पढ़ू

इतिहासहंता (कविता संग्रह)	—	२/४ टाका
वेताळ कथा (हास्य-व्यंग्य)	—	४ टाका
जादूगर (अनुदित नाटक)	—	५ टाका
प्रतिध्वनि (अनु० कविता)	—	४ टाका
अर्धनारीश्वर (उपन्यास)	—	२५ टाका
सुश्री रघुनन्दन दास : (व्यक्ति ओ कृतित्व)	—	७ टाका
मैथिली लोककथा	—	५ टाका

सम्पर्क करू :—

अरुणोदय प्रकाशन

कलकत्ता

## मिथिलावासीक मांग :-

१. मैथिली के संविधानक आठम अनुच्छेद मे स्थान हो।
२. केन्द्रीय लोक सेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान हो।
३. मिथिलांचल मे निम्नतम सं उच्चतम स्तरपर शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली हो।
४. मैथिली बिहारक दोसर राजभाषा हो तथा मिथिलांचल मे एकरा प्राथमिकता देल जाइक।
५. आकाशवाणी वृद्धिर्भंगा तथा भागलपुरक प्रसारणक माध्यम भाषा मैथिली हो।
६. समस्तीपुर सं जयनगर धरि बड़ी लाइन बनाओल जाय।
७. मिथिलांचल मे यातायातक सुव्यवस्था हो।
८. मिथिलांचल मे कृषिक अवस्था मे सुधार हो तथा रौंदी बाड़ी सं बचवाक उपाय हो।
९. मिथिलांचल मे कृषिपर आधारित सरकारी उद्योग-धंधाक विकास हो।
१०. मुजफ्फरपुर दूरदर्शन केन्द्रक प्रोग्राम मे मैथिली के प्राथमिकता देल जाइक।

मैथिली मुक्ति मोर्चा

कलकत्ता

अरुणोदय प्रकाशन ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०००३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पावनियर आर्ट प्रिन्टर्स ३२ बी, वृन्दावन बैशाख स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित।

२२/१/८४  
श्री गणेशाय नमः



# मथिल संस्कृतिक आधार स्तम्भ

( प्रोफेसर हरिमोहन झा )

मिथिलाक संस्कृति अत्यन्त प्राचीन आ त्त्विक अछि। सरल जीवन आ उच्च चार एकर विशेषता। शील, संतोष शास्त्र-जन्तन एवं धर्मनिष्ठता एकर नैसर्गिक गुण। अतः विद्या-विनोद, मधुर परिहास एवं प्रतिस्पर्धापरायणता एकर भूषण। एहि संस्कृति'क आधार-शिला थीक आध्यात्मिक दृष्टिकोण। औपनिषदि के युग सँ मिथिला अपना दार्शनिक विचारधाराक लेल प्रसिद्ध अछि। जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम प्रभृति महर्षि अही भूमि पर उत्पन्न भेलाह। एहने-एहने मनीषिक पुनीत साधना सँ एहिठामक सांस्कृतिक जीवन अनुप्राणित भेल अछि।

राजर्षि जनक जीवन-मुक्तिक प्रतीक छलाह। हुनका विषय मे ई उक्ति एखनहुँ प्रसिद्ध अछि—“मिथिलायां प्रदीप्तायां न मे दहति किंचन।” एहि सँ बढि कऽ अनाशक्ति-योगक उदाहरण और की भ सकइए? दूर-दूर धरिक जिज्ञासु हुनका सँ ब्रह्मज्ञान सिखवालेक अवैत छलाह। बृहदारण्यक उपनिषद् मे सेहो हुनकर सुयश-वर्णन भेटइए—“जनक जनक इति वै जनाः धावन्ति ( २।१।१ )” देवी भागवत मे कहल गेल छइ—वंशेऽस्मिन् येऽपि राजानस्ते सर्वे जनकास्तथा। विख्याताः शानिनः सर्वे विदेहाः परिकीर्तिताः।”

( अर्थात् जनकक वंश मे जत्त राजा भेलाह, सब हुनके जकाँ आत्मज्ञानी। वेह केँ कुछ बुझबाक कारने हिनका सब केँ ‘विदेह’ कहल जाय लागल )।

मात्र राजादिके नई, मिथिलाक साधारण जनता आध्यात्मिक रंग सँ रंगल छल। एकर प्रमाण श्रीमद्भागवत मे भेटइए—“एते वै मिथिल राजन, आत्मविद्या-विशारदाः। योगेश्वर प्रसादेन, द्रष्टुं मुक्ता गृहेष्वपि।” जल मध्यक कमल जकाँ, संसार मे रहितउँ संसार सँ निर्लिप्त रहब एहि भूमिक आदर्श रहल अछि। इएह आदर्श भारतीय संस्कृतिक आत्मा थीक।

याज्ञवल्क्यक आत्मवाद दार्शनिक साहित्य मे विशिष्ट स्थान पाओल अछि। हुनकर अवयव, मनन एवं निदिध्यासन सम्बन्धी उपदेश सहस्राब्दि सँ एहि देशक सांस्कृतिक चेतना केँ जगवैत आवि रहल अछि। ओहि कालक मैथिल स्त्रिओ तत्त्वदर्शिनी होइ छलीह। याज्ञवल्क्यक स्त्री मैत्रीयक वचन छनि “येनाहं नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम्?” ( अर्थात् जे अमृत, अमरजान नहि अछि, से लऽ कऽ हम की करब ? ) दार्शनिक रागी ब्रह्म विषयक गूढ़ प्रश्नादि सँ याज्ञवल्क्यो केँ चकित कए देने छलीह। न्यायशास्त्रक रचयिता गौतम से हो मिथिलेक विभूति छलाह। स्कन्द पुराण मे गौतमक निवास-स्थानक वर्णन एना अछि “आसीद् ब्रह्मपुरी नाम्ना मिथिलायां विराजिता, तस्यां वसति धर्मात्मा गौतमो नाम तापसः।” एखनउँ मिथिला मे गौतम स्थान आ गौतम कुण्ड प्रसिद्ध अछि। गौतम प्रणीत न्याय

सत्यतः मिथिला तर्क, शास्त्रक जननी कहल जा सकइ छथि। प्राचीन न्यायक प्रणेता गौतम आ नव्यन्यायक प्रवर्तक गंगेश—दुनू मिथिलेक संतान। अहिना, मीमांसा दर्शन अभिवृद्धिक श्रेय सब सँ अधिक मिथिले केँ अछि। पूर्वमीमांसाक तीनू शाखा (कुमारिल, प्रभाकर तथा मुरारि मिश्रक) एतइ प्रादुर्भूत एवं प्रस्फुटित भेल। मिथिला मे न्याय ओ मीमांसाक अधिक उत्कर्षक कारण इहो भेल जे मिथिला केँ बौद्धदर्शनक पाथर बिहाड़ि सहए पड़लैक। बौद्ध तार्किकादिक आक्रमण सँ वैदिक कर्मकांड आ ईश्वरादि केँ बचएबा लेल मिथिला मे एक पर एक उद्भूत मीमांसक नैयायिक होइत रहलाह। ई परम्परा कहएक शताब्दि धरि रहल।

मंडन मिश्र मीमांसाक सब मे अग्रगण्य छलाह। हिनकर प्रकांड विद्वत्ता सुनिकऽ शंकराचार्य हिनका सँ शास्त्रार्थ कए हिनकर गाम ( वर्तमान सहरसा जिलाक सुप्रसिद्ध ग्राम महिषी। महिषी अथवा महिष्मती। महर्षि बशिष्ठ अहीठाम भगवती उग्रताराक आराधना कएने छलाह। ) आएल छलाह। तहिया मिथिलाक बौद्धिक स्तर केहेन ऊंच छल, से ‘शंकर-दिग्विजय’ सँ ज्ञात होइए। जखन गामक कोनो इनार पर शंकराचार्य कोनो पनिभरनी सँ मंडन मिश्रक विषय मे पुछलथिन तऽ उक्त पनिभरनी उत्तर देलकनि—“स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं वीरांगना यत्र गिरौ गिरन्ति। द्वारस्थनी दान्तर सन्निहताः जानीहि तन्मंडन पंडितौकः।” ( अर्थात् जइ दरबजा पर टांगल पिजड़ा मे सुगन्ध-सुगन्ध ‘ब्रह्म अप्पन प्रमाण अपनइ थीक आ ब्रह्मक प्रमाण ई विश्व थीक’ अइ महान वाक्यक आवृत्ति कए रहल होइथ, तकरे मंडन मिश्रक स्थान बूझि लेब। ) मिथिलाक स्त्री केहेन होइत छलीह, एकर ज्वलन्त उदाहरण मंडन मिश्रक पत्नी सरस्वती देवी छथि, जे ओहि ऐतिहासिक शास्त्रार्थ, मे मध्यस्थक कार्य कएलनि।

भारतीय दर्शनक इतिहास मे वाचस्पति मिश्रक बड़ आदरणीय स्थान अछि। छबो दर्शन पर समान अधिकार रखबा कारने हिनका षडर्शवल्लभ कहल गेल छनि। ई दरभंगा जिला, ढाढ़ी गामक रहनिहार छलाह। उद्योतकरक न्याय वार्तिक पर ई अप्पन सुप्रसिद्ध ‘तात्पर्य टीका’ रचलनि, जकर आरम्भ मे ई लिखइ छथि—इच्छामि किमपि पुण्यं दत्तं कुनिबन्धनकमग्नानाम् उद्योतकरगवीनामतिजस्तीनां समुद्रणात्।’ ( अर्थात्, उद्योतकरक बूढ़ि गाय सब दल-दल मे फंसल छथि, तनिकेँ उद्धार कए थोड़ो पुण्य कए चाहैत छी। ) वाचस्पति मिश्र बौद्ध तार्किक सभक खंडन करैत, एहेन विद्वता सँ न्याय शास्त्रक तात्पर्य सिद्ध कएलनि जे ई ‘तात्पर्याचार्य’ कहबए लगलाह। शंकर भाष्य पर हिनक सुप्रसिद्ध ‘भामती’ टीका वेदान्त क्षेत्र मे गौरवपूर्ण स्थान रखैत अछि। ‘भामती’ हिनकर विदुषी पत्नीक नाम छलनि। आधुनिक दर्शनक ई प्रणेता

हजुर माइ-बाप ! अपने सम्बन्ध मे कहनाइ शुरू करी, सहज ठीक हएत। किएक त जखन हम दोसराक सम्बन्ध मे कहैत छी त कहहु ने कहहु अपने परिचय प्रस्तुत करैत छी। खाहे हम दोसराक प्रशंसा करैत होइ वा निन्दा। दोसराक गुण-स्वभावक किरण आवि, केँ

उदयनाचार्यक नाम सेहो अग्रगण्य। हिनकर ‘न्याय-कुसुमांजलि’ ईश्वर विषयक अद्वितीय ग्रन्थ अछि। नास्तिक बौद्ध सब संगे युद्ध कए आस्तीकवादक स्थापना करब, हिनके सन धुरंधर आचार्यक काज छल। हिनक सम्बन्ध मे एक किंवदन्ति अछि जे एक बेर ई कोनो कष्ट मे पड़ि गेलाह तऽ ईश्वर केँ सम्बोधित करैत बजलाह—“ऐश्वर्य मदमत्तोऽसि मामवज्ञाय वर्तसे, उपस्थितेषु बौद्धेषु ममाधीना तव स्थितिः।” ( अर्थात् हे ईश्वर, अहाँ ऐश्वर्य-मद मे मत्त भऽ हमर उपेक्षा करैत छी। मुदा, बूझि राखू, यदि हमर अस्तित्व अहाँ पर निर्भर अछि तऽ अहाँक अस्तित्व बौद्ध सबक मध्य मे हमरे पर निर्भर अछि। ) एहन छल मैथिल पंडित सभक आत्मविश्वास मैथिल पंडित सभक इहो गर्वोक्ति प्रसिद्ध अछी—“वयमिह पदविद्यां तर्क मान्वीक्षिकीं वा यदि पथि विपथे वा वर्तयामः स पत्याः। उदयति दिशि यस्यां भानुमान सैव पूर्वा नहि तरणिरदिते दिक् पराधीनवृत्तिः॥”

( अर्थात् भाषा ओ तर्क केँ हमसभ जिम्हर लऽजायब, सहज मार्ग बनि जएतइ। सूर्य जइ दिशा मे उगइए, सहज पूर्व दिशा कहावइए ) ई सूर्य दरभंगा जिला, करियन ग्राम मे उदित भेल छलाह।

जइ प्रकार आठम आ दसम शताब्दि मे मंडन, वाचस्पति आ उदयनक प्रकाश मिथिला मे जाबबल्यमान रहल तहिना तेरहम आ सोलहम शताब्दिक मध्य गंगेश, पक्षधर आ शंकर देदीप्यमान नक्षत्र जकाँ चमकैत रहलाह। गंगेश उपाध्याय नव्यन्यायक जन्मदाता छलाह। हिनकर निवास दरभंगा जिला, मंगरौनी गाम मे छल, ई करियन गाम मे अप्पन विद्यालय स्थापित कएने छलाह, तकरा डीह पर एखनउँ किछु चिह्नादि छैक।

मिथिलाक नव्यन्याय परम्पराक इतिहास गौरवपूर्ण अछि। तीन-चार शताब्दि मिथिला सँसे भारतक प्रमुख ज्ञानपीठ-विद्यापीठ बनल रहल। दूर-दूर सँ आवि कऽ विद्वान सब एतए अवच्छेदकता, प्रकारता आदिक ज्ञान प्राप्त कए अवैत छलाह।

गंगेश उपाध्यायक नव्यन्याय परम्परा मे सब सँ प्रसिद्ध भेलाह पक्षधर मिश्र। हिनका विषय मे प्रसिद्ध अछि—‘शंकर-वाचस्पत्योः शंकर-वाचस्पती सहशौ, पक्षधरप्रतिपक्षी लक्ष्मी भूतो न च क्वापि।’ ( अर्थात्, शंकर आ वाचस्पति, शिव अ बृहस्पतिक तुल्य छथि। ) परन्तु पक्षधरक समक्ष तऽ किओ ने देखइ मे अवैत अछि। कहल जाइए जे ई जइ पक्ष केँ धरइ छलाह तकरा सिद्ध कऽ दइ छलाह।

अतःकरण सँ टकराइए वा फेर हमर प्रति क्रियाक शकल अस्तित्वार क लेए। भरिसक सेँ कुनू दार्शनिक कहने छथि जे मनुस्वक तीन रूप होइ छइ। पहिल ओ, जे ओ स्वयं अपना बारे मे जनैए। दोसर ओ, जे

( शेषांश पृष्ठ ४ पर )

लाह आ हिनका सँ ‘मणि’ ‘आलोक’ प्राप्त कए नव द्वीप लए गेलाह।

मैथिल संस्कृतिक ओहि स्वर्ण युग मे मिथिलाक सांस्कृतिक जीवन केहेन छल, तकर उदाहरणस्वरूप पंडित भवनाथ मिश्रक नाम गौरवपूर्णक लेल जा सकइए। ई दरभंगा जिला, सरिसव गामक निवासी दरिद्र ब्राह्मण छलाह। मात्र सवा कट्ठा जमीन छलनि। ओइ मे जे साग-पात उपजइ छलनि ताहि सँ निर्वाह करैत छलाह। एहेन स्वाभिमानी छलाह जे कहिओ ककरो सँ कोनो याचना नहि कएलनि। तई ई ‘अयाची’ मिश्र’ नाम सँ विख्यात भेलाह। ई आजीवन विद्यादान कएलनि आ अन्त मे गंगालाभ कएलनि। गंगा सँ विदा होइ-काल ई श्लोक पढ़लनि—“अधीतमध्यापितमर्जितं यशः न सोचनीयं किमपीह भूतले, अतः परं श्रीभवनाथशर्मणः मनो-मनोहारिणी जाह्नवीतटे।”

हिनकर पुत्र शंकर मिश्र एहेन संस्कारी भेलाह जे पाँच बरखक अवस्था मे ई श्लोक रचि कऽ मिथिला नरेश केँ सुनौलनि—“बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती। अपूर्णै पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रम्।”

ई श्लोक एखनउँ धरि गाम-गाम मे प्रसिद्ध अछि आ छोट-छोट बालक सभकेँ शैशवावस्थे मे कण्ठस्थ कराओल जाइत अछि। शंकरक विद्या सँ प्रसन्न भऽ मिथिलेश हुनका प्रचुर पुरस्कार देलथिन। मुदा हुनकर माता भवानी तऽ अयाची मिश्रक पत्नी छलथिन। ओ शंकरक जन्मे-काल एक चमइन केँ वचन देने छलथिन जे शंकरक पहिल कमाइ ओकरा नेछाओरक रूप मे देल जएतैक, ई प्रतिज्ञा स्मरण अवि-तइ ओ सभया सभति ओहि चमइन केँ दऽ देलथिन। मुदा ओहो चमइन तऽ मिथिलेक माटि-पानि पर जनमल छल। तई सभया धन सँ एकटा सार्वजनिक पोखरि खुनवा देलक जे आवहु धरि चमइनिओँ पोखरि नामे विख्यात अछि। आई सँ किछु पीढ़ी पूर्व मिथिलाक जातीय चरित्र एतैक महान छल।

एहेन छल मिथिलाक संस्कृति, जे त्याग, संतोष आ स्वाभिमानीक अदम्य ज्योति सँ जगमगा रहल छल। अही सांस्कृतिक विशेषताक कारने मिथिला सहस्रोवर्ष पर्यन्त तीर्थ भूमि बनल रहल।

कहल जाइए जे पहिने मिथिलाक भूमि जलक आधिक्य कारने बड़-डू आद्र छल। वैदिक युग मे आय सब एतए आवि नदी-नदक काते-कात यज्ञ करैत एहि भूमि केँ रहवाक योग्य शुक्ल बनौलनि। तई एकर नाम ‘तीरभुक्ति’ पड़ल, जे आव तिरहुत अछि। एहिठामक एक-एक

नाम छलनि। आधुनिक दर्शनक ई प्रणेता

जइ ई पक्षधर जकाँ विद्वान भेलाह।



# लोककाम

अङ्क-३४

मार्च-अप्रैल ८४

मूल्य-पचास पाइ

सम्पादकीय

## प्रो० हरिमोहन झा

२३ फरवरी १९८४ क मनहुस दिन हमरा लोकनिक प्रिय साहित्यकार हरिमोहन बाबू के हमरा लोकनि सं छीनि लेलक। मनुख कतबो बुधियार आ बरियार किएक ने हो—ओ जे कतेक असहाय अइ तकर ज्ञान एहने एहने धड़ी मे होइ छइ। तँ अपन प्रियजन के दिन मास वा बरख नहि—सदाक लेल बिछुरैत देखियो केँ सओन रहैछ, अपन अक्षमता पर नोर बहा संतोष करैछ। निष्ठुर काल ओकर कमजोरी पर हँसैछ, अपन विजय पर ठहाका लगावैछ।

परञ्च कालो जतेक शक्तिशाली अपना केँ बुझैछ ततेक अइ नहि ओ मनुख केँ समाप्त क सकैछ मुदा ओकर कृति आ कीर्ति केँ नहि समाप्त क सकैछ आ असल मे सही मनुख त अपन कृतिये मे जीवैए। आत्मा का अमरता भनहि विवादास्पद हो परञ्च कृतिक अमरता सर्वमान्य थिक आ तँ जे कही जे हमरा लोकनिक प्रिय हरिमोहन बाबू, श्रद्धेय हरिमोहन बाबू मुझला नहि, ओ मरियो नहि सकै छथि त अनगल नहि होएत। हरिमोहन बाबू जीवै छथि अपन खट्टर ककाक तरंग मे, ओ जीवै छथि रंगशाला मे, ओ जीवै छथि कन्यादान आ द्वीरागमन मे।

प्रो० हरिमोहन झा माने वर्तमान युगक सर्वाधिक पठित साहित्यकार, प्रिय साहित्यकार हरिमोहन बाबू, हास्य सम्राट हरिमोहन बाबू, मिथिलाक दार्शनिक परम्परा प्रबल स्तम्भ हरिमोहन बाबू जीवैत छथि आ ताधरि जीवैत रहता जाधरि मैथिली भाषा-साहित्य। कहबाक प्रयोजन नहि जे हरिमोहन बाबूक प्रति उचित सम्मान / श्रद्धांजलि मैथिली भाषा साहित्यक केँ समृद्ध केनाइ ओकर विकासक पथ प्रसस्त केनाइए टा होएत आर किछु नहि, किछुओटा नहि।

## दही चूड़ा चीनी

—प्रो० हरिमोहन झा

खट्टरकका दलान पर बैसल भांग घोटैत छलाह। हमरा अबैत देखि बजलाह हौं-हौं .....ओम्हर मरचाइ रोपल छैक, घूमि कऽ आवह।

हम कहलियेन्ह—खट्टर कका, आइ जयवारी भोज छैक, सैह सूचित करय आयल छी।

खट्टरकका पुलकित होइत बजलाह—वाह-वाह। तखन सोभे चलि आवह। दू एकटा धंगेवे करतैक त की हैतैक? .....हं, भोज मे हैतैक की सभ।

हम—दही चूड़ा चीनी।

खट्टर—बस, बस, बस। सृष्टि मे सभ सँ उत्कृष्ट पदार्थ यैह थीक। गोरस मे सभ सँ मांगलिक वस्तु दही—अन्न मे सभक चूड़ामणि चूड़ा—मधुर मे सभक मूल चीनी! एहि तीनूक संयोग बूझइ तँ त्रिवेणी संगम थीक। हमरा त त्रिलोकक आनन्द एहि मे बूझि पड़ैत अछि। चूड़ा भूलोक। दही भुवलोक। चीनी स्वर्लोक।

हम देखल जे खट्टर कका एखन तरंग मे छथि। सभटा अद्भुते बजताह। अतएव, काज अछैतो गप्प सुनबाक लोभे बैसि

हम चकित होइत छुछलियेन्ह—ऐं! दही चूड़ा चीनी सँ सांख्य दर्शन! से कोना?

खट्टरकका बजलाह—एखन कोनो हड़बड़ी त ने छौह? तखन बैसि जाह। हमर विश्वास अछि जे कपिल मुनि दही चूड़ा चीनीक अनुभव पर तीनू गुणक वर्णन कऽ गेल छथि। दही सत्वगुण। चूड़ा तमोगुण। चीनी रजोगुण।

हम कहलियेन्ह—खट्टरकका, अहाँक त भभटा कथा अद्भुते होइत अछि। ई हम कतहु नहि सुनने छलहुँ।

खट्टरकका बजलाह—हमर कोन बात एहन होइ अछि जे तँ आनठाम सुनि सकवह?

हम—खट्टरकका, त्रिगुणक अर्थ दही चूड़ा चीनी, से कोना बहार केलियेक?

ख०—देखह, असल सत्व दहिण मे रहैत छैक, तँ रज। चूड़ा लक्ष्मण होइछ, तँ तम। देखै छह नहि, अपना देश मे एखन धरि 'तमहा' चूड़ा शब्द प्रचलित अछि।

हम—आश्चर्य! एहि दिस हमर ध्यान

संविधान बिनु मैथिलीक ओ  
मानचित्र बिनु मिथिला धाम  
डाहि-जोरि सुझाह करब हम  
विद्रोही मिथिलाक जबान

देश

## नकल करू आ नष्ट होउ

मैट्रिक परीक्षा समाप्त भऽ गेल अछि। एहि बेर बिहार परीक्षा समितिक एहि परीक्षा मे पाँच लाख सँ उपर परीक्षार्थी सम्मिलित भेल छथि। ई परीक्षा आ एकर परीक्षाफल अनेक अर्थ मे महत्वपूर्ण अछि, मुदा एहि परीक्षाक कोनो विश्वसनीयता नहि रहि गेल अछि।

परीक्षा मे चोरि करब रह-रहौ भऽ गेल अछि। मूल-चपाट सभ नीक नंबर सँ पास करवा लेल मोचंडी पर उतरि गेल अछि। जे लोक एहि चोरि केँ रोकबाक प्रयत्न करत, से मारि खायत।

एहि बरख अनेक नव बात भेल अछि। मिथिलांचल क थोड़ैक उदाहरण लेल जाय। दरभंगा जिला मे दू गोटा केन्द्राधीक्षक (सुपोल आ दरभंगा मारवाड़ी स्कूल) गिरफ्तार भेलाह आ कदाचार (परीक्षामे चोरि) क आरोप मे दण्डित भेलाह। मधुबनी जिला मे दू गोटा केन्द्राधीक्षक ड्योढ़ आ बरही-कुलपरास केन्द्र पर कदाचार मे गिरफ्तार भेलाह। हाजीपुरमे एक दण्डाधिकारी गिरफ्तार भेल छथि। सहस्ता मे एक दिन एक दण्डाधिकारी चोरि करैत परीक्षार्थी केँ पकड़लनि आ प्रत्येक केँ एक-एक सय टाका जुर्माना कयलनि आ एहि जरिवाना सँ सुनैत छी जे सत्तर हजार टाका जमा भेल। एहि बेर नव बात ई भेल अछि जे कदाचार मे केन्द्राधीक्षक लोकनि दण्डित कयल गेलाह अछि।

चोरि किएक होइत अछि?

एकर उत्तर सोभ अछि। लोक परीक्षा मे नीक नम्बर आनऽ चाहैत अछि जाहिसँ ओ कम नम्बरवाला सभ केँ पछाड़ि आगाँ बढ़ि सकय। नीक नम्बर अनबा लेल परिश्रम सँ पढ़ब एक तरीका अछि जे आव पुरान

भऽ जाइ छैक। जखन उच्चर दही ओहि पर पड़ि जाइ छैक तखन प्रकाशक उदय होइ छैक। तँ सत्वगुण केँ प्रकाशक कहल गेलैक अछि। 'सत्व' लघु प्रकाशक मिष्टम्। तँ दही लघुपाकी की तथा सभ केँ इष्ट (प्रियगर) होइत अछि। चूड़ा कोष्ठ केँ बाहि दैत छैक। तँ तम केँ अवरोधक कहल गेल छैक। और बिना रजोगुण त क्रियाक प्रवर्तन हो नहि। तँ चीनीक योग वेत्रेक खाली चूड़ा-दही नहि घोटै सकैत छैक। आव बुझलहक?

हम कहलियेन्ह—धन्य छी खट्टरकका! अहाँ जे ने सिद्ध कऽ दी।

खट्टरकका बजलाह—देखह, सांख्यिक मत सँ प्रथम विकार होइत छैक महत् वा बुद्धि। दही चूड़ा चीनी खैला उत्तर पेट मे फूलि कय पसरैत छैक। यैह महत् अवस्था

भऽ गेल अछि। नव तरीका अछि जे नीक नम्बर पैरवी, पाइ आ मोचंडी सँ आनल जाय।

बोर्ड परीक्षा लैत अछि। जतऽ नम्बर बढ़ायब आ फल के पास करायब कठिन बात नहि छैक। पाइक भुखल कर्मचारी हरियर देखौलासँ सभ किछु उनटा-पुनटा कऽ सकैत अछि।

एहि बेर परीक्षा बोर्डो कमाल कऽ देलक अछि। दू नेपरक प्रश्न-पत्र बजार मे बिकायल। प्रश्नपत्रक 'फोटोस्टेट' अखबार सभ छपलक, ओहि पेपरक परीक्षा बाद मे भेल। मुदा ई खबरि परीक्षासँ पहिने जग-जानित भेल, तँ ओकर माजिन कयल गेल।

बोर्ड परीक्षा खतम होइत, होइत पटना क दैनिक सभमे खबरि आयल जे प्रत्येक पत्रक प्रश्नपत्र आउट छल आ पटना तथा अन्य स्थान सभ पर नोट देलापर भेटैत छल।

सभ किछु जनैतो बोर्ड क अधिकारी तथापि परीक्षा करयवे कयलनि।

आब एहेन परीक्षा क कापी सभ जाँचल जायत आ तकरा आधार पर परीक्षा फल कयल जायत।

एहि देश मे परीक्षो अशुद्ध भऽ गेल अछि। परीक्षा फलो अशुद्ध भऽ गेल अछि। अशुद्ध लोक केँ उत्पन्न कऽ शुद्ध आचरण क आशा करब अशुद्ध थिक।

मिथिलांचल क लोक एहि मेडिया-धसान मे ककरो सँ पाछौं नहि छथि। एकर फल मुदा-की होयत? की एहि सँ मिथिलांचल अगुआयत? प्रगति करत?

मिथिलांचलक मुख्य उद्योग थिक नौकरी। नौकरीक आधार डिग्री आ योग्यता दुनू थिक। ताधारण नौकरी पयबा लेल वर्टिफिकेट पर्याप्त थिक। श्रेष्ठ नौकरी पयबा लेल सर्टिफिकेटक संग योग्यता आवश्यक। ताहिमे योग्यता सभ सँ आवश्यक। एहि योग्यता क जाँच लेल प्रतियोगिता परीक्षा सभक आयोजन होइत अछि। मैथिल नौकरी मे बड़ बेसी सन्दिआयल छथि, मुदा नीक नौकरी मे कम छथि।

एहेन नकली परीक्षा क सर्टिफिकेट कला लोक कोन नौकरी पौताह?

परीक्षामे नकल होइत अछि, तँ विद्यार्थी मास्टर सभकेँ घास बूझऽ लगैत अछि। ओ कित्ता सभकेँ अछोप बूझऽ लगैत अछि। ओ अपना सँ पैघ हर व्यक्ति केँ टकदस्आ बूझऽ लगैत अछि।

मोचंडी आ उदंडता, हिंसा आ अपराध बहुयबा मे परीक्षा आ परीक्षाफल क इ पैघ हाथ छैक।

समाज नीचाँ मुँहे रुड़ि रहल अछि।



## पिता : मृत्युसजा सँ / विभूति आनन्द

□□

यंत्रणापूर्ण जिनगीक सभटा ऊँच-नीच  
हमरा अंग्रेजल अछि बाउ !  
हम एकटा सोहिजनक गाछ भऽ जौलहुँ  
जकर सर्वांग भूआ सँ आक्रान्त रहैत आयल  
हारल ई देह - गाछ तहिये ने कोकनि चुकल  
जहिया सँ एकर देह पर दोसर गाछ अपन अस्तित्व बनावऽ लागल ।

□

बाउ !  
हम अपन एहि मानसिक सदरजमीन कें  
छाल व्यापक बनववाक प्रयास करैत अयलहुँ अछि,  
ई चाहे तऽ फूसि-फटक भऽ जाइत रहल अछि  
अथवा, शून्य में विचरैत कोनो नीरा-जीवी  
अथवा, विजया-सेवी मनुक्खक श्वास भऽ कऽ  
एहि समाज द्वारा मान्यता प्राप्त करैत रहल अछि ।

□□

आ तें,  
जीवनक एहि सांध्य बेला में  
परिवर्तनक ओर हेरैत बितल सम्पूर्ण वय  
आइ चुनऽ ओही अन्नवादी मुद्रा में  
कुमुद बन्दने ठाका लगा रहल अछि ।

□□

हमरा लगैए,  
अपन संस्कृतिक मोह आ बड़प्पनक कटाइ जंगल में  
अनेरे बौआइत रहलहुँ  
मृति में जीवाक हमर-अहाँक ई आम मानसिकता  
मोहाचछन कऽ कऽ लोक कें तोड़ि कऽ छुज कऽ देत छै बाउ !

□□

अपन पितरक तर्पण करैत  
आकि  
भनुवादी परम्परा में पलैत  
कुल, गोत्र आ मूलक ओर-छोर मिलबैत  
अथवा  
गौरवपूर्ण इति-वृत्तिक बीच झिल्लहरि खेलाइत  
आइ जें कि हम वर्तमान सँ कटल रहलहुँ—  
जीवनक सभ सँ अवलोकन शब्द पर  
स्वीकारक मोहर मारवा पर बित छी !

□□

आइ हम  
हिमालयक कोरा में बसल अपन गामक  
बीच चौबट्टी पर ठाढ़  
आलि मध्य विराट शून्य कें लदने  
झरीक असह्य भार कें  
दूटा कमजोर पयर पर  
सम्हारि रखवा में विफल भऽ रहल छी ।  
ई एकटा मुद्रा थिक पश्चातापक  
जे हमर दीर्घ जीवनक सोभ निष्कर्ष अछि ।

□□

हम आर अधिक ई पीड़ा नहि सहि सकब  
हम जा रहल छी बाउ !  
अहाँ सभ द्वारा उठल ई असंख्य तर्जनी  
कखनो हमरा खींचबैत सन बुझाइत अछि,  
कखनो बेधैत सन ल्याैत अछि मीत ।

□□

हम जीवनक सार्थकता भादे सोचियेयऽ सकलहुँ -  
कऽ नहि पौलहुँ किछु ।  
जहिया जुआनी क उठान पर रही—  
गबदी मारब नीक ल्याैत छल  
जहिया अनीतिक विरोध कऽ सकैत रही—  
इष्टि-लज्जा सँ लोवल रहलहुँ  
वैचारिक स्तर पर जतबे ताकांच रही  
व्यवहार में ततबे शिथिल होइत रहलहुँ  
हमरा अहाँ सभ किन्हहुँ माफ नहि करब  
अहाँ सभ जे आइ

## लाल बुभुक्करक चिट्ठी

श्रीमान् सम्पादक जी !  
नमस्कार संह जय मैथिली ।  
आगा हाल-सुरति की लिखू ? अहाँकें  
त बुभुक्के अइ जे दिनानदिन मिथिलाक  
विगडैत हाल-रति सँ मनभरि मनहुक्खी  
वारहो मास छवीतो दिन लाल बुभुक्कर कें  
घेनहि रहैत छनि । ओना ओ बेर-बेर  
महाकवि मालिक फार्मुला द मन कें बुभुक्के-  
वाक प्रयास करैत छथि जे—

दिले नादां बुभुक्के हुआ क्या है  
आखिर इस दर्द की दवा क्या है  
तुमको उनसे क्या की है उम्मीद  
जो नहीं जानते क्या क्या है

किन्तु तैयो अब्भ मन बुभुक्किहारे  
नहि । आ ताइ पर सँ कहै छी सम्पादकजी  
पटनाक एक मासिक पत्रिका में कलकत्ताक  
कोनो छवीस बरख सँ बुतकुनिया कटैत  
नेतानी क साक्षातकार पढ़ि त आर छितनी  
भरि छगुन्ना मे पड़ल छी । सम्पादक जी  
अपने त नहिने पढ़ने होइब कारण मैथिली  
पोथी-पत्रिका कीनने-पढ़ने कहाँन अपने  
लोकनि कें पतिया लगैत अछि, परचव जं  
पढ़ितौ त जानथि उगिलाहा जे मिसिवोभरि  
फूसि कहैत होइ अहीक सपत्त ..... त अहूँ  
कम स कम अवस्से कहितौ—बलिहारी  
सम्पादक लोकनिक विवेकक जे जे एहन वर्ण  
शंकर वक्तव्य कें प्रामाणिक घोषित क  
देखनि । सम्पादक जी अपन पहिलुक चिट्ठी  
में हम अहाँ कें शीर्षासन करवाक सुझाव  
देने रही । अहाँकें बुभुक्के अइ जे हम ते त  
बिस्वा यतनक पछिया छी आ ते मुनि समाज  
क प्रचारक । तखन एहन बात लिखवाक  
कारण खाली अपनेक स्मरण शक्ति कें मजबूत  
केनाइ छोड़ि आन की भ सकैछ ? आ जं  
अपने हमर सुझाव मानि अभ्यास करैत  
होइब त नाक दाबि स्मरण करैत चल्, जेना  
जेना हम कहैत जाइत छी ।

नेता जीक अनुसार कलकत्ता जे किछु  
कष्टक तकर श्रय मात्र छओ गोटे कें  
छैक जाइ मे तीन गोटे हुनक विरोधी

खेमा मे छलथिन, जनिका लोकनिक संग  
नेता जी हार्दिकोट भरि मुकदमा लड़ल छथि  
आ महाजाति सदनक आयोजन में बम-बूरा  
भरि चलल अछि । एक जन हुनकें कथाना-  
नुसार दुलमुल छथि आ एक जन प्रायः बीसो  
बरख सँ दिल्लीक वासिन्दा छथि । कौ छइ  
ने छगुन्नाक गप्प ? जे महेन्द्र नारायण भा  
मिथिला-मैथिलीक पाछा अपना कें चौपट  
क लेखनि बैद्यनाथ भा, बुकदेव ठाकुर आदि  
क चर्चा नदरद ।

सम्पादक जी अपने कें त बुभुक्के होइत  
जे मैथिली मुक्ति मोर्चाक बैसार में मिथिला  
राज्यक प्रश्न पर नेता जीक वकार बन्न भ  
गेल रहनि परचव एहिठाम ओ अनका दुल-  
मुल बना अपना कें दोषसुक्त क लेखनिहै ।

मैथिली पोथीक प्रकाशन जं मैथिलीक  
काज मेल सम्पादक जी तखन कलकत्ता सँ  
आइपरि जतवा पोथी प्रकाशित मेलए तकर  
दयावो हुनका द्वारा नहि मेल छैक परचव  
वांकी जे संस्था सभ छैपलक तकर नामो  
चर्च नहि ।

१७ दिसम्बर १९७० कें जे प्रतिनिधि  
मंडल दिहौ गेल छल ताइ मे त अहूँ रही  
सम्पादक जी । तँ अहाँ के कायाक सपत्त—  
जं हम फूसि कहैत होइत कहूँ—कि ओइ  
प्रतिनिधि मंडल कें हजारक-हजार टाकाक  
संग फूल माला सँ लाद हववा टीशन पर  
एही दुआरे लोक विदा केने छल जे ओ  
लोकनि छलित बाबूक डेरा पर राज भोग  
पाबि श्रीमतीजीक संग फोटो छपा घुरि  
आबथि—आकि आभरण अनशन अथवा  
मैथिली कें सविधान में स्थान दिहवाक  
लेल ? मुदा ताइ बिस्वासवात कें, जकरा  
मुक्ति मोर्चाक आन्दोलनक बाद एहिठामक  
लोक चितरि सकल, नेता जी अपन कुतिल  
बधारैत छथि ।

नेता जी कहै छथि जे मैथिल समाजक  
ओ ऋणी छथि जे बेटी-भतीजीक कन्या-  
दानक भार नहि देखनि । आशा अइ  
( शेषांश पृष्ठ ४ पर )

विकलांग स्थितिक भोग भोग रहल छी ।

सभक भारी हमहीं छी/हमहीं या छी ।

× ×

हम जा रहल छी प्राण,  
मुदा संघर्षक ई प्रवाह चलैत रहवाक चाही !  
मरनि मे भऽ जाय ई धार  
हमरे जकां अहुँक संतति मे दिअव ई उपराग  
मनुक्ख लय होइए अपन भाव्य विधाता  
से जानब हे हमर जान  
बेरागी ने भऽ पायब ई मोन-प्राण !

× ×

रामनामी चढ़ि ओढ़ि जीयब, चाहे  
मंदिर-मस्जिद भऽ कऽ रहब, चाहे  
पाग, पगड़ी आ पयजामक कोर तकैत रहब  
तऽ रहि जायब मैथिल माने मिथिला बासी

× ×

अहाँ सभ कें एकटा सौँस मनुक्ख बनवाक अछि  
मिथिला आ मारिस क दर्द भोगवाक अछि समान रूपे ।  
एकेटा होइछ  
वियतनाम सँ भयसिम्भरि अरिक कथाक मूल कथ्य  
से जानब हे हमर मीत  
सुधा कानब नहि गीत  
बाउ ..... हे हमर मीत ..... विदा .....

× × ×



## दही चूड़ा चीनी

थिक। परन्तु एकरा हेतु संवर्गणक अधिक्य होमक चाही अर्थात् दही बेसी होमक चाही। हम - अहा! तांख्य दर्शनक एहन तत्व दोसर के कहि सकैत अछि।

खट्टरकका बजलाह—यदि एहिना निम-व्रण दैत रहै त कमरा: सभ दर्शनक तत्व बुझा देबौह। त्रिगुणात्मिका प्रकृति द्रष्टा पुरुष के रिक्तवैत छथि। एकर अर्थ जे ई त्रिगुणात्मक भोजन भोक्ता पुरुष के नचबैत छथि। तै नृत्तन्ति भोजनविप्रा:।

हम कहलियेह—परन्तु खट्टरकका! पछिमाहा सभ त दही चूड़ा चीनी पर हँसैत छथि।

खट्टरकका अंगपोछा सँ भांग बोटेत बजलाह—हौ, सातु छिट्टी खैनहार दधि चिपटानक सौरभ की बुझनाह! पश्चिमक जेहन माटि बजरा, तेहने अन्न बजरा, तेहने लोको बज सन। अपना देशक भूमि सरस, भोजन सरस, लोको अरस! चूड़ा पृथ्वी तत्व। दही जल तत्व। चीनी अम्ल तत्व। तै कफ पित्त वायु—तीन दोष के समन करवाक सामर्थ्य एहि मे छैक। देखह, अनादि काल तै दही चूड़ा चीनीक सेवन करैत-करैत हमरा लोकनिक शोणित ठण्डा भऽ गेल अछि। तै मैथिल जाति के आइ धरि कहियो युद्ध करैत देखलहुक अछि?

हम—खट्टरकका काँ सँ कहाँ राह चला देखहु! बीच-बीच मे तेहन मार्मिक व्यंग कऽ दैत छिएक जे—

ख०—व्यंग नहि, यथार्थ कहैत छिऔह। देखह, भोजन सँ प्रकृति बनेत छैक। चाली माटि खा कऽ माटि मेल रहैत अछि। साँप वसात पीबि कऽ फनकैत अछि। साहेब सभ डबल रोटी खा कऽ फूलल रहैत अछि। मुर्गा खैनहार मुर्गा बका लड़ैत अछि। और हम सभ साग-भाँटा खा कऽ साग-भाँटा मेल छी। हमरा लोकनि भवत (भात) क प्रेमी थिकहुँ, तै एक दोसरा सँ विभक्त रहैत छी। ताहू पर की त द्विदल (दाहि) क योग मेलै ताकय! तखन एक दल भऽ कऽ कोना रहि सकैत छी?

हम—अहा! की अलंकारक छटा!

ख०—केवल अलंकार नहि, विज्ञानो छैक। कोनो जातिक स्वभाव बुझवाक हो त देखी जे ओकर सभ सँ प्रिय भोजन की थिकैक? देखह, बंगाली ओ पछिमाहाक स्वभाव मे की अन्तर छैक? जेह मेद रस-गुला ओ लड्डू मे छैक। रसगुला सरसओ कोमल होइछ, लड्डू ओ कठोर। रसगुला पूरक प्रतीक थीक, लड्डू पवित्रक। तै हम कहैत छिऔह जे ककरो जातीय चरित्र बुझवाक हो त ओकर प्रधान मधुर देखी।

हम—खट्टरकका, अपना सभक प्रधान मधुर की थीक?

ख०—अना सभक प्रधान मधुर थीक खाजा। देशत मे मिठाइ कहने ओकरे बोध होइछ। खाजा ने रसगुला जकाँ स्निग्ध होइछ, ने लड्डू जकाँ ठोस। तै हमरा लोकनि मे ने बंगालीबला स्नेह अछि, ने पंजाबीबला दृढ़ता। तखन खाजा मे

## समादक भण्डार

सम्पादक जी जे एहि वक्तव्य सँ अहं सहमत होएव जं ओ गप्प बितरि जाइ जे कहियो नेताजीक संस्थाक मंत्री बनवाक विशेष योग्यता मानल जाइत छैक-ओकरा सर सम्प्रची मे वा प्रभाव मे कोनो नीक वर खनाइ। २६७२ ई० क 'दर्शन' जं अपने स्मरणक उल्टाबी आ खास के अगस्त मासक त विषय आर स्पष्ट भ जाएत।

जहाँपर नेता जीक नाट्यकार होए-वाक बात थिक से त पोथी छपि गेने सभ जनेछ। कहवाक प्रयोजन नहि जे छाल बुझकक सेहो ई नैतिक आ वैधानिक दायित्व भ जाइत छनि जे नेता जी के नाट्यकार मानि लेथि। परञ्च अहाँ त ओही नगरक लोक छी आ नाटक सँ सेहो जुड़ल छी तै हम अहाँ सँ निस्तुकी पुछए चाहै छी—कि सरिपहुँ ई नाटक नेता जी अपने लिखने छथि? एकटा गप्प आर—कतेक संस्था के पड़व क क तोड़वाक श्रेय नेता जी के छनि तकरो पता लगोनाइ छनि बिस्तर। तै ने कहै छै सम्पादक जी जे—भट्टकल मुई भमनहि नीक, मुदा एहि नेता जी के कहतिनि। सरिपहुँ बुढ़ भेने लोक कि एना दुरि जाइए?

प्रत्येक परत फराक-फराक रहैत छैक, से अपनो सभ मे रहिते अछि।

हम—वाह! ई त चमत्कारक गप्प कइल! मौलिक!

ख०—ऐंठ वा नासि बात हम बजि बाँहने छी।

हम—वास्तव मे खट्टरकका! अहाँ ठीक कहै छी। गाम-गाम मे गोलेसी, घर-घर मे पट्टीदारी भगवा। कचहरी मे पागे-पाग देखाइत अछि। से कियेक?

ख०—एकर कारण जे हमरालोकनि आमिल-मरचाइ बेसी खाइत छी। तीख-चोख मेलै ताकय। तीतो मे कम रुचि नहि। नीम-भाँटा, करेल, पटुआक भोर...। हौ, जेह गुण कारण मे रहैतक सेह ने कार्य मे प्रकट होतैक। कटुता, अम्लता ओ तिक्तता हमरा लोकनिक अंग बनि गेल अछि। स्वाइत हम सभ अपना मे एतेक कटाउभ करैत छी।

हम—परन्तु बंगाली सभ मे एतेक प्रेम कियेक?

खट्टरकका भांग मे एक औंछर चीनी मिलवैत बजलाह ओ सभ प्रत्येक वस्तु मे मधुरक योग दैत छथि। दाहिओ मीठ, तरकारीओ मीठ, माछो मीठ, चटनियो मीठ तखन कोना ने माधुर्य रहैतैह? अपनो जाति मे एहिना मीठक व्यवहार होमऽ लागय तखन ने। तै हम कहैत छिऔह जे अपना जाति मे जौ तंगठन करवाक हो त मधुरक बेसी प्रचार करह। केवल सभा केने की हेतौह? भोजन ने भात, हरहर गीत! गाम सँ दुगोला दूर करवाक हो त 'दही चूड़ा चीनी' लवण कदली वाडू वरफीक भोज करह।

ई कहि खट्टरकका भांगक लोटा उठौ-लन्हि ओर दू-चारि बूंद शिवजीक नाम पर छीटि घट्ट-घट्ट कय समटा पीबि गेलाह।

(खट्टरककाक तरंग सँ)

बेटी-भतीजीक चंच त नेता जी केलनि परञ्च बेटा भातिज बेर मे चुप्पी कियेक? कहबी छह ने जे उचित कहने संग विधुआए नेत हम अवस्ते पुछितियनि जे श्रीमान सोके छूरी वा घुरा क छूल त गेल नाके ते? आकि नहि?

सम्पादक जी कते कहू—एकटा अजगुत अनटोल रहै तखन ने। नेताजीक अनुसार बख दसेक सँ कलकत्ता मुइल अइ। आव अही कते ज्ञान भाक जोग द क विनारु जे राजभोग पञ्चोनाइ त महान आन्दोलन थिक परञ्च मैथिलीक इतिहास मे सर्वप्रथम राज-धानीक राजाध पर अपन मातृभाषाक न्यायोचित अधिकार लेल जे मैथिल सन्तान शोणित बहओलनि आ लठीक मारि खेलनि लकर उचावचो नहि। एकरे ने कहैत छह जीविते गाय गीतनाइ। मुक्ति मोर्चाक दिग्भंगा अधिवेशनक समय जे ई नेता जी पीठ मे छूड़ा भौकलनि से लोक भने बिसरि जाओ मुदा सम्पादक जी हमरा त पुरे पसेरी भरि विश्वास अइ जे अहाँ नहि बिसरल होइव।

नेता जी आर बगो नव गप्प कहल-निहँ—सम्पादक जी। अपने के त कुकले होइत जे कुम्हारक कुकुर जकरे हाथ मे माटि जगल देखैत छह तकरे पाछू लागि जाइए। से नेता जी तहिना कहादन राजनैतिक गंध पाबि पटनिया संस्था आ महासंस्था सँ जुड़ि गेलाहए। जे व्यक्ति मैथिली अकादमी के पटिनिये कोना दोसर संस्था कहि आलोचना नेने छथि तथा डा० जगन्नाथ मिश्र तै मैथिली प्रेमी छथिये नहि बल्कि जाहि राजनीतिक दल सँ सम्पर्कित छथि वह दल सभ सँ बेसी मैथिलीक क्षति आइ धरि कैलक अछि। लिखने छथि से जे आइ एहि संस्था क प्रोपराइटरक पाछा नाइडि जोलवैत फीरे छथि ते तकर कारण त अवस्ते छैक। आ से छैक 'उजरा खाम' जे प्रेस धरि नहि कलकत्ता हॉस्पिटलक बेड धरि पहुँचि जाइत छैक। आ से उजरा खाम जकरा हाथ मे नेता जी देखैत छथिन तकरे पाछा लागि जाइत छथि। ओना जं एकरा नेता जी साफे स्वीकार क लिखि त छाल-बुझकर के आपत्ति के कहए, पथियाभरि प्रसन्नता होइतनि। कहियो छह जे देधि पाकल आम सेह ने मेलह ईल भा। आ कि नहि? आ तै जं नेता जी अपन चेला चामुन्दाक संग हवाई अड्डापर जा के ओही जगन्नाथ मिसर के फूलक माला पहिरा इलाह त अजरजे की? विन धनक लोटा त मिथिला मे रहइ पाओले जाइए। सम्पादक जी पत्र अनावश्यक रूप सँ दन्तार मेल जा रहल-ए, तै समात केनाइए उचित। अपने सँ हमर बेर-बेर पादबद्ध प्रायना जे एकरा अपनहि धरि राखी। कम सँ कम चर्चित पत्रिकाक सम्पादक लोकनिक गीढ़-दृष्टि सँ अवस्ते बचावी अन्यथा हुनको लोकनिक प्रामाणिकता ने कहीं संदिग्ध भ जाइए।

प्रज्ञोत्तर नहि वेवाक प्रबल आकांक्षी श्रीमान छालबुझकर बुभुक्षु ग्रामवासी।

## देखा-जोखा

लोक ओकरा बारे मे जने छह आ तेसर ओ जे कि ओ सरिपहुँ होइए।

किन्तु हजुर एह तीर रूपक भलावे एक चारिम रूप सेहो मनुक्खक होइ छह। ओ ई, कि जे ओ नजि होइए, माने जे ओ बनवाक इच्छा रखैए, जाइ सँ ओकरा आगा वदवाक वा उन्नति करवाक आकांक्षा जनमे छह। संभवतः इएहओ चारिम आयाम छह जकरा द्वारा मनुक्ख जिनगी मे किछु क छैए। हजुर जहिया हमरा होइ मेल तहिया अपना के एक समृद्ध परिवारक दुखसा बच्चाक रूप मे पाओल। तहिया सभ तरहक सुविधा छलैक। पिता रसिक मन छलाह। मां परम संस्कारी। बाबा कट्टर सनातन धर्मी। नाना आर्य संभाजी। दाइक हुकुम परिवार मे चलैत रहैक आ हम ओकर एकलौताक पहिल सन्तान। माने दाइक अधिनायकवादक उत्तराधिकारी। आ फेर समय करोट फेडलक जे रहैक से नजि रहलै। दूठल लोक छल आर ओकर अतीतक याद। हजुर यादक एक नम्मा सिलसिला छह जे सुब मे गेल त बिलमैक नाम नजि छिह। संक्षेप मे एतवे कही जे खिस्वा एक नजि ओकर भीतर आ ओकर संग चलैत कतेको खिस्वा।

तै माइ-बाप अपनो बारे मे कहनाइ बड़ सहज नजि। किएक त जखन केओ अपना बारे मे कहैत त ओ भीतरे-भीतर फौरन अपना के 'थर्ड पर्सन' मे तब्दील क छैए। बड़ खतरनाक काज छह ई। किन्तु आदमी त जनमिते अइ खतरा उठावै लेल। खाह ओ स्वयं के कतरवाक हो वा दोसरा के कटराक किंवा अपना-आप के परिवार, मित्र, समाज वा देश मे बंटवाक—हौ। हालांकि घटना कवनो अहाँ के असुलियत धरि पहुँचव नजि देत, किन्तु कतौ ने कतौ पहुँचाओत धरि अवस्ते।

ई पहुँचनाइ विशेष अर्थ रखैछ। खास के तखन जखन कि अहाँ अपना बारे मे कहैत दोसर के समेटि रहल होइ।

हजुर दोसरा के समेटवाक सेहो त्रुटका छुप होइ छह। आखिर जिनगी, अलावे अपन फिरीशानी, दुख-खुल के एक छुपेक रूप छैत छह।

कसूर माफ हो, हजुर माइ-बाप, जं हम कही जे एह समाज मे बढ़िया लोकक कहियो ने खगता मेलै। जं होइतै त अहाँक वा हमरा देखैत एह समाज मे पाइ ल के 'करपान' नामक जे दिनाव पतरि रहल छह ओ कहिया ने खतम भ गेल रहितै। किन्तु जहिना दिनाववला के कसएवाक आदति पड़ि जाइ छह आ कसएनाइए मे ओकरा परमानन्द प्राप्त होइ छह—ठीक इएह हाल हमरा सभक अइ। शिकाइत करवाक ठीक-दारी त लोक नेने अइ परञ्च जान-अनजान मे आइ 'करपान' केर हिस्सेदारो बनेत जाइए।

आओर अहाँ त जनिने छी। माइ-बाप, शिकाइत बेवस लोकैटा करैए।



# मैथिली आन्दोलन आ मैथिलीक साहित्यकार

प्रश्न उठि सकै छैक जे एही भारत मे जखन आन जाति सभ साल-दु-साल मे अपन माइ के ल के संघर्षक पराकाष्ठा पर पहुँचि जाइछ तखन मैथिल जाति आहूँ तीस-पे तीस साल से मात्र प्रेतावि भरि कियै सौ मत अछि । हमरो जननिमे एकर सौत उतर छैक जे कोनो लड़ाइ हुन द रातराती तहि आरंभ भ जाइत छैक । एहि लेल तैयारी करय प्रैत छैक जाइ मे बखी लागि जाइत छैक । एहि तैयारी के इन भारतीय संघर्षक भूमिका कहि सकैत छी जकर निर्माण मे सभ सँ पहिल आ प्रथम भूमिका साहित्यकारक होइत छैक । ई भूमिका संघर्ष निमित्त ओहने सहस्रपूर्ण होइछ जेना कि मकानक लेह ओकर नीचा साहित्यकार लोकनि सर्वसाधारणक अपेक्षा बेसी तलबत, आत्माभिमानो निर्भिक ओ संवेदनशील होइत छथि । ओ अपन रचनाक माध्यम अपन जातिक गौरवशाली अतीत मे सर्वसाधारणक लोभा उपस्थित करैत छथि जाइ य लोक मे ओकरा प्रति मोह जगैक, गोख बाँध होइके । एक भाषा-संस्कृति, मातृ-पानिक सांस्कृतिकला के प्रतिपादित करैत जातिक विभिन्न समुदाय के एक सूत्र मे वुहैक प्रयास करैत छथि तथा रीति-रिवाज महाभारी संल के विदेशी आक्रमण प्रति ये कला-सभ केओ समस्त प्रभावित होइछ । एहि तरङ्ग विषय के प्रतिपादित करैत लोक के संग मिलि रहबाक तथा अपन अस्तित्व स्थाय संराज्य मे सर्वो करवाक लेल प्रेरित करैत छथि । एकर दोसर शब्द मे जमीनी चेतना कहल जा सकैछ । जे हेतुओ मैथिली मे एहन काज साह मेळत त सर्वसाधारण के इहो नहि पता छैक जे ओ मैथिल थिक आ मैथिल एक जाति थिक तथा जाति आ वर्ण सर्वथा भिन्न वस्तु थिकै । इएह कारण छैक जे लोक अपने मुँहे बिहारी बनि जाइछ ना दोसरोक मुँहे ई शब्द सुनि छँजत नहि होइछ तमसाइत नहि अछि अपितु 'महराजी सुरि' जकाँ गौरवान्वित होइत अछि । ते उदयनार्चयक गर्वोक्ति ओकरा लेल कोनो महत्त्व नहि रखैछ, लोरिक, लहेस, वठा चमार आ गोरेयाक सत्ताक पेठ भरे लेल बंगाल स पंजाबधरि बँआइत अछि । ते जं एक वाक्य मे कही त कोनो ज्ञानिक अस्तित्व खास नहि ओकर विकासक मूलाधार थिक इएह जातीय चेतना जकरा अभाव मे पेश स पेश जाति विनाश के प्राप्त होइक आ इतिहासो ओकरा मत नहि रखैत छैक । एहि सन्दर्भ मे हम जखन मैथिली साहित्य दित त कहैत छी त पूणतः निरास होमय पड़ैछ । स्पष्ट छैक जे साहित्यक सिरजनाहार मेलाह साहित्यकार, आ से साहित्यकार जे अक्षरि, अपाठक आदर हो, चेतनाहीन हो, श्रान प्रवृत्तिक होन्त साहित्यक स्थिति जे केहन होएत से ककरो सँ तुकाएल नहि । इएह कारण थिक जे मैथिलीक साहित्यकारक लेल देश मिथिला नहि, भारत भ जाइछ कारण मिथिला के देश खिलनाइ मे हुनको संकीर्णताक बोध होइत छनि, राष्ट्रद्रोहक गंध लौत छनि । ओना हमरा बुझल अछि जे 'आमार जेनाए बाङला' (भारत नहि) लिखि रवीन्द्रनाथ कवि गुरु आ विश्व कवि बनि गेलाह । इएह कारण थिक जे मैथिलीक साहित्यकार जखन कलम पकड़ै छथि त सर्वप्रथम कोठाक भाषाएक अभ्यास करैत छथि परन्तु जखन ओइठाम कोनो पुछारि वा मोजर नहि होइत छनि अथवा लतिया केँ दूर क देल जाइत छथि — तखन हारने मित्रा खगरा खाए जकाँ मैथिली मे लिखनाह प्रारम्भ करैत छथि । जे एकाध मोटे में कोठावालीक सरण मे स्थान मेथियो जाइत छनि—त ओही थारी खाली क केँ नहि उठावक सत्कारक बहाल भूत

मिथिला राज्य कहिया धरि !

एहिठाम ई कहि देब आवश्यक जे जाहि मैथिलीक साहित्यकारक हम सबक कहल छी तकर अपवादो अन्नसे छथि—परंच अपवाद त अपवाद थिक। ओना दुनो सना बरह लोक एही आश मे जीवित रहल जे जाइ ने कालि इह अववाद नियमक रूप लेल आ तवने मिथिला मैथिल मैथिली अपन समस्त व्याशोचित अधिकार प्राप्त क सकल।

अग्रदूत



## प्रसंगवश

— घनचक्र

मात्र अपना सभक भारते टा मे नहि, अपितु संपूर्ण विश्व मे जतऽ-जतऽ शासनक लेल जनताधिक पद्धति के स्वीकार कएल गेलैक अछि, ओतऽ इहो स्तर पर दू टा चीज समान रूपे परिलक्षित होइत छैक — जनता द्वारा प्रस्तुत विभिन्न प्रकारक 'मांग' आर सरकार द्वारा निःशेष रूपे देल गेल किसिम किसिमक आश्वासन। परिणामक तुलना करला पर कतहु कम-बेश भने भऽ सकैत मुदा 'मांग'क 'स्तर' आ सरकारी 'आश्वासन'क 'प्रकृति' मे सर्वत्र समानता भेटत। जतनाक मांग पर सरकारी, आश्वासनक समीकरण के हल करवा मे लागल, प्रशासन-तंत्र सभभौं व्यस्त देखवा मे आओत मुदा समीकरणक दून पक्ष मे मात्र संख्येक वृद्धि टा होइत देखल गेलैक अछि, आर किछु नहि। ई 'मांग' आर 'आश्वासन'क चोरा-तुकी कोनो नव वस्तु वा घटना नहि छियैक बरन ताबिके सँ चल आवि रहलैक अछि परन्तु एहि मे एकटा बात तथ्यपरक छैक, ओ ई जे अपाहिज / असमर्थक मांगक लेल देल गेल आश्वासनक निःसारता के लक्ष्य कऽ लेत छैक तँ ओ दैतखिली पर उतरि अवैत छैक आर तखन ओकरा जे किछु प्राप्ति भऽ जाउक (कुकुरक काड़ा स्वरूप) ओ ओहि मे तृप्तिक अनुभव कऽ लगैत छैक वा दुतकारि देल गेला पर अपन नांगरि सटका सघरि जाइत छैक मुदा समर्थ एवं सक्षमक औचित्यपूर्ण मांगक निमित्त देल गेल आश्वासनक अवहेलनाक फलस्वरूप स्थिति विस्फोटक रूप धारण कर लेत छैक — केकटा कुक्कुट मे गूह-रचता प्रारंभ भऽ जाइत छैक, ई एकटा ऐतिहासिक तथ्य थिक जकरा तकारल नहि जा सकैत अछि। जौना एहि तरा के सेहो अस्वीकार नहि केल जा सकैत जे अपाहिज / असमर्थक सभटा मांग नाजायजे होइत छैक वा ओकरा कोनो औचित्य नहि रहैत छैक बरन सरकार एवं प्रशासन-तंत्र अपाहिज। असमर्थ लोक सभक चरित्र के जीवन्त रहैत छैक तँ ओकरा सभक जायजो मांग के छटका दैत छैक — ओकर निमित्त देल गेल आश्वासन पर ध्यान नहि दैत छैक — ने कहियो ध्यान देलकैक आने दैतैक।

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य मे जँ हम सभ अपन-अपन स्थितिक पर्यवेक्षण करी तँ पलक हेतु ई निर्णय करबाक लेल प्रायः सभकेँ समझि जाय पड़ैत जे वस्तुतः हम सभ कोन गोल सँ सम्पर्कित छी? अर्थात् अमर्थ / अपाहिजक गोल सँ वा समर्थ / सक्षमक गोल सँ? ओना हमरा जनैत मैथिल तँ असमर्थ / अपाहिज भइये नहि सकैत अछि ??? आ जँ हम सब दोसर गोल सँ सम्पर्कित छी अर्थात् अपना के सक्षम / समर्थ बुझैत छी तँ मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीय विकासक लेल न्यायोचित एवं औचित्यपूर्ण मांगक एहन भीषण उपेक्षा किहक भऽ रहल अछि? हम सभ प्रक्रियाओल किहक जा रहल छी? एहि तथ्यक अन्वेषणक लेल हमरा सभ के सभ सँ पहिने अपन-अपन आत्म निरीक्षण (Self Introspection) कऽ पड़ैत पछाति अपन मांगक औचित्यक विश्लेषण

कऽ पड़ैत आर विफलता अवफलताक कारण ताकऽ पड़ैत।

एहि तथ्य के अस्वीकार नहि केल जा सकैत जे अपना के जागरूक कहनिहार मैथिल समाजक नब्बे सँ पंचानवे प्रतिशत मैथिल सिद्ध नहि भऽ सकैत छथि। अतएव, हुनका लोकनिक मांग मे हुनका लोकनिक निहित स्वार्थ, स्व-प्रचारक आकांक्षा-एवं स्वयं के दोसरा पर आरोपित करबाक अतिरिक्त आर की भऽ सकैत। हम अपन व्यक्तिगत अनुभवक आधार पर ई कहबाक ताइत कऽ सकैत छी जे मिथिला-मैथिल आर मैथिलीक इहो समुदाय अछि जे मुखौटा लगा कऽ जीवि रहल अछि — ई समुदाय मैथिल जनताक सभ वर्ग मे विद्यमान अछि साहे ओ कृषक समुदाय हो, श्रमजीवी हो, चाकरी पेशाक वर्ग हो, वणिजक समुदाय हो; राजपुरुष वा राजनीतिज्ञ हो। जँ निष्पक्ष भावें देखल जाय तँ आजुक मैथिल समाजक स्वरूप सर्वथा परिवर्तित देखवा मे आओत जे पूर्णतया सुविधावादी एवं अवसरवादी भऽ गेलैक अछि जकरा अपना पर विश्वास नहि छैक जकरा अपन मायि-पानि; अपन संस्कृति, अपन भाषा आर चरित्र-भासक प्रति स्नेह नहि रहि गेलैक ममत्वक बाते कोन। गाम-घर सँ लऽ कऽ महानगर धरि छिड़िआल मैथिल समाज के ई महामारी इहो स्तर पर प्रसिद्ध कएने छैक आ जँ समय रहैत एहि रोगक उपचार नहि केल गेलैक तँ एकर परिणाम भीषण भऽ सकैत। गाम-घर जौना-दहना आउ, कतहु एहि बातक आभास नहि भेटत जे मिथिलाक लेल सेहो कोनो समस्या छैक। खेतिहर सभ झुपि काय मे लीन, मध्यम वर्गीय समाज मामिला-मोकदमा मे बागल; चाकरी पेशा न्यायसभ अपन मे अलमल; वणिज-व्यापारी समाजक लेल नोन-तेलक भाव मे उतार-चढ़ावक अतिरिक्त कोनो संसारे ने छैक। शिक्षक-छात्र केँ सरकारी आशंक पालन / उल्लंघन मे लागल अपना भाषा मे चातो करवाक लेल ककरो बलवैत नहि। ओ तऽ धन्य अछि मिथिलाक स्त्रीजन समाज जे एखनो धरि मैथिली आ मिथिलाक लोक कला केँ जियोने अछि। सौँसे मिथिला जौना आउ, कतहु कोनो समस्याक चर्चा नहि भेटत मुदा तयो मैथिलीक जे पत्र-पत्रिका अछि ओहि सभ सँ ज्ञात होइत जे 'समस्या' मिथिलाक पर्यायवाची शब्द बनि गेलैक अछि। अन्यान्य भाषाक पत्र-पत्रिका सभ मे सेहो यदा-कदा एहि तरहक समाचार पढ़बाक लेल भेटि सकैत। प्रश्न उठैत जे मिथिलाक लेल जखन कोनो प्रकारक समस्या नहि, मैथिलक लेल जखन एकर कोनो औचित्य नहि ... .. अपन मायि-पानि सँ जखन ककरो मोहे नहि ... .. अपन मातृभाषा सँ जखन ककरो अनुराग नहि तँ ई समस्याक प्रति जिज्ञासा भाव की? ई जिज्ञासु लोकनि केँ ?? हुनका लोकनि के चीन्हब आवश्यक नहि अनिवार्य बुझबाक चाही।

हमर कहबाक आशय ई कथमपि नहि जे हमरा सभक समक्ष कोनो प्रकारक समस्या नहि अछि। गर सँ बाहर धरि विभिन्न प्रकारक समस्या सब घुरस जकाँ घुँह कोनो ठाढ़ अछि। भारत सन अद्र विकसित देश

मे समस्या आर अभाव नहि रहैत तँ आर कतऽ रहैतैक — आ जतऽ धरि मिथिलाक प्रश्न अछि ओतऽ समस्या आर अभाव नहि रहबाक तँ प्रश्न नहि रहैत छैक परन्तु प्रश्न उठैत अछि जे की वस्तुतः मैथिल सम्प्रदाय केँ अपन समस्या आर अभावक पूरा ज्ञान छैक? की मिथिलाक जनता केँ ई बात ज्ञात छैक जे ओकरा सभक सब सँ पैघ समस्या की छियैक? कोन प्रकारक अभाव ओकरा सभक जीवन मे व्याप्त छैक जाहि लेल सरकारक समक्ष 'मांग' राखल जा सकैत? अभाव आर समस्याक संगे सल्ल रहैत छैक 'मांग' (Demand) जकर समुचित ज्ञान मांग केनिहार के रहैत छैक जे ओकरा सभकेँ एक लुट भऽ अपन दल नायक चुनबाक लेल प्रेरित करैत छैक। आर दल-नायक ओहि अभाव-प्रस्त, समस्याग्रस्त समाज केँ शिक्षा बोध दैत छैक — सुदृढ-निविक निर्धारण करैत छैक। सरकारक समक्ष कमबल रूपेँ 'मांग' रखैत छैक जे व्यक्तिपरक नहि भऽ स्वभावतः समष्टिक कल्याणक निमित्त होइत छैक। आर एहन मांगक अवहेलना कएला पर सरकार केँ कतहु भिडरवालाक समझा कऽ पड़ैत छैक तँ कतहु छलड़ गोक। एहि परिप्रेक्ष्य मे जँ अपन मिथिला क्षेत्रक 'मांग' पर विचार करी तँ देखवा मे आओत जे मिथिलाक जन समुदाय केँ अपन 'अभाव' आर समस्याक समुचित जानकारी नहि छैक उचित ज्ञान नहि छैक — अर्थात् जे अभावग्रस्त अछि ओकरा एहि बातक कोनो चिन्ता नहि छैक जे ओ अभावग्रस्त अछि वरन एहि प्रकारक अभावग्रस्तता आर समस्यादिकेँ ओ अपन नियति मानि लेने अछि। मिथिलाक मुख्य जनता केँ अपन अभाव आर समस्याक प्रति कोनो प्रकारक चिन्ता नहि छैक आर ओकरा एहि अनभिज्ञता (Ignorance) केँ अपन स्वाध्यायनक आधार बना रहल छैक किछु गतल-गुथल राजनीतिज्ञ, राजपुरुष, किछु सम्प्रदायवादी तथा कथित जागरूक लोक किछु साहित्य सेवी आर किछु एडिटरकारक चलता-पुर्जा छैक। किछु स्वार्थी तत्व द्वारा क्रांतिक नारा सतत देल जाय रहलैक अछि मुदा ओ कतहु जोर नहि पकड़ि रहलैक अछि आने पकड़तेक कारण अधिकारक मैथिल केँ एहि स्वार्थी तत्व सभक दुरभिविधिक ज्ञान भऽ गेलैक अछि, किछु नौदिक वर्ग एवं किछु साहित्यकारक जेतौती पर ओ गुगुणायल अछि। तँ मिथिला केँ एकटा पृथक राज्य बनेबाक सुगमरीचिका देखाओल जाउक वा मैथिली केँ बिहारक द्वितीय राजभाषा बनेबाक आन्दोलनक आह्वान कएल जाउक वा मिथिला केँ औद्योगिक परिवेश दिहबाक लेल क्रांतिक विगुल बजाओल जाउक, मैथिल समाज ताबतधरि नहि जागत यावत् धरि ओकरा ओकर 'समस्या' आ 'अभावक' ज्ञान नहि कराओल जाइत छैक, एहि प्रकारक आन्दोलन तँ समबद्ध स्वार्थी तत्व सभकेँ निष्कासित नहि कएल जाइत छैक। मुदा एहि समस्याक समाधान हँच ओतेक सरल नहि। हमरा सभक समक्ष सभसँ पैघ समस्या अछि नेतृत्वक — सफल नेतृत्वक अभाव मे मिथिलाक जन-मानसक मनोबल दृष्टि गेलैक अछि ओकर सौँध आ सामर्थ्य छिड़िया गेलैक अछि — आवश्यकता छैक दृष्टल मनोबल केँ जोड़नाक ... .. छिड़िआल सौँध आर सामर्थ्य केँ बढोरि कऽ एकत्रित करवाक

आवश्यकता छैक मैथिल केँ मिथिला राज्यक सम्प्रदाय देखा कऽ 'वोट' बढोरऽवाला महानुपुस सभक तिरस्कार करवाक — स्थलित राजनीतिज्ञ द्वारा शासन मे पुनः प्रवेशक लेल मैथिल जनताक समक्ष पतारल बाया जाल केँ छिन्न-भिन्न करवाक।

मुदा ई कार्य सभ केँ कात ... मैथिल समाज फौफ काटि रहल अछि। राजनीतिक सभ भ्रष्ट भऽ गेल छथि। राजनीतिक दल सभ मात्र शासन इच्छिबाक प्रयास मे व्यस्त अछि, दुइजीवी काँ अलहदा अलहदा गोल बना एक दोसरा केँ पछाड़बाक दाव पँच चलेवा मे व्यस्त अछि ... .. अन्ततः इकर निदान की ???

देशक आधुनिक परिवेश मे आर्थिक, राजनैतिक वा कोनो प्रकारक समस्याक समाधान सरकार द्वारा ताबत धरि नहि केल जाइत छैक यावत् धरि समस्या सभकेँ संगठित भऽ कमबल रूपेँ सरकारक समक्ष नहि राखल जाइत छैक — सरकार पर प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपेँ दबाव नहि देल जाइत छैक। आई द्रष्टव्य अछि जे एहि सब कायक निमित्त जनता केँ इच्छापूर्वक वा अनिच्छा सँ कोनो ने कोनो राजनीतिक दल पर निर्भर करहि पड़ैत छैक कारण राजनीतिक दल सभ एहि सभक लेल प्रारगत संगठन कएल जाइत छैक — वक्षम होइत छैक। भारतीय राजनीति मे राजनैतिक दल सभक छवि वद्यपि विकृति भऽ गेलैक अछि तथापि ई सभ कार्य ओकरे सभक माध्यमे भऽ रहलैक अछि। तँ हमरा सभकेँ अपन समक्षक प्रति देल गेल सरकारी आश्वासनक पूर्ति लेल आई तेँ काहिर, कोनो ने कोनो दलक कारण से-बाइये पड़ैत वा कोनो एहन राजनैतिक दलक संगठन करय पड़ैत जकरा लेल मिथिला मैथिल मैथिलीक समस्या समीपरी होइक। देशक प्रतिष्ठित राजनैतिक पार्टी 'कांग्रेस' सँ कोनो प्रकारक आशा करब गय हैत खाहँ ओ इन्दिराजीक काँग्रस होति वा जगजीवनजीक वा अन्ना किन्नी की लोकदल — चौधरी चरण सिद्धक व्यक्तिपरक नीति सँ आक्रांत भऽ छयवा रहलैक अछि भारतीय जनता पार्टी अदल निहारीजीक चरणगुहाका परिक्रमा कऽ रहलैक अछि जनता पार्टी अपने भीडुका ओकराहटि आ सतरफानी मे फँसल प्राण बाधुक लेल प्रणायाम कऽ रहलैक अछि तखन वाँचल बामपंथी पार्टी सभ से भारतीय साम्यवादी पार्टी (सी०पी०आई०) के वृणित चरित्र देखि लोक सभकेँ आब साम्यवादी विचार धारा सँ सेहो अनाशक्ति उत्पन्न होमय लगलैक अछि — तथापि दू एकटा एहन बामपंथी पार्टी सभ छैक जे निष्ठापूर्वक अपन कार्य करवाक प्रयास करैत छैक — जकरा जन समर्थन भेटौक तऽ किछु आशा ओकरा सँ कएल जा सकैत। तँ एहन विश्वक परिस्थिति मे साक्षात् भय ज हम सभ कोनो एहन पार्टी विशेषक चुनाव कऽली तथा ओकर संग दियैक तँ हमरा सभ केँ बहुत किछु सफलता भेट सकैत। मिथिलाक जनमानस केँ ककुमोड़ि कऽ उठावऽ मे मिथिलाक छात्र समुदाय केँ जगावऽ मे जँ हमसब निष्ठापूर्वक कोनो निष्ठावान पार्टी केँ सहयोग करियैक तँ सकल कार्य आर जल्दी भऽ सकैत अछि मुदा ई सब करवा सँ पूर्व हमरा सभकेँ एहि बातक खेपार सतत राखइ पड़ैत जे हमर सभक चुनाव



## प्रसंगवशा

— धनचक्र

मान अपना समक भारते या मे नहि, अपितु संपूर्ण विश्व मे जतऽ-जतऽ शासनक लेल जनतांत्रिक पद्धति के स्वीकार कएल गेलैक अछि, ओतऽ वृद्ध स्तर पर दूटा चीज समान रूपे परिलक्षित होइत छैक — जनता द्वारा प्रस्तुत विभिन्न प्रकारक 'मांग' आर सरकार द्वारा निःशेष रूपे देल गेल किसिम किसिमक आवाहन। परिणामक तुलना कएल पर कतहु कम-बेश भने भऽ सकैछ मुदा 'मांग'क 'स्तर' आ सरकारी 'आवाहन'क 'प्रकृति' मे सर्वत्र समानता भेटत। जनताक मांग पर सरकारी आवाहनक समीकरण के हल करवा मे लागल, प्रशासन-तंत्र सभडौं व्यस्त देखवा मे आओत मुदा समीकरणक दूर पक्ष मे मान संख्येक वृद्धि या होइत देखल गेलैक अछि, आर किछु नहि। ई 'मांग' आर 'आवाहन'क चोरा-तुल्की कोनो नव दलु वा घटना नहि छियेक वस्तु ताकिने सँ चल आबि रहलैक अछि परन्तु एहि मे एकटा बात तथ्यपरक छैक, ओ ई जे अपाहिज / असमर्थक मांगक लेल देल गेल आवाहनक निःसारता के लक्ष्य कऽ लेत छैक तँ ओ दैतखिली पर उतरि अबैत छैक आर तखन ओकरा जे किछु प्राप्ति भऽ जाउक (कुसुरक काड़ा स्वरूप) ओ ओहि मे दुसिक अनुभव कऽ लगैत छैक वा दुतकारि देल गेला पर अपन नांगरि सटका सधरि जाइत छैक मुदा समर्थ एवं सक्षमक औचित्यपूर्ण मांगक निमित्त देल गेल आवाहनक अवहेलनाक फलस्वरूप स्थिति क्रिस्टोटक रूप धारण कर लेत छैक — एकटा कुसुरक मे स्पृह-रचना प्रारंभ भऽ जाइत छैक, ई एकटा ऐतिहासिक तथ्य थिक जकरा नकारल नहि जा सकैत अछि। ओना एहि तथ्य के सहो अस्वीकार नहि कैल जा सकैछ जे अपाहिज / असमर्थक समग्र मांग ताजायजे होइत छैक वा ओकरा कोनो औचित्य नहि रहैत छैक वस्तु सरकारी एवं प्रशासन-तंत्र अपाहिज। असमर्थ लोक सभक चरित्र के चीन्हने रहैत छैक तँ ओकरा सभक जायजो मांग के छटका दैत छैक — ओकर निमित्त देल गेल आवाहन पर ध्यान नहि दैत छैक — ने कहियो ध्यान देलकैक आने दैतक।

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य मे जँ हम सभ अपन-अपन स्थितिक पर्यवेक्षण करी तँ पलक हेतु ई निणय करवाक लेल प्रायः सभकेँ थमकि जाय पड़त जे वस्तुतः हम सभ कोन गोल सँ सम्पर्कित छी? अर्थात् अमर्थ / अपाहिजक गोल सँ वा समर्थ / सक्षमक गोल सँ? ओना हमरा जनैत मैथिल तँ अवमर्थ / अपाहिज भइये नहि सकैत अछि ??? आ जँ हम सब दोसर गोल सँ सम्पर्कित छी अर्थात् अपना केँ सक्षम / समर्थ बुझैत छी तँ मैथिल-मैथिलीक सर्वांगीन विकासक लेल न्यायोचित एवं औचित्यपूर्ण मांगक एहन भीषण उपेक्षा किहक भऽ रहल अछि? हम सभ भक्तियाओल किहक जा रहल छी? एहि तथ्यक अवेषणक लेल हमरा सभ केँ सभ सँ पहिने अपन-अपन आत्म निरीक्षण (Self Introspection) करऽ पड़त पछाति अपन मांगक औचित्यक विश्लेषण

करऽ पड़त आर विफलता अशफलताक कारण ताकऽ पड़त।

एहि तथ्य केँ अस्वीकार नहि कैल जा सकैछ जे अपना केँ जागरूक कहनिहार मैथिल समाजक नब्बे सँ पंचानवे प्रतिशत मैथिल सिद्ध नहि भऽ सकैत छथि। अतएव, हुनका लोकनिक मांग मे हुनका लोकनिक निहित स्वार्थ, स्व-प्रचारक आकांक्षा एवं स्वयं केँ दोसरा पर आरोपित करवाक अतिरिक्त आर की भऽ सकैछ। हम अपन व्यक्तिगत अनुभवक आधार पर ई कहबाक साहस कऽ सकैत छी जे मिथिला-मैथिल आर मैथिलीक इहँ समुदाय अछि जे मुखौटा लगा कऽ जीवि रहल अछि — ई समुदाय मैथिल जनताक सभ वर्ग मे विद्यमान अछि खाहे ओ कुपक समुदाय हो श्रमजीवी हो, चाकरी पेसाक वर्ग हो, वणिज समुदाय हो; राजपुरुष वा राजनीतिज्ञ हो। जँ निष्पक्ष भावें देखल जाय तँ आजुक मैथिल समाजक स्वरूप सर्वथा परिवर्तित देखवा मे आओत जे पूर्णतया सुविवादी एवं अवसरवादी भऽ गेलैक अछि जकरा अपना पर विश्वास नहि छैक जकरा अपन माटि-पानि, अपन संस्कृति, अपन भाषा आर छरि-भासक प्रति स्नेह नहि रहि गेलैक ममत्वक बाते कोन। गाम-घर सँ लऽकऽ महानगर धरि छिड़िआएल मैथिल समाज केँ ई महामारी वृद्ध स्तर पर प्रसिद्ध कएने छैक आ जँ समय रहैत एहि रोगक उपचार नहि कैल गेलैक तँ एकर परिणाम भीषण भऽ सकैछ। गाम-घर जौआन्दहना आउ, कतहु एहि बातक आभास नहि भेटत जे मिथिलाक लेल सेहो कोनो समस्या छैक। खेतिहार सभ कृषि कार्य मे लीन, मध्यम वर्गीय समाज मामिला-मोकदमा मे बाँझल, चाकरी पेसा बलासभ अपने मे अलमल, वणिज व्यापारी समाजक लेल नोन-तेलक भाव मे उतार-चढ़ावक अतिरिक्त कोनो तंगारी नै छैक, शिक्षक-छात्र केँ सरकारी आशाक पाछन / उल्लंघन मे लागल अपना भाषा मे बातो करवाक लेल ककरो पलवेत नहि। ओ तऽ अन्य अछि मिथिलाक स्त्रीजन समाज जे एतनो धरि मैथिली आ मिथिलाक लोक कला केँ जियोने अछि। सौँसे मिथिला बौआ भाऊ, कतहु कोनो बमस्याक चर्चा नहि भेटत मुदा तेयो मैथिलीक जे पत्र-पत्रिका अछि ओहि सभ सँ ज्ञात होइछ जे 'समस्या' मिथिलाक पर्यायवाची शब्द बन गेलैक अछि। अन्यान्य भाषाक पत्र-पत्रिका सभ मे सेहो यदा-कदा एहि तरहक समाचार पढ़वाक लेल भेटि सकैछ। प्रश्न उठैछ जे मिथिलाक लेल जखन कोनो प्रकारक समस्या नहि, मैथिलक लेल जखन एकर कोनो औचित्य नहि ... .. अपन माटि-पानि सँ जखन ककरो मोहे नहि ... .. अपन मातृभाषा सँ जखन ककरो अनुराग नहि तँ ई समस्याक प्रति जिज्ञासा भाव की? ई जिज्ञासु लोकनि केँ? छिनका लोकनि केँ चीन्हब आवश्यक नहि अनिवार्य बुझवाक चाही।

हमर कहबाक आशय ई कथमपि नहि जे हमरा सभक सभस कोनो प्रकारक समस्या नहि अछि। गर सँ बाहर धरि विभिन्न प्रकारक समस्या सब सुरस जकाँ मुँह कोनो ठाढ़ अछि। भारत सन अद्वि विविध देश

मे समस्या आर अभाव नहि रहैतक तँ आर कतऽ रहैतक — आ जतऽ धरि मिथिलाक प्रश्न अछि ओतऽ समस्या आर अभाव नहि रहबाक तँ प्रश्न नहि रहैत छैक परन्तु प्रश्न उठैत अछि जे की वस्तुतः मैथिल समुदाय केँ अपन समस्या आर अभावक पूरा ज्ञान छैक? की मिथिलाक जनता केँ ई बात ज्ञात छैक जे ओकरा सभक सब सँ पैघ समस्या की छियेक? कोन प्रकारक अभाव ओकरा सभक जीवन मे व्याप्त छैक जाहि लेल सरकारक समक्ष 'मांग' राखल जा सकैछ? अभाव आर समस्याक संगे सटल रहैत छैक 'मांग' (Demand) जकर समुचित ज्ञान मांग केनिहार के रहैत छैक जे ओकरा सभकेँ एक छुट भऽ अपन दल नायक चुनबाक लेल प्रेरित करैत छैक। आर दल-नायक ओहि अभाव-वृत्त, समस्याग्रस्त समाज केँ शिक्षा बोध दैत छैक — युद्ध-नितिक निर्धारण करैत छैक। सरकारक समक्ष क्रमबद्ध रूपे 'मांग' रखैत छैक जे व्यक्तिपरक नहि भऽ स्वभावतः सामूहिक कल्याणक निमित्त होइत छैक। आर एहन मांगक अवहेलना कएला पर सरकारकेँ कतहु पिडवावाक स मना करऽ पड़ैत छैक तँ कतहु लालझँगाक। एहि परिप्रेक्ष्य मे जँ अपन मिथिला क्षेत्रक 'मांग' पर विचार करी तँ देखवा मे आओत जे मिथिलाक जन समुदाय केँ अपन 'अभाव' आर समस्याक समुचित जानकारी नहि छैक, उचित ज्ञान नहि छैक — अर्थात् जे अभावग्रस्त अछि ओकरा एहि बातक कोनो चिन्ता नहि छैक जे ओ अभावग्रस्त अछि वस्तु एहि प्रकारक अभावग्रस्तता आर समस्याक ओ अपन नियति मानि लेने अछि। मिथिलाक मुख्य जनता केँ अपन अभाव आर समस्याक प्रति कोनो प्रकारक चिन्ता नहि छैक आर ओकरा एहि अनभिज्ञता (Ignorance) के अपन स्वायत्ताभक्त आधार बना रहल छैक किछु गलत-गुथल राजनीतिज्ञ, राजपुरुष, किछु मध्यमवर्गीय तथा कथित जागरूक लोक किछु साहित्य सेवा आर किछु एहिप्रकारक चला-चलौली छैक। किछु स्वार्थी तत्व द्वारा काल्पनिक जागरूकता देल जाय रहलैक अछि मुदा ओ कतहु जोर नहि पकड़ि रहलैक अछि आने पकड़तक कारण अधिकार मिथिल केँ एहि स्वार्थी तत्व सभक दुरिस्त-भ्रिक ज्ञान भऽ गेलैक अछि। किछु बौद्धिक वर्ग एवं किछु साहित्यकारक नेतृत्वा पर ओ सुगुणायल अछि। तँ मिथिला केँ एकटा पृथक राज्य बनेबाक सुगमरीचिका देला-ओल जाउक वा मैथिली केँ बिहारक द्वितीय राजभाषा बनेबाक आन्दोलनक आह्वान कएल जाउक वा मिथिला केँ औद्योगिक परिवेश दिएबाक लेल क्रांतिक बिगुल बजाओल जाउक, मैथिल समाज ताबत धरि नहि जागत यावत धरि ओकरा ओकर 'समस्या' आ 'अभाव' ज्ञान नहि कराओल जाइत छैक, एहि प्रकारक आन्दोलन सँ समबद्ध स्वार्थी तत्व सभकेँ निष्कासित नहि कएल जाइत छैक। मुदा एहि समस्याक समाधान हेतु ओतेक सरल नहि। हमरा सभक समक्ष सभस पैघ समस्या अछि नेतृत्वक — सफल नेतृत्वक अभाव मे मिथिलाक जन-मानसक मनोबल टूटि गेलैक अछि ओकर सौँस आ सामर्थ्य छिड़िया गेलैक अछि — आवश्यकता छैक दृढ़ मनोबल केँ जोड़बाक ... .. छिड़िआएल सौँस आर सामर्थ्य केँ बढोरि कऽ एकत्रित करवाक

आवश्यकता छैक मैथिल केँ मिथिला राज्यक सम्मेलन देखा कऽ 'वोट' बटोरवाला महा-पुरुष सभक तिरलकार करवाक — स्थलित राजनीतिज्ञ द्वारा शासन मे पुनः प्रवेशक लेल मैथिल जनताक समक्ष पसारल गयो जाल केँ छिन्न-भिन्न करवाक।

मुदा ई कार्य सभ केँ कात । मैथिल समाज फौफ काटि रहल अछि। राजनीतिक सभ भ्रष्ट भऽ गेल अछि !! राजनीतिक दल सभ मान शासन हथियवाक प्रयास मे व्यस्त अछि, बुद्धिजीवी वर्ग अलहदा अलहदा गोल बना एक दोसरा केँ पछाड़बाक दाव पेंच चलेवा मे व्यस्त अछि ... .. अन्ततः एकर निदान की ???

देशक आधुनिक परिवेश मे आर्थिक, राजनैतिक वा कोनो प्रकारक समस्याक समाधान सरकार द्वारा ताबत धरि नहि कैल जाइत छैक यावत धरि समस्या सभकेँ संगठित भऽ क्रमबद्ध रूपे सरकारक समक्ष नहि राखल जाइत छैक — सरकार पर प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपे दबाव नहि देल जाइत छैक। आई द्रष्टव्य अछि जे एहि सभ कायक निमित्त जनता केँ इच्छापूर्वक वा अनिच्छा सँ कोनो ने कोनो राजनीतिक दल पर निर्भर करि पड़ैत छैक कारण राजनीतिक दल सभ एहि सभक लेल प्रागत संगठन कएल जाइत छैक — वक्षम होइत छैक। भारतीय राजनीति मे राजनैतिक दल सभक छवि सघपि विकृति भऽ गेलैक अछि तथापि ई सभ कार्य ओकरे सभक माध्यमे भऽ रहलैक अछि। तँ हमरा सभकेँ अपन समस्याक प्रति देल गेल सरकारी आवाहनक पूर्ण लेल आइ ने काबि, कोनो ने कोनो दलक शरण मे जाइये पड़त वा कोनो एहन राजनैतिक दलक संगठन करय पड़त जकरा लेल मिथिला मैथिल मैथिलीक समस्या सर्वोपरि होइक। देशक प्रतिष्ठित राजनैतिक पार्टी 'कांग्रेस' सँ कोनो प्रकारक आशा करन व्यर्थ हैत खाहे ओ इन्दिराजीक काँग्रेस होति वा नरगजीवनजीक वा अन्य कितनो क। लोकदल — चौधरी चरण सिद्धक व्यक्तिपरक नीति सँ आकांत भऽ छपट्या रहलैक अछि भारतीय जनता पार्टी अद्वि बिहारीजीक चरणमुद्राक प्रतिक्रमा कऽ रहलैक अछि जनता पार्टी अपने भीखुका ओभराहटि आ सरकारीनी मे फँसल प्राण बायुक लेल प्रणयाम कऽ रहलैक अछि तखन नाँचल नामसंघी पार्टी सभ से भारतीय साम्यवादी पार्टी (सी०पी०आई०) के घृणित चरित्र देखि लोक सभकेँ आप्त साम्यवादी विचार धारा सँ सेहो अनादासि उतलन होमय छलैक अछि तथापि दु-एकटा एहन नामसंघी पार्टी सभ छैक जे निष्ठापूर्वक अपन कार्य करवाक प्रयास करैत छैक — जकरा जन समर्थन भेटैक तऽ किछु आशा ओकरा सँ कएल जा सकैछ। तँ एहन विषयक परिस्थिति मे साक्षात् भय जँ हम सभ कोनो एहन पार्टी विरोधक चुनाव कऽली तथा ओकर संग दियेक तँ हमरा सभ केँ बहुत किछु सफलता भेट सकैछ। मिथिलाक जनमातव केँ भक्तमोहि कऽ उदावऽ मे मिथिलाक छात्र समुदाय केँ जगावऽ मे जँ हमसब निष्ठापूर्वक कोनो निष्ठावान पार्टी केँ सहयोग करियेक तँ सकल कार्य आर जल्दी भऽ सकैत अछि मुदा इ सब करवा सँ पूर्व हमरा सभकेँ एहि बातक खेयाल सतत राखब पड़त जे हमरा सभक चुनाव



मैथिली राज्य .....

लोक कोनो प्रखण्ड कोनो जिला अथवा कोनो राज्यक विकास लेल ने कहियो बाजल आने बाजल चाहैत अछि ।

एहेन स्वार्थी जनताक संगठन नहि भऽ सकैत अछि ।

एहेन छोटो जनताक बात पटना आ दिल्लीक छोटका नेता सब किएक सुनैत छथि ? ओ अपन निर्वाचन-क्षेत्र केँ हाउ' बुझैत छथि । बिना काज कयने ओ चुनाव जीतऽ चाहैत छथि । दस-बीसटा भोटक ठीकदार केँ ओ मिला कऽ राखऽ चाहैत छथि जे हुनक क्षेत्र मे जयकार करैत रहैत ।

हमरा ओहि ठामक नेता लोकनि मिथिलाक नेता बनियो ने सकैत छथि । ओ अपन निर्वाचन क्षेत्रक नेता छथि आ ओकरे नेता बनऽ रहल चाहैत छथि ।

अपना ओहि ठामक नेता लोकनि अपन चुनाव क्षेत्र टाकेँ देश-राज्य, जिला-सरकार बुझैत छथि । ओतने दूर ओ पक्की सबक बिजली आ पुलक बात करैत छथि ।

जे सियरी-बख्तियारपुरक नेता छथि, ओ जननगरक बात नहि सोचैत छथि । जे पंडौलक नेता छथि, से बाँकाक बात नहि सोचैत छथि ।

अपना-अपना निर्वाचन क्षेत्रमे दही पर चीनी परसतिहार नेता मिथिलांचलक बात करैत छथि, तँ छगैत अछि जे ओ ठकैत छथि आ कोनो मनोविकृति क कारणो बड़-बड़ा रहल छथि ।

ई लोकनि एम० एल० ए० क भोट जीतबा लेल जनताक छुशामद करैत छथि, बाकी बात लेल दिनका लेल जनताक कोनो सोजर नहि अछि ।

भोट जीतब आ तकर बादक काज लेल ई लोकनि जगदम्बाक कृपा पर अवलम्बित छथि, योग-टोन आ भास पर आश्रित छथि ।

जतऽ नेताक हाँड एतेक एकांगी हो ततऽ मिथिलांचलक बात करब पाखंड बुझावत अछि । स्वतंत्रता भेटलाक एतेक बलक बादो मिथिलांचलक विकास नहि भेल अछि आ ने ताहि दिशामे कोनो प्रकारक सूर-सार देखवा मे अवैत अछि ।

एखन दिल्ली दूर अछि ।

बिना जागरण आ संगठन कयने ई दिल्ली एहिना दूर रहत ।

जय/१०/८४

### बालगीत

करिया कुम्भारि खेलै छी  
ढोल पटापट मारै छी  
लौख पटापट मारै छी  
एहिना गीत जे मनसब के  
तकरे मारै-जारै छी ॥

एके धरती समतरि बहिना  
बाँटल कहाँ अकास छइ  
एके चान सुरुज छइ तहिना  
एके बहै वसात छइ  
भेद-भाव के बात करै जे  
तकरे मारै-जारै छी ॥

डर्पा-दूष हटाबै छी  
घृणा-विभेद मेटाबै छी  
बुद्धि-विवेकक दीप लेसि हम  
प्रेमक ज्योति पसारै छी ॥

—राम लोचन ठाकुर

### मैथिली पोथी आ पत्रिका कीनू आ पढ़ू

	मूल्य
१. इतिहासहंता—रामलोचन ठाकुर	२/४ टाका
२. बेतालकथा—कुमारेश काश्यप	४ "
३. प्रतिध्वनि ( अ० ) रामलोचन ठाकुर	४ "
४. जादूगर—रामलोचन ठाकुर	५ "
५. मैथिली लोककथा—रामलोचन ठाकुर	५ "
६. अर्द्ध नारीश्वर—मणिपद्म	२५ "
७. मुन्शी रघुनन्दन दास : व्यक्तित्व ओ कृतिस्व ( संकलन )	६ "
८. निष्कलक—जगदीश भा	३ "
९. जुआएल कनकनी—महेन्द्र सलंगिया	३ "

अरुणोदय प्रकाशन सं भेटि सकैछ

अरुणोदय प्रकाशन ३३ ५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०००३३ क लेल श्री महेश्वर भा द्वारा प्रकाशित तथा पायनिमर आद प्रिन्टर्स ३२ बी, बुलवार वैशाख स्टीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित । सम्पादक : श्री जगदीश भा

## शिक्षा मंत्रीक नाम पत्र

सेवा मे

प्रो० श्री नागेन्द्र भा

शिक्षा मंत्री

बिहार सरकार, पटना ।

महाराज,

अपने के शते होएत जे प्राथमिक स्तर

धरि मातृभाषाक माध्यम सँ शिक्षाक अधि-

कार संविधान स्वीकृत छैक आ ई अधिकार

भारतीय नागरिकक मौलिक अधिकारक

अन्तर्गत अवैत छैक । लेदक बात जे सँतीत

वर्ष देश स्वाधीन भेलक उपरान्तो बिहार

सरकारक मैथिली विरोधी नीतिक कारणे

मैथिली भाषी छात्र अपन एहि प्रमुख आ

पवित्र अधिकार सँ वंचित राखल गेल अछि ।

एकरा कागजी मान्यता भनहि देलगेल होइक

परञ्च वास्तविकता इएह छैक जे मात्र पहिल

आ दोसर बर्गक प्रोथी मैथिली मे उपलब्ध

छैक दोसर बर्ग धरि मैथिली आ तेसर बर्ग

सँ हिन्दीक माध्यमे पढ़नाइ जे कतेक असु-

विधाजनक ओ अव्यावहारिक छैक से कह-

बाक प्रयोजन नहि । स्वभावतः कोनो नेता

आ तकर अभिभावक मैथिली माध्यम केँ

नहि चुनैत अछि । तँ आवश्यक छैक जे

अनतिविलम्ब बर्ग आठ धरिक समस्त विध-

यक प्रोथी मैथिली मे उपलब्ध कराओल

जाइक । अपने स्वयं मैथिली भाषी छी

मिथिलांचलक प्रतिनिधि छी तथा ई विभाग

अहाँक अधीन अछि त तिवेदन जे शीघ्र

एकर व्यवस्था कराओल जाय । एहि संदर्भ

मे हम अपने के स्मरण दिआबय चाहैत छी

जे नवम्बर १९८० मे जखन हमरा लोकनि

पटना मे अपनेक निवासस्थान पर अपने सं

मेट केने रही त अपने अपन अंतर्मथा

देखओने रही परञ्च से अंतर्मथा त आइ

नहिजे अछि, बरन एहि विभागक अपने

सबैतबाँ छी ।

शतव्य जे एहि संदर्भ मे हम राष्ट्रपति

केँ सेहो पत्र लिखने छलियनि संविधानक

सालमे संशोधन ( १९५६ ) द्वारा प्रदत्त

विशेष अधिकारक अन्तर्गत बिहार सरकार

केँ निर्देश देवाक आग्रह केने छलियनि ।

जेना कि हमरा शाप संख्या—११०/शा०

दिनांक २२ जून ८४ द्वारा संचित कएल

गेलए उचित करबाइ हेतु राष्ट्रपति सचि-

वालय बिहार सरकार केँ लिखि चुकल छैक

( पत्र संख्या—३६५-पी १११३१८४

दिनांक २४-१-८४ )

आशा अछि जे अपने मया शिघ्र एहि

संदर्भ मे उचित कार्य क वादे तीन कोटि

मैथिली भाषीक दीर्घ आकांक्षा पूर्तिक

सकब ।

जय मैथिली

भवदीय—

राम लोचन ठाकुर

संयोजक

मैथिली सुक्ति मोर्चा कलकत्ता

लेखा-जोखा .....

एक परिवारक सब बच्चा एक रंग नहि

होइत छैक । वंशजगत कोनो बीज होइत

छैक से हम नहि मानैत छी आ ते संस्कार

सन बायबीय भावना मे हमरा कहियो

विश्वास नैल ।

हजूर माइ-बाप, हम कबूल करैत छी

जे हमर ज्ञान वा जानकारीक परीधि बड़

छोट अछि, तँ जे अतीन्द्रिय छैक, तकरा

सम्बन्ध मे हमर कोनो वक्तव्य नहि । ज्ञानक

अथाह सागरक अखंड लहर छैक । के

कते जानि पओलक तकरे पता कतेक के

छैक ? खाली एक बातक पता अछि हमरा

कि हमर बाल मनपर जे प्रश्न अंकित भेल

छल से आइयो अनुत्तरित अछि । हमर

पहिल खाना शाप भेल अहिल्या छल

भोकरा संग छल केने छलियनि । गौतम

इन्द्र के शाप देने छलियनि से त बुझय जोग

होइल परञ्च अहिल्या निरपराध होइतहुँ

शाप भेल मेलीह । एता किएक माइ-बाप

ई छलनामही व्यवस्था आहुक देन नहि

युगो सँ एहिना होइत एलै-ए । जे शोधित

अइ तकर आर शोषण होइत छैक । जे

शासक अइ ओ दुष्टक चलेबाँ आ ओकर

प्रतिद्वंद्वी ओकर दमनक अभियान । किन्तु

निरपराध अहिल्या, शासक पक्ष आ विपक्षक

दुष्टकक बीच निरन्तर पिसाइत रहैछ । कि

अहाँ के एहन नहि बुझि पड़ेछ हजूर माइ-

बाप

✽

### कह लोचन कविराय

साइक, हथ्या करैत अछि, कंठ मोकि कए पुत

आइ करए पुनि वैदिकी, कनियों नहि अजगुत

कनियों नहि अजगुत करए पुनि भोज जबारी

मुँह देखि केँ दान, करैत छि लोटा-थारी

कह लोचन कविराय, विलक्षण बुद्धि जगाइक

पांचक भेल मधाइ, सधल सम कर्जा साइक



# समिति रचना

वर्ष—१ अंक—१

अक्टूबर, १९८१

मूल्य—पचास पाइ

## सम्पादकीय

बालचन्द्र विजावह भाषा  
तुहु नहि लगै दुजन हासा  
ओ परमेसर हर सिर सोहै  
ई गिबइ नाअर मन मोहै  
देसिल बयना सभ जन मिट्ठा  
ते तइसन जम्भओ अवहट्ठा

—विद्यापति

अइ स द सई वर्ष पूर्व, जवन कि भाषा चेतना नामक बस्तु कम सं कम भारत मे नहि छल, ताइ समय मिथिलाक सन्तान कविपति विद्यापतिक ई घोषणा निश्चित हमरा लोकनिक लेल गर्वक विषय थिक। कहवाक प्रयोग नहि जे आगा चलि केँ सूर तुखी आदि विभिन्न कवि केँ अपन भाषा मे काव्य रचनाक प्रेरणा एतहि सं प्राप्त भेलनि।

विद्यापति जाइ ददता आ विश्वासक गेँ ई घोषणा केलनि, तहिना एकर पालन सेहो आ तकरे परिणाम मेले जे मिथिलाक भाषा-साहित्य चन्द्रमाक आलोकहि जकाँ देश-कालक सीमाक अतिक्रमण करबा मे सफल भेल, मैथिली मे काव्य रचना परम्परा नेपाल सं आसाम धरि आ उड़ीसा सं बंगाल धरि बनि गेल, जहर शेष कड़ीक रूप मे बीसम शताब्दीक बंगालक 'मानुसिंदेर पदावली' थिक।

ई जनकवि विद्यापतिक जनवादी चेतनाक परिणाम छल जे जनगणक कथा व्यापक चर्चा साहित्य मे भेल, जनभाषा साहित्यिक भाषाक गणना प्राप्त केलक। इएह कारण छल जे विद्यापति जनगणक कंठहार बनि गेलाह, हुनक रचना मात्र हमरधार्मिक सांस्कृतिक नहि देनन्दिन जीवनक अंग बनि गेल। ई विद्यापतिक लेखनी शक्तिक फल छल जे 'बहलोल'क सैनिक शक्ति केँ परास्त केलक आ मिथिलाक स्वाधीनताक रक्षा केलक। तें विद्यापति मैथिलीक पर्याय बनि गेल छथि।

खेदक विषय जे आइ पुनः मिथिलाक माथ पर दुर्दिनक मेघ मरड़ा रहल-ए'। मैथिली हर राहुग्रस्त भेल छथि। मैथिल सन्तान अवचेतनावस्था मे पड़ल अइ, साहित्यकार अखाद केँ छोड़ि श्वानवृत्ति मे लागल छथि आ शिवसिंहक स्थान पर कतेको 'बहलोल' जनमि गेल ए। एहना अवस्था मे खगता अइ एक नजि अनेको विद्यापतिक जे नवचेतनाक शंख फूकि सकथि, भैरवीक आराधना क पुष्पक निर्माण क सकथि, बहलोलक लोल दाहि मैथिली केँ राहुमुक्त क सकथि आ आकाश केँ मेरसुक क नव आशोक पसारि सकथि। 'देसिल बयना' हुनके स्वागतार्थ प्रतीक्षारत अइ।

### शक्ति-पूजा

भगवती दुर्गा शक्ति प्रतीक छथि। आसुरी शक्ति प्रवृत्तिक विनाश आ देवी शक्ति गृहस्थिक प्रतिष्ठाक निमित्तहि दिनक प्रादुर्भाव भेल छल। ई अपन कर्म मे सकली-भूत भेल छलीह आ तें युगों सं हमरा लोकनि उत्तम मनबैत आवि रहल छी। शक्ति स्वरूपा भगवतीक पूजाचना करैत आवि रहल छी।

भगवती दुर्गा मातृरूपा छथि। माइक रूप मे दिनक पूजा-ध्यान हमरा लोकनि करैत आवि रहल छी। मां अपन नेना केँ सिनेह करैत छैक, शक्ति-सदबुद्धि प्रदान करैत छैक, हमरो लोकनि तकर आकांक्षा रखैत छी।

आब प्रश्न उठैए जेकि हमरा लोकनि एहि पूजाक अधिकारी छी? पूजाक निमित्त जे पवित्रता, ददता, सत्यनिष्ठा आ समर्पणक भावना आवश्यक—से हमरा लोकनि मे अइ? रामायणक अनुसार मैथिली केँ रावण अपहरण क कल गेल छल। मर्यादा पुष्पोत्तम राम प्रण ठनलनि जे एहि काजक निमित्त रावण केँ उचित शिक्षा द बाओ मैथिली केँ आपस अनताह। रामायणक कथा संग महाकवि निराशक 'राम की शक्ति पूजा' बला कथा जोड़ि दी त आर नीक होएत। तदनुसार राम अपन प्रण केँ पूरा करवाक निमित्त शक्तिपूजा केलनि, पूजाक समय हुनक कुलबाली सं एगो फूल सिपत्ता भ गेल, जकर अर्थ भेल पूजा भंग भेताई वा अपूर्ण रहि गेनाह। रामचन्द्र कनिजो विचलित नहि भेलाह, ओ नहि बिसरलाल जे ओ कमलनेत्र छथि आ तें तुरन्त अपन आंखि

संविधान बिनु मैथिलीक ओ

मानचित्र बिनु मिथिला धाम

ढाड़ि-जारि सुझाह करब-हम

बिद्रोही मिथिलाक जवान

—रामलोचन ठाकुर

## बाढ़ि : अइ नदिया के यह बेवहार

मिथिला मे एक बड़ प्रचलित कहवी छेक जे 'देवो दुर्बल घातक'। कारण मिथिला एकर सुकभोगी अछि। बेर बेरक प्राकृतिक विपर्यय एकर रीढ़ कमजोर कऽ देने छेक। भाग्यवादी मिथिला आर बेसी भाग्यवादी बनल जा रहल अछि। एहि वर्ष पहिने रौदीक प्रकोप छेक आ समस्त मिथिला धू धू कऽ जरि रहल छल। खेत सबमे लइलहाइत वीया-बालि-जरि गेलक। घर खाली आ बाहर साफ। जवन वर्षा होमय लागैक तऽ लोकक मन मे एक सल्लास एलेक आ ओख अपन सम्पूर्ण शक्ति सं चास-बास मे लागि गेल छल। ठीक एहने समय मे बाढ़ि एलेक आ लोक बाढ़ि बाढ़ि करय लागल, ओकरा सामने रोजी-रोटीक समस्या चकमाउर देमय लगलक।

मिथिलाक भरिसके कोनो एहन अंचल हतेक जाहिठाम नदी नहि होइक। एहि देशक प्रायः समस्त ग्रामांचल नदीक परिसर मे बसल अछि। ओना तऽ नदी प्राकृतिक सम्पदा थिक आ खास कऽ ओहि देशक हेतु जाहिठाम लोक-जीवन कृषि पर आधारित होइक ताहिठाम एकर आर बेसी उपयोगिता आ महत्ता छेक। परंच इहो तहिना सत्य जे सम्पत्तिक संगे विपत्ति सेहो रहैत आयल अछि। सम्पत्तिक सुरक्षा आ उचित उपयोग नहि पओने विपत्ति केँ टारल नहि जा सकैछ। वर्षाकाल मे ई नदी सब भरि जाइत छेक आ उज्जल्य लगेत छेक आ संगहि ताण्डववृत्त करय लगेत छेक। ई नृत्य मिथिला वासीक हेतु केहन विनासकारी भऽ जाइत छेक तकर प्रत्यक्षरूप एखन बहुता ठाम भेटि सकैत अछि।

मिथिलाक पेव पेव नदी मे गंगा, कोशी, कमला, बलान, गंडक, करेह, बागमती आदि अछि। बाढ़ि मे एहि नदी सबहक भूमिका रहैत छेक बाध बोन मे लागल जजात के डूबायब, गाम-घर केँ

दहायब आ माल-जाल केँ भसियायब। कोशी एखनहुँ मिथिलाक लेल अभिशाप बनल अछि। एहि बेरक बाढ़ि सं ओना तऽ समस्त मिथिला प्रभावित भेल अछि मुदा कटिहार, सदरसा, पूर्णिया, मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर जिला सभ मे बहुत अधिक एकर विभिषिका रहलक आ तें सबसं अधिक क्षतियो भेलक अछि। एहि सं लाखों लोकक जान-मालक क्षति भेलक अछि आ ओखव आश्रय बिहीन भऽ गेल अछि—वीया-पुताक संग लोक नट जकाँ बाटे-घाटे बैआ रहल अछि। अयाचीक सन्तान आइ पावभरि अल आ पाँच हाथ बंस्त्रक लेल विकल भऽ रहल अछि। व्यवस्थाक तरफ सं जे अनुदान भेटि रहल छेक तकर कये कोन? ई तऽ ओतुका लोकक दाखन व्यथे गवाही दऽ रहल अछि जे ओकरा सबहक एहि अव्यक्त वृष्टि केँ दूर करबा मे ई अनुदान कतेक सहायक भऽ सकलक अछि। अनुदानक विशेषांश अफसरक कोष केँ निश्चित भरलकैक अछि आ अहंश ओहि दुःखक समुद्र मे छीटल गेलक अछि।

बाढ़ि मिथिलाक लेल कोनो नव घटना नहि। नदी-मातृक देश मिथिला अदौए सं एकर कोपभाजन रहल अछि आ तें एहिठामक लोक एहि सं अभ्यस्त भऽ गेल अछि। दोसर उपाइयो ने छेक? सरकारी अवहेलना आ मैथिल जातिक अवचेतना-दूर एहि लेल समानरूप सं दायी। तें प्रतिवर्ष बाढ़िक ताण्डव लीला होइत छेक। प्रतिवर्ष लोक मरेत अछि, घर आंगन खसेत छेक आ चास-बास भूसेत छेक आ एकरे पीठ पर अबैत छेक नाना रंगक रोग व्याधि। लोक मरेत अछि, घिसियोर कटेत अछि। कतय छेक ओकर एहि सम्प्राक निदान? समाधान के करतक? देश तऽ आजाद भेल मुदा ३३ वर्षक बादो एहिठामक ई समस्या समस्ये बनल रहि गेलक। किएक? —जयदेब लाभ

कनिओ विचलित नहि भेलाह, ओ नहि बिसरलाह जे ओ कमल नेत्र छथि आ तें तुरन्त अपन आंखि बहार कय भगवती पर शेष पुष्पक रूप मे चढ़ेबाक हेतु उद्यत भेलाह। भगवती तेखन प्रकट भेलथिन विजय पर प्रदान केलथिन।

आइ फेर मैथिली अशोक वाटिका मे बन्दिनी छथि आ हम चारि कोटि मैथिल सन्तान चुप-चाप हाथ पर हाथ धेने बैसल छी। कि हमरा लोकनि माइक दूध नहि पीने छी? कि हमरा लोकनिक देह मे शोणित नहि? कि हमरा लोकनि बहिर छी जे बंगला देश, असम, दक्षिण अफ्रिका, फिजीस्ताइन वा आयरलैंडक गर्जन नहि सुनाइ पड़ैए? आ कि हमरा लोकनि नपुंसक छी? आ ज से छी त की अधिकार अइ शक्ति पूजाक? आ ज से नहि छी त आउ—एहि पवित्र आ शुभ अवसर पर हमरा लोकनि अपन मातृ भाषाक उद्धारक शपथ ली तेखन शक्ति पूजाक सार्थकता आ उत्सवक उपयोगिता।

चि  
ह-  
दि  
जि  
पर  
चा  
जी  
र मे  
हा-  
ए।  
कन-  
मके  
क्षम  
न आ  
जाक  
उठल  
हलनि  
पहिने  
5।



गाम सं दूर मिथिलाक मजदूर

## कलकत्ताक रिक्सा बाहक

कृषि प्रधान मिथिला देश मे श्रमक महत्ता आहि ए काल सं बुझल गेल-ए आ मात्र बुझले टा नहि गेल-ए एकरा बड़ पैघ स्थान देल गेल-ए। ई गौरव मिथिले देश के टा छइ जे माथ पर राजमुकुट आ हाथ मे लागनि धेने कुनू राजा हरवाहि केने छथि। राजर्षि जनक के इष्टान्त इतिहास से अगतीम अह। तें मिथिला धन धान्य सं भरल-पुरल छइ। अभाव नामक वस्तु लोकक जीवन मे नहि छइ, ई शब्दकोशक एगो शब्द मात्र छल। इहए कारण छइ 'जे' एहिठाम विद्याक ओतेक प्रसार छल, ज्ञान-विज्ञानक, साहित्य कलाक ओतेक विकास भ सकल। के नहि जनै-ए जे भारतीय इ गोट दर्शन मे चारि गोट एही भूमिक देन थिक। पश्चात आबि के स्थिति बदलि गेलैक। लोक श्रम के अजलाह नजरिओ देखल लागल-आ श्रमिक वर्ग समाज मे नीच श्रेणीक लोकक रूप मे बुझल जाय लागल। श्रमविभाजनक आधार पर बनल समाज व्यवस्थाक स्वस्थ-सबल देह मे वर्ण बांरक गान्धी लागि गेलै। प्रह्लाक कथन जे 'गुण आकर्मक आधार पर' हम चारि वर्णक सिंघजन कएल-ए' विसरा देल गेल आ तकरा स्थान पर ब्रह्माम मुह सं ब्राह्मण आ बाहि सं राजपूत आदि जनबाक कथा के मटि देल गेल राजर्षि जनकक हर जोत-बाक काज के नून तेल लगा मिथक बना देल गेल। तथा कथित उंच वर्णक हेतु आव लागनि धेनाइ पाप भ गेलै आ एही-ठाम सं मिथिलाक अद्योगतिक इतिहासक आरंभ होइए।

श्रम के हेतु बुझनाइ तथा एहि सं विमुख भेनाइ विलासिता आ संचयक प्रवृत्ति के जन्म देल आ ई प्रवृत्ति पुनः शोषण प्रवृत्ति के जन्म देल। स्वभावतः श्रमिक वर्गक शोषण आरंभ भेल। समाज दू वर्ग मे बाँटि गेल—शोषक ओ शोषित। एक दिव शोषक वर्गक समय विलासिता मे कटव लगलैक त दोसर दिव शोषित श्रमिक वर्गक अभाव यातनाक बीच। एकर प्रभाव उत्पादन पर पड़नाइ स्वाभाविक छइ आ धन-धान्य सं भरल मिथिला मे गरीबीक नग्न नृत्य प्रारंभ भेल।

एक दिव जनसंख्या वृद्धि आ दोसर दिव उत्पादनक कमी सं मिथिला दिनानु-दिन अभाव ग्रस्त होइत गेल। खेती पर आधारित रहितहु ओह मे नव-नव तरीकाक खोज उपयोग नहि कएल गेलैक। कबे के करैत ? भूस्वामी अइदी भेल आ दिन-राति विलासिता मे डूबल रहल त दोसर दिव श्रमिक वर्ग शक्तिहीन छल। ताइ पर सं रौंदी-दाही महामारीक प्रकोप बढ़ये लगलैक। जीविकाक अन्याय साधन रहलैक नहि। एहि यंत्रायुगहु मे मिथिला

मे कलकारखानाक विकास नहि भ सकल। एकरा कारण मैथिल जातिक अवचेतनता तथा धुणित राजनीति आ बंचक मिथिलाक राजनेतागण छथि। आजुक राजनीतिक पहिल शर्त होइ छइ जनता के मुर्ल वना-कए रखनाइ तथा अभाव मे रखनाइ, आ एहि निमित्त आवश्यक छैक जनताक भाषा, ओकर सभ्यता-संस्कृति के नष्ट क देनाइ। राजनेतिक नेतागण अपन एहि पवित्र काज मे पूर्णतः सफल भेल छथि। दोसर दिव श्रमिक वर्ग के दिन-राति खटलाक बादो पेटभरि अन्न आ देहभरि वस्त्र नहि उप-लब्ध भ पओलैक। पेटक ज्वाला मे ओ स्वर्ग हु सं पैघ अपन जननी-जन्मभूमि के, अपन भाइ-बहिन, पत्नी आ नेना के परिजन-पुरजन के तेजि शहर दिस पड़ाएल।

मिथिलाक श्रमिक भारतक कुनू शहर सं बेसी, बंगालक कलकत्ता तथा ओकर समीपस्थ नगर मे अह। एहिठामक जूट मील हो वा गंजीमील वा छापाखाना सब ठाम मैथिल श्रमिकक बहुलता छइ। आका वाला, ठेकावला आ रिक्सावला मे अस्सी प्रतिशत मैथिल अह।

रिक्सा कलकत्ता मे दू तरहक होइ छइ पहिल त साइकिल रिक्सा जे आनोठाम पाओल जाइए परंच दोसर तरहक रिक्सा जे मात्र एही ठाम टा पाओल जाइए ओ थिक 'टाना—रिक्सा'। 'टाना' बंगला शब्द थिक—जकर मैथिली भेल खीचनाइ। एहि मे रिक्सा चालक नहि रिक्सा खिचनि-हार होइए। एकर आकृति एनमेन टमटम सन होइत छइ आ टमटमक घोड़ाक स्थान मे एहिठाम मनुख रहैए—मनुक सन्तान। घोड़ाक गोरदिन मे घंटी रहै छइ आ एकरा हाथ मे हथड़ा पर टन-टन मारेत गाड़ी आ बस सं बचेत ओकर संग दौड़त।

कलकत्ता मे सरकारी रिपोर्टक अनुसार एगारह हजार टाना रिक्सा छइ आस्वभावतः एगारह हजार परिवारक नून-रोटी एही सं चले छइ।

एहि रिक्सा पर बैसत काल प्रायः अपना के अमानुष खोचवा लेल बाध्य भेल छी। बेसाखक टहाटही दुपहरिया मे जखन सुबन गोसांइ आगि वोकरे छथि आ नीचा बाटक पीघ घमि जाइ छइ तखने खाली देह आ खाली पण्डे दू-तीन आदमीक सवारी लय दौड़वा मे जे की परिश्रम होइ छइ तकर हमरा लोकनि कल्पनाओ ने क सकैत छी। तहिना अखाढ़ मे जखन सुसलाधार बखौ होइत रहै छइ बाट पर पानि जमि जाइ छइ आ खाचि-खुचिक पता नहि चले छइ, आकड़-पाथर जागि जाइ छइ—जेहन स्थिति मे हमरा लोकनिक हेतु खाली पाण्डे चलबी असंभव तेहना स्थिति मे सवारी लय दौड़नाइ क

परिश्रम आ खतराक अनुमान सहजहि कएल जा सकैछ। आ एहन जीतोड़ परि-श्रम केलाक बादो एकरा लोकनिक दैनिक आय ५-१० टाकाक बीच रहै छइ। एह मे दू टाका रिक्सा मालिक के देमय पड़े छइ। बाँकी मे अन्न खेनाइ-पीनाइ आ परिवारक हेतु मनिभांडर।

ओता त छै त क मे एगो रिक्सा भेटि जाइ छइ, परंच सेहो बुत्ता एकरा लोकनि के नहि रहै छइ जे अपन रिक्सा कीनि सकल। दोसर बात जे खाली रिक्सा कीनिते लेजा सं त होइ नहि छइ। रस्ता घाटक जे स्थिति छइ ताइ मे सदिखन किछु ने किछु मरमति लगलै रहै छइ आ ताइपर सं पुलिसक खर्च आप क छइ। तेहना स्थिति मे भाड़ा पर रिक्सा लेनाइ छोड़ि दोसर उपाये की छइ? भातें मालिक के द 'क' जे बचे छइ ताइ मे भरि पेट अन्न आ भरि देह वस्त्र सपनाए बनल रहि जाइ छइ। तेना—मिथिलाक हजार-हजार श्रमिक, लोरिक सलहेस—श्रम सं विमुख नहि होइछ। ओ श्रमक महत्ता, मां वान आ परिवारक प्रति अपन कर्तव्य के नीक जकां बुझे। तें एक टा पांच रोटी आ एक कप चाइ पीवि दिनभरि रिक्सा नेने घंटी बजवैत दौड़ैत रहैए।

एमहर बंगाल सरकार बाट जामक वहला क के विनु लाइसेंसक रिक्सा के बन्न करवाक योजना बना रहलैए। कहवाक प्रयोजन नहि जे वास्तव मे जाइ टूक-टैप्पूक कारणे आ ट्राफिक पुलिसक बड़ी ओसूजीक कारणे बाट जाम होइ छइ ताइ पर सरकारक किछु चलि नहि सके छइ आ तें अपन 'पामार'क उपयोग एही अडगठित मजदूर वर्ग पर करय जा रहल अह। एहि ठाम मात्र पांच हजार रिक्सा के लाइसेंस छैक आ बाँकी विनु लाइसेंसक अह।

## मैथिली सिनेमा : स्थिति आ अपेक्षा

आजुक युग मे सिनेमा के प्रचार वा लोक शिक्षाक सभ सं सहज आ कारगर माध्यम कहल गेल अछि। परंच लोकशिक्षाक लेल आवश्यक छैक जे ओकर माध्यम लोकभाषा हो। बिहारक तीन गोट प्रधान भाषा—मैथिली भोजपुरी आ महगरी एहि संदर्भ मे पूर्ण उपेक्षित अछि। ओना भोजपुरी मे कएकटा सिनेमा बनवो केलक अछि आ नीक जकां चललैक अछि। मगही मे सेहो सप्यत खाय लेल सिनेमा बनल छलैक परंच सभ सं प्रधान प्राचीन आ विकसित भाषा मैथिली एकरे अपवाद अछि। एमहर कएकटा सिनेमा निर्माणक समाचार यदा-कदा सुनमा मे आयल अछि परंच आइधरि एकोटा पूर्ण नहि भ सकल अछि। १९७८ मे हमहुँ एहि क्षेत्र मे पदावर्ण कएल स्व० राजकमल चौधरीक अमर कथा 'ललका पाग'क संग। ई एगो एहन जीवन्त सामाजिक कथा थिक जाइ मे मिथिलाक संस्कृति बजैत

बंगाल सरकार नव लाइसेंस बनेव नहि अह। एहि महगीक युग मे बेसी दिन एही 'बहरिया' बोझ लेल तैयार नहि अह सं कारण किछक ने होउ, परंच एत छइ जे एकर बन्न भ गेने छइ जे बेकार बनि जायत। एकरा लोक 'युनिबन' (संगठन) नहि छइ। संगठनक प्रहसन भेल रहैक। नेत निश्चिते रिक्सा खिचनिहार ना पड़ा गेलै आ प्रदर्शनकारी रिक्सा सभक पुलिस नीक बकां पीटाइ एकरा लोकनिक लेल बजनिहार छै छइ। फलतः बेकार मजदूर के अप घुरि गेनाइ छोड़ि दोसर कुनू द्वार छइ। परंच समस्या छइ जे गामे ई सभ की करत ? की खाएत-पी केना गुजर चलैत ? कहादन देश भेल छइ आ इहो सभ ताइ अजाद नागरिक छी। संविधान मे लिखल सभ नागरिक समान छइ। सभ के रंग अधिकार छइ आ एके रंग सुविधा भेटैत। ओना इहो नीके से बात एकरा लोकनि के नहि बुझल छइ एकरा लोकनि के नहि बुझल छइ जे उन्नत लोकक उन्नति होइ छइ आ सभ ताही लोकक अंश थिक। मुद अवलैत बुझल छइ जे ई सभ बिहारी आ बिहारक मुख मंत्री बाबू श्री जग मिसर छथिन जे एकरे गाम-घरक छथिन। चुनावक समय मे गामे जाइ—छथिन आ गरिबहा लेल म रास की कहादन करवाक गण कहे छ कि से गण खाली चुनावेधारी रहै आने सरिपहु हुनका लग एकरा लोकनि समझाक निदानक कुनू योजना छनि ?

—मुजतबा अ

अछि भारतीय नारक आदर्श सीत प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि। एहि कथ वर्तमान समय मे बड़ बेसी आवश्यकता उपयोगिता छैक। तें हम एहि कथ चयन कएल।

सिनेमा संसारमे यद्यपि हमर प्रथ पदावर्ण छल परंच नाट्य-मंचक दीर्घ व पर्याप्त अनुभव तथा सिनेमा जगतक ख्यातिनामा कलाकर लोकनिक संग सहयोग हमरा प्राप्त छल। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे जं ई फिल्म बनि सकल त निश्चिते टकर के होइत। प्रमाण मे एकर गीतसभ जे रेकर्डिंग भ चुकल अछि आ बाजार मे पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि। एहि फिल्म मे लगभग पचास हजार टाका खर्च भ चुकल छैक आ गीत रेकर्डिंगक अतिरिक्त कलाकार-चयन आ दृश्य चयनक काज सेहो शेष क लेल गेल छैक। मात्र अर्थक अभाव मे कार्य स्थगित अछि आ जं अर्थ लगओनि-शेषांश पृष्ठ ४ पर



गाम सं दूर मिथिलाक मजदूर

## कलकत्ताक रिक्सा बाहक

कृषि प्रधान मिथिला देश मे श्रमक महत्ता आहि ए काल सं बुझल गेल-ए आ माथ बुझले टा नजि गेल-ए एकरा बड़ पैघ स्थान देल गेल-ए। ई गौरव मिथिले देश केँ टा छइ जे माथ पर राजमुकुट आ हाथ मे लागनि घेने कुनू राजा हरबाहि केने छथि। राजर्षि जनक केँ दृष्टांत इतिहास मे अतीत अइ। तँ मिथिला धन धान्य सं भरल-पुरल छल। अभाव नामक वस्तु लोकक जीवन मे नजि छल, ई शब्दकोशक एगो शब्द मात्र छल। इहए कारण छइ 'जे' एहिठाम विद्याक ओतेक प्रसार छल, ज्ञान-विज्ञानक, साहित्य कलाक ओतेक विकास भ सकल। केँ नजि जनै-ए जे भारतीय इ गोट दर्शन मे चारि गोट एही भूमिक देन थिक। पश्चात आबि केँ स्थिति बदलि गेलैक। लोक श्रम केँ अबलाह नजरि देखै लागल-आ श्रमिक वर्ग समाज मे नीच श्रेणीक लोकक रूप मे बुझल जाय लागल। श्रमविभाजनक आधार पर बनल समाज व्यवस्थाक स्वस्थ-सबल देह मे वर्ण बाँटक गान्ही लागि गेलै। ब्रह्माक कथन जे 'गुण आकर्मक आधार पर' हम चारि वर्णक सिर्जन कएल'ए' विस्मय देल गेल आ तकरा स्थान पर ब्रह्माम मुह सं ब्राह्मण आ बाहि सं राजपूत आदि बनबाक कथा केँ मटि देल गेल राजर्षि जनकक हर जोत-बाक काज केँ नून तेल लगा मिथक बना देल गेल। तथा कथित उंच वर्णक हेतु आव लागनि घेनाह पाप भ गेलै आ एही-ठाम सं मिथिलाक अद्योगतिक इतिहासक आरंभ होइए।

श्रम केँ हेय बुझनाह तथा एहि सं विमुख भेनाह विलासिता आ संचयक प्रवृत्ति केँ जन्म देल आ ई प्रवृत्ति पुनः शोषण प्रवृत्ति केँ जन्म देल। स्वभावतः श्रमिक वर्गक शोषण आरंभ भेल। समाज दू वर्ग मे बाँटि गेल—शोषक ओ शोषित। एक दिस शोषक वर्गक समय विलासिता मे कटय लगलैक त दोसर दिस शोषित श्रमिक वर्गक अभाव यातनाक बीच। एकर प्रभाव उत्पादन पर पड़नाह स्वाभाविक छइ आ धन-धान्य सं भरल मिथिला मे गरीबीक तरन नृत्य प्रारंभ भेल।

एक दिस जनसंख्या वृद्धि आ दोसर दिस उत्पादनक कमी सं मिथिला दिनानु-दिन अभाव ग्रस्त होइत गेल। खेती पर आधारित रहितहुँ ओइ मे नव-नव तरीकाक खोज उपयोग नहि कएल गेलैक। करवे केँ करैत ? भूस्वामी अइसी भेल आ दिन-राति विलासिता मे डूबल रहल त दोसर दिस श्रमिक वर्ग शक्तिहीन छल। ताइ पर सं रौंदी-दाही महामारीक प्रकोप बढ़ये लगलैक। जीविकाक अन्याय साधन रहलैक नजि। एहि यंत्राणुगुह' मे मिथिला

मे कलकारखानाक विकास नजि भ सकल। एकरो कारण मैथिल जातिक अवचेतनता तथा घृणित राजनीति आ बंचक मिथिलाक राजनैतागण छथि। आजुक राजनीतिक पहिच शर्त होइ छइ बनता केँ मुर्ख बना-कए रखनाह तथा अभाव मे रखनाह, आ एहि निमित्त आवश्यक छैक जनताक भाषा, ओकर सम्पत्ता-संस्कृति केँ नष्ट क देनाह। राजनैतिक नेतागण अपन एहि पवित्र काज मे पूर्णतः सफल भेल छथि। दोसर दिस श्रमिक वर्ग केँ दिन-राति खटलाक बादो पेटभरि अन्न आ देहभरि वस्त्र नजि उप-लब्ध भ पओलैक। पेटक बवाला मे ओ स्वर्ग हुँ सं पैघ अन्न जननी-जन्मभूमि केँ, अन्न भाइ-बहिन, पत्नी आ नैना केँ परिजन-पुरजन केँ तेजि शहर दिस पढ़ाएल।

मिथिलाक श्रमिक भारतक कुनू शहर सं बेसी बंगालक कलकत्ता तथा ओकर समीपस्थ नगर मे अइ। एहिठामक जूट मील हो वा गंजीमील वा छापाखाना सब ठाम मैथिल श्रमिकक बहुलता छइ। भाका वाला, ठेकावाला आ रिक्सावाला मे अस्वी प्रतिशत मैथिल अइ।

रिक्सा कलकत्ता मे दू तरहक होइ छइ पहिल त साइकिल रिक्सा जे आनोठाम पाओल जाइए परंच दोसर तरहक रिक्सा जे मात्र एही ठाम टा पाओल जाइए ओ थिक 'टाना—रिक्सा'। 'टाना' बंगला शब्द थिक—जकर मैथिली भेल खीचनाह। एहि मे रिक्सा चालक नहि रिक्सा खिचनि-हार होइए। एकर आकृति एतमेन टमटम सन होइत छइ आ टमटमक घोड़ाक स्थान मे एहिठाम मनुख रहैए—मनुक सन्तान। घोड़ाक गंदनि मे घंटी रहै छइ आ एकरा हाथ मे हथड़ा पर टन-टन मारैत गाड़ी आ बस सं बचेत ओकर संग दौड़त।

कलकत्ता मे सरकारी रिपोर्टक अनुसार एगारह हजार टाना रिक्सा छइ आस्वभावतः एगारह हजार परिवारक नून-रोटी एही सं चले छइ।

एहि रिक्सा पर बेसत काल प्रायः अपना केँ अमानुष सोचवा लेल बाध्य भेल छी। बेसाखक दहाटही दुपहरिया मे जखन सुबह गोसांइ आगि वोकरै छथि आ नीचा बाटक पीच घमि जाइ छइ तखने खाली देह आ खाली पण्डरे दू-तीन आदमीक सवारी लय दौड़वा मे जे की परिश्रम होइ छइ तकर हमरा लोकनि कल्पनाओ ने क सकैत छी। तहिना अखाढ़ मे जखन मुसलाधार बर्खो होइत रहै छइ बाट पर पानि जमि जाइ छइ आ खाबि-खुबिक पता नहि चले छइ, आंकड़-पाथर जागि जाइ छइ—जेहन स्थिति मे हमरा लोकनिक हेतु खाली पाएरे चलबी असंभव तेहना स्थिति मे सवारी लय दौड़नाइ क

परिश्रम आ खतराक अनुमान सहजहि कएल जा सकैछ। आ एहन जीतोड़ परि-श्रम केलाक बादो एकरा लोकनिक दैनिक आय ५-१० टाकाक बीच रहै छइ। एह मे दू टाका रिक्सा मालिक केँ देमय पड़े छइ। बाँकी मे अन्न खेनाह-पीनाह आ परिवारक हेतु मनिभांडर।

ओना त छ वै तक मे एगो रिक्सा भेटि जाइ छइ, परञ्च सेहो जुता एकरा लोकनि केँ नहि रहै छइ जे अपन रिक्सा कीनि सकल। दोसर बात जे खाली रिक्सा कीनिते लेला सं त होइ नजि छइ। रस्ता घाटक जे स्थिति छइ ताइ मे सदिखन किछु ने किछु मरम्मत लगल रहै छइ आ ताइपर सं पुलिसक खर्च आप क छइ। तेहना स्थिति मे भाड़ा पर रिक्सा लेनाह छोड़ि दोसर उपाये की छइ ? आतेँ मालिक केँ द 'क' जे वचे छइ ताइ मे भरि पेट अन्न आ भरि देह वस्त्र सपनाए बनल रहि जाइ छइ। देवा—मिथिलाक हजार-हजार श्रमिक, लोरिक सलहेस—श्रम सं विमुख नजि होइछ। ओ श्रमक महत्ता, माँ बान आ परिवारक प्रति अपन कर्तव्य केँ नीक जकाँ बुझे। तँ एक टा पाँच रोटी आ एक कप चाह पीवि दिनभरि रिक्सा नेने घंटी बजबैत दौड़ैत रहैए।

एमहर बंगाल सरकार बाट जामक बहना क केँ बिनु लाइसेंसक रिक्सा केँ बन् करवाक योजना बना रहलैए। कइवाक प्रयोजन नजि जे वास्तव मे जाइ ट्रक-टैम्पूक कारणे आ ट्राफिक पुलिसक बढी ओसूचीक कारणे बाट जाम होइ छइ ताइ पर सरकारक किछु चलि नजि सके छइ आ तँ अपन 'पामार'क उपयोग एही अंगठित मजदूर वर्ग पर करय जा रहल अइ। एहि ठाम मात्र पाँच हजार रिक्सा केँ लाइसेंस छैक आ बाँकी बिनु लाइसेंसक अइ।

## मैथिली सिनेमा : स्थिति आ अपेक्षा

आजुक युग मे सिनेमा केँ प्रचार वा लोक शिक्षाक सभ सं सहज आ कारगर माध्यम कहल गेल अछि। परंच लोकशिक्षाक लेल आवश्यक छैक जे ओकर माध्यम लोकभाषा हो। बिहारक तीन गोट प्रधान भाषा—मैथिली भोजपुरी आ मगही एहि संदर्भ मे पूर्ण उपेक्षित अछि। ओना भोजपुरी मे कएकटा सिनेमा बनबो केलकै अछि आ नीक जकाँ चललैक अछि। मगही मे सेहो सप्पत खाय लेल सिनेमा बनल छलैक परञ्च सभ सं प्रधान प्राचीन आ विकसित भाषा मैथिली एकरे अपवाद अछि। एमहर कएकटा सिनेमा निर्माणक समाचार यदा-कदा सुनमा मे आयल अछि परञ्च आइपरि एकोटा पूर्ण नहि भ सकल अछि। १९७८ मे हमहुँ एहि क्षेत्र मे पदार्पण कएल स्व० राजकमल चौधरीक अमर कथा 'ललका पाग'क संग। ई एगो एहन जीवन्त सामाजिक कथा थिक जाइ मे मिथिलाक संस्कृति बजैत

बंगाल सरकार नव लहसेंस बनेवाक प नजि अइ। एहि महगीक युग मे ओ बेसी दिन एही 'बहरिया' बोझ केँ टो लेल तैयार नजि अइ सं कारण जे किएक ने होउ, परञ्च एत धरि छइ जे एकर बन्त भ गेने छ हजार व बेकार बनि जायत। एकरा लोकनिक 'युनियन' (संगठन) नजि छइ। एक संगठनक प्रहसन भेल रहैक। नेता सभ निश्चिते रिक्सा खिचनिहार नजि छ पड़ा गेलै आ प्रदर्शनकारी रिक्सा मज सभक पुलिस नीक जकाँ पीटाइ केलकै एकरा लोकनिक लेल बजनिहार केओ छइ। फलतः बेकार मजदूर केँ अपन गा सुरि रोनाइ छोड़ि दोसर कुनू द्वारा ना छइ। परञ्च समस्या छइ जे गामे जा ई सभ की करत ? की खाएत-पीत ? अ केना गुजर चलते ? कहादन देश अजा भेल छइ आ इहो सभ ताइ अजाद देश नागरिक छी। संविधान मे लिखल छइ जे सभ नागरिक समान छइ। सभ केँ एके रंग अधिकार छइ आ एके रंग सुख-सुविधा भेटतै। ओना इहो नीके छइ जे से बात एकरा लोकनि केँ नजि बुझत छइ। एकरा लोकनि केँ नजि बुझत छइ जे देशक उन्नति लोकक उन्नति होइ छइ आ इहो सभ ताही लोकक अंश थिक। मुदा एते अवस्थे बुझत छइ जे ई सभ बिहारी छी आ बिहारक मुख मंत्री बाबू श्री जगन्नाथ मिसर छथिन जे एकरे गाम-धरक लोक छथिन। चुनावक समय मे गामेगाम जाइ—छथिन आ गरिबहा लेल मारिते रास की कहादन करवाक गथ कहे छथिन कि से गथ खाली चुनावेचारी रहै आने सरिपहुँ हुनका लग एकरा लोकनिक समस्याक निदानक कुनू योजना छति ?

—मुजतबा अर्ल

अछि भारतीय नारिक आदर्श सीताक प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि। एहि कथाक वर्तमान समय मे बड़ बेसी आवश्यकता आ उपयोगिता छैक। तँ हम एहि कथाक चयन कएल।

सिनेमा संसारमे यद्यपि हमर प्रथम पदार्पण छल परञ्च नाट्य-मंचक दीर्घ आ पर्याप्त अनुभव तथा सिनेमा जगतक ख्यातिनामा कलाकर लोकनिक संग सहयोग हमरा प्राप्त छल। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे जं ई फिल्म बनि सकल त निश्चिते टकर के होइत। प्रमाण मे एकर गीतसभ जे रेकर्डिंग भ चुकल अछि आ बाजार मे पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि। एहि फिल्म मे लगभग पचास हजार टाका खर्च भ चुकल छैक आ गीत रेकर्डिंगक अतिरिक्त कला-कार-चयन आ दृश्य चयनक काज सेहो शेष क लेल गेल छैक। मात्र अर्थक अभाव मे कार्य स्थगित अछि आ जं अर्थ लगओनि-शेषांश पृष्ठ ४ पर



## लोककथा

## महाकाली

(स्मिथिलक बेटी सीता भारतीय नारीक आदर्शक रूप में मानल जाइ छथि। अपना ओइठाम कहवी छइ— सीता जन्म विद्योने गेल, दुख छोड़ि दुख कहियो ने भेल। परशु, धर्म, कल्याण आ त्यागक प्रतिमूर्ति सीताक आत्माभिमान पर जनन चोट पहुँचलनि त ओ महाकालीक रूप धारण केलनि। मिथिला में प्रचलित लोककथाक आधार पर प्रस्तुत अइ उइ चिरन्तन कथा—महाकाली।)

लंका विजयक उपरान्त अपन वनवासक अवधि शेष कइ राम जानकी आ लक्ष्मणक संग अयोध्या फिरलाह। कतेको दिन तक हुनका लोकनिक सकुशल फिरवाक आनन्द में उत्सव चलेत रहल। जखन ई क्रम शेष भेलक त किछु दरबारी सभ प्रस्ताव केलनि जे रावण सन पराक्रमी के कम करवाक उपलक्ष्य में महाराज रामक बाहिक पूजा हेवाक चाही। विरोधक प्रश्न ने उठ सकत छल। पूजनोत्सवक तैयारी बड़ जोर-शोर सँ चलय लागल। सीता केँ सेहो एकर भनकी लगलनि। तेयो ओ एकदिन राम सँ पुछि देलथिन—फेर कून उत्सवक आयोजन भ रहल छइ? महाराज राम अचरज सँ प्रतिप्रश्न केलथिन—अहाँ केँ नजि पता? सीता अंग सँ बिहूँ सेत बनली—जखन केओ कहबै ने केलनि त पता रहत कोना? असलमें तकर प्रयोजने अहाँ लोकनि नजि बुझैत छी। स्त्री त मात्र आदेश पालनक निमित्त होइत अइ। ओकरो जे आत्मा होइ छइ, इन्द्र होइ छइ, से सोचवाक पड़लथि अहाँ लोकनि के कहाँ अइ। राम बजलाह—हमरा खेद अइ जे अहाँ सँ विचार नजि छल। प्रजागणक विचार छनि जे महा-पराक्रमी राजा रावण के जय करवाक उपलक्ष्य में हमर बाहिक पूजा हो। प्रजाक विचार में हम तेता भ केँ बहि गेलहुँ जे जनिका द्वारा पूजा होएत तिनको मत लेनाइ बिचरि गेलहुँ। परशु आव जाधरि अहाँ अपन स्वीकृति नजि देव—ई पूजा नजि होएत।

सीता कहलथिन—इम स्वीकृति नजि देव से अहाँ किण्ठ सोचि लेलहुँ? काजो बहुत अगुआ गेलहुँ।

राम—से जते किण्ठ ने अगुआ जाओ—तकर चिन्ता हमरा नजि।

सीता—अहाँ हमर विचार पुछे छी अथवा स्वीकृति चाही छी?

राम—निश्चित विचार पुछे छी। जँ अहाँक विचार ई काज उचित हो तेखन स्वीकृति दिय।

सीता गंभीर स्वर में कहलथिन—अहाँ के पता अइ जे रावणो सँ बेध पराक्रमी आर एगो रावण अइ। जाइ देशक महिलागण कोतुकवश रावण के पकड़ि

ओकरा दसो मासपर दीप जराओने छलहि आ बड़ अनुनय विनय केलाक बाद ओकरा मुक्ति भेटल छलक। ताही पताल लोकक राजा सइखवाहुँ रावण एखनो जीवै। राम गंभीर भ गेलाह आ घर सँ चुप्पे वहरा गेलाह। प्रात भेने भरिनगर में डिगडिगया पीटवा देन गेले जे जाधरि महाराज राम सइखवाहुँ रावण पर विजय नजि पओताह ताधरि ई उत्सव स्थगित रहत।

जखन लक्ष्मण केँ ई बात पता चलनि त ओ फन केँ राम लग पहुँचला आअबी केलथिन—भाइ हमरा भासा देल जाओ इम आइए साँझपरि ओकरा परास्त कए बन्दीवना आपस आवि जायव। उत्सवक आयोजन स्थगित नजि हेवाक चाही।

महाराज राम बिहूँ सेत कहलथिन जखन ई अहाँक शक्ति सँ बाहरक बात थिक। हमरो शक्ति सँ बाहरक। एहि निमित्त हमरा दुनू भाइक संग वेदेशीक रहनाइ परमावश्यक अइ। जाउ हनुमान केँ कहियतु रथ तैयार करथि आ वेदेही केँ सेहो तैयार हेवाक निवेदन करवनि। हमरा लोकनि आर देरी नजि कय शिघ्र विदा होइ।

लक्ष्मण रामक मुँह तकैत चुपचाप विदा भेलाह। कनिज कालक बाद रथ तैयार भेल। रामक बामदिस जानकी आ दहिना से लक्ष्मण चेलल। सारथी हनुमान।

जखन रथ सइखवाहुँ रावणक राज्यक सीमा में पहुँचैत गुप्तचर द्वारा ओकरा खबरि लगलक। ओ ओहीठाम सँ तौर छोड़लक आ समदिया द्वारा समाद लेलक त पता चललक सारथी वानर निपत्ता भ गेलक। रावणक वाण सँ हनुमान सातसमुद्र पार फेका गेलाह। ओ दोसप वाण छोड़लक त लक्ष्मण के सहइ गति। तेसर से राम मुझित भय रथ पर टरि गेलाह। तकर बाद ओ कतेको वाण छोड़लक परंच सभ व्यर्थ गेलक। सीता विकलशून्य जकाँ रथ पर बैसल छलीह। रावण के जखन सभ पता चललक त ओ ध्यानस्थ भेल। ओकरा बुझवा में देरी नहि लालक जे रथ पर बैसल महिला दोसर केओ नजि आदि शक्ति थिकीह। शक्ति उपासक हेवाक कारणे ओ मनेमन हुनका नमस्कार केलक आ अपन भूलक लेल क्षमा याचना केलक।

एमहर देवलोक में खलबली मचिगेल आ सभ देवावि देव महादेवक ओतय पहुँचलाह जे कुनू द्वारा धराउ ने त अनर्थ भ जायत। देवगणक आकुलता देखि महादेव प्रधान केलनि। ओ सीताक समीप अपन रूप बदलि पहुँचलाह आ हुनका खिसिवाक हेतु नाना तरहक व्यंज वाण छोड़य लगलाह—धन्य छी हे देवी स्वामी मुइल पड़ल लक्ष्मण सन देयोर मरल, हनुमान सन सेवक मरल जकरा अहाँ अजर

## कविता

## वसन्त गीतक मादे

(कवि जीवकान्तक डेउ)

एक गोठ

स्पन्दनहीन-वदास

पतझड़ वन में

भेल छल हमर जन्म

आ

छत्तीस बरख वीतजाक बादो

स्थिति ओहिना छइ

ओना

सूतल त हमरो अइ जे

कहियो पहिठाम रहैत छल

बारहोमास छत्तीसो दिन

वसन्त बहार

आ ताही आशा में हम

पटवैत आएल छी साध्यानुसार

एहि पतझड़ वन केँ

वसन्ते सन

पावस सेहो दन्तकथा बनि चुकल-ए

पहना स्थिति में

हमरा सँ वसन्तगीतक आशा

करबै होएत अनुचित

भाइ हे!

आउ ने

हमरा लोकनि संग मिलि पटावो

(कारण)

गाछ सभ एखनो अइ प्राणवत त

हमरा विश्वास अइ

आइ ने कालि

एहि में होएतैक नव पल्लव

रंग-विरंगक फूल

जकर मादक गंध सँ महमद करत सर्वत्र

पोवि मधु मातल मधुप गुंजन करत

तखन

हमहुँ लिखब आ

निश्चिते लिखब

वसन्त-गीत जे

अकाशक नहि

परिवेशक सपज थिक

—रामलोचन ठाकुर

अमर, हेवाक वरदान देने छलियनि तेयो अहाँ लेखे धन सन। ई त अहाँ सक हो। मानव रूप में आवि मानव के कलकित किण्ठ करैत छी।

एवं प्रकारे बहुत कहलाक बाद सीताक ध्यान भंग भेलनि। कोषमें अविष्ट हुनक शरीर कारी भ गेलनि ओ खोपा बान्हल केश खुजि फहराय लगलनि। ओ रथ सँ उतरि सोम विदा भेली आ जे सामने में पड़नि ताहि में बहुतो त हुनक भंयकर रूप देखि आतंके सँ प्राण त्यागि देलक। एक राक्षस हुनका पर प्रहार केलकनि ओ तकर हाथ पकड़ि कत्ता छीन लेलथिन आ पेर स मदिरा आगा बढि गेलीह। ओ कत्ता सँ सभक माथ छोपैत अगुआइत रहली आ जखन सइखवाहुँ रावणक नगर शून्य भ गेल त दोसर दिस घुरली। सीताक रणवंडी रूप सँ पुनः देवगण घबरेला ओ सोचलनि ज एता में त धरती लोक विहीन भ

जाइत। ओ सभ फेरि महादेव ला पहुँचि अनुनय विनय केलनि। अठरन ठरन महादेव एहिबेर आवि महाकालीक बाटने पहुँचि रहलाह। उदमूखी कालीक नजर नजि पड़लनि आ हुनक पंथ महादेवक छातीपर पड़लनि। ओ कत्ता सवधानि नीचा तकलनि त महादेव केँ चीन्ह लाजे जी कूचि लेलनि आ पुनः अपन पूर्वक रूप में आवि गेलीह। सीताक इएह रूप महाकालीक रूप में सर्वत्र पूजित होइ-ए। सीता आपस रथपर झेलीह आ अपन कन-गुरिया आगुर चीरि अमृतपान करा रामके चेतन अवस्था में अनलनि। फेर लक्ष्मण आ हनुमान के खोबि जीवित केलनि आ सभ अर्थ ध्या फिरलाह। रामक बाँहिपूजाक बदला सीताक बाँहिपूजाक प्रस्ताव उठल परंच मैथिली तकरा अस्वीकार केलनि ताहि दिन सँ सीताराम माने राम सँ पहिने सीताक नामक परिपाटी चलय लागल।



बालगीत

## चेत कबड्डी

चेत कबड्डी अबे छो  
तोरा ले किछु लबै छो  
जतय बहै छइ गंगा-कमला-  
तकरे गीत सुनबै छी ॥  
जाहि माटि सं जनमलि सीता  
सपह हमर ई धरती  
याज्ञवल्क्य गौतम, कपिल के  
भुमि रहत नबि परती  
सुगो शास्त्रक गण करै छल  
तकरे गीत सुनबै छी ॥  
ई लोरिक-सलहेसक धरती  
ई शिवसिंहक धाम छइ  
महादेव बनि चाकर अपला  
मिथिला देश नहान छइ  
आधरि चान-सुरज ता रहतै  
सह्य शपथ दोहरबै छी ॥

— रामलोचन ठाकुर

## मैथिली सिनेमा

हार प्रोड्यूसर मेडि बाथि त ६ मातक  
अन्दरे फिल्म बनि के तैयार भ बायत ।  
ओना एहि लेख हम बिहार सरकार सं लेहो  
सम्पर्क करवाक प्रयास कएल परख सरकार  
दिस सं पक्क उत्तर तोक नहि आबि  
सकल ।

फिल्म आइ आनो इति सं उपयोगी  
अछि । आइ बेकारिक के समझा छैक  
तकर बहुतदूरपर समाधान एहि नञ्चने  
भ सकै छैक । कतेको युवा इह कचकार  
मे त कमिश्नर के सेबी-रोटीक संगहि  
अपन प्रतिभा विकासक जुगो मेडि सकेत  
छनि । बम्बईया फिल्म सम, के बिरोध के  
सस्त मनोरंजक होइए, लाखक लाख टाका  
मिथिलांचल सं ल जाइछ । मैथिली  
फिल्म भेने ताइपर रोक लगतेक आ घरक  
पाइ धरे मे रहत । मिथिलाक व्यवसायी  
लोकनि देखा-देखी एहिमे अग्रसर होय-  
ताइ । फिल्म उद्योग के आर्थिक सहयोग  
छैक एगो केन्द्रीय संस्था छैक—एन०  
एफ० डी० सी० (National Film  
Development Corporation) जे  
राज्य सरकार माध्यमे फिल्म उद्योग के अर्थ  
सहयोग देत छैक । महाराष्ट्र, प० बंगाल,  
तामि नाडू, उड़ीसा, मणिपुर आदि राज्य-  
सरकार एहि सं प्रचुर टाका लव अपन-

द्विभङ्गा—हमरा लोकनिक दड़ि-  
भंगा प्रतिनिधि सूचित केलनिहें  
जे स्थानीय मिथिला जनसंघर्ष मोर्चा  
नवम्बरक दोसर सप्ताह मे एगो दुदिना  
सम्मेलनक आयोजन करय जा रहल-ए ।  
पहिल दिन मिथिलाक सर्वांगीण विकास  
पर विचार-विमर्श होयत । एहि मे समस्त  
मिथिलाक प्रतिनिधि भाग लेथि तकर  
प्रयास चलि रहल-ए । दोसर दिन विराट  
प्रदर्शन होयत जाहि मे लगभग पचास  
इजार लोक के भाग लेसक बात अइ ।

जनसंघर्ष मोर्चा इहो निर्णय लेलक-ए,  
जे मार्च १९८२ मे बनकपुर मे एकटा  
अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य सम्मेलन  
आयोजित करत । कार्यक्रमक उपलब्धता  
लेल 'देसिल बयना'क शुभकामना ।

× × ×

दिल्ली—हमरा लोकनिक दिल्ली प्रति-  
निधि सूचित केलनिहें जे अखिल भारतीय  
मिथिला संघ, दिल्लीक तत्वावधान १४  
सितम्बर के होमयबला प्रदर्शन । १४४  
मंगक कार्यक्रम तत्काल स्थगित भ गेल-ए ।  
ई कार्यक्रम कहिया धरि हैत से अज्ञात  
अइ । ज्ञातय जे श्री मोहन भा, एन०  
सी० एहि संस्थाक पृष्ठ पेशक छथि तथा  
राजेश्वर दाद, हुसमदेव नातयन दाद,  
शिवचन्द्र भा (सांवर) आदिक सहयोग  
एहि संस्था के प्राप्त छइ । देशक राज-  
बानी मे हेबाक कारणे तथा राजनैतिक  
नेता लोकनि छात्रछात्रा मे रहबाक कारणे  
ई संस्था निश्चिते मिथिला मैथिली निमित्त  
बहुत काम क सकै-ए आ हमरो लोकनि  
तकर आधा करैत छी । बेसी त भविष्ये  
कहत ।

अपन राज्यक फिल्म उद्योग के बढा रहल  
अछि परख बिहारक अकर्मण्यताक कारणे  
बिहार राज्य एहि सं वंचित अछि । एकर  
हिल्लाक टाका बम्बई मे जुका रहल छैक ।  
बिहार सन पेश आ सम्प्रदायी प्रदेश मे  
एगो फिल्म स्टूडियोतक नहि मेनाइ केहन  
लक्ष्मणपुर विषय थिक से सहजहि सोचक  
जा सकैछ । कहबी छैक जे बेरे बुरिबक त  
जेतुक के लेत ? पता ने बिहार सरकारक  
ई बुरिबके छैक अथवा ओ बिहारक विकास  
नहि चाहैत अछि । परख स्थिति यह छैक  
आ मिथिलाक संगहि समस्त बिहारक  
लेखक, कलाकार, तक निश्चयन सरकार सं  
ई अपेक्षा रखैत अछि जे ओ आबहुं एहि  
दिवा मे सतर्क होअओ आ समुचित प्रयास  
करओ ।

—श्री कान्त मंडल

## आन्दोलन समाचार

### मैथिली मुक्ति मोर्चाक अभील

मिथिला मे हुगलीजाक परम्परा बड़  
पवित्र आ प्राचीन अइ । लाख दिकदारो  
अछेतो निश्चिते एह खेप समस्त मिथिला  
मे पूजनोत्सव होयत आ बहुतोठाम सांस्क-  
तिक कार्यक्रम होयत । मोर्चा समस्त प्रबुद्ध  
युवावर्ग सं निवेदन करैए जे समस्त सांस्क-  
तिक कार्यक्रम मैथिली मे कएल जाय ।  
जतय कतौ नाटक मंचय हो से निश्चितरूपे  
मैथिली मे हेबाक चाही । माइक अर्चना  
माइक भाषा मे हो—कोटक भाषामे  
किछहुं नहि । गंगाजलक बदला तारी-  
दारुक उपयोग सर्वथा अनुचित—से ध्यान  
रखल जाय ।

मिथिलाक छी—मैथिल छी

मैथिली बचाउ—हिन्दी हटाउ

मैथिली बाजू, पढ़, लिख । समकाल  
मैथिली मे कर ।

चन्द्राक दर—

एक प्रति	पचास पाइ
सठ्ठवाना	पांच टाका
पांच सालक	बीस टाका

वितरक लोकनि सं—

'देसिल बयना' क एजेन्सी लेख सम्पर्क कर—

वितरण व्यवस्थापक,  
अखण्ड प्रकाशन,

विज्ञापन दाता लोकनि सं—

'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दथ लाभ उठाव । कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं  
अधिक प्रचारक एक मात्र साधन ।

सम्पर्क कर

विज्ञापन व्यवस्थापक  
अखण्ड प्रकाशन,

## लेखक / पाठक लोकनि सं निवेदन

- अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'देसिल बयना' मे प्रकाशनाथ पठाव ।
- 'देसिल बयना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक । आन्दोलन सम्बन्धी  
रचना के अप्रकाशित देख जायत ।
- मिथिला-मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाव ।
- 'देसिल बयना' स्वस्थ विचार आ रचनात्मक सुन्नावक स्वागत करैछ ।

## कह लोचन कविराय

जगन्नाथ बिनु नाथ के तोड़ल पगहा छान  
खइ उमकी माइय सतत निधिन कएल बथान  
निधिन कएल बथान माल ई सरङ्गताली  
अपन के खाएत सोचत शुभ अनके खाली  
कह लोचन कविराय बजा नट जल्दी लगबू नाथ  
बेचू बरु कसाइक हाथे ई अलछ्छ जगन्नाथ



बालगीत

## चेत कबड्डी

चेत कबड्डी अबे छो  
तोरा ले किछु लवै छो  
जतय बहै छइ गंगा-कमला-  
तकरे गीत सुनवै छो ॥  
जाहि माटि सं जनमलि सोता  
सपह हमर ई धरती  
याज्ञवल्क्य गौतम, कपिल के  
मुनि रहत नबि परती  
सुगो शास्त्रक गण करै छल  
तकरे गीत सुनवै छो ॥  
ई लोरिक-सलहेसक धरती  
ई शिवसिंहक धाम छइ  
महादेव बनि चाकर अपला  
मिथिला देश महान छइ  
जाधरि चान-सुरुज ता रहतै  
सहस्र शपथ दोहरवै छो ॥

— रामलोचन ठाकुर

## मैथिली सिनेमा

हार प्रोड्यूसर भेटि जायि त ६ मासक  
अन्दरे फिल्म बनि के तैयार भ जायत।  
ओना एहि लेल हम बिहार सरकार सं सेहो  
सम्पर्क करवाक प्रयास कएल परखब सरकार  
दिस सं पत्रक उत्तरो तक नहि आबि  
सकल।

फिल्म आइ आनो एहि सं उपयोगी  
अछि। आइ बेकारिक जे समस्या छैक  
तकर बहुतदूरपर समाधान एहि माध्यमे  
भ सकैत छैक। कतेको युवा छुट क कारा  
मे त कमिशन के रोजी-रोटीक संगहि  
अपन प्रतिभा विकासक सुयोग भेटि सकैत  
छनि। बम्बईया फिल्म सभ, जे विशेष के  
सस्त मनोरंजक होइए, लाखक लाख टाका  
मिथिलांचल सं ल जाइछ। मैथिली  
फिल्म मेने ताइपर रोक लगतेक आ घरक  
पाइ घरे मे रहत। मिथिलाक व्यवसायी  
लोकनि देखा-देखी एहिमे अग्रसर होय-  
ताइ। फिल्म उद्योग के आर्थिक सहयोग  
लेल एगो केन्द्रीय संस्था छैक—एन०  
एफ० डी० सी० (National Film  
Development Corporation) जे  
राज्य सरकार माध्यमे फिल्म उद्योग के अर्थ  
सहयोग देत छैक। महाराष्ट्र, प० बंगाल,  
तामि नाडु, उड़ीसा, मणिपुर आदि राज्य-  
सरकार एहि सं प्रचुर टाका लय अपन-

## आन्दोलन समाचार

द्विभङ्गा—हमरा लोकनिक दड़ि-  
भंगा प्रतिनिधि सूचित केलनिहें  
जे स्थानीय मिथिला जनसंघर्ष मोर्चा  
नवम्बरक दोसर सप्ताह मे एगो दुदिना  
सम्मेलनक आयोजन करय जा रहल-ए।  
पहिल दिन मिथिलाक सर्वांगीण विकास  
पर विचार-विमर्श होयत। एहि मे समस्त  
मिथिलाक प्रतिनिधि भाग लेथि तकर  
प्रयास चलि रहल-ए। दोसर दिन विराट  
प्रदर्शन होइत बाहि मे लगभग पचास  
हजार लोक के भाग लेनाक बात अछि।

जनसंघर्ष मोर्चा इहो निर्णय लेलक-ए,  
जे मार्च १९८२ मे बनारस मे एकटा  
अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य सम्मेलन  
आयोजित करत। कार्यक्रमक सफलता  
लेल 'देसिल बयना'क शुभकामना।

× × ×

दिल्ली—हमरा लोकनिक दिल्ली प्रति-  
निधि सूचित केलनिहें जे अखिल भारतीय  
मिथिला संघ, दिल्लीक तत्वावधान १४  
सितम्बर के होममवला प्रदर्शन। १४४  
भंगक कार्यक्रम तत्काल स्थगित भ गेल-ए।  
ई कार्यक्रम कहिया धरि हेत से अज्ञात  
अछि। शतव्य जे श्री भोगेन्द्र झा, एम०  
पी० एहि संस्थाक पृष्ठ पोशक छथि तथा  
राजेन्द्र यादव, हुकूमदेव नारायण यादव,  
शिवचन्द्र झा (संसद) आदिक सहयोग  
एहि संस्था के प्राप्त छइ। देशक राज-  
धानी मे हेबाक कारणे तथा राजनैतिक  
नेता लोकनि छात्रछाया मे रहबाक कारणे  
ई संस्था निश्चित मैथिली मैथिली निमित्त  
बहुत काज क सकै-ए आ हमरो लोकनि  
तकर आशा करैत छी। बेसी त भविष्य  
कहत।

अपन राज्यक फिल्म उद्योग के बढा रहल  
अछि परखब बिहारक अक्रमम्यताक कारणे  
बिहार राज्य एहि सं वंचित अछि। एकर  
हिस्साक टाका बम्बई मे फुका रहल छैक।  
बिहार सन पैघ आ सम्पत्तिशाली प्रदेश मे  
एगो फिल्म स्टूडियोतक नहि भेनाइ केहन  
लज्जास्पद विषय थिक से सहजहि सोचल  
जा सकैछ। कहबी छैक जे बरे बुरिक त  
जेतुक के लेत? पता ने बिहार सरकारक  
ई बुरिक के छैक अथवा ओ बिहारक विकास  
नहि चाहैत अछि। परंच स्थिति यैह छैक  
आ मिथिलाक संगहि समस्त बिहारक  
लेखक, कलाकार, तक निशियन सरकार सं  
ई अपेक्षा रखैत अछि जे ओ आवहुं एहि  
दिसा से सतर्क होअओ आ समुचित प्रयास  
करओ।

—श्री कान्त मंडल

## मैथिली मुक्ति मोर्चाक अपील

मिथिला मे दुर्गा पूजाक परम्परा बड़  
पवित्र आ प्राचीन अछि। लाख दिकदारो  
अछेतो निश्चिते एह खेप समस्त मिथिला  
मे पूजनोत्सव होएत आ बहुतायत सांस्क-  
तिक कार्यक्रम होएत। मोर्चा समस्त प्रभु  
युवावर्ग सं निवेदन करै जे समस्त सांस्क-  
तिक कार्यक्रम मैथिली मे कएल जाय।  
जतय कतौ नाटक संवन्ध हो से निश्चितरूपे  
मैथिली मे हेबाक चाही। माइक अर्चना  
माइक भाषा मे हो—कोठक भाषामे  
झिझु नहि। गंगाजलक बदला तारी-  
दारुक उपयोग सर्वथा अनुचित—से ध्यान  
रखल जाय।

मिथिलाक छी—मैथिल छी

मैथिली बचाउ—हिन्दी इटाउ

मैथिली बाजू, पढ़, लिखू। सभका  
मैथिली मे करू।

## चन्दाक दर—

एक प्रति	पचास पाइ
सलियाना	पांच टाका
पांच सालक	बीस टाका

## वितरक लोकनि सं—

‘देसिल बयना’क एजेन्सी लेल सम्पर्क करू—

वितरण व्यवस्थापक,

अरुणोदय प्रकाशन,

## विज्ञापन दाता लोकनि सं—

‘देसिल बयना’ मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाव। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं  
अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू

विज्ञापन व्यवस्थापक

अरुणोदय प्रकाशन,

## लेखक / पाठक लोकनि सं निवेदन

- अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना ‘देसिल बयना’ मे प्रकाशनार्थ पठाव।
- ‘देसिल बयना’ मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक। आन्दोलन सम्बन्धी  
रचना के अप्रकाशित देल जायत।
- मिथिला-मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाव।
- ‘देसिल बयना’ स्वस्थ विचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत करैछ।

## कह लोचन कविराय

जगन्नाथ बिनु नाथ के तोड़ल पगहा छान  
खइ उमकी मांडुय सतत निधिन कएल बथान  
निधिन कएल बथान माल ई सरङ्गपताली  
अपन के खाएत सोचत शुभ अनके खाली  
कह लोचन कविराय बजा नट जलदी लगवू नाथ  
बेचू बरु कसाइक हाथे ई अलच्छ जगन्नाथ



# स्मृति रचना

वर्ष—१ अंक—२

नवम्बर, १९८१

मूल्य—पचास पाइ

## सम्पादकीय

### विद्यापति स्मृति-पर्व

कोनो जातीय विभूतिक स्मृति पर्व मनेबाक पाछा निर्विवाद रूपे एक गोट महान आ पवित्र उद्देश रहैत आयल अछि। हमरा जनतबे, ओ उद्देश थिक ओइ विभूतिक व्यक्तित्व आ कृतित्व सं शिक्षा लेनाइ हुनक स्मरण सं जातीय गर्वबोध आ चेतना जाग्रत केनाइ आ जातीय एकता के संयुक्त केनाइ जे कोनो जातिक सर्वांगीण विकासक मूलधार थिक। कहबाक प्रयोजन नहि जे कहिया कहियो विद्यापति स्मृति पर्वक शुभारंभ जे कोनो मनीषी कएने होएताह तिनका मोन मे इएह पवित्र भावना सजिहित छल होएतनि।

ओना त मिथिला मे एक सं एक विभूति भ जुकल छथि आ सभक स्मृति पर्व मनओनाइ संभवो नहि बुझना जाइछ। तथापि कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर, कविपति विद्यापति, महाकवि डाक, महाकवि चन्दा झा, महाकवि लालदास, महाकवि लोरिक, लोकसेवक महावीर राजा सलहेस आ दीनाभद्री आदि विभूतिक स्मृति पर्व मनओनाइ वर्तमान संदर्भ मे बड़ बेसी महत्व रखैत अछि। किन्तु, खेदक विषय जे वर्गवादी दृष्टिकोणक कारणे विद्यापति के छोड़ि आर समस्त विभूति लोकनि के विस्मरण भेल गेल आ विद्यापति स्मृति पर्व सेहो अपन उद्देश-पूर्ति मे पूर्णरूपेण असफल प्रमाणित भेल अछि।

आजुक विद्यापति-स्मृति पर्वक जे रूप अछि से मिथिला-मैथिलीक नाम पर कलंक छोड़ि आर किछु नहि थिक। सांस्कृतिक कार्यक्रमक नाम पर हिजराक नाच होइत अछि, कवि सम्मेलनक नाम पर ग्राहीक ग्राही भोट सभ फकड़ा पाठ करैत अछि आ भद्रविरिया बैंग सन कंड फारि-फारि भूइतोड़ लोक सभ अगना के मैथिली सेवक कहि प्रचारित करैत अछि। ओतबे किछ मिथिलाक मित्राफर-बयचंद सभ सेहो एहि मंच पर पूजित होइत अछि। आ एहि मद मे लाखो टाका फूकि देल जाइत अछि। एकमात्र पटनाक चेतना समिति एहि मद मे लाख टाकाक लगभग खर्च करैत अछि। ज स्पष्ट कही त आइ जे विद्यापति-स्मृति पर्वक विकृत रूप अछि तकर पूर्ण श्रेय एही संस्था के छैक।

कविपति विद्यापति महान विद्रोही-प्रगतिशील कवि छलाह, वीर कवि कलाह, लोक कवि छलाह आ छलाह महान दार्शनिक, राजनीतिवेत्ता, समाज सुधारक। परञ्च हुनक बात अछि जे आइबेरि मात्र श्रृङ्गारिक कवि या कलनोकाळ भक्त-कवि कहि हिनका अपमानित कएल जाइत रहल अछि आ ताइ हेतु सभ सं उपयुक्त मंचक रूप मे प्रयोग कएल जाइत रहल अछि हिनके स्मृति पर्वक मंच। मैथिलीक नाम पर जे सताधिक संस्था बनल अछि ओ सालभरि भनहि मुद्दल पड़ल रहओ परञ्च एहि अवसर पर ई पर्व मना अपन जीववता के प्रमाणित करबैत करत।

आइ समय भावि गेल अछि जे एहि धृणित आयोजनक मात्र बहिष्कारेता नहि खुलि के विरोध हो। एहि मे खर्च होमयबला पाइ सं मैथिली पोथी-पत्रक प्रकाशन हो तथा मैथिलीक सरकारी मान्यता लेल संवर्षक मद मे खर्च हो। इएह विद्यापतिक प्रति सभ सं पेश आ पवित्र अर्पण होएत।

निज भू-भाषा हित मरय  
मरय ने, अमर ~~नै~~ अछि  
तकरे गाथा विश्व ई  
गाओत, सदा ~~नै~~ त अछि

—मैथिली सुक्ति मोर्चा

कलकत्ता

संविधान बिचु मैथिलीक ओ  
मानचित्र बिचु निथिछा धाम  
छाहि-जारि सुझाह कब हन  
बिद्रोही निथिछाक जवान

## बुढारी-भत्ता बनाम सत्ताक राजनीति

अन्यान्य प्रान्तीय सरकारे जकां बिहार सरकार सेहो बुढारी-भत्ता योजना चालू केलक अछि। ई भत्ता बुढ लोक के भेटैत छैक जे काज करैक जोकर नहि रहैत अछि तथा गुजर-बसर करैक दोसर द्वारा नहि रहैत छैक। स्वभावतः लोक एहि योजनाक स्वागत केलक। परञ्च प्रश्न उठैत अछि कि सरिपहु ई भत्ता असक्त-असहाय बुढ-पुरनिवा के भेटैत छैक? भत्ता-दानक पाछा कोन भावना काज क रहल अछि—लोक सेवाक आ ने स्वजन पोषणक? कि एतौ तने धृणित राजनीतिक गुटबन्दी काज क रहल अछि?

देसिछ बयनाक घनस्यामपुर संवाद प्रतिनिधिक अनुसार एहि भत्ताक नाम पर खुलि के स्वजन पोषण आ राजनीतिक दल-बाबी चलि रहल अछि तथा अगिला चुनावक आधार क्षेत्र तैयार केल जा रहल अछि। ई भत्ता ओकरे भेटैत छैक जे मुखिया सरपंचक सम्पर्कित हो, सत्ताधारी दलक समर्थक हो। भनहि ओकर उमेर तीस-पैंतिसे किछक ने होइक आ लगानी भीरानी किछक ने करैत हो। किछु ओहनो व्यक्ति के भेटैत छैक जकरा सं अगिला चुनाव मे नीक सहयोगक उमेद सरकार के छैक। दोसर दिस जे सत्ते अवहाय अछि तकरा संग पूर्ण षड्यन्त्र केल जा रहल छैक। डाली-हारी चढ़ेबाक पश्चात किछु लोकक मनोकामना त पूरा भ जाइत छैक परञ्च जे दोसरदलक समर्थक रूप मे चिन्हार अछि अथवा डाली-हारी चढ़ेबा मे असमर्थ अछि—तकरा लेल कोनो द्वारा नहि छैक। बी०डी०ओ० सं एस० डी० ओ० तक दौड़-बड़हा केलाक बादो छुच्छ आइवासन छोड़ि आर किछु प्राप्त नहि होइत छैक। एहि अजगुत-अनटोलक विरुद्ध जं कतो केओ बाजल त ओकरा पाछा सरकारक बर्दीबारी सं बिना बर्दी बला सिपाही चरि लागि पड़ैत छैक आ सुस्वाथर बेसा देत छैक।

एहन एकटा घटना अछि मनीगाछी ब्लॉकक पूर्वी क्षेत्रक। कुर्वाँ हाइस्कूल मे विशाल जनसमावेश छलक। ब्लॉकक सभ कर्मचारी, थाना-प्रभारी आ क्षेत्रक एस० डल० एस० प्रो० श्री नागेन्द्र झा उपस्थित छलाह। टाका बांटल जा रहल छल। महावीर पासमान पंक्ति मे ठाढ़ छलाह। नाम स्वीकृत भेल छलनि तें पाइ भेटबाक पूर्ण आशा नेने। परञ्च बखन दाता लग पहुँचलाह त आकाश-पतनक स्थिति। तीन पीढ़ी सं दोसरक जमीन मे बसल महावीर पासमान मे आव बोनि करैक बुत्ता नहि छनि। हुनक अपराध छलनि जे

ओ सी०पी० आइ के 'वोट' देने छलथिन। महावीर पासमान बइमान नहि छथि। जमीन्दार बखन हुनका उबार्य चाहलकनि त सी०पी० आइ० मदति देने छलनि आ अखनो विपत्तिक समग्र मदति करैत छनि। ते सी०पी० आ० इ० के वोट देनाइ हुनका उचित बुकैल नै।

महावीर पासमान टाका नहि भेटला सं हताश नहि भेलाह। ओ बी० डी० ओ० लग अपन फरियाद पहुँचलनि। परञ्च ताइ सं किछु नहि भेलनि। स्थानीय युवके सभ एहि अनीतिक विरोध केलक त सरकारी अफसरक कोपभाजन बनि गेल। अन्ततः पूर्ण समर्थन अभाव मे ओहो सभ चुपौ साबि लेलक। बी० डी० ओ० साहेब के एतबे सं संतोष नहि भेलनि त दूगंगा पुलिसक संग एकरा लोकनिक घरपर आक्रमण केलनि। सरकारी अधिकारी लोकनिक आंगन मे प्रवेश अन्ततः लोक के अनर्वाहत लगलक आ कर्तव्य बोध बगलैक। आरंभ भेल थापर-मुक्का सं हिनका लोकनिक स्वागत सं उर्वरि नहि सकलाह। स्थितिक गंभीरता देखि सयरी एस० डल० एस० साहेब प्रकट भेलाह आ अपन दाब सं सरकारी अफसर लोकनि के भरोसा मे सकल भेलाह। संवाद पढेबाक समय भरि दूगंगा साहेब अपन क्षेत्र सं फरार छथि। ओना ओहो बेसल नहि छथि आ बश्कटा फरजरी केश दर्ज क के युवक लोकनिक नामे वारंट जारी करा देने छलनि। एहिना छथि केन्द्र पासमान। टाकाक बदला हुनक घर उजारि देबक पड़यंत्र नीक जकां रचल जा रहल अछि।

बी० डी० ओ० एस० डी० ओ० सं एस० डल० एस० आ मंत्री घरि गुप्त सम-भौता भेल अछि तें शिक्षात जते होइछ तते चपा जाइछ। दोसर एहना स्थिति मे शिक्षात वा विरोध करबे के करत? येइ थिक बुढारी-भत्ताक वास्तविक स्थिति।

—जयदेव लाभ

### नव पोथी

सुविख्यात लेखक डा० ब्रजकिशोर वर्मा  
मणिपद्मक सामाजिक उपन्यास  
अर्धनारीश्वर  
कौनू आ पढ़.



## संस्कृतक सारापर सचाक बबूर

संस्कृत भाषा मात्र मिथिला में नहि, समस्त भारतवर्ष में देवभाषाक नाम से ख्यात अइ आ एकर लिपि, जे वर्तमान में मैथिली, हिन्दी, नेपाली आदि लेखन में प्रयोग होइए—देवभाषाक नाम से। ओना त देवता-एक अस्तित्व संदिग्ध अइ तखन हुनका लोकनि द्वारा कुनू भाषाक प्रयोगक प्रश्न उठओनाई अनर्गल, परञ्च एतबाधरि सत्य जे हिन्दूक समस्त धर्म ग्रंथ एही भाषा में छैक। ओतवे कि एक, एकर जे विशाल साहित्य भंडार छैक आ दीर्घ परम्परा छैक से एखनो कुनू भाषाक हेतु इर्ष्याक विषय भ सकैछ। किन्तु, सभ होइतहु ई भाषा मृतवस्था के प्राप्त भेल आ तकर एकमात्र कारण छैक जे ई कहियो लोक भाषा नहि बनि सकल।

इमहर बर्ष दिन सं मिथिलांचलक संगहि समस्त बिहार में संस्कृत प्रेमक बाढ़ि सन आवि गेल अ। भरिसके कुनू गाम छुट्टा हो जाइठाम संस्कृत विद्यालयक स्थापना नहि भेल हो से भनहि कागतेपर कि एक ने भेल हो। ई भिन्न कथा जे ओइ गामक लोक संख्या हजारो सं थोर छैक आ ताइठाम पहिनिह सं अंग्रेजी अपर बा मिथिला स्कूल विद्यमान छैक। इहिठाम ई लिखि देव अनुचित नहि होइत जे अंग्रेजी स्कूल में सेहो संस्कृत पढ़ेबाक पूर्ण व्यवस्था छैक, भनहि से ऐच्छिक कि एक ने होइक। एहने एक गोठ गाम अइ मधुबनी जिलाक करमनी। इहिठाम प्राचीन संस्कृत पाठशाला अतिरिक्त अंग्रेजीक मिडिल स्कूल पहिनिह सं रहलक बादो दू गोठ नव पाठशाला खुलल अ। एगो संस्कृत प्राथमिक सह माध्यमिक विद्यालय आ दोसर संस्कृत प्राथमिक सह माध्यमिक बालिका विद्यालय। इहि गाम सं आध कोस उत्तर अवस्थित पात्रीमोहन गाम में सेहो दू गोठ प्राथमिक-सह-माध्यमिक संस्कृत विद्यालयक स्थापना भ चुकल अ। एतौ पहिने सं एगो अपर प्राइमरी स्कूल विद्यमान छैक आ घरक अभाव में मिडिल स्कूल नहि बनि पओ-छैक जखन कि विद्यार्थी बड़ बेसी छैक। जे स्कूल छैक से प्राचीन गुरुकुल जकां गाछी में चडि रहल छैक आ मेघ देखिते गुरुजी लोकनि छुट्टीक घंटी दुन-दुना देत छथिन। अबोध चटिया सभ खुशी सं कुदैत फनेत घर चर जाइए। घरक चिन्ता ने गामक, लोक के छेक ने सरकार के। आ लगभग एहने स्थिति मिथिलाक सभ गामक छैक, अपवाद के छोड़ि।

बिहार सन खिचरि प्रदेश में आ खास के मिथिला में, जाइठाम जातीय चेतना नामक वस्तु नहि छैक अपन भाषा-संस्कृति सं लोक पूर्ण उदासीन अइ आ अपन अधिकार प्रातिक ज्वाइ में नपुंसकताक परिचय द चुकल अ ताइठाम हजार संस्कृत-प्रेमक बाढ़ि देखि ककरो अनुता आगि

सकैत छैक। की सरिपहु ई संस्कृत प्रेम थिके आ ने आन बिछु ?

एहि प्रश्नक सटीक उत्तर पेवा छैक हमरा लोकनि के कनेक पाछा जाय पड़त। १० जून १९८० के बिहारक वर्तमान मंत्री मण्डल अपन पहिल बैसार में उर्दू के बिहारक दोसर राजभाषा बनेबाक निर्णय लेलक। पहिने ई कहि देव आवश्यक जे उर्दू सेहो बिहारेक कि एक समस्त भारत में कुनू मुसलमानक मातृभाषा नहि छैक। भाषा धर्मक नहि क्षेत्रक होइत छैक आ स्वभावतः जे जाइ क्षेत्र में स्थायी भावे निवास करैछ ताही क्षेत्रक भाषा ओकर मातृभाषा होइत छैक। परञ्च इहो सत्य छैक। जे संस्कृत जेना हिन्दूक लेल तहिना उर्दू मुसलमानक लेल आ खास के तथा-कथित हिन्दी प्रदेशक मुसलमानक लेल धर्मक भाषा थिके। मुसलमानक समस्त धर्म ग्रंथ एही भाषा में छैक। ई भिन्न कथा जे संस्कृतक पंडित वर्ग जकां मुस्लिम-सौलवी के छोड़ि सर्वसाधारण के ई भाषा अबितो ने छैक। किन्तु धर्मक प्रति कने बेसी कहर हेबाक कारणे लोक के एकरा प्रति मोह छैक आ बिनु जनने दुम्ने एकर समर्थक बनि जाइए। बिहार सरकार एही कट्टरता सं काम उठओलक।

धर्म भनहि जे कुनू कि एक ने हो एकर उररिचि सचाक कवचक रूप में भेल छैक। ई मानव जाति के विभिन्न टुकड़ी में बाँटि ओकरा अलग बना देने अइ जाइ सं ओ एकवद भय शोषणक विरोध नहि करैक। धर्म सर्वसाधारणक विरुद्ध महान षडयंत्र थिक जे सत्ता द्वारा अबाध शोषणक पथ प्रस्तुत करैए। आ सत्ता भनहि राजतंत्र वा तथाकथित प्रजातंत्र जे कि एक ने हो ओकर चरित्र एके छैक। उर्दूक मान्यता-धर्मक आधार पर जनताक विरुद्ध एक घृणित षडयंत्र छोड़ि आर किछु नहि थिक। जन कंट्रोव आ भड़वारी में कलह बनेबाक इहि षडयंत्र में बिहार सरकार अपन कुशल नायक डा० जगन्नाथ मिश्रक नेतृत्व में किछु समयक लेल सफल अवलसे भेलाह। इहि नीति सं एतेवरि अवलसे भेले जे आन मिथिलाक कुनू मुसलमान अपन मातृभाषा मैथिली नहि पढ़त ओकरा बदल में उर्दू पढ़त। मैथिली पढ़ने ओकरा नोकरीक आशा नहि छैक जे उर्दू सं छैक। ई दिग्गज वात जे उर्दूओ नोकरी नहि दिया सकैत छैक—पहिल खेप में भनहि पाँच-दस हजार के बीबिका भेटि गेलैक। परञ्च प्रत्यक्षक सामने लोक प्रमाण नहि तकैत अइ।

आइ भाषा विचारक बाहेतेय नहि बीबिकोपार्जनक साधनो अइ। अंग्रेजी पढ़ल लोक एही दुआरे आरंभ केलक आ एखनो पढ़ैए जे एकरा द्वारा बीबिका भेटव सहज छैक। मैथिलीक सरकारी मान्यताक मांगक पाछा इहो कारण छैक। दोसर मातृभाषाक

गाम सं दूर : मिथिलाक सजदूर

## कलकत्ताक ठेलावला

महानगर कलकत्ता सन विशाल विकसित आ व्यस्त शहर में बाट-बाट जाम रहनाइ साधारण बात छैक ओ प्रयाची के जेना रेहल-खेहल भ गेल छैक। ट्राम-बस, ट्रक टेम्पू टेक्सी ग्राइवेट कारक बीच रिक्ता ठेलाक अस्तित्व अनायासे ककरो ध्यान अपना दिव आकर्षित क जेना में पूर्ण रूपेण सकल होइए। ई जेना कहैत हो जे मनुख सर्वोपरि थिक मनीन ओकरापर विषय नहि पाबि सकैछ, ओकर स्थान नहि ल सकैछ। पैघ सं पैघ कलकत्ताका भनहि जेते कि एक ने पहरि जाओ रह उद्योगक अस्तित्व ओ

माध्यमे जातीय चेतनाक विकास तथा जातीय एकता सशक्त होइत छैक जे देश-जातिक सर्वाङ्गीण विकासक मूलाधार थिक। इहो कारण छैक जे १० जूनक पश्चात् मैथिली आन्दोलन एकटा नव मोड़ लेलक आ पहिल खेप मैथिल सन्तान अपन शोणित सं पटनाक राजपथ के जुबा देलक। ई आन्दोलन नकारात्मक नहि सकारात्मक छल, ककरा विरोध नहि अपन न्यायसंगत अधिकार प्रातिक छल आ तें एकर आगि एखनो प्रबलित अइ जे समय पाबि कल-नहुं दावानलक जन्म द सकैए। ओना मिथिलाक जयचन्द-मिर्जापुर एकरापर अवलसे संकीर्णताक लेबुल ठेलाक प्रयास केलक आ अस्फल भेलापर लोक के दिग्-भ्रमित करवा लेल संस्कृत विद्या-विचारक षडयंत्र रचलक।

सरकारक इहि घोषणाक पाछा दू गोठ उद्देश छैक। पहिल त मैथिली आन्दोलन के दिग्भ्रमित केनाइ कारण महानी मान्यता एखनो लोकक मन सं नहि हटलैए ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ के छोड़ि आन वर्ग रखनो अपना के मैथिल कहबा में संकोच बोध करैए आ अपन मातृभाषा के मातृभाषाक रूप में स्वीकार करबा सं हिचकिचाइए। लोकदलक उदय इहि विमर्श के बदला में आगि में बीक काज केलक। फलतः मैथिली आन्दोलन में बहुसंख्यक ओही वर्गक लोक छल जे संस्कृतक पोषक रहल-अ आ संस्कृतक द्वारा ई सुविधा भोगी वर्ग अपन स्वार्थपूर्ति होइत देखि आन्दोलन सं विमुख भ जायत। दोसर इहि वर्गक सरकारी चमचा सभ के मास्टर नामक 'कौरा' भेटि जेतैक आ ओ सदा सरकारक पाछा नाउड़ि डोलबैत रहत। मुस्लिम तमुदाय जे जे सरकारी चमचा छल तकरा उर्दूक माध्यमे 'पार' द्वारा देल गेलैक। इहि तहदे शासक दलक पाया मजबूत बनि जेबाक पूर्ण संभावना छैक। ओना हेतैक की से त भविष्ये कहत परञ्च एतेवरि निःसंकोच कहल जा सकैए जे अपन समस्त कृतित्वक अछेते मिथिल-मैथिलीक अवो-जातिक लेल पूर्ण जिम्मेवार इहो ब्राह्मण आ कर्ण-कायस्थ रहल-अ।

नहि भेटा सकैछ। संविधानक पोशा जते मोट कि एक जे हो विदेशी सातानुल्लिखित शाही में बेसल लोक आ ठेला धिचैत लोक समान नहि भ सकैए।

ठेलागाड़ी माने ओ गाड़ी जकड़ा ठेल के ल गेल जाय। ई बैलगाड़ीक विकृतरूप थिक जाइ में जुआ अथवा वाला नहि होइत छैक। एकर दुहरा बैलगाड़ी जकां सठल नहि रहैए अपितु हुनू झंझक बीज हाथ डेढ़क जगह खाली रहैत छैक जकर मुंह मोट रवी सं मिलाओल रहैछ। इहि में (शेषांश पृष्ठ ३ पर)

से जे हो परञ्च सरकारी घोषणाक पश्चात आन्धरागाही संस्कृत विद्यालय खुलब लागल। ओना त एकर अवधि बहुत पहिने समाप्त भ गेलैक मुदा स्कूल एखनो खुबि रहल-अ। दूसरी बर्ष पहिने सं खाता-पत्र तैयार कएल जाइल आ पटना बा के 'बैक डेट' में लोक दरखास्त द अवेए। 'इन्स्पेक्शन चार्ज' सरकार मात्र तीन से दाका रखने छैक आ सेहो से-पञ्चाव उपरी देनै 'बैक डेट' में जमा होइत छैक। आर किछु बेसी देनै 'इन्स्पेक्शन' केनिहारक चपन करबाक अधिकारी लोक के भेटि जाइत छैक। परती लेल अपन खेचक कपिटी दम-दम-दम वा पराजित नेता छथि। हुनका अगिला चुनाव में 'बोट'क गारंटी चाही।

माध्यमिक विद्यालय लेल ओकरा नामे परती-परांत जे कुनू तरहक आठ कट्टा जमीन रबीट्टी हेबाक चाही। खाता में छात्रक नामक अभाव नहिदे जे होइत छैक। अचली स्थिति देखने के करेछ। सजामी बीन्दावाद ! बोट बीन्दावाद !! गामक जते जे अवंड छोड़ा छल आ खास के 'इन्दिरा-लॉफ्ट' जका, जे मैथिली त नहि पाव क सकल मुदा कुनू तरहें माध्यमिकक प्रमाण पत्र उतर क लेने अइ—इहि स्कूल में शिक्षक बनि गेल। ई भिन्न बात भेले जे ओकर, संस्कृतक हिस्सातक नहि करय अवैत छैक। एगो शिक्षक महोदय विगत बर्षक, खाता खाता तैयार करैत छलाह जाइ में हमरा सोफे में लिखलनि 'ग्रीष्मा अवकाश'। इहि तरहें संस्कृतक केहन विकास होइत से त भूमले अइ तखन मैथिलीक अहित अवलसे इहोत। हमरा लोकनि संस्कृत-पाठशाला में पढ़ने छी मैथिलीक माध्यमे। संस्कृत पाठशाला में व्याकरण, शीतिष वा न्याय सभ मैथिलीक माध्यम सं पढ़ाओल जाइत छल। आजुक इहि स्कूलक भाषा हिन्दी छैक संस्कृत एक विषय अनिवार्य, अवलसे रहैतक परञ्च आन विषय सभ अंग्रेजी स्कूल सन रहैतक आ तें जिभाषा फार्मूलाक अन्तर्गत छात्र मैथिली नहि पढ़वा लेल बाधन कइल जाइत। एक सन्द ने कही त संस्कृतक सारापर सचाक बबूरक गाछ रोपवाक ई षडयंत्र थिक।

—अमरदूत



मैथिली आन्दोलन

## मैथिलिक आन्दोलन बनब' पढ़व

भारत आ नेपालक समृद्धिवाली भाषा परिवारक सदस्य होइतो मैथिली के अपन बाजिब अधिकार नहि भेटलेक अछि। चौदहम शताब्दी सँ आठम शताब्दी धरि छ' गेलहु' मैथिली सम्मानित भाषा सूची मे स्थान नहिपावि सकल अछि। भारत नेपाल मिला तीन करोड़क दावा बननिहारक होइतो आइ शासकीय निकाय सँ उपेक्षित पड़ल अछि आखिर की कारण छै एहि अवहेलनाक ?

एकर पृष्ठमे खोजवाले मैथिली भाषा क' संग कण्ट्रोल वर्ग वादी बलात्कारी सभ क' कलई खोल पड़त। मैथिली के पौती पेटारी किंवा पोथी-पतराक परिवर्तन सनेटिक रस्तिहार पुरना संस्कृताइ पंडित लोकनि एकरा जन जीवन सँ काटिदेले छीन्ह। ब्राह्मणेतर वर्गक लोक एकरा अपन भाषा मानवा पर तैयार नहि भेलाह। हुनक मानसिकता मे अटकल पचल बे सन्देह रहनिह से क्रमिक व्यवहार सँ पुष्ट होइत गेलनिह आ ओ लोकनि अपनाकेँ मैथिली भाषासँ फराक राखि लेलनिह। आ जेकि ओ वर्गजे दावा कयनिहार वर्गक शतप्रतिशत बेसी छल, एहि दीशि रुचि नहि देखौलक एकर विराट भाषाभाषीक सूची होइतो एकरा अल्प वर्गक भाषा हयवाक सरकारी ठप्पाक मारि भोग पड़लैक मैथिली के।

भारतेमे नहि, नेपालो मे सरकारी स्तर किंवा उच्च सरकारी ओहदाक लोक सभ सत्तरि ई० धरि एहि धारणा बनओने छलाह जे मैथिली एक वर्गक मात्र भाषा थीक। मुदा तकर परिवर्तन एत भोगेलेक अछि एत बहुलांशमे लोक एहिदोष सँ मुक्त अछि।

भारतीय क्षेत्रमे हमदेखैत छी मैथिल वर्गमे विराट असमानता। भाषा ल' क' एखनो लोक मैथिली अहक भाषा अछि से कहवाले आन्दोलन करैत अछि। सभा करैत अछि-पत्र पत्रिकामे विचार छपैत अछि। ई दुर्भाग्य नहि तँ आर की भेल।

पटना दरभंगा सहरा, खजौली, जयनगर, रदिका, कलकत्ता, दिल्ली, बम्बई-सभठाम मैथिली भाषाक मान्यताले संगठन आ कार्यकर्ता सक्रिय छथि। बरोबरि कार्य क्रम सभ घोषित रहल अछि। लोक सभ अमल सेहो करैत रहलाह अछि। मुदा, हमरा बनिने हिनका सभकेँ बाहिरुपमे सहि योग भेटवाक चाही ताहिरुपमे कोनो कोन सँ भेटैत नहि होयतनि से हमरा अरे विस्वास अछि। एकरो मूल मे उहह भाषा सम्बन्धी असम्बद्धता प्रमुख कारण मानल जा सकैछ।

मैथिली पत्र-पत्रिका निकलैत अछि। एखन तँ आबाइर्जन पत्रिका आ पत्र हमरा आगामे राखल अछि। नहिना-खुशी होइत अछि ई जागरणक दौर देखिक। नहिना कत्ती देखक भान सेहो अछि ई दीप जीवी

नहि रहि सकत। एहि निराशाक की कारण मैथिली भाषाक प्रति समवेत आकर्षणक अभाव ?

मैथिलीक पुस्तक सभ निकलैत अछि। मैथिली अकादमी सन-सन मात्र सरकारी संस्था निकालि पावि रहल अछि। सेहो ओकर तीनगोट लक्ष्यमे एकगोट मात्र पुरा भ' रहल छैक। मुदा एहि सँ अतिरिक्त मैथिली पोथी प्रकाशनक की हलित छैक। एक तँ प्रकाशकक अभाव छपा नहि सकत। जँ छपियोगेल तँ कीनत नहि। एकर मूल मे सेहो सम्पूर्ण मैथिल के भाषा साहित्यप्रति लगावक अभाव मानल जयवाक चाही।

आखिर मैथिली सम्बन्धी कोनो विकासक काज मे सम्पूर्ण मैथिलक असहयोग कियोक महत्वपूर्ण बाधा अछि। अगन भाषा आ साहित्यक प्रति विराग छपी लेल। तँ हम कहब कहियो बनाओल अन्हरजाली मे फँसल लोक अन्हरगेल अछि। भोतिआ गेल अछि।

तएँ मैथिली आन्दोलनकेँ दू दिशामे मोड़। एकटा गाम दीशि-दोसर अधिकार दीशि। एकटा महत्वपूर्ण दिशा भेल गाम-गाम, घर-घरमे पहुँच। मैथिली भाषा अहाँक भाषा थीक से ओकर चिनवागमे लिखाउ। ओकरा वालवचा, से समाज दे-दीआद सभक दीभागमे भर्ल। ओकरा महत्वदीऔ। ओकर पढ़ल लिखल समाज केँ मुंचदीऔक, हाथमे भँझा दीऔक, नेतृत्व दीऔक। अहमकेँ जगविपौ ओहिवर्गक। ओ वर्ग जागत मैथिल जागत आ जखन मैथिल जागत सम्पूर्ण मैथिली जागत। मैथिली आन्दोलनकेँ मैथिलक आन्दोलन बनाउ।

—रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

## कलकत्ता ठेलावला

ओतवा जगह रहैत छैक जे एक आदमी ओह मे पेलि केँ टाढ़ भ सकै। बड़दक स्थान मे इहह आदमी गाड़ी धीचेह। नाभिक नीचा रस्ती पर जोर देत आ हाथ सँ दुनू बांस पकड़ने। पाछा सँ एक आदमी ठेलैत रहैत छैक। भरिहार बोझ भेने खगता अनुसार एक अथवा दू आदमी दुनू कात पहियाक पाछा सँ जोर लगावैत छैक। कोनो कोनो ठेलामे जुआम स्थान पर हाथ दु-एक बांस रहैत छैक जकरा दुनू दिस दू आदमी पकड़ि केँ धीचेह।

कलकत्ता मे लगभग १० हजार ठेला छैक जकर बेसी भाग बड़ा बाजार मे छैक। बड़ाबाजार व्यापारक केन्द्र हेवाक कारणे काल भेटव सइज होइ छैक। आन अंचलक ठेलावला केँ कहियो काल भेटैत छैक कहियो नहि भेटैत छैक। जाइ बाट मे टूक टेम्पू नहि जा सकैछ ठेला ताहू बाटे चलि जाइछ। दोसर सामानक मात्रा कम रहने टूक टेम्पू क' भाड़ा मे लाभ नहि भ-सकैत छैक-एव-भावना ठेलाक प्रयोजन।

(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

कविता

## बहिनदाइक नाम एगो चिट्ठी

बहिन दाइ !

अहाँक चिट्ठी भेटल छल

मुदा उतारा देवा मे भेल बड़ बिलम्ब  
फूसि किए कही जे/छलहु' बड़ व्यस्त  
सरिपहु' की लिखी/वा किएक लिखी  
तकरे नजि क पओने छलहु' निर्णय  
तँ बहिन दाइ !

उतारा देवा मे भेल बिलम्ब।

बहिन दाइ !

हम बनेत छी जे अहाँ एहूबेर

बनओने इएव शामा-चकेवा

तकने इएव हमर बाट

लगलापर आंगि विरदावन मे / आ नजि पावि हमरा

भेल इएव उदास / बहल इएत आखि सँ दहो-बहो नोर।

किन्तु बहिन दाइ !

अहाँ मानी वा नजि मानी

थिक धरि ई सत्य / जे

कुन दावानल केँ नजि मिभाओल जा—सकैछ

सोवना लोटा सँ/आ,

जेना अहाँ लिखने छी—

ठीके हम बड़ बदलि गेलौहें

हम बुझैत छी / जे विरदावन / ओ विरदावन नजि रहि गेल-ए

आइ / एकटा नजि

हजारक हजार चुमिला जनमि गेल-ए / आ

इहह विरदावन थिक ओकरा सभक स्थायी आवास

एकर पुरान गाल सभक घोघरि मे

एक सँ एक अंजोब बिपवर करेण निवास

आइ

एहिठामक वसातो आइ विषयुक्त / साँसो लेवाक अनुपयुक्त

हमरा विचारें / एकरा धरिण रोनाइ थिक नीक

मिसेवाक प्रयास सर्वथा अनुचित

शक्तिक अपव्यय / जे करवाक थिक संचय

आगामी कालिक निमित्त

जखन कि हमरा लोकनि लगाएव

निश्चिते लगाएव / एगो नव विरदावन

पटाएव / कुनू डबरीक पानि सँ नजि

अपन घाम सँ / आ फुलाएव

रंग-विरंगक फूल / अपन आशाक अनुकूल

अपन कल्पना केँ देव वास्तव रूप।

बहिन दाइ !

हम मानैत छी / आ अहूँ मानव

जे आइ / अपनने गाम मे

हम सभ छी अन ठेवा-अनचिन्हार

जकर नजि छइ कुनू पता-ठेकाना—

सरिपहु' कतेक अवश्य थिक ई पीड़ा

मुदा/ताहू लेल

कथमपि उचित नजि कानव / बरन्

चीन्हव अपन शक्ति आ

बाहरीक शब्द केँ अकानव—आ

एगो प्रण ठानव

त कालि—आगामी कालि

हमरो एगो परिचय रहत

विरदावनक हम—हमर विरदावन।

—रामलोचन ठाकुर



## चिट्ठा पुरजी

देसिल बयनाक प्रवेशक भेटल। कतेक नीक लाग्ग से वर्णन नहि कए सकइत छी। वास्तव मे पत्रिका भाषा, विषय आओर सरादन बेस सुन्दर आर उपयोगी भेल अछि। एहि प्रयास हेतु अपना दिसि सं आर 'मैथिली समाचार' परिवार दिसि सं शतशः अभिनन्दन आओर शुभकामना स्वीकार करू।

—डा० रुद्रकान्त मिश्र, इलाहाबाद

देसिल बयना पहुँचल। मन प्रफुल्लित भए गेल। हम हार्दिक शुभकामना व्यक्त करैत छी ओ पत्रिका पढ़ए फुलए से कामना करैत छी।

'देसिल बयना' जन जीवनक प्रतीक बनए से हमर इच्छा अछि आ तखने विद्यापतिक भाषाक समुचित समादर होएत।

'बिनु भाषाक लोक अछि

बानू मृतक समान

चरैत घास पीवैत पानि

मात्र पशुक समान'

हमरा आशा अछि ओ पूर्ण विश्वास करैत छी जे अपने लोक'न बाहिरुप सं मैथिली माक सेवा करैत छी तकर मूल्य भावी पीढ़ी पेवे करत।

—डा० मदन मिश्र, भद्रपुरा

बहिना देसिल बयना सब जन मिट्ठा तहिना ई पत्रिका सब मैथिल पुत्र के मँड लगैत रहैत आ ई अनवरत प्रकाशित होयत रहए इहो हमर विश्वास अछि। हमर सब शुभकामना आ सहयोग बनल रहत।

—सूर्य नारायण मंडल, नई दिल्ली

देसिल बयना लेल बहुत रास शुभकामना। भरिसक सहयोग देबा मे पाछू नहि हटब, विश्वास राखी। अगिला अंक सं न्यूज आपूर्ति करब।

अपने लोकनि मैथिली लेल जान-प्राण लगा देने छी। हमरो छात्र लोकनिक किछु कर्त्तव्य भय जाइत अछि जकर निर्वाह करब, से आशा अछि।

—बोरेन्द्र झा, दड़िभंगा

देसिल बयनाक पहिल अंक देखलौ। जौ ई 'मैथिली मुक्ति मोर्चा' के प्रमुख मासिक पत्र थिक तखन एकरा एतेक सामान्य ढंग सं छपने मुक्ति मोर्चाक अवस्था हैत।

हमर निवेदन जे एकर प्रकाशन स्तरीय ढंग सं केल जाए। मुक्ति मोर्चा एखनवरि की सम कयलक आ भविष्य मे की सम करबाक योजना बना रहल अछि से ईमानदारी सं छापि देल जाए। ओहि अंकक एक प्रति श्री धर्मेन्द्र कुमरक पता सं पठा देल जाए। 'मिहिर' मे एक बेर ओ मुक्ति मोर्चाक प्रति किछु अपमानजनक शब्द-सभक प्रयोग कएने छलाह, जकर जबाब हम 'मिहिर' मे पठा देने छलौ।

—नवीन चौधरी, हवड़ा

## मिथिला एक्सप्रेसक सामने धरना

हमरा लोकनिक उत्तर कलकत्ता प्रतिनिधि जनश्रोलनिहें जे गत २५ अक्टूबर के विशाल संख्या मे मैथिल युवक लोकनि हावड़ा टीशन पर जमा भेलाह आ पश्चात् रेल पटरी पर धरना दय मिथिला एक्सप्रेस के पचास मिनट धरि अटकओने रहलाह। बाद मे अधिकारीक आश्वासन भेटलाक बाद पटरी मुक्त भेल आ स्वभावतः गाड़ी घंटाभरि विलम्ब सं प्रधान केलक। युवक लोकनिक मांग छलनि जे उत्तर बिहारक लेल मात्र दू गोटा गाड़ी देवाक कारणे बड़ दिकदारी होइत छैक त गाड़ी बढ़ाओल जाय। पूर्व रेलवेक मैनेजर महोदय अपन आश्वासन पूरा करवा लेल छठि पावनवरि हावड़ा बरौनीक एगो स्पेशल गाड़ी देवाक घोषणा तकर परते क चुकल छथि। ओना त उचित छलैक जे गाड़ी समस्तीपुर तक जाइत आ रोज जाइत, परञ्च—

मिथिला आ नार्थ बिहार एक्सप्रेस— इहो दू गोटा गाड़ी हावड़ा सं पहिने समस्तीपुर जाइत छल आ आब गोरखपुर तक जाइत। गोरखपुर चल गेने एतेवरि अबसे भेलेह जे भीड़ बढ़ि गेलैह आ

देसिल बयना आजुक आन्दोलनात्मक कार्यक्रम मे जाइ सं मैथिली ओ मिथिला के नव स्फूर्ति आ मृतप्राय आत्मा मे संजीवनीक संचार करय एहि लेल हमर हार्दिक कामना अछि। पत्र-पत्रिकाक पृष्ठ पर कोनो भाषाक साँव चलेत अछि। देसिल बयनाक प्रथम अंक देखि कतेमने सन्तोष अछि। मुदा एकर प्रभाविता पर सन्देह बुझना जाइत। कारण एकरा संगे एकटा पृष्ठक अभिवृद्धि आवश्यक। देसिल बयना अपने मेष मन्त्र स्वर मे सुतल-सिद्ध-रल, झुबले-पिछड़ल, भांग-ताड़ी-गाँवा मे झुबकी लेत मृतप्राय मैथिल जनमानस के उद्वेलित करय एहि लेल हमर आह्वान अछि। हमरा जे सहयोग कहब से देब।

—वैद्यनाथ बिमल, गलमा

□ प्रिय पत्रलेखक बन्धुगण !

जय मैथिली !

सुभाव आ सहयोगक आश्वासन लेल आभारी छी। एक खेप फेर कहि दी जे 'देसिल बयना' आन्दोलनक पत्र थिक, फेशनक नहि। एकर ऊद्देश आन्दोलनात्मक चेतना जाग्रत केनाइ थिक—टेबुल शोभा बढ़ओनाइ नहि। एकरा ताही दृष्टिसे देखल जाय। जं एहि मे कोनो खासि बुझना जाय तं मिश्र अंकोच लिखी, ताह तरहक रचना पठावी—हमरा लोकनि तकर स्वागतैत नहि करब—आभारी सेहो रहब। पत्रिका अपन उद्देश मे सफलभूत तखने होएत जखन कि एकर प्रवेश गाम-गाम मे होइक—ई जन-जग लम पहुँच सकए। एहि कार्य मे अपने लोकनिक सहयोगक अपेक्षा अछि आशासे प्राप्त होएत—ताही विश्वासक संग—

—संपादक

संगहि धुरतीकाल लोक के सुझफटपुर वा समस्तीपुर मे चढ़ि पओनाइ असंभव भ गेलैह। एक त गेट पहिने सं बन्द रहै छइ आ जं कोनहुना एक आग्न टा खुबवो केलैह त मारि-पीट बकिष्टा जाइत छैक लोक दू दू, तीन-तीन दिन तक लाउफारम पर बैसल रहैछ—खुलल-पियावल। आफिस फेक्टरी मे काज केनिहार के नामा भेला सं से फिरीशानी होइत छैक तकर अनुमान त सुक्तभोगीए क सकैह।

लाभमग बीच बर्ल पहिने सं इहो दू गोटा गाड़ी छैक जाइपर सम्पूर्ण उत्तर बिहार नेपाल आ उत्तर प्रदेशक एक पेश भागक लोक के निर्भर करय पड़ैत छैक। तहिना ई दिकदारी सेहो नव नहि छैक। ओना लोक संख्या एह बीच बर्ल मे कते बढ़लैक तकर अनुमान सहजे कएल जा सकैछ। त खगता त ई छलैक जे गोरखपुर तक जं लाइन गेवे कएल त ताइ लेल आर कम स कम दू गोटा गाड़ी देल जाइतैक आ ई दुनू गाड़ी समस्तीपुर तक रहैत। दड़िभंगा तक बड़ी लाइन भेने ओतय तक जाइत। परञ्च उचित सं सरकार के की मतलब ? केदार बाबू गोरखपुर क्षेत्र के गाड़ी देलथिन सेहो की थोड़ ? मिथिलांचलक लोक मुइल अइ तें सीमांत क्षेत्र होइतहु जननगर के कहय दड़िभंगाक बड़ी लाइन सेहो गताल-खाता मे पड़ै छैक। एहि निमित्त एक नहि अनेक बेर रेल मंत्रालय के लिखल गेलैह, परञ्च जवाबो नदारद। कम स कम जनता सरकार मे ई भरता अवसे छलैक जे जनताक आभाव अभियोग सेनेत छल—गन्तोत्तर देत छलैक। कमिश्नर सरकार त गोर माउग गोरवे आन्हर। तें आवश्यकता छैक जोरगर आन्दोलनक। हिरवा छुवि छैने स्थायी समाधानक अपेक्षा नहि कएल जा सकैछ। आशा अइ जे युवकगण अगिला दिन लेल तैयार रहता। देसिल बयनाक शुभ कामना।

## लकलकचाक टेछावाला

टेलाबलाक मेहनति सेहो रिकवाबलाक अनुरूप छैक। बड़ा-बाबार अंचल मे एक टेलाक दैनिक आमदनी ५० सं १५० तक होइत छैक जाइ मे तीन स चारि आदमी तक रहैत अइ' एहि मे चालिस टाका महिनवारी खानाक सलामी लगैत छैक। ताइ-पर सं दिन मे ५-१० टाका ट्राफिक पुलिस के समय पड़ैत छैक। पुलिसक गारि आ दुरवचन उपस्करे मे भेटि जाइत छै।

## कह लोचन कविराय

चमचा गुण के खान थिक कहैछ वेद-पुराण  
जकरा चमचा छइ जते से ततवैक महान  
से ततवैक महान राजनेता युग चेता  
प्रातिशील कवि, कथाकार, शिल्पी, अभिनेता  
कह लोचन कविराय करय सभ संभव चमचा  
भारत आभ्य विधाता जय-जय-जय हे चमचा

एहि तरहे जे उपार्जन करैह, ताइ मे भग्न खर्च आपनवार के प्रतिआइत। खेना इक लेल एकरा लोकनि के बेसी चिन्ता नहि रहैत छैक। जत' तत' मोड़ पर सव-आ' बला बैसल रहैत छैक। सातुखा' पानि पीवि तुसभ जाइह। राइत मे ठेलेपर सुति रहल। दिकदारी होइ छइ, बरिसकाल'मे। परञ्च घर भाड़ा लेबाक दशम रहैत नहि छैक। केहनो टुटली मइया लेत केहनो अंचल मे लेत से डेढ़ से स कम मे भेट निहार नहि। दुरस्थ गेने काज मे असुविधा हैतैक। फलतः कठिन परीश्रमक पश्चातो खान पानक ठीक नहि रहैत छैक आ तें इहो लोकनिक देह पर कष्टो माउत नहि होइत छैक।

एहि घंघा-मे बेसी लोक भोजपुरी क्षेत्र क अइ। मिथिलांचलक सुगौर, मुजफ्फरपुर चम्पारनक मजदूर सभ अइ। मजदुरी दड़िभंगा आदि क्षेत्रक मजदूरक संख्या रिकवा मे बेसी छैक टेला मे बड़ थोड़। से जे कुनू घंघा मे किछक ने हो सभक-श्रम आ आर्थिक स्थिति समाने छैक। सभक संग अपन डीह डारर छोड़बाक विवसता छैक' जीवनक प्रति मोह छैक आ श्रमक प्रति निष्ठा छैक।

—सुजतवा अली

## बाल गीत

## हुका-लोली

हुकालोली खेले छी हम  
मञ्जर के भड़कावे छी हम  
भ्रष्टाचार भगावे छी हम  
मैथिल-पुत्र कहावे छी हम ॥

महगी के ललकारे छी हम  
दुराचार के जारे छी हम  
अन-जन-लक्ष्मी घर करेछी  
निर्वनता बेलवे छी हम ॥

मेद-भाव के मेठवे छी हम  
दंभ-दोष के घटवे छी हम  
बाट-बाट मे दीप जरा के  
घर-घर स्योति जगावे छी हम ॥

परिजन, अरिजन हो वा हरिजन  
सभ सं हाथ मिलावे छी हम  
हुकालोली गीत गवे छी  
नव उल्लास पसारे छी हम ॥

—सूर्य नारायण मंडल



मैथिली मुक्ति मोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

# समिति रचना

वर्ष—१ अंक—३

दिसम्बर, १९८१

मूल्य—पचास पाइ

## सम्पादकीय

### ६ दिसम्बर

बर्ल मे तीन सप्ताह पर्वटि दिन होइत अछि। बेरा-बेरी एक बेर क सभ भवेत अछि आ चल जाइत अछि। दोसर तरहे कही त बीति जाइत अछि। कालक्रमे लोक ओकरा विवरि जाइत अछि। फेर दोसर बर्ल भवेत छैक आ ओहिना बीति जाइत छैक। ई नियम आदि कालहि सँ चलेत आबि रहल अछि आ बाबुरि विश्व-ब्रह्माण्ड रहत चलेत रहत।

परञ्च जे कोनो नियमक अपवाद होइत छैक। एहु नियमक अपवाद छैक। अपवाद होइत अछि ओ दिन जे कोनो व्यक्ति, समाज वा जातिक मानस पटल पर एगो अमिट छाप छोड़ि जाइत अछि। ई दिन जखन भवेत अछि त अपना संग ओहि विशेष घटनाक कथा-गाथा केँ नेने भवेत अछि आ लोकक मानस पटल परक बिस्मृत प्राय स्मृति केँ पुनः नव क जाइत अछि। ६ दिसम्बर मैथिल जातिक लेल एहेने एगो दिन थिक, गौरवोपेत दिन। बर्ल रूपी आकाशक तीन सप्ताह चओसठिटा नक्षत्रक बीच सूर्य सन प्रखर प्रचंड प्रदीप्त।

ई उण्ह दिन थिक जहिना ग्रामांचल सँ प्रवासवरिक मैथिल पटना में जमा होल। मेल छल अपन संविधान सम्मत अधिकार प्राप्ति संघर्ष लेल। जमा भेल छल मायक दूबचन पवित्र अनन मातृभाषाक न्यायोचित सम्मान-अधिकार प्राप्ति संघर्ष लेल। ई उण्ह दिन थिक जहिना मैथिलक विद्रोह सँ गगन गुंजायमान भेल छल, शहर दलमलित भेल छल। ई उण्ह दिन थिक जहिना न्यायक बोरखाधारी अन्यायी जगन्नाथ मिश्रक सरकारक बोरखा उतरि गेल छल, आसन डगमगा गेल छल। सरकारी नदीधारी गुंडा सभ आतंकित भ उठल छल। लाठी गोलीक बल पर बनल आ चलेत सरकार केँ फेर लाठी-गोलीक सहारा लेमय पड़ल छल। परञ्च तैयो सिंह शावक सन निडर मैथिल सेनानी सभ अपन लक्ष्यपथ पर बढ़ैत गेल छल। ओकरा पर लाठीक प्रहार होइत रहल, ओकर रक्तक धार बहैत रहल किन्तु पणर पाछू नहि भेल, मुँह सँ आह नहि बहरेल। बहरेल त उण्ह ओजस्वी नारा—हिन्दू मुसलिम बीर जनान। हम सभ छी मिथिला सन्तान ॥ हमरा चाही माइक बोल। आनक बोली दूरक टोल ॥

आ तँ ६ दिसम्बर अन्यान्य तिथि सँ फराक अछि, महत्वपूर्ण अछि, अविस्मरणीय अछि। ई उण्ह दिन थिक जे मैथिली आन्दोलन केँ नव मोड़ देलक, सही रूप देलक आ मैथिल जाति केँ एहि कलक सँ मुक्ति दिअओलक जे ओ अपन अधिकार प्राप्ति लेल संघर्ष नहि क सकैत अछि, 'शोणित नहि' बहा सकैत अछि। आ तँ मिथिला-मैथिलीक इतिहास मे ई दिन अमर रहत। अमर रहत कलकत्ताक मैथिली मुक्ति मोर्चा। अमर रहत पटनाक निखिल भारतीय मैथिली भाषी छात्र संघ। अमर रहत ई मैथिली पुन नयुनी भौ, सुशील, विजय पाठक तथा अन्यान्य समस्त मैथिली सेनानी लोकनि।

६ दिसम्बर अमर रहत। ई प्रतिबर्ल आओत आ बाबुरि मैथिली केँ समस्त न्यायोचित अधिकार नहि भेटि जाइत छैक-बाह लेल कि आन्दोलन भेल छल—मैथिल जाति केँ अपन मातृभूमि आ मातृभाषाक उद्धारक लेल, अपन मायक दूधक लाभ राखेक लेल उसकबैत रहत। ई प्रतिबर्ल आओत आ मैथिल जाति केँ अपन सहोदरक शोणितक बदला लेबाक लेल उसाहित करैत रहत। ई प्रति बर्ल आओत आ मैथिल जाति केँ ओकर अप्रजक बीरताक कथा-गाथा कहि-कहि प्रोत्साहित करैत रहत, कर्तव्यक स्मरण करैत रहत। ई प्रतिबर्ल आओत आ मिथिलाक अभिनव जयचंद-मिर्जाफरक स्मरण दियबैत रहत, ओकरा प्रति घृणा भरैत रहत आ मिथिला केँ एहि जयचंद-मिर्जाफर रूपी कलक सँ मुक्त करबाक पाठ पढ़बैत रहत।

६ दिसम्बर मिथिलाक लेल ओहिना थिक जेना बंगालक लेल २१ फरवरी। फर्क एतवारि अवसरे छैक जे २१ फरवरीक इतिहास बंगालक बच्चा-बच्चा केँ जानल छैक—स्मरण छैक आ तँ बच्चा-बच्चाक कंठ सँ सुनल जाइत अछि—आमार भाइएर रक्खे रंगा

संविधान बिनु मैथिलीक ओ  
मानचित्र बिनु मिथिला धाम  
डाहि-जारि सुझाह करब हम  
विद्रोही मिथिलाक जवान

मैथिली आन्दोलन

## एकांगी इतिहासक कुफल

जहिया कहियो आ जतय कहियो मैथिली आन्दोलनक चर्च चलत त केओ केओ बाजिए देताह-एह, मैथिलो सँ कतहु आन्दोलन मेलेए ? ई गप्प ततेक सज्जताक संग बाबल जाइए जे एहि मे संदेहक जेना कुन गुंजाइसे ने रहैक, विचार करबाक कुन खाते ने होइक। विद्वान-बुद्धिमान लोकनि अपन बातक सत्यता सिद्ध करबा लेल मिथिलाक भौगोलिक-ऐतिहासिक स्थिति पर व्याख्यान देताह, मनहि लोक जिज्ञासा करओ वा नहि। परञ्च जँ सत्य पुछल जाय त भाइएरि केओ महानुभाव एहिपर नीक जकाँ विचार नहि क पओलनि भयवा विचार करवाक खगता नहि बुझलनि। तँ भाइ एकर बड़ बेसी खगता छैक जे आर विलम्ब नहि क एहि विषय पर नीक जकाँ विचारल जाय। विभिन्न दृष्टिजे विभिन्न कोन सँ विचारल जाय

हमरा जनतुवे ई गप्प बिहकुल निराधार अह जे मैथिल जाति आलखी होइए, डेरबुक होइए आ तँ ओ मेहनति नहि क सकेए, आन्दोलन नहि क सकेए। ई गप्प सत्य जे जाइताम जीवन-यापनक साधन सुलभ रहैत छैक ओ थोड़वे श्रम मे उपलब्ध भ जाइ छैक ताह ठामक लोक बेसी परीश्रम नहि करैए। कृषिप्रधान मिथिला-देशक माटि ततेर ने उपजाउ छैक, प्राकृतिक सम्पदा तते बेसी उपलब्ध छलैक जे निर्विवाद लोक केँ थोड़ मेहनति बेनहि सन्ता सहजता सँ जीवन निर्वाह भ जाइत छलैक। पूर्व मे लोकक संख्याक संगहि खगता सेहो सीमित छलैक आ संचयक प्रवृत्ति आइ कालखन प्रबल नहि छलैक।

एकुशे फेब्रुवारी, आमि/भुल्लि पारी ? ठीके बंगाली जाति एकरा नहि विवरि सकैत अछि। २१ फरवरीक परिणति थिक बंगला देश। ६ दिसम्बरक परिणति एखन सामने नहि आयल अछि। एकर ख्याति २१ फरवरीसँ नहि भ पओलकैक अछि। परञ्च ताह मे ६ दिसम्बरक कोन दोष ? ई दिन मैथिलीक साहित्य कारक अवचेतनताक परिचायक थिक।

६ दिसम्बर १९८० क मैथिली आन्दोलनक बर्ल पूरा भ रहल छैक। बंगाल जकाँ हमरा लोकनि एहि अवसर पर कोनो सभा समावेश नहि क रहल छी परञ्च एहि पानन अवसर पर फेर अपन शपथ केँ दोहरबैत छी जे बाबुरि मैथिली केँ अपन समस्त न्यायोचित अधिकार-सम्मान नहि भेटि जाइत छैक, हमरा लोकनिक संघर्ष जे ६ दिसम्बर १९८० केँ आरम्भ भेल छल, चलेत रहत। 'देसिल बयना' एहि मुक्ति चेतनाक संवाहक बनत। एहि लेल ओ मैथिलक जातीय चेतना केँ जगाओत, जातीय एकता केँ सशक्त करत आ संघर्ष चेतनाक निर्माण करत। मिथिलाक सर्वांगिण विकासक अतीतक त्रिभुवन विख्यात मिथिला केँ भविष्य मे विश्वविख्यात बनेबाक कल्पना केँ उबागर करत, ओकरो साकार बनेबाक पथ प्रशस्त करत। एहि पुनीत कार्य मे हमरा लोकनि समस्त लेखक—पाठक लोकनिक सहयोगक अपेक्षा करैत छी।

जय मैथिली

तँ जँ लोक थोड़ श्रम करैत छल त ओकरा अहदी वा कोढ़ि किछहु नहि कहल जा सकैए। राजस्थान मे पीवाक पानि लोक केँ दू कोस तीन कोस दूर सँ आनय पड़ेत छैक-तँ परीश्रम बेसी हेबैटा करैत। किन्तु ओकरो जँ दरबजेपर उपलब्ध भ जाइ त मात्र परीश्रमक हेतु परीश्रम नहिजेटा करत आ जँ करवो करतत से मुखताए हेतैक।

जँ आलोक संदर्भ मे विचार कएल जाय त मैथिल समुदाय अन्यान्य कुनहुँ जाति सँ कम परीश्रम नहिजेटा करैए। तैयो जँ ओकर आर्थिक स्थिति अचलाह छैक त ताह लेल सम्पूर्णरूपे ओकरा दोषी नहि कहल जा सकैए। तीन-तीन खेप लोक धान रोपि भायल परञ्च दहा गेलेक। फेर रोपलक त एखन रोदी मे बरि रहल छैक। ई त निश्चित रूपे सरकारक उपेक्षाक फल छैक जे ओकर समस्त प्राकृतिक सम्पदा आइ विपदाक मूल बनि गेल छैक। कलकत्ता, पटना, दिल्ली, प्रभास—जतहि देखू मिथिलाक मजदूर दिन-राति अपन घाम चुभा रहल-ए। रिक्का, ठेका, भाका हो वा चटकल, गंजीकल, प्रेव, ट्राम, बस वा अन्यान्य कारखाना मैथिल मजदूरक भरमार छैक। परञ्च जे पाइ ओ उपार्जन करैए तकर सिंहाभाग परदेश मे खर्च भ जाइ छैक। जँ ओकरा अपने देस-कोस मे चाकरीक सुविधा रहितक त निश्चित ओकर आर्थिक स्थिति आइ दोसर तरहक रहितक।

जहाँधरि दोसर आरोपक प्रश्न अह जे मैथिल जाति वीरवंका नहि होइए। ओ लड़ाकु जाति नहि अह सेहो निराधार (शेषांश पृष्ठ ७ पर)



संग रहल जाय। तखन न-उ कर्ता ओकरा

## कलकत्ता भाकावला उर्फ मोटिया

कुन लोकन के कलकत्ता भाकावला उर्फ मोटिया के बारे में जानना के लेखक ने

संग रहल जाय। तखन न-उ कर्ता ओकरा सभक दिन चर्चाक, सुविधा-अनुविधाक, भाषा-आकांक्षाक पता चलि सकत छैक। ई बात जनितो एहि स्तम्भक आरंभ करवाक पाछां इएह उद्येश छल जे एकर खगता छैक। परञ्च इहो गप्प सत्य जे तखन मिथियोभरि एकर आभास नहि छल जे ई कार्य एतेक कठिनाई छैक आ ने इएह अनुमान छल जे एते विशाल संख्या मे मिथिलाक सर्वहारा वर्ग एहि महानगर मे रहि रहल-ए। विद्यापति पर्वक मंच त कएक बेर कएकटा नेताक मुँह सुनने छी जे कलकत्ता मे लाखों संख्या मे मैथिल छथि। ई गप्प त उएह लोकनि कहताह जे हुनका लोकनिक मैथिल सूची मे ई वर्ग सामिल अइ वा नहि परञ्च एतेक हम अवस्था कहि सवेत छी जे ई सर्वहारा वर्ग जे कहियो कुनू मैथिलीक नाच गान मे नहि गेलए, ककरा इहो ने पता छैक जे मैथिल ककरा कहैत छैक आ ओहो मैथिल थिक—जं तकर हिसाब लगाओल जाय त एक लाख नहि तकर चौबेर मैथिल एहि एहि महानगर मे रहि रहल-ए।

एहि सं पहिने हमरा किछु रिक्सा चालक सभक संग परिचय-सम्पर्क छल। सम्पर्क छल किछु कल-कारखानाक मजदूरक संग। ओकर अतिरिक्तो आन-आन धन्धा मे मिथिलाक मजदूर अइ से पता छल—परञ्च तकर संख्या जे एते विशाल छैक से निश्चित नहि ज्ञात छल। एकरा लोकनिक हेइ मे जाइत, गप्प-शप्प करैत बंगलाक सुप्रसिद्ध साहित्यकार शंकरक पोथी 'कतो अजाना रे' बेर-बेर मन पड़ि जाइत अइ। सरिपहुँ अपन भूमि सं दूर पैरक बाला मे बौआइत हमरा लोकनि एक दोसर सं कतेक फराक भ गेल छी। कतेक अपरिचित भ गेल छी।

भाकावला आ मोटिया मे फर्क छैक। भाकावला अपन समान भाका मे (एक तरहक पथिया) राखि माथपर उठवैए आ नियत स्थान पर पहुँचा दैत अइ। मोटिया खाली हाथ रहै-ए। एकटा तौनी अवस्था रहैत छैक—मुटेडा बन्हालक आ खास कं बन्हा टोइए। ओना भाकावलाक लेल ई सुविधा होइत छैक जे छटोना समान छोट-छीन छोटा-छट्टा सम भाका मे राखि सकेल। मोटिया के से सुविधा नहि छैक। ओकरा बान्ह-छेकल मोटा चाहिरक आ एहिठामक मोटा की—बक्का—जकड़ीक बक्का, बाइ मे छोट छीन मचीन, मचीनक पाट-पुरजा वा अन्य वस्तु 'पेक' रहैत छैक

क लेखक। ते भाकावला आ मोटिया मे फर्क आन नहि छैक—दुनू एके थिक। दुनूक मजदूरी, समस्या समाने छैक।

तेरा, टुक व टेम्पू जोगर समान जखन नहि रहैत छैक, तखने भाकावलाक प्रयोजन पड़ैत छैक। ओनहुना दोकान सं उठा के ठेला वा अन्य वाहन पर लदनाइ/उतारनाइ काल एकर प्रयोजन पड़ैत छैक। कुनू कुनू गली मे त मोटिया छोड़ि आन उपायो ने रहैत छैक। महानगर कलकत्ता मे एहि वर्गक मजदूरक संख्या लगभग दस-एगारह हजारक बीच छैक जाइ मे सात हजारक लगभग मिथिलाक अइ आ बाँकी भोजपुरी अंचलक। एकर पेघ संख्या ठेलेबला सन बड़ाबाजार मे छैक। किछु अन्यथा अइ। कुनू बजार मे बीस-पचीसक संख्या मे भाकावला उपलब्ध भइए जायत जे भाका मे बाबू-बबुआनक तीमन तरकारी, आशमी वस्तु-जात दोइए। चालिस नम्बर स्ट्रान्ड रोडक एकटा मकान—मोडेल हाउस मे दुनू श्रेणीक मजदूरक संख्या साठि छैक। 'मार्शल हाउस' मे एकर संख्या लगभग अस्सीक छैक। एही सं अनुमान कएल जा सकैछ जे एकर सही संख्या एहिठाम कतेक हेटैक—बलन कि एहि तरहक व्यवसायक केन्द्र मकानक संख्या एहिठाम हजारोंक छैक।

भाकावला के सुविधापूर्वक दू श्रेणी मे विभक्त कएल जा सकैए। पहिल श्रेणी मे ओहि तरहक लोक अइ जे कुनू दोकान घेने अइ—ओइ दोकानक कुनू समान बिकेले, कतौ पार्सल मेले त पहुँचा आओत। ओकरा अछैत दोसर के ओ काज नहि दैतैक—नियमतः। दोसर श्रेणीक मजदूर अइ जे कुनू दोकान सं सम्पर्कित नहि अइ—बलन जे कहलक, भाड़ा पटलेक त काज क लेलक। दोकान सं सम्पर्कित मजदूर भाड़ा मोटामोटी निर्धारित रहैत छैक—परञ्च छुट्टा मजदूरक लेल तकर कुनू ठीक नहि। ई भिन्न बात जे दोकानदार बेसी त नहिजे देमय चाहैतै—कमे मे काज चलेबाक प्रयास करत, परञ्च बेर पड़ने बेसियो देबहि पड़ैत छै।

एकरा मजदूरक दैनिक कमाइ दस-पन्द्रह टाकाक बीच छै। विभिन्न अंचलक चौकीब गोठ मजदूरक संग सम्पर्क केला पर हम एहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ। अनु-विधा स्वाभाविक। एक त ई लोकनि किछु कहव सं पहिने मारिटेराव प्रस्ने पुछय लगैल। फेर कहत जे हम किश्क कहव ? कहला सं हमर समस्याक की समाधान भ

सकैए ? ओना एकरा लोकनिक संदेह, विराग आ तामस स्वाभाविक छैक। से जे हो, कुनू हाट-बजारक मोटिया कहियो पाँच टाका त कहियो दस टाका कमाइए। पन्द्रह टाका कहिया भ चाइ छइ निश्चित कुनू लोक लोक मुँह देखि उठन रहैए—जे एकरा लोकनिक खदनाम छैक। एहि मे अन्धकारक मोटिया लोकनिक स्थिति छैक छैक। ओना ई बेर से वे कहियो न ओहो लोकनि २५-३० तक कमा लेलक त कहियो मरि दिन हाथ पर हाथ बेने बैसले रहि जाय पड़ैत छैक। छुट्टीक दिन दोकान सभ बल रहैत छैक आ त एकरो सभक छुट्टी। एहि तरहें हिसाब केने हरा-हरी पथोत्रे चारि सैए महिनवारी एकरा लोकनिक कमाइ भेलैक। परीश्रमक त प्रश्ने ने हो। माथ पर एक एक मनक बोझ लेने छ-सात आ दस तछा पर चढ़नाइक परीश्रम अनुमान हमरा लोकनि केना क सकैत छी—जे ओनहुना पाँच-छ तछा चढ़वा मे तीन बेर सुलाइए। आ एहि कठिन श्रमक पश्चात जे कमाइ होइ छइ ताइ मे अपन खेनाइ-पीनाइ, पहिरन-भोदुन आ फेर गाम पर क मनिआडर।

पैतीस बर्लक महावीर साहु कोठी बंगड़ा (कमठौल) गामक रहनिहार छथि। मिथिलाक सर्वहारा वर्गक स्वच्छ-सुन्दर संस्कार-व्यवहार हिनक विशेषता थिक। मैथिलक वाजब मधुर—स्वाभाविक—महा-वीर बी एकर प्रत्यक्ष प्रमाण। हमरा संबंध मे मादे-बहुत जिज्ञासा केलाक बाद ओ बड़ सज्जता सं हमर सभ प्रश्नक जवाब देलनि। हुनके देखादेखी आनो समाज सभ अग्रणी अइ हमर मदति कएलनि। ई मोडेल हाउसक एगो छोट-छीन कमपनीक संग सम्पर्कित छथि। कहलथि जे पचास किलोक एगो पैटी लगभग भाव कोस जरि ल जेबाक भाड़ा चारि टाका बान्ह छैक। हिनका गाम पर आठ आदमीक परिवार छनि। छोट-छीन गृहस्थी छनि। कने मने खेत, सामान्य उपजावारी। आन समाज सभ गामेपर छनि। ई असगरे बाहर छथि। कुनूवा चलि रहल छनि। पुछे-छापर खुशी होइत कहलथि जे अपन देस-कोस मे जं काज भेटय त किएक लोक वेद वेणि एते दूर पर रहव ? एहने सन भावना प्रायः सभ समाजक छलनि।

रजौन पालीक भगेलन साहु (पचीस बर्ल) छुट्टा मजदूरी मे छथि। तहिना छथि छवीस बर्लक जुआन रामचन्द्र साह बनम स्थान छनि सिमरिया। गामपर छ आदमी क आश्रम। कमौआ असगरे। नैने मे बाबूजीक देहान्त भ गेलनि आ त परिवारक बोझ हिनके कंधापर। रामचन्द्र बी कने बेटी तेज छथि। स्पष्ट रहनि विहारो मे त कलकत्तान खुबने केलेह मुदा के देत हमरा सभ के नोकरी ? सभ अपन-अपन गोटी सुतारव पर लागल अइ। बाहरक—लोक के कान मेटेत छैक मुदा ओहिठामक लोक के पुछनिहार केओ नहि। रामचन्द्र

साहु पहिने खिचड़ी भाषा मे वाजब आरम्भ केने छलह परञ्च हमर मैथिली मे बिज्ञासक बाद अपनहि मैथिली मे उत्तर देमयलाछाह।

दड़िमा गोकक बिन्देश्वर साहु 'छतीस बर्ल' सं गप्प करैत रही त बड़फराइते पहुँचनाइ बाबुदेव साहु। बेंगड़ा निवासी जुआन। एह बारह बरिस सं प्रिमियर इन्टरमिडियट ने कान करैछी मुदा पाइ नहि छैए। महावीरबी डटलथिन—ई कि कुनू युनिवर्स के लोक छथिन वा नेता के हिनका ई सभ कहे छहुन। ई की करहुन। ई त पत्रिका मे छपयिन त पुछै छथिन। बाबुदेव साहु विधुभासन गेल। पत्रिका मे की हेलै से छपने।

प्रायः एह सं बेबाय स्थित छनि सदन मार्केटक जुगेवर मंडलक। लगभग साठिक उमेर भेलनि। डांड लीवि गेल छनि परञ्च कमेता नहि त खेताह की ? घर आश्रम केना चलतनि। बारह-तेरह बर्लक फेकन मइतो आ ओकर दोस लगभग ओही वयसक अवध यादवक स्थितिक चर्चे की कएल जाय। एहि वयस मे मोटा भाका उठौबाइक कसनाए भयावह थिक। परंच एहि दुनू वारक लेल बन-वन। भाका मे बैसल मल्ली मे हंसी-मजाक रहल छल जखन हम पहुँचलहुँ। ठीके, एहि मल्लीक बिलु बीनगी त भार भ जेतैक ने। एहि सभ सं फराक कथा-व्यथा छैक सुलेमानक। सुलेमान हमरा प्पानो पर नहि चढ़ैत, जं ओ अपन बेटीक संग अपन भाभा मे गप्प नहि करैत। उनटिक तकलहुँ त भाका मे बैसल, तौनी सं पीठ आ हुनू ठेहुन के लपेटने, जेबी सं बेरियाक कमाइ दू टाका बहार क अपन बेटीके राबुक भानस लेल दैत। गामघरक प्रति घृणा सं मन भरल छैक। गाम मे निवास नहि छैक। गामक नामो लेमय ओ नहि चाइछ। गामो पर जथा-बाल नहि छलैक। मात्र दू कटा बारी छलैक, जाइने तीमन तरकारी उपबवेत छल आखनवाली गामे-गामे दुमि बेचेत छलैक। अपने हरो चनेछल। मुदा पचास टाकाक कर्ज मे सभ स्वाहा भ गेलैक। आइ फूट-पाय पर भावि गेल अइ। बरख साते-आठे मेल छैक गाम छोड़ना। एहिठाम ठीके अइ कुनू हाहे वेरवा नहि। जतवे कमाइए ततवे खाइए। ककरो देगार नहि खटय पड़ैत छैक गाड़ि गंभनि नहि सुनय पड़ैत छैक। भाषा सं जुभना गेल जे सुलेमान मधुवनी अंचलक रहनिहार छथि। सामान्य तइ : एह एकरा लोकनिक स्थिति छैक। जीविकाक सुरक्षा उचित मजदूरी आदिक देखमाळ लेल कुनू संगठन नहि छैक। संगठन मेल छलैक परंच नेता त एहि वर्ग क लोक होइत नहि छैक। नेताक कराके जं होइत छैक आ ओ अपने हाथ सुतारव मे लागल रहैछ। एकरो लोकनिक संग सशह मेल छै। तखन परिवेश लोक के बहुत किछु सिखाइत छैक। इहो सभ एक (शेषांश पृष्ठ ७ पर।)



## ६ दिसम्बर, १९८० : एकटा अमिट संस्मरण

ई कहऽ नहि पड़त जे कोनो आंदोलनक पृष्ठभूमि बुझिबिबी वर्ग तैयार करैत छैक। कोनो सामूहिक समस्या लेल ई वर्ग अनायास एक जुट भऽ जाइत अछि। ई मानऽ पड़त जे मिथिला मे सेहो एना भेलैक अछि। समय-समय पर गोष्ठी, सभा मंच आ पत्रिकाक माध्यम सं आवाज उठा-ओऽ गेलैक अछि। मुदा एहि सब मे नीहित स्वार्थक प्रमुखता रहलैक। तथा कथित मैथिली सेवी मैथिली मिथिलाके भागू मे राखि अपन उल्लू-सोभा करवा मे ध्यस्त रहल। कोनो ने-कोनो तरहें अपन स्थान समाज मे बना लेबाक लेल लोक के ठकेत रहल। एहि सं मैथिली मिथिलाक काज पछुआइत गेलैक। आ मिर्जाफरक पताका फहराइत रहलैक। एकर फलत उदाहरण अछि वर्तमान बिहार सरकार आ ओकर मिथिलाक प्रति किया कलाप, मुदा मैथिल एहि-लफुआ सभ सं कहिया तक ठकाइत रहैत ? आ तकरा जबाब देलकैक ६ दिसम्बर, १९८० क दिन।

६ दिसम्बर, १९८० क पहिने तक लोकक धारणा रहैक छै मैथिल आंदोलन नहि कऽ सकैत अछि, अर्थात् खून नहि कऽ सकैत अछि। मैथिल पनिमरु होइत अछि, ते ओकर जोश आ गर्म-गर्म अभि-व्यक्ति चिनमार आ घूरे तक रहैत छैक, ओकर साहस आ पैरुल टाट खुसकावऽ आ भारि छाँटऽ तक रहैत छैक, ओकर बुधियारी ममिला आ परीक्षा पास करऽ तक रहैत छैक। मुदा, ६ दिसम्बर, १९८० एहि धारणाके मिथ्या प्रमाणित कऽ देलक। तथा कथित मैथिली मिथिला सेवी के दति आंगुर काटऽ पड़लनि। मैथिली के मजा कऽ खायबला निर्लेजक माथ ठनकि उठ-लैक। गोलेसी आ तिकम लगाकऽ मंच पर सुघोमित होबऽ बलाक होस ठेकान पर आबि गेलैक आ सभसं बेसी 'लोक-प्रति-निधि' तथा मिर्जाफरक छूटि गेलैक, ओकर कुर्सी डोडऽ लगलैक।

जुलूस गांधी मैदानसं आरम्भ भेलैक। विश्वास रहैक जे पटनाक बुद्धिबिबी मैथिलक अमार लागि जेतैक, मैथिलक भीड़ गांधी मैदान सं बँकऽ आर बँक छरि ठेकि जेतैक। एहेन विश्वास कऽ लेबा मे आशंकाक कोनो प्रश्न नहि उठैत छलैक। कारण एहि सं पूर्व जनता सरकारक समय पटना मे भेल एकटा आर प्रदर्शन जाहि मे पटनाक सूट आ टाई धारीसभ सेहो मैथिलीक सपूत कहबऽ मे लाजक अनुभव नहि कयने रहथि। मुदा एहि प्रदर्शन मे हुनका लोकनि के कोन भय, केहेन बाधा वस्त

कैलकनि नहि जानि सरकार ककर आ ककरा लेल ? तकर ज्ञान नहि रहलनि ? हाश्ट अछि जे एखनों तक मैथिलक अर्थ ओ लोकनि किछु सुझौ भरि तथा कथित सभ्य लोक तक सीमित राखबाक चेष्टा मे छथिमुदा, एहि गलत धारणाक निराकरण ६ दिसम्बर, १९८० क दिन कऽ देलक। असली मैथिल-पुत्र सभ मांटिक रंग लाल कऽ देलक। जौ आबो अपहत सभ हेर बनल रह्य त जनताह ओ, आ जनतनि हुनकर भविष्य। ई बात अवल्ल छैक—ने अपहत मरय ने छुतर छुत्य अर्थात् अपहत लगले नहि मरेत अछि। मुदा ओ मरत अवल्ल ताहि मे संदेह नहि।

ओहि दिन चोटाएल संतान सभ के दबाइ-बीरोक जरूरति छलैक। ओम्हर किछु लोक चिन्हार होबऽ लेल प्रेस मे पतियानी मे ठाढ़ छल। एम्हर ओकर संगी कुदरि रहल छलैक, ओम्हर ओ सभ अखबारक पन्ना मे अपन-अपन नाम छपवऽ लेल बेहाल छल। एहि सं बेसी निर्लेजता आर की भऽ सकैत छैक ? एहि सं बेसी घृणता आर की भऽ सकैत छैक जे सुचा आंदोलकारी लाठीक मारि सं ओषवाध मेल छल, आ ओम्हर किछु लोक सत्ता-धारीक ओतऽ चिन्हा-परिचय करवा मे, हुनकर स्तनन करवा मे लागल छलाह। वाह रे विषेक।

जे होइत छै से नीके होइत छैक। बहुत के चिन्हवाक मौका लोक के भेट-लैक। ओकर छल-बल-कल देखबाक अवसर छलैक। एकटा कहबीयो एहने सन छैक—कुक्रिये नाभो, कि सुक्रिये नाभो। ... केहेन हास्यास्पद बात—जे एगो बन्धु हमर दर्दक बीगेशा नहि कऽ, कहलनि—हमही दुसि गेलौ तऽ कहूना नाभो छपेत। हमरा लागल जेना ओ आर बलाक पुलि-सक हँडिया होथि। ... मुदा, ते कि लोक एहि सं इतोसाह भ जाइत ? ते कि हम अपन संवैधानिक अधिकार छोड़ि देव ? जौ मर'बत मांटि लेल जाहि सं हमर सभक शरीर बनल अछि। हमरा शरीर पर मात्र ओकरे अधिकार छैक जकर दूध पीबि हमरा सभक जीवन संच-रित मेल अछि। ६ दिसम्बर, १९८० एकर पक्का सबूत छैक। ओ दिन मैथिल संतानक जीवटक दस्तावेज छैक।

माय के माय कहवा मे लाज कथीक ? वयोवृद्ध शेखर जी, सर्वश्री भीम भाइ, प्रवासी भाइ गोकुल नाथ जी, पूर्णेंद्र जी एवं भाइ राजमोहन जी अपन कर्तव्य नीक जेका निमाइत रहलाह। मुखिया जी आ

विरंचि जी ? श्री चंद्रकांत खौं आ श्री पीताम्बर पाठक पूर्ण सक्रिय छलाह कि कैलौं से किछु नहि, आ कहलक त बड़े अधलाह। एकदिस प्रजातंत्रक रक्षार्थ पत्र-पत्रिकाक निष्पक्षता पर जोर आ दोसर दिस प्रेस पर आन्तरिक दबाव। प्रेस वल कऽ देवाक धमकी। मांटि-पानिक सन्तानक खून आर-बलक चौरास्ता पर बसल, से भूठ, निहत्था शांत प्रदर्शनकारी पर ताड़मतीड़ लाठीक प्रहार भूठ : मैथिली तीन करोड़क भाषा, से भूठ, मिथिलाक मुखलमानक भाषा मैथिली, से भूठ, अर्थात् सीता, जनक आ विद्यापतिक मिथिला भूठ। ... तखन सत्य को ? ... सत्य मात्र बिहार सरकार घोषणा, आ सत्य मात्र सरकारी झूठर द्वारा प्रेस मे समाचार के तोड़ि-मरोड़ि कऽ छापि देवाक बलाकार/रेडियो प्रसारण मे मनमाना इच्छा। समठाम इच्छा। ... जे मायक नहि भऽ सकल से आन ककर ? ... तकर अवि-स्मरणीय मेल ६ दिसम्बर, १९८० जकर मुख्य नारा छलैक :—

हिन्दू-मुस्लिम बोर जवान,  
हम सब छी मैथिल संतान।

बाहि सरकारक गणतंत्रक खाल ओड़ि लोक हितक इनन करव कर्तव्य छैक, जे ओ संविधान मे ताख पर राखि शासन कर'त, जे ओ गोली-डंडा हाथे निरीह बच्चा, कुशकाय बृद्ध अवला स्त्री पर निर्मम प्रहार कर'त, ओकरा पर भरोसा कयनाइ कोनो तरहक औचित्य नहि रखैत अछि। जे नेता लोकनि भूतपूर्व सरकारक समय अपना के मैथिली-भक्त साबित करैत छलाह, जे प्रतिनिधि लोकनि आस्वादन दैत छलाह जे सत्ता मे अवैत देरी लोक मांग के पूरा अवल्ल कर-ताह, हुनका लोकनिक चरित्रक कोन विश्वास ? सरकार मातृभूमिक संतान के एहेन कुख्यात संघ आ दल सं सम्बन्धित होयबाक निरावार घोषणा कऽ सकैत अछि बाहि दलक एक भाषा फर्मुला मे विश्वास छैक, जे दल मैथिलीक घोर विरोधी अछि, मिथिला सपूत के कहां तक अरबऽत ? आ जे नहि अरबऽले त ६ दिसम्बर, १९८० क दिन एकटा जगजियार अमिट चेहरे हति हास मे सदा सदा के लेल अंकित करैत मायक मुक्ति लेल संघर्षक शुभारम्भ कय-कल।

— सुशील

## शोणित दे शोणित मैथिलार्थ

मिथिला गौरव डा० लक्ष्मण भा मिथिला-मैथिलीक उद्धारक लेल आन्दोल-शंख फुकने रहथि आ क्रान्तिदर्शी बीर कवि राधवाचार्यक कलम क्रान्तिक चिनगी उगिलय लागल। मिथिलांचल सं प्रवासधरि पसरल मैथिलक बीच राधवाचार्यक विदनाद सुनाइ पड़लैक—शोणित दे शोणित मैथिलार्थ, प्यासें तकथल अछि खड़ग हमर। किन्तु गाम-घरक सुतल स्वनामधन्य मैथिल बंधु लेल घन सन। शोणित त दूर रहओ, धाम पर्यन्त देवाक कृपा नहि केलनि।

कारण स्पष्ट अछि। क्रान्ति बाध-बोनक फसिल नहि थिक कोनो गाल-विरीलक फल-फूल नहि थिक। ओ त अदभ्य जीवनो शक्ति, पौष पुञ्ज सं निःश्रुत लाल बाल, गरम-गरम चिनगी थिक जे अनुकूल वाता-वरण पबिते धक्कि उठैत अछि। एहि लेल समर्पित भावना, एकाम्र निष्ठा, धैर्य, साहस आ संयमक संग मोन मे उत्ताल तरंग जकां उमंगक लोल लहरि उठनाइ आवश्यक। किन्तु एतय त विद्यापति पर्वक मंच सं उत्ताल तरंग उठैत अछि। विद्या-पतिक पदावलीक संग उमिला नागरक आंचर, गोदइ महाराजक तबला आ अव-सरक पारखी राजनेताक मेष-गर्जन (वर्षा नहि) सं उत्ताल तरंग उठैत अछि। गुटबन्दी मे व्यस्त स्वार्थ लोछर, क्षुद्र स्वाभावक कतिपय कविक किल्लोल मे उठैत अछि—क्रान्तिक आह्वान—

डा० लक्ष्मण भा के गारि पदुब, राध-वाचार्य के कुहरेत छटपटात छोड़ि देव,

दामोदर लाल दास के बेहाल देखब आ विद्यापति पर्वक मंच सं मैथिलक गर्वक कमाल देखब।

आब ई स्पष्ट भ गेल अछि जे मैथिलक दूटा वर्ग अछि—समर्पित सेवीक आ सौदागरक। दुनूक अलग-अलग उद्येश छैक। मैथिली के अपने वपौती बुझयबला सौदागर वर्ग सदिखन मधुर झुझाव ताक मे बकध्यान लगौने रहैत अछि त दोसर दिस समर्पित लोक दिन-राति रचनात्मक कार्य मे व्यस्त। जं साहित्य के बात कएल जाय त आधुनिक मैथिलीक प्रकाशित साहित्य सं बहुत बेसी अप्रकाशित अन्धकारक दुनिवां मे पड़ल अछि। जं मूल्यांकन कएल जाय त निदिवते ई अप्रकाशित साहित्य प्रकाशित साहित्य सं बेसी विलक्षण आ स्तरीय अछि। परञ्च एकर रचयिता सभ स्वाभिमानी आ भाषा प्रेमी हेबाक कारणे सदा अनु-वचा मे रहला अछि, अनचिन्हार रहलाह अछि। ई बुझितहुं तथा कथित मैथिलीक कर्णधार लोकनि गुप्ती लघने छथि। सौदागार वर्ग समस्त सुल-सुविधा हथिया अपना स्वार्थ सिद्ध क रहल अछि। आ एहि दूटा विपरीत बिन्दुक बीच ठाढ़ छथि विद्यापति' एक दिस ताकि हंसेत छथि त दोसर दिस धुरिते आंखि सं नोरक धार बहर छोत छनि।

जय-जय भेरवि हजारो वर्षधरि सुनला आ गयला सं की हतैक ? नाघरि शुद्ध

शेषांश पृष्ठ ६ पर



## लकैती

आइ दू टा घटना घटले।

मेसक नोकर चाउर-दालि, तीमन-तरकारी कीन' बराकर गेल रहए। ओकरा छुरा भिराक, चौरस्ता पर सवटा छीनि लेलके आ तकर एक्के घंटाक बाद, माने एगारह बजे एकटा छोड़ा पोलरि मे नहाए गेले आ झूठे गेले।

एकटा हाज-बेहाज छे। चोरी, डकैती, छिनारी, हत्या, छुटि प्रभृति खबरि सँ आब ककरो कोनो तरहक उत्तेजना, कि आश्चर्य, कि तामतस ने होइ छे। यँह किछु दिन पहिने सात बजे साँझ मे दू गाटे कं घेरि क स्कूटर, घड़ी, रुपैया छीनि लेलके। जेना चौबक दाम बढ़ने लोक कम-स-कम समान कीन' लगैए तहिना एहन समाचार सुनि-सुनि मिर-मिरा क रहि जाइए आ साँझ मे घर सँ बहरेनाइ बन्द केने जाइए। ओना कहल जा सके छे जे सवठाम त इएह रामा एएह खटोला छे। मुदा लोक बत' रहत तबुके सुर-ताज गोल-माल हेवाक बेधी चिन्ता हेते ने।

जीवन—जेना बुझी चलैत रहै छे। पेशा अइ, अंक वं कुशती लड़वाक। ने वाभल रहो ओही मे। वरख समाप्त भेलेए से काज माने लेखा बढि गेनाइ स्वाभाविक छे—ताइ पर सँ एक त दाइ गोरे बड़ दोसर नहेलीहे। अर्थात् इहो देखवाक रहै छे जे लाभ ओतबे हो जाइ सँ कम-स-कम टेक्स लगे, कम-स-कम बोनस देव' पड़े, इन्फोमेट देव' पड़े, अन्य सुविधा देव' पड़े। मुदा एकरो आवश्यकता कहाँ रहि पैतै भविष्य मे। चियर बांड जिन्दावाद। कालुज सरकारक एहने समा-बान सब जं होइत रहले त मुनीमी-कला त जेत गताल खत्ता मे खेर...से लागल रही अंक स अंक मिश्र' मे। तखने ओ पहुँचल।

—अरविन्द बाबू!

—की छौ?

मुड़ी भुक्कौनहि पुछे छिए, अर पेशा मे लोकक मुखमंडल स बेसी महत्वपूर्ण आ ध्यानाकर्षक बुझ'इ छे केलकुलेटरक स्क्रीन पर उभैत-झुबैत हरियरका अंक सब।

—सुलोचन स सब किछु छीने लेलके।

—की?

एकबेर किछु बूझा मे ने आएल, जेना बेदरी अन्वल भ गेला पर अग्रम-वगारम अंक सब स्क्रीन पर आब' लगे छे।

—सबटा छीनि लेलके।

—की छीनि लेलके?

अंकाम्यास एक खास मोड़ पर आबि गेल छल। मुड़ी उठा सके छली से उठल।

ओकरा दिस ध्यान गेल। विलोचन छल—सुलोचनक छोट भाइ। पछिला मास एक नंबर महुआ एक पौआ आनि देने रहए हमरा लेल। एक कनमा पीबि क चौबीस घंटा सुतले रही। आश्चर्य लगैए जे लोक बोद्का पर एत्ते जोर किए दे छे?...

सुलोचन-विलोचन इजारीबागक महतो अइ। ओना ई दुनू त क्रमशः मेसक नोकर आ करखाना मे ठीका-मजूर अइ मुदा बेसी महतो सब पानि उधवाक काज करैए। महतो, पानि उधनिहारक पर्याय छे एत' कस तेलक दू टा टीनक एक भार पानि, पुरान गहिनी छ रुपैया मास, नव भाठ रुपैया मास, खुदरा भाठ आना स ल'क एक रुपैया भार आ कम्पनी रेट बारह भारक एक हाबरी माने सवा छ रुपैया पानिक अंका छे एत'।

—तो केना एत्ते एत'?

विलोचनक ड्यूटी दोसर शिफ्ट मे रहै छे, अर्थात् दू बजे दिन स दस बजे राति चरि। एखन एगारह बाजि रहल छे।

—भोर मे बजौने छल भैया।

सहकमी धौंदिआ गेला। प्रश्नक बरखा होब' लागल, सुरक्षित वातावरण मे जे स्वभाविक छे से जिज्ञासा, उत्कंठा, आश्चर्य व्यग्र होब' लागल।

—की भेले?

—की छिनलके?

—कत' छिनलके?

—कत्ते गोटे रहै?

—केना?

सबटा क्रमशः वक्तव्य, वक्तव्य क्रमशः शिकाइत आ से अंततः समर्पणक मुद्रा घ' लेलक।

—दस बजे दिन मे एहन कुकांड।

—राति-विराति जे ने हो सेह अनर्थ।

नागाजुन जेना अही क्षेत्रक लेल लिखने होथि' टंक सेर तो बम विकता है' से बम, अल्लूक भाव स बिकाइ छे एत' एक तरहेँ कुटीर उद्योग भ गेल छे बम बनौनाइ साँझ होइत देरी ओइ पार स माने लाइनक ओइ पार स धूम धड़ाम आरम्भ भ जाइ छे भोर सुनबे जे डाका पड़ले की दू दलक संघर्ष छले की टेस्टिंग होइ छले की रखले-रखले फुटि गेले एक रातुक बात कहै छी एक्केस टा आवाज भेले बेरा-बेरी। भोरे दूधक दाम साढ़े तीन रुपैया भ गेले। राति मे दूधक विकता सबहक बेसार रहै, सर्वसम्मति व आठ आना प्रति सेर दाम बढ़ेवाक प्रस्ताव पास भेले ओ एक्केस बमक सलामी अही परित प्रस्तावक लेल ठोकल गेल रहै से एहिना होइत रहै छे, आ लोक हतप्रभ भेल जा रहल छे। लगे मे त चेक पोस्ट छे।

—ओइ चौक स आशू बंगाल विहा-रक सीमा छे। सीमा पर चेक-पोस्ट छे। अस्सी वर्ग माइलक क्षेत्रफल मे एकटा साधारण पुलिस चौकी सेहो छे अपन समस्त सर्वशक्त विशेषताक संग। चौक पर सेहो

एकटा ने एकटा खाकी धारी रहिते छे—सबदिन।

—पुलिसके त अपन हिस्सा स ने मत लव छे। ओकरा कोन गर्ज छे हस्तक्षेप करवाक?

एहना मे घटना पर घटना मोन पड़ लगे छे, किछु दिन पहिने एकटा ट्रक बला मने चौअन्नी ने देलके से चौक पुलिस ओकरा ट्रक पर लटक गेल झाइवर केबिन दिस आ बहत 'कर' लागल झाइवर सेहो गाड़ी आस्ते अवस्स केलक मुदा रोकत किछ? चौअन्नी पाटी स डर कथीक? अंततः कहाँन पुलिस शिफ्टिंग पकड़ि लेलके संतुलन बिगड़ले आ लगेक स्टुडिओ स बहराहत एकटा परिवार पर चढ़ि गेले झाइवर आ पुलिस संगहि पड़ाएल मर्द आ बेटी त तत्काल मरि गेले-मर्द डेड। पत्नी के लादे के अस्पताल छ बाएज्वाले ओकरो रस्ते मे प्राण छुटि गेले। पेट मे कच्चा रहै, जान मालक आलुख्वाक दोसर नाम छे बी० टी० रोड।

—सोभा बला पूल त हरदम जामे रहै छे।

—खेहारला पर त अवसरे पकड़ल जा सक' छले।

—सुलोचना के हल्ला कर चाहै छले...

सीमा पर दह छे बलुआइ दह अही बलुआइ दह पर पूल छे महाबूद पूल बिहार दिस एकटा बोई ठोकल छे अधिकतम भार पाँच टन' खालियो ट्रक पाँच टन स भारी होइ छे दिन मे कम स कम दू बेर पूल जाम होइ छे माल ट्रक सबहक दू बगली लाइन, शिक्षा, कार, टेम्पो आ लोक। पूल मले-रियाक रोगी जकां थरथराइत रहै, पूल जाम रहै छे। खेहारला पर डकैत पकड़ल जा सक' छले। सुलोचन हल्ला ने बेने हेते।

—मुदा हल्ला केतहु स लोक सब दौड़िते?...

—लोक सब दिन प्रति दिन कायर डेरूक भेल जा रहल छे।

—सबके अपन जान के मोह छे,

—के डकैत स दुश्मनी मोल लेत ग हं, आन त जहान। अपन गरदनि आ पेट बाँचल रहक चाही अनकर धावक चिन्ता केला स अपनो लसेदू लगवाक सोरहनी आशंका त रहिते छे।

—जीवन अवग्रह मे पड़ल जा रहल छे

—लोक कोना बाँचत, कोना संसार चलाओत?...

—बात-बात पर बम-बाजी होब' लगे छे, चक्कू चमक लगै छे गोली चल लगै छे।

विलोचन कननमूँह छले, हकवका गेल ओ हमरा दिस देखैत रहल, हम ओकरा दिस देखैत रहलिये। संभवतः ओ चाहे छल जे अरविन्द बाबू किछु एहन करता आ की बजता जाइ स अइ स्थिति स उम्रास हैत हमरा ने बुझा रहल हल जे की बाजी अथवा करी मैटेरियल कंभ्रमशन, सुटिलाइजेशन परसेडेज, प्राफिट रेशियो,

लंच डकैती एक्के मे मिश्र भेल माथ मे बोलमारि कर' लागल रहए।

—कत' छौ सुलोचन?

एकटा सहयोगी हमर सहायता करे छथि ओना असल मे हमर सहायता ने छल ई। सहकमी लोकनिक वक्तव्य उदाहरण भेल आ रहल छले केना ककरा संगे की घटित भेले रेल मे रस्ता पर, बाजार मे, किछु दिन पहिने किछु साल पहिने, भौखिक देखल, कानक सुनल, देहक भोगलछौंदा। क झूब-नाइ सेहो मिश्र भेल जा रहल छले बहस मे तखन ओकरो उदाहरण सब अविते कलन, ककरा गाम मे, के झूबले तखन कथा अविते लहाश बराब' पर, पुलिस स मोट-माट कर' पर, सबके, अइ सबहक कहवाक लेल एकटा क कथा त रहिते टा छे, मुदा ई कोनो सरकारी कार्यालय त छिए ने जे काब के तिलांजलि द, चाह पिवि-पिवि रहत एहन कथा सबहक पारायण केल जाइ की सुनल जाइ। से बात समाप्त केनाइ आवश्यक छले, कखनो मैनेजर आबिक गरजनाइ आरंभ क सके छले हमरा किछु कुराइए ने रहल-जेना बचकर लागल हो। सहयोगी अइ स्थिति के भंग करे छथि। एकरे कहै छे पुरान चाउर।

—गेट पर।

विलोचन आर मिरमिरा गेल जेना इएह साधारण सन प्रबन कचहरीक सम्मान होइ। हम केलकुलेटर के ऑफ करे छी। एत्ते काल स चाछुए छल।

—बचबही।

आइ वाम के जत्ते जल्दी संभव हो खतम केनाइ आवश्यक लाग' लागल लंचक व्यवस्था सेहो देख' पड़त। लग-पास मे नीक होटल ने छे। दूर जाए पड़त जेवी टोबिक, देखि लेलौ।

—वात मुदा बड़ विचित्र बूझा रहल छे।

—हमरा त मुदा संदेह भ रहल छे।

—संदेह हमरो भ रहल छे। सूत्रोचना सत्य ने बाजि रहल छे।

—सरासर बदभावी क रहल छे, नमरी खचर अइ।

—बड़ी साइकिल बेचि लेलकए अथवा ककरो बारने छले सेह छिनि-छोड़ि लेलके।

—एत' हमरा सबके नाटक देखा रहलक। सार के फूटानी ने देखे छी।

एहन त ई ने बूझाइए।

हमर क्षीण प्रतिवाद छल। दू वरख स त देखि रहल छिए कहियो कोनो तरहक गड़बड़ी ने केने छल कम-स-कम कम नबरि पर ने आएल छल।

एकरा सब के अहाँ ने चिन्है छिए अरविन्द बाबू, ई चकरवालि सब अहाँ ने बूझबे रग-रग बूझल अइ हमरा।

—अरविन्द बाबू त बकरे तकरे पर विश्वास क ले छथिन। एकरा आब मक्खन लगैनाइ बुझिओ अथवा ने मुदा सब आगो-



आइ प्रोफेशन मे अपना स सुपिरियर के विनम्रता रहनाइ आवश्यक हुन्छ बाइ छे छे बल्ले अन्तर मेरु तल्ले ।

—एकटा भार बात छे । सुलोचनमा परतु हमरा स पाइ मांग' आएल छल ।

—देखिये ?

—नै ।

रूपैया ओ हमरो स मंगने रहइ । ओकर सार आ बाप आएल रहै । सरबेटीक विवाह छल । तीन सौ रूपैया मंगलक, हमरा ने छल-सत्ते ने छल । कहलिये, आन ठाम कोशिश कर । संभवतः सेहो ने भेलैत सौभ मे डेरा पर आएल कहलिये एक सौक व्यवस्था क देवो बांकीक जोगार कराळे । से ओ रूपैया एखनो जेबी मे अइ ।

—उह त ने केलेक ।

—निश्चित रूप स साइकिल-घड़ी बेचि क' रूपैया घर पठा देलक पता लगा लिअ ओकर बाप आ सब चलि गेल हेलै ।

—तखन त एकरा एत' देनाइ उचित ने हैत ।

—कने सोचिक देखियौ जे दिन देखार डकैतो करत से दू-तीन सौके लेल ? घड़ी फालतू छल की औ तिवाड़ी बी ? हं त देहु सौ मे नव अनने रहिये कचे बरख चलोखिये भा बी ?

—साइकिल भा बी बला छलै-सेकेण्ड हैड । ओकर कचे देते तिवाड़ी बी ?

—साढ़े पांच सौ मे नव अनने रहिये । कचे बरख चलोखिये भा बी ?

—तीन साल । डाइरेक्टर साहेबके सनक सवार भेलनि आ ओकरा दिया देलनि अहबेर त फालतू साइकिल अनलौइ अहाँ ।

—चल, ने आवइ त अंगने टेढ़ ? साइकिल राख' जने छी अहाँ ?

बात-बात पर उतराचौरी केनाइ हुनू क विशेषता छनि । ओही बिच मे तिवाड़ी बी खीकार केलनि जे ओइ साइकिल के दू सौ-अढ़ाई सौ स बेसी ने देते केओ ओना ओ इहो जोड़लनि जे भा बी एक-दुसरे भरफंडी बना देने रहलनि साइकिल के । अही बात पर हुनू मे फेर आरम्भ होव' लगलनि मुदा तखने दरवान आवि गेल ।

—तयो कम स कम तीन सौ त भये गेल हैत ओकरा ।

—पाइ भारि लेलक आ भूठे के नेप चुआ रहलए ।

एक मिनटक लेल मानि लिअ जे सत्ते छनि लेलक त एकर अपन की गेल ? घड़ी साइकिल रहै कम्पनीक आ चाउर-दाहि मेसक । तीमन-तरकारीक जे पाइ देने रहिये सेहो मेसक दू चारि थापर जं देने होइ सैह टा भेले ओकर हिस्सा ।

ई छला मेस इंचार्ज । हिनका मेसक मील चार्ज बेसी भ जेवाक चिन्ता स लेलकनि संभवतः मुदा टीके ओकर अपन कहाँ किछु छिनेले । अत्ते बेर मेसक चर्चा होइ छे लंच मोन पड़ि जाइए भूख आर जोर स लागि गेल ।

× × ×

दरवान आवि क' सुचित केलक जे एकटा लगक देहातक दस बारह बरखक छौड़ा पोखरि मे हुवि गेल । कम्पनीक गाड़ी स ओकरा लोक सब अस्पताल ल जाइत गेल ।

आइ गमीं बेसीए छल । मुक्ताइ छल जे उसिन क राखि देत चिरिक, सुलाए दे बला जे कहवी छे तेहने रौद । कम्पनीक एरियाक पोखरि छे नहेवाक आ यत्र कुत्र काज करवाक लेल पानि सफाई होइ छे ओइ पोखरि स । चाकर त कम्मे छे मुदा बड़ बेसी गहौर छे । छौड़ा उमंग मे कने भागू बढि गेल आ हुवि गेल कहना क' लोक ओकरा बहार केलेक ।

—कोनो गड़बड़ त ने हैत साहेब ? दरवान कम्पनीके इन्साब भ जेवाक शंका प्रसित छल ।

—नै, एहन कोनो बात त ने हैवाक चाही ! हम ओकरा आवल्ल केलिये ।

—पूछलकए ने ?

दरवान पूर्णरूपेण आवल्ल होव' चाहे छल ।

—ने पुछि क त ने गेलए मुदा एहना हाल मे पूछवाक होख रहै छे लोकके । तौ जाइ ।

सुलोचन आवि गेल ओ आइल छल दरवानक संगहि मुदा पाछूए ठाढ़ छल । संभवतः प्रतीक्षा क रहल छल जे दरवानक बात खतम होइ तखन सौभा बाइ । टग हनैत आएल मनुभाएल लटुभाएल दाढ़ भेल ।

—की भेलौ सुलोचन ?

—बाबू । सबटा छीनि लेलक ।

—केना छीनि लेलकौ ?

—समान लक चौक पर एलिये त एकटा जान-पहिवानी भेटा गेल । ओ अपन बेग हमरे धरा क गेल पान खाइ छे । तखने तीनि गोटे आविक धेरि लेलक आ पेट मे चक्क भिरा देलक ।

—हल्ला किछ ने केलही ?

—कहलक 'हल्ला करवे त फाड़ि देवी । कलेमेचे निचा मूहे तकैत रह एली-ओली तकलै त बुझि जा ।

—तखन ?

—भोरा, साइकिल भा घड़ी ल लेलक किछु खुदरा पाइ रहए से आ जेबी स चाभी बहार क लेलक तावत ओ जान-पहिवानी सेहो आएल । ओकर बेग त पहिनिह हमरा स छिनि नेनहि रहै । चक्क भिरा क ओकरा जेबी हंसोचि लेलक । लगे मे एकटा टोक दाढ़ रहै, ओही पर चढ़िक भागि गेल ।

—चाभिओ ल लेलकौ ?

—हं

—तोहर जान-पहिवानीक की सब लेलक ?

—आठ सौ रूपैया रहै बेग मे बैक मे जमा कर' आएल रहै । जेबीयो मे बीस पच्चीस रूपैया रहै, घड़ी रहै ।

—मेसक ताला तोड़' पड़तौ ?

सुलोचन चुप्पे रहल । चाभी हेरा गेल त ताला तोड़हि पड़तौ ।

—ई चाफे एकर लापरवाही छिये ।

हिनकर टिपनाइ हमरा नीक ने लागल सुलोचन के डंठलधिन ताइ दुभारे ने, हमरा वातांजप मे अगन सुपिरियर हेवाक अंदाज मे मुखक्षेप केलनि तँ अखल मे, हिनकर चालि हमरा एक्कोरत्ती ने सोहाइए ।

—हमर की लापरवाही भेलै ?

सुलोचन मिरमिराएल ।

—चाभी ल क किछ गेलै बाजार ?

—त की करितिये ?

—दरवान लग जमा क क जेवाक चाहे छौ कोनो ओ तोहर घर छिओ जे लाट साहेब बकां चलथौ चाभी नचबैत बजार ! हजार बेर कहि चुकल छी । सब काज मे नबाबी । पांचो ताला आव वेकार भ गेलै ? डेढ़ सौ त लगावे करत । की औ तिवाड़ी बी ?

—बत्तीस रूपये अनने छलिये । गोद-रेजक छलै ।

—लगौलही कम्पनीक सात-साढ़े सात सौ मे हरदिचून ।

ओ बरस रहल छलनि आ हम खौभा रहल छलौ । नोकरक सोभा मे हिनका स भगड़ो ने केल जा सकै छल । अपने राजदूतक चाभी संगे ल जाइ छथि कलकत्ता आ अलीगढ़ । ओना हमहुं स्कूटरक चाभी जमा क क नहिइ जाइ छिये...बात खतम करक चाही । समय सेहो भेल जा रहल छलै आ भूख तेज भेल जा रहल छल । बातक सूत्र पकड़लौ ।

जो मेस ताला तोड़वाक उपाय कर आ देखी जे लंचक कोनो व्यवस्था भ सकै छे की ने ।

—कहाँ छे कोनो समान ?

—किछु ने छौ ?

—भात आ दालि बना क गेल छलिये । ओकरा जेना भूद मोन पड़ल होइ ।

—अबछा । तो जो गेट पर स ड्राइ-वर के पठा दे ग ।

—हुनू गाड़ो त गेल छे ओगदरे ।

—किछ ? एक्केटा स ने ल जाइत गेलै छौड़ा के अस्पताल ?

—दोसर गेलैए अपना डाक्टर साहेब के बजाव' ।

—ओहो । हो...

साढ़े एगारह बाजि रहल छलै । आन दिन पिउन साढ़े बारह बजे मोन पाइ छल तखन होइ छल जे आव उठक चाही । आइ एखने स अक्कड़ भूभा रहल छल । खेवाक लेल बाण पड़त होइल । मुदा गाड़ी आओत तखन ने । पता ने कत्ते देरी लगते ।

सब अपन-अपन काज मे लागि गेल छल । मेस सेंबर सब मुदा अनमनाएल

सन । रहि-रहि क हमरा दिव देखैत आ गाड़ीक स्वर अकानैत । हमहुं कागत-पत्र सरिआव लागल रही । दरवान दोड़ल आएल । सब साकांक्ष भ गेल ।

—छेड़ा त मरि गेलै साहेब ।

ए ।

सबहुक स्वर एक्के बेर उठलै आ निस्तब्धता पसरि गेलै । मात्र मशीनक स्वर आवि रहल छलै । जेना सब मनुख वीक भ गेल हो । गाड़ी आव मे त भारो विडम्ब भ जेतै ।

अइ खचराह छौड़ा के आइए, सेहो एखने झुंझाक छलै ! चूफी भंग होइ छे । एकटा मेस-भुक्ता के नहिइ रहल गेलनि ।

× × ×

मोन-मेस निखलैत, मिमांशा करैत बारह बजाओल । मेस पड़'चलौ । एखन पांच गोटे की किछु सदस्य बाहर गेल छथि । सुलोचन ताला तोड़ि चुकल कल । एक्केटा तोड़' पड़लै । बांकी क ड्रिंकेट चाभी भेट गेलै । दिन मे आटा-रोटी आधा भात चले छे से ताही अनुपात मे बनल रहै । ओकरा उदरस्थ केल गेलै । आइ केओ, कोनो तरहक शिकाइत ने केलेक । भात-दालि मे शिकाइतौ की भ सकै छलै ।

—मोटका चाउरक भात छौ ?

मोटका चाउर सुलोचनक लेल रन्हाइ छे ।

—नै, काहिइए सचि गेलै । आइ अने छलिये ।

× × ×

एकटा गाड़ी आवि गेल रहै । ड्राइवर डाक्टर साहेब के घर तक छोड़ि, एलनि तँ देरी भेलै । पांचो जन सवार भ क पांच माइल दूर होइल इन्निवास गेलौ । सीबनक पहिल नियर-सेयानक उद्घाटन भेलै । अप्रैल आरम्भ छे तँ पहिल । टोटल एक सौ पाचासी रूपैयाक बिल उठलै । मेस इन्चार्ज देलनि । पान खेवाक लेल फेर एक माइल आगू गेल गाड़ी ।

शुर्ती काल मेस इन्चार्ज पूछलह ।

अइ रूपैयाक, माने एक सौ पचासी रूपैयाक की करवे ?

मेस खर्च मे देखा दिओ । खाता त भोरे मे छलै ने ?

अइ बेर त बत्ते जे एडमिस्ट क सकी । पानक पीक सम्हारेत हमर उत्तर छल ।

सम्मिलित ठहाका मे इजनक आवाज एक बेर हुवि गेलै

—कुणाल

★



रेल डकैती

## प्रशासने लकैत अछि

रेल-दुर्घटना तथा रेल डकैती आइ-कालि भारतीय रेलक दिनचर्या नका भ गेल अछि। समाचार पत्रक पाठक लोकनि सेहो एहि तरहक घटनाक समाचार या त पढ़ित नहि छथि वा जं पढ़वो के-नि तं वड़ सामान्य ढंग सँ। स्वभावतः हुनकापर कोनो प्रतिक्रिया नहि होइत छनि। घटना भनहि छोट सँ छोट हो वा १२ नवम्बरक साठा अगत सन भा ६ जूतक बदलाघाट सन पैघ सँ पैघ किछक ने हो। तँ भरिसक लोक ई नहि जानय चाहैछ जे बखन एकटा बगी थकुचा भ गेलक तखन छ-ए आदमी केमा मुइछ हेलक बखन सात सात टा बगी कोशीक पेट मे समा गेलक तखन सतरिह आदमी केना मुइछ हेलक ? तँ लोकक मन मे भारतीय समाचार पत्रक प्रति जकर समाचार मे मिलियो भरि सत्यता नहि रहैत छक घुणा नहि जगैत छैक। लोक नहि जानय चाहैत अछि जे प्रेस-समाजीनताक बाहि लेल प्रेस बला सभ चिचिया रहल अछि असली अर्थ 'बलाकार' 'वर्णयुद्ध' 'धर्मयुद्ध' आदि जनविरोधी समाचारक उत्पादन प्रसारणे टा किएक होइ छइ। परञ्च एकटा भुक्तयोगी केँ इतिहासक समाचार पढ़ि प्रतिक्रिया अवश्य होइत छैक आ तेइ प्रतिक्रिया हमरा लिखवा लेल बाध्य केलक अछि।

घटना बड़ छोट अछि समाचार पत्रक भाषा मे। पटनाक एगो समाचार पत्रक अनुसार लगभग आवादर्जन लोकक सामान डकैत ल गेलक। लगभग शब्दक अर्थ अहाँ स्वयं लगा ली से हमर अनुरोध। ओना अहाँ अगो सोचि सकैत छी जे डकैतक दल मे छलक कतेक लोक आ ओकर सभक आवश्यकता कतेक सीमित छलक जे मात्र लगभग आधा दर्जन लोकक सामान लय बाँकीक जी-जान बकसि देलकैक। सत्ये संतोष नामक वस्तु एखनो कम सँ कम डकैत मे त छैक।

घटना विगत ८ नवम्बरक थिक। गाड़ी टाटा मुबमरपुर एक्सप्रेस। थोटावर क एकटा डिब्बा लगभग १२५ व्यक्ति, जाहिमे गोठ दशक महिला छलीह अपन-अपन जगह देने जखन गाड़ी खुजैत अछि। गाड़ी जखन बरौनी मे रकैत अछि त डिब्बाक लोकक संख्या दोवर भ जाइत अछि। ठीक-ठीक त नहि कहि सकैत छी, परञ्च किछु दूर गेलाक बाद गाड़ी फेर बिलमैछ आ फेर चलि पड़ेछ। रातिक लग-भग साढ़े एगारह बजे जखन राजेन्द्र पूलपर प्राय, बीच-बीचवा मे गाड़ी पहुँचैछ त डिब्बा मे एगो दल आतंक मिश्रित कोला हल सुनाइ पड़ेछ। पश्चात् देखल जाइछ जे छुरा पिस्तौल सँ लेछ गोर दसक लोक पर्सि-

जर केँ मारेत पीटैत नगदी बड़ी रेडियो तथा अन्य जेवर छीनि रहल अछि। हमरो पेटी के छुँ सँ फाड़ि रेडियो तथा टेबुल बड़ी ल लेलक। संयोगवश हम शेष मे रही आ ओकरो सभ केँ उतरबाक इइवड़ी रहैक तँ हाथक बड़ी कोनहुना बंछि गेल गाड़ी बरहिवा टाशन पर हुनू प्लेटफार्मक बीच लकवाक अवस्था मे भेलक। डकैतक दल उतरि गेल आ संगहि गाड़ीक गति तेज भ गेलक। गाड़ी ऐकवेर ब्यूल मे रुकलक त हमरा लोकनि स्टेशन मास्टर केँ कहलियेक तखन एक व्यक्ति पेट मे छुरा छगल छलक तकरो दबाइ विरो भेलक। फेर पुलिसक आगमन भेलक आ हमरा लोकनि लगभग बीच आदमी सँ बचान लेल गेल।

आज जं समाचार पत्रक रिपोर्टर विचार करी त स्पष्ट भ जायत जे प्रकाशित रिपोर्ट पूर्णतः मनगढ़न्त अछि, फूसि अछि। एहि तरहक रिपोर्ट छपवाक पाछा निश्चित उद्देश छैक असामाजिक तत्व केँ बढ़ावा देनाइ, रेल प्रशासनक अक्षमता पर भ्रान्त देनाइ। आ येह थिक भारतीय पत्रका-रिताक असली चरित्र।

आज कने घटना पर विचार करू। सुरक्षित डिब्बा मे प्रवेशाधिकार मात्र ओतवे लोक केँ रहैत छैक जे स्थान सुर-क्षित करबोने हो। तेहना अवस्था मे जं बरौनी मे ओतेक लोक दूकि गेल त निश्चिते टी० टी० साहेबक अनुकम्पा सँ कारण हुनको आमदनीक जरिया त वेह छनि। ओना डकैतक दल बरौनी मे उठल वा तकर बाद जखन गाड़ी बिलमल ततय से निस्तुकी त नहि कहि सकैत छी—परञ्च बरहिवा मे जेना गाड़ी थमकल आ तुरते स्पीड पकड़ि लेलक—ताइ पर विचार करी त स्पष्ट भ जाइछ जे ड्राइवरक साठि-गांठि डकैत दलक संग छलक। स्वयं टी० टी० महोदय सेहो घटनाक समय उपस्थित नहि छलाइ। हुनकेँ बयानक अनुसार भीड़क कारण ओ गाड़क डिब्बा मे छलाइ। डिब्बा मे पुलिसक कोनो व्यव-स्थाए ने छल आ जं रहवे करैत त ओहो टी० टी० जकाँ घटनाक समय बाहरे रहैत। विचारणीय इहो थिक जे एहि अंचलक ई पहिल घटना नहि छल।

स्पष्ट छैक जे रक्षक भक्षक अछि। रेल प्रशासने डकैत अछि। जं उपरका कोनो अधिकारी एकर अपवाद होथि आ रेल प्रशासन केँ एहि कलंक सँ मुक्त करय चाहथि—त प्रेसबलाक अनुकम्पा सँ हुनका लग सही रिपोर्ट जाइए ने पाओत। जनता मे अस्वक सामने प्रतिरोध करवाक मनोबल रहैत ने छैक संगहि आनो व्यवधान रहैत

छैक। कोनो आवश्यक काज सँ नियत समय पर पहुँचनाइ वा नोकरीक हाजरी। तँ सम्पत्ति गमायो केँ भमेला सँ छुट्टी चाहैत अछि। आ एहि तरहें ई घटना विदेसी कर्म सन दिन हुनका राति चौगुना बढल जा रहलए।

—उदय कान्त मिश्र

### शोणित दे शोणित मैथिलार्य

अन्तःकरण मे भेरवीक नाद, कल-कल निनाद नहि होयत।

इर्षक विषय जे हमहर दू वर्ष सँ जन सामान्य मे चेतना आयल। मातृभाषा प्रेमी प्रवासी मैथिल खूब जोर-शोर लगौ-लनि अछि मुदा प्रवासी मैथिलक आन्दो-लनक बात, हुनक गर्जन कि गाम बरि पहुँचि सकत ? मैथिली मुक्ति मोर्चा अथवा अन्य कोनो संस्थाक मेव मन्त्र स्वर सँ तखने गाम-घर जागत बखन गाम घरक सरबमीन पर मैथिलीक हेतु संगठन होमय। मुदा से अछि नहि।

गाम-घर मे विद्यापति पर्व नहि मनौल जाइत अछि। पेघ-पेघ शहर आ राजधानी मे एकर आयोजन आदर्श अछि, जाहि सँ सरकारक कान पर डाकिन पड़य। मुदा एहि चोटक प्रभाव दूर-दूर बरि पसरल गाम पर तखने हैत जखन एकाम्र निष्ठा, निष्पक्षता आ दलीय भावना सँ उपर उठि केँ आह्वान केँ जेत। परंच स्थिति त एहने अछि जे शोणित ककरो बढल आ शहीद कियो दोसर कहबैत अछि। राधवा-चार्य कतबो युग-युग धरि विद्रोहक शंख फूकयु—शोणित दे शोणित मैथिलार्य कतबो हम सभ बय बय भेरवि गाबी, कतबो विद्यापति पर्व मनाबोल जायत, अपन गामघर मे मैथिली ओहिना अवहे-लित उदास रहतीह। यावतधरि यथास्थिति बनक रहल, मिथिलाक छितजपर दुर्दिनक कारी मेव मइराहते रहत।

बैद्यनाथ विमल

## बोनिहारक गीत

चढ़ा ले रे बुधना तँ हंसुआपर शान रहो॥  
हंसुए मे शान अपन हंसुए गुमान हइ  
हंसुए हइ अपन परान आर जान रहो॥

हम सभ कमाएब आर खाएत केओ आन  
लागए छगुन्ता ई हइ केहन विधान  
ककरा ले' धर्म कर्म ककरा ले' देश हइ  
अमरुख के ठकवा ले' हइ भगवान रहो॥

सोनित सुखा क पसेना बनेलिऐ  
तकरा चुआ क जे खेतो पटेलिऐ  
बगिले तँ धरती ई सोना सुगन्धि भरल  
मरुआ, खेतारी, गहूम आर धान रहो॥

रोपने छी कटबे आ घर अपन भरबै  
अन्नक अभावे ने आब हमे मरबै  
ठकलक बहुत मुदा आब ने ठकेवै हम  
कालो सँ लड़बै अरोपि देवै जान रहो॥

—राम लोचन ठाकुर

With the best compliment from :

★

## ASHOK ROAD LINK

9, Munsri Sadruddin Lane,  
Calcutta-7



# एकटा गोपनीय पत्र :

## संदर्भ मुख्यमन्त्रीक घोषणा

प्रसंग मैथिली

ओमान् स्वानामधन्य सम्पादकजी महोदयजी के नमस्कार।

आगा हाल-सुरति ई जे भरि छितनी उमेद छल जे बाबा विद्यापतिक वली मे अहाँ सँ भेट होएत आ भविष्यक गप शप करब। पटनाक चेतना समिति जखन सभ बेर जवाबी नोतिवे अछि तखन अहाँ छुटि जायब तकर संदेह केना कएल जा सकैत छल। परञ्च जानिय बाबा वैद्यनाथ जे अहाँ के नहि पाबि जे हमरा कतेक कचोट भेल। ओना अहाँ के नोट नहि गेल आ नहि पहुँचलौं से नीक भेल। हमरा त पूरा-पूरी क्वीटल भरि विश्वास अछि जे जे अहाँ रहितौ त शुभ-शुभ के कलकत्ता आपस नहि जा सकैत छलौं। अहाँ पूछब जे तेहन कून बात भेलैक एहि खेप। त सेहो सुनिश्चित लिये।

अहाँ के त जनले होएत जे चेतना समिति जन्मकालहि सँ प्रतिवर्ष जे बाबा विद्यापतिक वली मनवेत आयल-ए से आन संस्था सँ अपन फराक महसूस रखैत छेक। जतना टाका ई अखरे जवार खुशबा मे खर्च करै-ए, ततवा समस्त प्रवासी संस्था मिलियो के ने क सकेछ। अहाँ सभ ने त फरक-आलोचना केने रहिश्क जे एहि टाकाक अबो जे विद्यापतिक बीह पर खर्च कएल जाइत त आइ ओहिठाम नहुँया-कुकर नहि भुक्ते खोपड़ीक स्थान पर भव्य-भवन शोभायमान रहिते। परञ्च इहो त एही संस्थाक विशेषता छेक जे प्रतिवर्ष राज्यक मुख्य मंत्री, राज्यपाल तथा अन्वयन्त्र मंत्री लोकनि के बिभो करा आनि लेख या हडो लोकनि प्रतिवर्ष मैथिलीक लेल सोन महल बनेबाक घोषणा करैत रह-लाह-ए। गत वर्ष जे एहि सनातन नियम मे व्यवधान भेलैक त एहि लेल निश्चित दोखी किछु अगती छौंडा सभ छल, नेकि ई संस्था वा मंत्री महोदय। कहूँ त भला, ई केहन विचार-नियार जे स्वनामधन्य मुख्य मंत्री के पनहीक माला सँ स्वागत कएल जाय। आ तँ जे मुख्यमंत्री महोदय पतनकान ल लेल त वेनाइए की ? त से जे कहैत छलौं, एहि बेरक स्थिति सामान्य छलैक आ तँ मैथिल कुल-दुपण, बिहारक बड़द-पुत्र, वन-प्रतिनिधि, दुर्गामधन्य, मुख्य मंत्री प्रवर श्री श्री ८०१ श्री डा० श्री जगन्नाथ मिश्र जी उपस्थित छलाह। ओ भरल सभा मे उन्मुक्त कंठे घोषणा केलनि जे आइ दिन सँ ओ मैथिलीक निमित्त किछु नहि करता। ओना ओ इहो कहलनि जे जखन लोक हुनकर सभ काज के मैथिली विरोधी कहैत अछि। त आव ओ एहन काज नहि करताह अहाँ के त एगो खिसा बुझल हएत, जे एगो बच्चा के सभ दिन माँ-बाप घरिया पहिरा देखिन। जहन छोटगर भेल त एक

दिन हुनकिन बाउ आई अपने घरिया पहिर त। बेचारा कएक खेप ओरिया-ओरिया के घरिया पहिरलक मुदा ई लोकनि सभ बेर दूखिदेथिन। अन्त मे त कहि देलथिन—हाय रे अपरोनक, एखन तक घरियो ने पहिरय एलह। एतवा सुनिते छौंडा घड़िया फेकि फनकए लागल—आब हम घरिया पहिरने ने करब नछटे रहब। माँ-बाप सोचलनि जे जे ई नछटे रहत त एकरा की हेतैक, टोल-पटोल त हमरे लोकनि किबास हेतए जे केहन अपाटक सन्तान के जन्म देलथि आ तकरा ओहिना छोड़ियो देत छथिन तँ फेर पोलाभय लागलाह। किन्तु हुनक गप जे बेचारे मिसरजी के पोलावेयोवला केओ नहि।

हम बुझैत छी जे अहाँ के उपरक खिसा अनसोहात लागत। अहाँ सोचब जे ई हम मिसरजीक बचाव लेल गइल-ए। त जे सत्त पुछी त बाबू जे देखि पाकल आम सह ने भेलाह ईल भा।

ओना ई गप त हमहुँ जनेत छी जे जतय मुर्गी नहि रहैत छेक, परात ततहुँ होइते छेक। मिसर जी मैथिलीक-मिथिलाक लेल केने की केलनिहे जे आव नहि करताह ? मिथिला विश्वविद्यालय हो वा बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान—ई त अखेय स्व० ललित बाबूक देन थिक। ई एतेवरि अवस्ते केलनि जे मिथिला सँ पहिने ललित बाबूक नाम जोरि देलनि। हिनका के शान भाक योग देतनि आ बुझाओतनि जे हेयो मुख-धिराज ललित बाबू हमरा सभक लेल अखेय अवस्ते छथि-परंच मिथिला सँ पेघ नहि। स्व० ललितो बाबूक आत्मा एहिधुनि त पड़यंत्र सँ छपटाइत होइत। जे डारि मे दम्भ अइ त एगो नव वि० वि० हुनकर नाम पर बना ने दियत। रहल बात मैथिली अकादमीक। जे थोड़े कालक लेल मानियो ली जे ओ भोजपुरी अकादमी, उर्दू अकादमी वा चमचा अकादमी बना दितथि-मैथिली अकादमी छोड़ि सकैत छलाह। परंच से केने ओते पेघ संख्यक कुटुम्भ परिवारक भरण-पोषण केना होइतनि ? ओतवे किश्क, जनता सरकार जे मैथिली माध्यम सँ शिक्षाक प्रारम्भ केने छल—ई तकरो नीपि पोति देलनि। उनटे मुसलमानक भाषा कहि उर्दू के दोसर राजभाषा बना देलनि। एक गाम मे दू भाषा कहियो सुनलो ने छल। महयारी मे भगदा बनेबाक भिनाउज करेबाक अभिनव तकनीक ! जे सत्त पुछी त अग्रजक समय मे ई भेल रहितथि त निश्चिते ब्रिटिश बहादुर हिनका 'लार्ड'क उपाधि सँ विभूषित केने रहति।

परञ्च सभ जनितो-बुझितो हमरा की

गर्ज पड़ल-ए जे विरोध करी ? जखन भरल सभा मे ककरो गजरा नहि सरलैक तखन लाल बुझकर के कुकर कटने छलनि ? असल मे जे पुछी त ई नातिह हिजरा थिक—जन्मना भनहि नहि हो, कर्मणा। तेहना हालत मे हमरो जे वर्ष मे दू सार्फ पर लागि जाइए आ सए दू-एक भोजन दक्षिणा भेटि जाइए से अपने सँ किश्क छोड़ि दी ? एगो पाइ त केओ देनहारे नहि। एही विरोधक कारणे कतेको कवि कंधु आमंत्रितक सूची सँ बारल छथि। कतेकोक नाम बाद मे काटि देल गेलनि।

त तँ कहल जे अहाँ रहितौ त चुप रहि ने सकैत छौं आ जे किछु बजितौ त सरकारी-अर्ध सरकारी चमचा सभ द्वारा अंग-भंग कइए देल जाइत। तँ हमर त सलाह अछि जे अहाँ देवी कूद-फान नहि करी सेह नीक। कहलैक किने जे अपने बीने बापक नाम। ई आशा छोड़ि दिय जे जे जनता मितर जी के विहासन पर बैसलकनि से उतारियो सकैत छनि। असल मे हमरा लोकनि मूस के विह त बना सकैत छी। किन्तु सिंह के पुनः मूस बनेबाक मंत्र विसरि गेल छी। संगहि अहाँक जननी जन्मभूमिश्च...बला नारा पुरान भ गेल अछि। आइ-कालि मिथिलाक नव नारा छेक रोट-कोट-नोटश्च स्वर्गादि गरीयसी।

पत्र अनगले रूपे दीर्घकाय भ गेल तँ शेष करैत छी। अन्त मे अपने सँ पादबद्ध प्रार्थना जे एहि अति नितान्त गोपन व्यक्तिगत पत्र के अपनहि तक सीमित राखी।

पत्रोत्तर नहि पएबाक प्रबल आकांक्षी  
श्रीमान लाल बुझकर  
बुझनक ग्राम बासी

कलकत्ताक भाकावला.....  
मकानक सभ मजदूर अपना मे मेक केने अछि आपद-विपद मे एक दोसराक संग देत छेक। एक संग मिलि आवाज उठ-वैए। ओना एकरा शुभ लक्षणे मानक चाही। इहो संगतन एक मकान सँ दोसर मकान के जोड़ि सकेछ अपन आयाम बढ़ा सकेछ। अपने मे सँ केओ नेता बहरा सकैत छेक आ तेखन उचित मजूरीक अपेक्षा कएल जा सकेछ। जे वर्तमान मे निश्चित नहि भेटैत छेक।

केनिंग स्ट्रीटक भाजी (परिचय लिख नाइ मना बेलनि) एगोकलेन्डर व्यवसायीक दोकानक संग संयुक्त छथि। दिनक आमदनी त आरौ थोड़ छनि परंच तयो निवाह क लेत छथि। आश्रम छोट छनि।  
—मुजतबा अली

एकांगी.....  
अइ। ई बात सत्य जे मिथिलाक मौगोलिक अवस्थान एकरा बहुतेद बारि बाहरी आक्रमण सँ बचओने रहलैक आ जे हेतु बाहरी आक्रमण नहि भेलैक तँ केओ महाराणा प्रताप वा शिवाजी एहिठाम नहि भेलाह। परञ्च इहो गप तहिना सत्य छेक जे जखन दिल्लीक लोदी मिथिलापर आक्रमण केलक त वीर शिवसिंह

विहनाद क उठहाल। एक नहि अनेको खेप दिल्ली सल्तनत के मिथिला सन छोट छोन राख लग पराजित होमय पड़लैक। जे पृथ्वी रावक संग तरुआरि केने चन्द्रवर दाई रहैत छलथिन त शिवसिंहक संग सेहो वीर कवि विद्यापति रहैत छलाह। की महावली लोरिक मिथिलाक संतान नहि छलाह ? अनिका टाल ठोकने भूकम्प होइत छल आ जे अपन दुनू हाथ दू गोटा दंतार हाथीक नाळि पकड़ि डेलमासुक देप सन फेकि देत छलाह एहन वीर सन्तान कएकटा कुन देश जनमा सकल-ए ? आइ भनहि लोक के लोरिक एहि पराक्रम-गाथा मे अविश्वास होनि परञ्च महाभारत मे भीम द्वारा हाथी के आकाश मे फेकि देबाक कथा आ ठारजनक कथा-गाथा जे सत्य छेक त कुन कारण नहि जे महावली लोरिक कथा-गाथा पर संदेह कएल जाय। लोक सेवक महावीर राणा सलहेस, राय रणपाल ओ हुनक वाकक गुगली रण-पाल, बंठा चमार आदि वीर पुत्र सँ मिथिलाक इतिहास भरल अछि। एकदम निरावार थिक ई कहनाइ जे निश्चिते मनगढ़न्त थिक, फुटि थिक, एकांगी थिक। ई बात सत्य जे मिथिलाक अतीत साक्ष्य कलाक लेल स्वर्णयुग छल, चारिगोट दर्शनक जन्म स्थान रहल-ए। ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-कला, दर्शन सभ क्षेत्र मे ई पूर्व भारतक पथ प्रदर्शक रहल-ए। ई स्वाभाविकको छेक कारण मिथिलाक अतीत शान्ति-सम्पन्नताक रहल-ए। किन्तु सभ रहितहुँ मिथिला मात्र एतवे सँ नहि अइ। जे मिथिला गणतंत्रक जन्मदाता अइ से निश्चिते ओकर रक्षाक महसूस सँ अपरिचित नहि रहल होएत। मिथिलाक इतिहास, भनहि जे कुन कारणे हो, दोसर पक्ष के एकदम सँ विसरा देने अइ, जे दोसर पक्ष थिक पुष्पायक वीरताक। तँ लोक जनक-धर बल्लभक नाम त जनेए, गौतम-कपिलक नाम त जनेए मुदा शिवसिंह सलहेसक नाम सँ अपरिचित अइ, लोरिक-गुगलीक नाम सँ अपरिचित अइ। ई त धन्यवाद दी मिथिलाक सर्वहारा वर्ग के जे आइ बरि एहि महा पुत्र लोकनि के मिथिलाक महान विभूति लोकनि के अपन कंठ मे जोगओने अइ। तँ महाराज वा गुगरी नाच मे तथान-कथित पदुल-लिखल धनी-मानी लोक भनहि नहि जाधु—तेयो लोकक करमान पड़ैत रहैए। अपन माटि-पानि सँ जुड़ल, अपन वीर पूर्वजक गाथा हेवाक कारण महारानी मैथिल द्वारा नोति के आनल हिन्दी नाटक के इहो महाराज वा गुगली सलहेसक नाच आइ मिथिला सँ बेलैवा मे समर्थ भ रहल-ए।

आइ इतिहासकार ई पहिल आ प्रधान कर्तव्य छनि जे ओ उखल पक्ष के प्रकाशित करथि जे कि छोट-मोट दोष के ल के कोसेड़ी सँ भोकल करबाक प्रयास करथि। ६ दिसम्बर १९८० क आन्दोलनक पश्चातो जे केओ कहैत छथि जे मैथिल आन्दोलन नहि क सकेए त ओ किन्तु मैथिलक शुभचितक नहि छथि। एहि तरहक कथन मैथिलक मनोबल के तोड़बाक प्रयत्न पड़यंत्र छोड़ि आर किछु नहि थिक।  
—अप्रदूत

अप्रदूत ११/१२/८१  
६/१२/८१  
५/१२



## सभा-समिति

नवकी दिल्ली, १० नवम्बर १९८१ स्थानीय मविलंकर सभागार मे मिथिला संव न० दि० ) द्वारा दू दिना विद्यापति स्मृति पर्वक आयोजन कएल गेल। पहिल दिनक उद्घाटन कर्ता छलाह श्री केदार पाण्डेय रेल मंत्री, भारत सरकार तथा मुख्य अतिथि श्री वसंत साठे, सूचना एवं प्रसारण मंत्री, भारत सरकार। अध्यक्षता केलनि पंडित श्री हरिनाथ मिश्र, संसद सदस्य। मुख्य वक्ता मे जनिक नाम छलनि श्रीमती राम दुलारी सिन्हा, अम राज्य मंत्री, भारत सरकार, ओ अनुपस्थित रहलीह। अन्योन्य गणमान्य व्यक्ति से सर्व श्री मोल पासवान शास्त्री, सर्वोच्च चन्द्र मिश्र कृष्ण चन्द्र पंत, मो० शफी कुरैवी, डी० पी यादव, के० पी० तिवारी, शिव-चन्द्र भा प्रो० अजीत मेहता, राम सदाय पाण्डेय, श्रीमती अजीजा हमाम, आदिक नाम उल्लेखनीय अछि। सांस्कृतिक कार्यक्रम मे भाग लेलनि श्री सरोद जी, श्री मती सारदा सिन्हा। एहि अवसर पर एगो भव्य मजीरा नृत्य प्रस्तुत कएल गेल। अन्त मे श्री गुणानन्द ठाकुर द्वारा घन्यवाद आपन कएल गेल।

दोसर दिन, १ दिसम्बर उद्घाटन कर्ता छलाह पं० श्री लक्ष्मीकान्त भा, अध्यक्ष, आर्थिक सुधार आयोग, भारत सरकार। अपन उद्घाटन भाषण मे श्री भा जी कहलनि जे बंगला भाषाक उद्भव मैथिली सं भेल। विद्यापति के बंगलाक कवि मानवाक इहू कारण छल। दुनू भाषा मे बड़ समानता थलैक जे कालान्तर मे निरंतर सम्पर्कक अभाव, स्थानक दूरी आ स्थानीय आवश्यकताक कारणे फराक होइत गेल आ बंगला भाषा ओ लिपिक अलग विकास भेलैक। एहि संदर्भ मे ओ पूर्वांचलक भाषाक उद्भव ओ विकास एवं परस्पर प्रभावक गहन अध्ययनक आवश्यकता पर जोर देलनि। अपन अन्वक्षीय भाषण मे हिन्दुस्तान दैनिकक सम्पादक श्री विनोद कुमार मिश्र जी कहलनि जे विद्यापति पहिल कवि छलाह जे परम्परागत संस्कृत तथा अपभ्रंश के छोड़ि जन-भाषा मे काव्य रचना केलनि आ मात्र रचनाए नहि ओकरा लोक प्रिय सेहो बन-ओलनि। इहू कारण थिक जे एखनहुँ बरि घर-घर मे हुनक गीत गाओल जाइत अछि। मुख्य वक्ता ओ गंगा शरण सिंह जीक अनुसार विद्यापतिक काव्य मे आध्यात्म, भक्ति आर सौन्दर्यक अद्भुत समन्वय अछि। हुनक गीत मे गति, लय आर भावक तेहन सामंजस्य अछि जे ओकरा आधार पर कोनो सफल नृत्य नाटिकाक आयोजन कएल जा सकैछ। आजुक मुख्य अतिथिक पद पर छलाह श्री वेदानन्द भा, भारत स्थित नेपालक राजदूत।

एहि अवसर पर एक भव्य कवि

सम्मेलनक आयोजन सेहो भेल छल। आमंत्रित कविगण मे छलाह सर्व श्री महा कवि यात्री, राम सदाय पाण्डेय, रमानाथ अवस्थी, आर० सी० भारद्वाज, कवि चूड़ामणि 'मधुरा, कविवर सुमन, प्रवासी, अमर नारायण कुँवर, रवीन्द्र, महेंद्र धीरेन्द्र एवं मायानन्द मिश्र।

अन्त मे सर्वश्री शिलाकांत, गिरीश, सरोज, लेखनाथ, सारदा सिन्हा, ए० के० सिंह, एवं नाटक प्रभागक कलाकार लोकनि द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कएल गेल।

( देसिल बयनाक दिल्ली प्रतिनिधि सूर्यनारायण मंडल द्वारा प्रेषित )

× × ×

कलकत्ता २१ नवम्बर ८१ बड़ा बाजार पुर्वक सभा हाँके मे मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा विद्यापति स्मृति पर्व मनाओल गेल। अध्यक्षता केलनि श्री मुकुटधारी मिश्र तथा प्रधान वक्ता छलाह मिथिलेन्द्रजी कवि पति के अर्द्धांगल दिनिहार अन्यान्य वक्ता-मे छलाह सर्वश्री बाबू साहेब चौबरी, राम लोचन ठाकुर, शरद चन्द्र मिश्र, ब्रह्म नारायण भा, श्रीदेव भा आदि। एहि अवसर पर विद्यापतिक 'सखि हे हमर दुखक नहि ओर' गीत पर आधारित भावनृत्य प्रस्तुत कएल गेल तथा आर संगीतक कार्यक्रम प्रस्तुत कएल गेल।

कलकत्ता, १४ नवम्बर १९८१। संस्कृत साहित्यक मर्मज्ञ आ मैथिलीक प्रकाण्ड पण्डित पं० जयकान्त भा 'श्रुतधर' क आकस्मिक निधन पर स्थानीय मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा एक शोक सभाक आयोजन विद्यापति विद्यामंदिरक सभागार मे कएल गेल। अध्यक्षता कएलनि परिषदक अध्यक्ष श्री मुकुटधारी मिश्र तथा भाग लेलनि स्थानीय सभ मैथिली सेवी संस्थाक प्रतिनिधि लोकनि। अर्द्धांगलिक क्रम मे विभिन्न वक्ता लोकनि 'श्रुतधर जी' क व्यक्तित्व आ कृतित्वपर प्रकाश देलनि तथा ओहि सं शिक्षा लेबाक अनुरोध समस्त मैथिली भाषी सं केलनि। स्व० श्रुतधर जी मे काव्य सृजनक तथा कुनू वस्तु के नव दंग सं आ एकदम मौलिक रूप मे प्रस्तुत करबा अद्भुतक क्षमता छलनि। 'वीतायण' महाकाव्य मे वीताक गरिमाक उपास्थापन हुनक कला-कौशलक परिचायक थिक। मैथिली मे 'मेघदूत' ओ 'गीता-जलि'क पद्यानुवाद अपन विशिष्ट स्थान रखैछ। एकर अतिरिक्त ओ कतेको मैथिली सेवी संस्थाक संरक्षक छलाह। मैथिली भाषी सदा एहि विभूतिक ऋणी रहैत। अर्द्धांगल अर्पित केनिहार मे छलाह सर्व श्री शरद चन्द्र मिश्र, कालीकांत भा, हरिश्चन्द्र मिश्र, मिथिलेन्द्र जी, राम लोचन ठाकुर, किशोरी कान्त मिश्र, एवं ब्रह्मानन्द सिंह भा। अन्त मे दिवंगत आत्माक शान्तिक हेतु दू मिनटवरि मौन प्रार्थनाक उपरांत सभाक विघटन भेल।

## बाल कविता

## नजि छइ तकर विनाश

तरुआ तिलकोरक कहुँ  
ककरा लगे ने नोक  
अनसोहांत ककरा लगे  
कोबर घर के गीत  
किन्तु मात्रदा नीक सं  
होएत की वपलब्ध  
लोक नपुंसक के कहुँ  
की करैत प्रारब्ध  
पुरुष सिंह निश्चित सकए  
तोड़ि अकाशक चान  
पुनि दुर्लभ एहि जगत मे  
तकरा ले की आन  
मरियो अमर बनैत अछि  
कीर्तिक संग महान  
व्यमहीन मनुक्ख के  
बचै ने नाम निशान  
दिय' दिय' टा मात्र सं  
भेटय नबि अधिकार  
बंचलोटा बुरि जाइ छइ  
तेहने छइ संसार  
हाथ पसारल बाटपर  
मरय हजरो लोक  
कुकुर बिलाड़ि मृत्यु पर  
के मनबै छइ शोक  
हाथ बढ़ा जे ल' सका  
छइ तकरे इतिहास  
जागल सदा सतर्क जे  
नबि छइ तकर विनाश ॥

—राम लोचन ठाकुर

विज्ञापन दाता लोकनि सं—

'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दय लाभ ठठाउ। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क रूप

विज्ञापन व्यवस्थापक  
अरुणोदय प्रकाशन,

लेखक/पाठक लोकनि सं निवेदन

१—अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'देसिल बयना' मे प्रकाशनार्थ पठाउ।

२—'देसिल बयना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक। आन्दोलन सम्बन्धी रचना के अपाधिकार बैल जायत।

३—मिथिला मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाउ।

४—'देसिल बयना' स्वस्थ विचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत करैछ।

## कह लोचन कविराय

आइ एम एफ के कर्ज थिक एक दवा सभो मर्ज  
बहु बेचि स्वाधीनता प्राप्त करब ते फर्ज  
प्राप्त करब ते फर्ज अर्ज ई आइ समय के  
समाजवादक तर्ज बस क्षमताक उदय के  
कह लोचन कविराय ओ महा शत्रु देश के  
जे करैत छि निन्दा कर्जक आइ एम एफ के

अरुणोदय प्रकाशन, ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री महेश्वर भा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिंटर्स, ३२-बी, बुन्दारवन  
बेशाख स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा



# स्मृति रचना

वर्ष—२ अंक—४

जनवरी, १९८२

मूल्य—पचास पाइ

## सम्पादकीय

### भीख नहि, अधिकार चाही

दिल्ली मे आयोजित विद्यापति-पर्व समारोहक उद्घाटन करैत रेलमंत्री श्री केदार पाण्डेय मैथिली के संविधानक आठम अनुच्छेद मे सम्मिलित करवाक माग के समर्थन करैत एहि लेल एक शिष्टमंडल के प्रधान मंत्रीक संग भेंट करवाक आवश्यकता पर जोर देलनि। ओ आरो कहलनि जे एहि शिष्टमंडलक नेतृत्व ओ स्वयं क सकैत छथि जे कहल जानि। केदार बाबू एहि सं पूर्व रांची मे सेहो ई घोषणा केने छलाह।

एहि मे कनिओ संदेह नहि जे केदार बाबू मैथिलीक शुभेच्छु छथि। मिथिलावासीक दीर्घकालीन माग आ आशा—मिथिला विश्व विद्यालय तथा बिहार लोकसेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान हिनकहि मुख्यमंत्रिजीव काल मे भ सकल। मैथिली अकादमीक निर्माणहुं मे हिनक सहयोग सद्भावनाके विवरल नहि जा सकैछ।

अहोपरि शिष्टमंडलक प्रश्न छह, हमरा पूर्ण स्मरण अह जे १९७० मे अखंड स्व-लब्ध बाबू मैथिलीक प्रतिनिधि लोकनि के कहने रहथिन जे एहि निमित्त संस्थाक नहि, संसदीय समिति (Parliamentary Committee) क प्रयोजन छैक, आ हुनके निर्देशानुसार एगो समितिक निर्माणो भेल छल जकर संयोजक छलाह श्री यमुना प्रसाद मंडल आ प्रायः मैथिलीक निमित्त यदा-कदा बबनहार समस्त सांसद लोकनि सदस्य छलाह। खेदक संग लिख्य पड़ेछ जे ई समिति तेहन अकर्मण्य भेल जे एकर चर्चा नदार्द। पता ने शिष्टमंडल सं केदार बाबूक तात्पर्य कोन तरहक शिष्टमंडल सं छनि। परञ्च जे एहने शिष्टमंडल सं होनि त आगा प्रयास केनाइ ब्यर्थ। कहवाक प्रयोजन नहि जे मिथिलाक सांसद सभ 'चीटर्स' थिक, नमक हराम थिक। ओ खायत त मिथिलाक परञ्च पहरा करत दिल्ली पटनाक। दोल ओकरो सभक नहि छैक। ओ सभ हमरा सभ के, मिथिलावासी के बड़ोड बराबर नहि बुझैत। लोटी-लउते' बीन्दावाद। करिया टाका बीन्दावाद !!

जं केदार बाबूक तात्पर्य आन तरहक शिष्ट मंडल सं होनि, जकरा सभक प्रयास आहपरि थोड़-बहुत काब भेलैत, त ताहू संवन्ध मे हम फेर १९७० क कथा दोहराव। १९७० क दिसभर मे एहि तरहक शिष्टमंडल प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी सं भेंट केने छल आ ओहो सहानुभूतिपूर्वक विचार करवाक आश्वासन देने छलीह। परञ्च १९८१ वीति चुकल। आहपरि श्रीमती जी के एहि समस्या पर विचारा करवाक पल्लवति नहि भेलनि वा जानि ने सहानुभूतिक खोज सुला गेलनि। तें जं फेर कुनू शिष्टमंडल भेंट करबे करनि आ भ सकैत फेर आहिन आवा सनो भेंटि जाइन तथापि संभावित फलक संभावना नहिजे बुझना जाइछ। स्पष्ट छैक जे आजुक राजनीति में, आजुक नेता लोकनिक लेल स्मार-पत्र वा अश्वासनक कोनो महत्व नहि। आश्वासन ठकवाक लेल होइत छैक आ स्मार-पत्र भाषा ओ लोकनि बुझैत नहि छथि। ओलोकनि एकेटा भाषा बुझैत छथि क्रान्तिक, रक्षणी क्रान्तिक। प्रमाण अह आसामक आन्दोलन।

केदार बाबू के हुनक सद्भावनाक लेल जन्यवाद परञ्च हुनका बुझि लेवाक चाहियनि जे हुनको वक्तव्य सं मिथिलांचलक सांसदपर कोनो प्रभाव पड़निहार नहि। इवान प्रवृत्तिक संग विवेकक प्रश्न ने उठि सकैछ। ते मिथिलाक रौदी-दाही महाभारीपर पटना-दिल्ली दरबार मे वद्व नहि होइ छह। ते किछु लाख सिन्धीक भाषा के संविधान मे स्थान भेंटि जाइत छैक मुदा चारि कोटि लोकक मातृभाषा ओहि सं बारल रहैत। अक्षणाचल-मेवालय सन राज्यक निर्माण भ जाइ छह मुदा मिथिला के लिचड़ी राज्यक संग राहिल देल जाइछ। इहए करण छैक जे मिथिला मे रेल-बस नहि बाटो-घाटक स्थिति सोचनीय छैक। कलहरखानाक चर्च कीं हो—एगो अशोक पेपर मिल बनले त सेहो उठि के आसाम चलि गेले आ कोशी समस्या त 'एवर लास्टिंग स्टोरी' अहिए।

मिथिलावासी के भीख नहि, अधिकार चाहिएक। मैथिला के संविधान मे स्थान हो—से हमर न्योयोचित माग थिक। हमर अधिकार थिक आ तकर पूर्ति केनाइ सरकारक कर्तव्य। एहि निमित्त शिष्टमंडलक प्रयोजन नहि हेवाक चाही। परञ्च

संविधान बिनु मैथिलीक ओ  
मानचित्र बिनु मिथिला धाम  
छाहि जारि सुझाह करब हम  
विद्रोही मिथिलाक जवान

## जनकपुरक विद्यापति-स्मृति पर्व :

### स्थिति आ अपेक्षा

जखन कवनो हमरा लोकनि मिथिला-मैथिल-मैथिलीक चर्च करैत छी त निश्चिते भारत वा नेपाल ताह बीच मे नजि अवेए। एवो केना करत जखन कि मिथिला-मैथिल-मैथिली अपने आप मे सम्पूर्ण अह अनेक नजि-एक अह। ओतवे किहक, विद्या-दानहुं क समय हमरा लोक-निक मन मे एहि तरहक भावना नजि बनैत जे बीच मे एगो आदि छह जे एके जमीन के जमीनक फासल के दू भाग मे विभाजित करे छह, एक दिसक पानि के दोसर दिस जेवा मे बाधक होइ छह। आ इहए भावनाक नजि जन्मनाह एह आदिक कृतमता के प्रमाणित करैत। परञ्च आह इहए कृतमता सत्य छह कारण एकरा पाछा राजनीति छह आ आजुक युग मे राजनीतिह सभ सं पेश सत्य थिक। ओना भावना सं राजनीतिके जन्म लेवाक घटना कुनू नव नजि, किन्तु मिथिला-मैथिल-मैथिलीक संदर्भ मे एहि तरहक बात केनाइ नवम अवरजक बात केनाइ सन हएत।

से जे हो, किन्तु ई बरि सत्य छह जे आह आदिक दुनू कातक मैथिल पछुआबल अह, ओकर भाषा-संस्कृति आ आन-समस्या सभ सरकार द्वारा अवहेलित छह। एहि संदर्भ मे एहि पारक तथा कथित गण-तान्त्रिक आ ओइ पारक राजतंत्री सरकार मे वड़ बेसी फर्क नजि छह। फर्क नजि छह दुनू कातक मैथिल मे जे अपन दीन-हीन अवस्था लेल सरकार सं बेसी दोखी अपने अह कारण ओकरा मे त्याग बलिदानक भावनाक, जकर वड़ दीर्घ आ गौरवशाली परम्परा मिथिलाक रहलैत—एहनो पूर्ण अभाव छैक। अभाव छैक संघर्ष चेतनाक। किन्तु, जे थोड़ बहुत चेतन लोक अह से अपन मान-मर्यादा छैक, अपन अधिकार पेवालेल सुगबुगा रहल-ह, आवाज बुलन्द क रहलह।

एहि सभक अतिरिक्तो नेपालक स्थिति भारत सं भिन्न छैह। ओइठाम राजतंत्र

छह परञ्च भारत मे तथाकथित गणतंत्र। इतिहास प्रमाण अह जे नेपालक राजवंश मैथिलीक प्रवल पक्षधर आ पोषक रहलह जखन कि भारतीय गणतंत्र जन्मजात मैथिली विरोधी। नेपाल मे मैथिली भाषीक संख्या भारतीय मैथिली भाषीक संख्याक एक चौथाइ सं बेसी नजि छह। राष्ट्रीय जनगणनाक अनुसार अठारह जिला मे तिरफन लाख मैथिली भाषी छथि। ओना भारतीय जनगणना जखन चारि कोटि मैथिली भाषी के एको कोटि नजि लिखैत ताइठाम निश्चिते नेपालक जनगणनाक, सत्यता पर प्रश्न चिन्ह नजि लगेवाक चाही, तथापि हमरा हिसाबे ई संख्या किछु पेश अवस्थे हेवाक चाही। जं जनगणनेक संख्या के सत्य मानि ली तयो नेपाल मे एकर दोसर स्थान छह। किन्तु खेदक विषय जे नेपाल सरकार एहनोपरि एकरा दोसर राष्ट्रभाषा नजि घोषित केलकह आ मैथिली भाषी क्षेत्र मे राजकाज एहि भाषा मे कर-वाक व्यवस्था नजि केलकह। ई निविवाद नेपाल राजवंशक आदर्श परम्पराक विपरीत थिक आ श्री ५ को सरकारक उदारता-सहृदया आ विवेकबुद्धि पर प्रश्न चिन्ह लग-बैत। एहूठाम हम० ए० बरि मैथिली पठन-पाठनक व्यवस्था छह मुदा शिक्षाक माध्यमक रूप मे मैथिली के स्वीकृति नजि देल गेलैत। बूझना जाइए जेना ई सभ भारतक देखादेखी चल रहल हो, जे निश्चिते एगो स्वाधीन देशक मर्यादाक प्रतिकूल थिक।

४-५ दिसम्बर के अखिल नेपाल मैथिली साहित्य परिषद द्वारा जनकपुर मे आयोजित विद्यापति स्मृति पर्व के एही परिप्रेक्ष्य मे देखल जा सकैत। समारोहक उद्घाटन केलनि नेपालक भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री मातृका प्रसाद कोइराटा-मातृका बाबू गणतान्त्रिक विचारक सुयोग्य आ अनु-भवी राजनेता छथि, मैथिलीक प्रवल पक्ष-धर छथि। एगो स्वाधीनता-प्रेमीक हेतु

असलियत त ई अछि जे सरकार काग्रेसी सरकार—जकर बर्चस्व सभदिन मिथिलांचल मे रहलैत, जन्मजात मिथिला-मैथिली विरोधी अछि।

आह समय आबि गेलैत जे मिथिलावासी के साधुरूपी एहि सरकारी रावण के चीन्हा पड़तनि। चीन्हा पड़तनि एकरा द्वारा बनाओल। पठाओल वर्णमयक वर्णमयक के जे वर्णकहलक वीज थीक आ भाइ-भाइ मे कपर फोड़ौअलि करवैत आ सामूहिक समस्याक समाधान लेल, जातीय उत्थान लेल हमरा लोकनि के एक संग नहि होमय दैत। हमरा लोकनि के अपने बाहुबल आ बुद्धिबल पर भरोस राखि अगुएवाक चाही। प्रश्न अस्तित्व क छैक। अधिकार भीख माग्ने नहि भेटैत छैक। एहि लेल चाही संघर्ष—रक्त संघर्ष।

—जय मैथिली



मात्र अपने स्वाधीनताक नहि दोसरोक स्वाधीनताक ओतवे चिन्ता सम्मान रहै छइ आ मातृका बाबू एकर प्रत्यक्ष प्रमाण छनि।

ओना त मातृका बाबू कतेको खेप, कतेको मंच सं मैथिलीक सम्बन्ध मे अपन विचार प्रस्तुत क चुकल छथि परञ्च उपरोक्त अवसर पर ई जे किछु कहलनि तकर फराक महत्व छइ। ई मात्र सुभावे नहि अपन सहयोगक आश्वासन सेहो देलनि आ लोक जनैए जे दिनक आश्वासन भारतीय नेतासन ठकबाक निमित्त नहि होइ छनि। ई भनहि एखन क्षमता मे नहि छथि परञ्च क्षमताहीन त किनहुँ ने छथि आ तें ज ओ चाहथि त निश्चिते मैथिलीक कल्याण अनति विळग्व भ सकैए। किन्तु प्रबन्धन हिनक चाहबाइक नहि। हिनक सुभाव सहयोग लेबाक छइ—जकर ओ आश्वासन देलनिहैं। आधा अइ जे परिपक्व कर्मी लोकनि एहि मे नहि चुकताह कारण अवसर बेर-बेर नहि आवै छइ।

मातृका बाबूक वक्तव्य मे तीनटा विषय ध्यान देबाक अइ, महत्वपूर्ण अइ। पहिल ई जे नेपालक दोनवार लोकनिक भाषा मैथिली थिक। जहाँधरि विकृत-रूपक प्रबन्ध छइ से बाजल जायवला भाषा मे त पांचे कोसपर अन्तर होइ छइ आ स्तरीय भाषाक संग भँबारने ओ विकृत चुकेने करत। ई पार्थक्य साहित्य के माध्यम सं दूर कएल जा सकैए। हुनको लोकनि केँ जँ मैथिलीक माध्यम सं शिक्षा भेटनि, शिक्षाक प्रसार होइक, हुनको लोकनि द्वारा साहित्य चिन्तल जाय आ आन अंचलक संग सम्पर्क गाढ़ होनि त अपनहि ई पार्थक्य समाप्त भ जायत। उदाहरणक लेल पूर्व बंगाल आ पश्चिम बंगाल मे बाजल जायवला भाषा मे बहु अन्तर छइ। कुनू-कुनू अंचलक भाषा त बहरियाक लेल बुझल कठिन किन्तु साहित्य मे, पठन-पाठन मे मोटा-मोटी एक तरहक भाषाक प्रयोग होइ छइ। सब अंचलक लोक गर्वक संग अपना केँ बंगाली आ अपन भाषा केँ बंगला मानैत छथि आ मात्र मानिते नहि छथि ओकर मान-मर्यादा रक्षार्थ कुनू मूल्य देबाक हेतु सदा-सर्वदा प्रस्तुत रहैत छथि।

दोसर बात जे ओ कहलनि से ई जे आइ दोसर विद्यापतिक प्रयोजन अइ। ठीके आइ विद्यापतिक नाम जपने मैथिलीक विकास नहि हेतैक। प्रयोजन छइ विद्यापति परम्परा केँ जिएबाक आ तें एक नहि अनेको विद्यापतिक प्रयोजन—जे फेर एक खेप 'बाल चन्द विद्याबाबू भाषा'क उद्घोष क सकथि, मैथिली-साहित्य भंडार केँ भरि सकथि, जनचेतना जगा सकथि, पुष्पक निर्माण क सकथि आ मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकासक सब प्रयत्न क सकथि। ओना त मैथिलीक जनचेतना आधुनिक आधुनिक युगक युवाक आँख मे नहि छथि ओकर मान-मर्यादा रक्षार्थ कुनू मूल्य देबाक हेतु सदा-सर्वदा प्रस्तुत रहैत छथि।

हुनक तेसर सुभाव छलनि मैथिली मे एगो नियमित मासिक पत्र बहार करवाक। सरहदक एहपार सं त केकटा एहि तरहक पत्र बहारो होइए, मुदा ओहपार एकर अभाव छइ। तें एहि तरहक पत्रक बहु बेसी खगता छइ जे ओहपारक लोकक समस्या ओकर आधा आकांक्षा के स्वर देक। पोथी जते किछक ने छपि जाओ मुदा पत्रिकाक अपन फराके महत्व छइ आ आजुक युग के एकर उपयोगिता केँ अनठा-ओल नहि जा सकैए।

एहि अवसर पर भूतपूर्व मंत्री श्री मकेश्वर प्र० सिंहक कहन जे एम ए० क शिक्षणबारे मैथिलीक मान्यताक औचित्य तखने प्रमाणित होइत जखन प्राथमिक कक्षा सं मैथिलीक माध्यमे शिक्षणक व्यवस्था हो—पूर्णतः सत्य अइ आ श्री सिंह अन्य-वादक पात्र थिकाह। ओ मैथिली के नेपालक दोसर भाषाक मान्यता देबाक माड करैत कहलनि जे क्षेत्रीय भाषाक विकासक बिना ओह क्षेत्रक विकास अवभव छइ आ तें सरकारक कर्तव्य छइ जे एह दिश ध्यान दिअय। श्री सिंह निभीक-निश्पक्ष आ सही विचारक लेल मैथिली भाषी हुनक आभारी रहत। की भारतीय नेता लोकनि केँ एहि सं कनियो चेतना जगतनि ?

एहि अवसर पर जनकपुर नगर पंचायतक प्रधान पंच श्री दामोदर प्र० उपाध्याय तथा राम नगीना सिंहक उद्गार सेहो प्रशंसनीय छल। परिषद दिश सं श्री उदय कान्त ठाकुर द्वारा माड कएल गेल जे राजकीय शान प्रतिष्ठान मैथिली पोथी पर पुरस्कार दिअय तथा रेडियो नेपाल सं मैथिली मे नियमित कार्यक्रम प्रसारित हो।

आइ सरहदक एहपार जखन कि विद्यापति स्मृति पर्वक रूप पूर्णरूपेण विकृत भ चुकलए आ अपन महत्व गमा चुकलए, ओहपारक लेल ई निश्चिते महत्वपूर्ण अइ आ एकर उपयोगिता छइ—जे उपरोक्त विवरण सं पता चलैए। आयोजक लोकनि एहि पुनीत अवसर पर कुनू चमेली बाइक मोबरा वा बिजू महाराजक नाच नहि आयोजित केलनि, बरन मिथिला-मैथिलीक समस्या पर विचार-विमर्श लेल विचार गोष्ठी आयोजित केलनि, समाधान लेल शपथ लेलनि। उदय जी अपना केँ पूर्ण उत्सर्ग करबाक बात कहलनि। ओता-दर्शक लोकनि सेहो नाच-गान देखवा-सुनवा लेल नहि, अपन समस्या बनवा बुझवा लेल, ओकर निदानक बाढ तकवा लेल जमा मेल लगाइ। महेन्द्र मलंगियाक नाटक 'ओकरा आँजनक बारिदासा'क मंचन केँ सेहो एही दृष्टिमे विचारत देबाक चाही।

आजक दिन, विशालो अइ जे आयोजक लोकनि रहित अपन सब विचार-विचारक सारा। देखि जखनक सुझाव।

—कुलदेव झा

## गीत

### ओ लोकनि : ई लोकनि

बूढ़ पुरनियाँ सोचि रहल छै पुरने ठाठक पुरना बात  
नवतुरिया छै नवका सालक नवका चूरा नवका मात ॥

बुढ़वा के नजि चाह ने चिन्ती  
बुढ़िया के नजि हुक्का पित्री  
बुढ़िया के छै खड़ल सांसी  
कफक जकड़ने सत्यानासी  
बुढ़वा पोखल घोबक टारा, आब मलय खेनीपर हाथ ॥

बुढ़वा अमलक सिकमी कोठा  
बुढ़ियाक ज्ञानल चौकमी कोठी  
बुढ़वाक मारल यों य्यों खौड़ा  
बुढ़िया हाथक यों-य्यों रोटी  
मोन पढ़ै छै अपन जुआनीक चानोक राति आ सोनमा प्रात ॥

ओ जमुबानीक जामुन कारी  
ओहेन जहाजी फांक सुपारी  
कतऽ बिजायल ननसुख साड़ी  
हंडकस - हंसुली भारी - भारी  
बुढ़ियाक गाओल कोबर सुनि-सुनि, के बर जकर ने सिहरै गात ॥

नवतुरिया छै गम-गम चूरा  
शज्जर दप - दप नवका गूर  
छत्तिहार भितगर दही दहीपर  
नोन मिरिच आ ललका मूर  
छै नवतुरिया तोरहि परखल, ई पारख ई पुरनीक पात ॥

नवतुरिया छै सिमिट पिटाओल  
महल - महल पर महल जोड़ाओल  
भारत मे जलखइ नवतुरिया  
लंदन मे भोजन बनबाओल  
खांकक सैर करू चन्ना पर, मंगल पर जा खाइ बभ्रात ॥

चल चल चल चल, चल नवतुरिया  
चल नवतुरिया चढ़ै पहाड़  
चौकठि स पग करै बहार  
पवन चोरि क आगि फारि क  
गगन भेद - कर सागर पार  
चल सुठाम मे ठाम-ठाम मे  
चल सुठाम मे सोनित द क, हासिल क छै अपन जिरात ॥

—श्री सरस



## ६ दिसम्बरक प्रदर्शन

मिथिलांचलक यातायातक समस्या पर लिखित हम स्पष्ट कहने रही (देसकोष, जुलाई १९८१) जे एकर स्थिति कुनू साम्राज्यवादी देशक उपनिवेश सं नीक नहि छेक। हम इहो लिखि चुकल छी आ से पूर्णतः सत्य भेलि, जे आजुक युग मे कुनू क्षेत्रक आर्थिक विकास बहुत दूर पर यातायातक सुविधा पर निर्भर करैत। कइबाक प्रयोजन रहि जे एहि निमित्त हमरा लोकनि समय समय पर सरकारक समक्ष अपन अनुचित के रखैत ओकर समाधानक माग करैत रहल छी, किन्तु बहिरा कहैत उन भारत सरकार आ तकर पोआ बिहार सरकार कहियो कान नहि पटयोओलक। समस्या जतेक तते पड़ल अछि। धैर्यक सेहो एकटा सीमा होइत छेक आ तकर अतिक्रमण सेने लोक दोसर बाट पकड़वा लेल जाय अ जाइए। ६ दिसम्बर १९८१ क घटना एकरे अवलंब प्रमाण थिक।

विगत ६ दिसम्बर के बिहार अवामी पंचायतक नेतृत्व मे मिथिलांचलक हजारो लोक हावड़ा टीशन पर जमा भेल छल। 'गाड़ीक चक्का जाम कर'—एकरा लोकनिक नारा छेलेक आ नाउ छेलेक—हावड़ा तथा सियालदह सं एक-एक गोटा एक्कप्रेस गाड़ी मुजफ्फरपुर क लेल देल जाय (२) मिथिला आ नार्थ बिहार मुजफ्फरपुर सं आगा नहि जाय, (३) हावड़ा मुजफ्फरपुरक एगो सुपर एक्कप्रेस गाड़ी देल जाय, ललीसराय सं मुजफ्फरपुर पर दोहरी लाइन हो तथा समस्तीपुर दरभंगा बड़ी लाइनक शिप निर्माण हो। प्रदर्शनकारी सभ के पुलिस भीतर नहि जाय देखैत तें गाड़ीक चक्का जाम त नही भेल परजब प्रदर्शनकारी सभ भाषण नाराबादी आरम्भ केलथि। ओना किछु व्यक्ति लाट फारम दिख बंदूक प्रयास अवल्ले केलनि फलतः पुलिसक लाठी चार्ज भेलैक आ गोटे पचासे लोक भाइत भेल। थोड़ेक काळक हेतु भीड़ अवल्ले छिड़िया गेलैक परंच नूर अहमदक सकल नेतृत्वक कारणे ओ सभ फेर जमा भेल। भाइत लोकनिक प्राथमिक चिकित्सा कराओल गेल, मनेबर के माउ पत्र देल गेल आ एमहर नाराबादी चलेत रहल। एरेष्ट भेल सहकर्मियों के नूर अहमद अपना जमानत पर मुक्त करवओलनि।

लाठीचार्ज मे गोपीकान्त झा के माथ छुटि गेलनि, राधवेन्द्र झा, अब्दुल इसन आ कमलेश झा के सेरो वड़ बेबी मारि लागलनि। एकर अतिरिक्त अब्दुल सिकुर, मो० कयुम, बनारसी प्रसाद, मो० अखतर, हर्षनाथ झा महेन्द्र ठाकुर आदि पचासो व्यक्ति बायल भेलाह। से जहो परजब

प्रदर्शन सफल रहल आ तकर सर्वाधिक श्रेय छलनि नूर अहमद के आ तकर बाद अब्दुल बाकुर आ अब्दुल इसन के। जुद्ध मे बिहार अवामी पंचायतक अतिरिक्त और दू गोटा फेडरेशन देखल गेल छल—एस० एस० पी० ओ मिथिला संघर्ष समिति।

एहि घटनाक बाद १४ ता० के बिहार भूतपूर्व मुख्य-मंत्री श्री कपूरी ठाकुर बंगालक राज्यपाल आ रेलवे रिफॉर्म कमिटीक चेयरमैन श्री बी० डी पाण्डे सं भेट केलनि आ इवड़ा तथा सिवालदह सं एक आर गाड़ी देवाक माग केलनि। ओ इहो कहलथिन जे गत बीस वर्ष मे इवड़ा टीशन आ उत्तर बिहार तथा उत्तरी उत्तर प्रदेशक बीच चलेवला गाड़ीक संख्या मे बढ़ोत्तरी नहि कएल गेलए। कपूरी जी के बिलम्बो सं सही, विवेक भेलनि ताह लेल धन्यवाद देल जा सकैछ। ओना सत्य त इहए अह जे तीन वर्ष ओहो लोकनि सत्ता मे छलाह तखन किछु ने क सकलाह। एखनो दिल्ली दरबार मे हुनको दलक लोक अह, परजब सभ चुपची सबने अह। जं कपूरी जी एकरा समस्या मानैछथि त तकर समापनक निमित्त किछु ने पार्टी स्तर पर संघर्ष करैत छथि। गाड़ी हावड़ा टीशन पर नहि समस्तीपुर मे रोकबाक प्रयोजन छेक।

ओना त हम एहि सं पूर्वो लिखि चुकल छी जे एहिठाम सं जे लोक नार्थ बिहार आ मिथिला एक्कप्रेस मे यातायात करैत तकर स्थिति आदक दस्ता सं नीक नहि रहैत छेक आ तें रेल मंत्री के कहक बेर लिखल गेलनि। परजब, जहाँवरि आन्दोलनक प्रश्न छेक ई आन्दोलन एहि ठाम नहि समस्तीपुर-मुजफ्फरपुर मे देवाक चाही जे ओहठाम सं गाड़ी आगू नहि जाय। जं लाइनक विस्तार कएल गेलै त गाड़ीक संख्या मे वृद्धि अवल्ले देवाक चाही। आन्दोलन मात्र हावड़ा मुजफ्फरपुरक गाड़ी बंदेवा छेक नहि मिथिलांचल सं भारतक सभ प्रचान शहर मे जाय आवय वज्रा गाड़ीक संख्या बंदेवाक लेल आन्दोलन देवाक चाही। आन्दोलन देवाक चाही समस्तीपुर-जयनगर (दड़िभंगा नहीं) बड़ी लाइन निर्माणक निमित्त। आन्दोलन देवाक चाही मिथिलांचल मे नव रेल पथ निर्माणक निमित्त आ लोकल गाड़ीक संख्या बढ़ेबाक निमित्त। हमरा लोकनि जनैत छी जे जतेक समय इवड़ा सं समस्तीपुर जाइ मे लगेछ ततवे समस्तीपुर सं जयनगर वा भंभारपुर जाय मे लागि जाइछ आ बकर एक मात्र कारण गाड़ीक अभाव छेक। जयनगर सं भंभारपुर जेवा मे भरिदिन समय लगैत छेक। आन्दोलन

एक गाम मे एगो गरीब लोक रहथि। ओ जेहने देखवा-मुनना मे सुनर, तेहने मेघावी आ तेहने पटुवा-लिखवा मे चन्सगर। नाम रहनि ठठपाल।

ठठपाल बहुत दिन घर परदेस मे रहि पढ़लनि। ओ बड़का विद्वान भ गेलाह। चारुभर हुनक विद्या बुद्धिक चर्चा होमय लागल। पाइयो-कौड़ीक नीक आमदनी होमय लगलनि। तखन हिनका अपन गाम, गामक साहित्यिक सोह मेळनि आ ओ गाम चलि एलाह।

गाम पहुँचला पर ठठपालक खूब स्वागत भेलनि। सर-समाज मे कुनू काब-

चाही मिथिलांचल मे कलकारखानाक स्थापना आ विकासक लेल जे लोक के रोजी-रोटी लेल रने बने छिछिइ नहि पड़ैक। ई गप्पत निर्विवाद अह जे आव कलकत्ता-पटना मिथिलावासीक लेल नहि रहलैक। अंगीय भावना आ राजनीति इहए रूप मे बढि रहल छेक—बहरिया के नोकरी नहि होइत छेक। तें आन्दोलन उपरोक्त विभिन्न समस्याक समाधानक निमित्त देवाक चाही। दोसर शब्द मे मिथिलांचलक सर्वांगिन विकासक निमित्त देवाक चाही।

हमरा लोकनि खलन कलनो मैथिली आन्दोलनक बात करैत छी त तकर अर्थ इहए रहैत अह मिथिलाक सर्वांगिन विकासक हेतु आन्दोलन। आ तें मैथिलीक न्यायोचित अधिकार प्राप्तिक ओकर विकासक बात पहिने आवि जाइए। भाषा मूल बस्तु थिक। ई जातीय चेतनाक उत्पत्ति थिक, जातीय एकताक आधार थिक। जातीय चेतना आ एकताक अभाव मे कुनू आन्दोलनक कल्पना ने कएल जा सकैछ, सफलताक बात दूर रह्यो।

एहिठाम देवाक चाही वला बात पर बहुतो के आपत्ति भ सकैत छनि किन्तु हम जानिये-बूझि के एकर प्रयोग कएलए। से एही दुआरे जे आन्दोलन नोकरियाहा पुत नहि क सकैए-ई काज राजनीतिक दलक, ओकर नेता लोकनिक छेक। राजनैतिक दलक विभिन्न शाखा विभिन्न समस्याक समाधानार्थ प्रदर्शन, जुद्ध इहए ताल क सकैए—करैक चाहियेक। तेखन समस्याक समाधान संभव। अन्यथा कलकत्ताक लोक अपन सुविचार्य हावड़ा मे आ दिल्लीक प्रवासी मैथिल दिल्ली मे भनहि गाड़ी रोकि लेथि—भ सकैछ हुनक माग थोड़-बहुत पूराओ भ जाइन-परजब चारि कोटि मैथिलक समस्याक समाधान एहि तरहेँ किन्तु नहि भ सकैछ।

रिपोर्ट—रामाधार मिश्र

उदम होइ त हिनका अरबधि के बजाओल जाइन आ विचार पुछल जाइन। परजब सभ होइतहु कलनो-काल हिनका मन मे एकटा बातक बड़ दुख होइन। से बात ई जे लोक हिनका ठठपालक नामे बजबनि। ई सोचलनि जे एते पटुवा-लिखलाक बादो हम ठठपाल रहि गेलहुं। एहनो कतो नाम भेलै-ए ? मुदा उपाइए की ? गामक लोक जन्महि सं बाइ नामे बने-ए तकरा बदल को केना जाय ? ई, एगो उपाय छेक जं गाम छोड़ि दूर-देस चलि जाइ। ओतय कुनू नोक नाम राखि लेब। आ इहए सोचि ओ एक दिन अपन गाम छोड़ि विदा भ गेलाह।

बाइत-बाइत खलन ओ बड़ी दूर गेलाह त थाकिसन गेलाह आ तें एगो गोलक बड़ि मे बेसि सुत्ताय लगलाह। ओही गोलतर आर एगो लोक बैठल छल। ओकर पहिरन रत्ती-रत्ती भेल छलेक आ बगे वानि सं एकदम भीखारि बुझा रहल छल। ठठपाल के ओकरा पर दया आवि गेलनि। किछु जिज्ञासाक क्रम मे नाम पुछलथिन त ओ कहलकनि—बनपति। हिनका मनहिमन बड़ हँसी लागलनि मुदा हंसने बनपति अन्ध्या ने सोचय से विचारि ओकरा बाँति उठि विदा भ गेलाह। कने दूर आगा एगो ढोल पर गेलाह त पियास लगलनि। सामने मे एगो लोक पर नजरि पड़लनि, जे वो पोआर होइत रहए। लग बजा के एक लोटा पाइन देवाक आग्रह केलथिन। ओ अन्न लोक अपन दरवाजा पर पोआर राखि लोटा माझि एक लोटा टटका पानि हिनका देलकनि। पाइन पीबि ई सुत भेलाह त ओकर नाम पुछलथिन। ओ कहलकनि—अवफाँ। ठठपाल आगा बढ़लाह। गाम सं बहाराएले रहथि कि एगो-अर्थी पर नजरि पड़लनि। आगा-आगा अर्थी आ तकर पाछा कटिहारीक विशाल पांती। मने-मने सोचलनि—निर्विवाद कुनू पैस लोक सुइलए, ने त एते कटिहारी कतये पावी। मृत लोकक परिचय जनवाक बड़ इच्छा भेलनि। अन्त मे एक आदमी सं पुछि देलथिन—कून महाब्रत संसार त्याग केलनिहै ? 'अमर साहु' ओ व्यक्ति जबाब देलकनि।

ठठपालक पछर ठमकि गेलनि। हिनका मन मे जेना बड़का विहाड़ि उठि गेल होइन। अमर साहु मरि गेलाह। अवफाँ पोआर होइ छलाह आ बनपतिक देह पर गुदरीयो नदारद। इहए त निक नामक महत्व। आ तकरे फेर मे पड़ि हम अपन गाम-घर सर-समाज, अपन परार तेजि पड़ाएल जाइत छी। हमराखन सुर्ख के



## हड़ताल आ तकर मुकाबला : बिहारी स्टाइल

बिहार सरकारक छ लाख नन गेजेटेड कर्मचारी आ स्कूल शिक्षक गत ११ दिस-म्बर सं हड़ताल पर छथि। एहि हड़तालक चरम जे केहन भयावह स्थिति छेक से ओहीदामक लोक जनैत अइ। शहर मे त पीवाक पानियो भेटनाइ पराभव भ गेल छेक। बिजुलीक तेहने स्थिति छेक बखन कि सामान्यो स्थिति मे बिजुलीक जे ओह-टाम स्थिति रहैत छेक से अटुलनीए। गाम घरक त चर्चे नै हो। प्रति वर्ष बिछु गाम मे बिजुली खरहा गाड़ितार लगा देल जाइए—अखबार मे प्रचारित क देल जाइए जे एते गामक बिजुलीकरण भ गेल। ई भिन्न बात जे मास मे दुइयो दिन 'ब्लाइन्ड' नहि रहैत छेक। अस्पताल सभक स्थिति सभ सं सोचनीय छेक—पानि, बत्ती आ लोकक अभाव। आरेशन शय्या पर पड़ल रोगी कुहरि रहल अइ—देखनिहारक पता नहि।

विचारणीय थिक जे एहन स्थितिक लेल जिम्मेवार के अइ? हड़ताली कर्मचारी, नै सरकार? उपर-उपर देखने त बुझवे करत जे दोली सरकारी कर्मचारी अइ परञ्च बिछिया के देखला-सोचलाक वादे अवली बात फरिहा सकेछ—अवली जिम्मेवार के चीन्हल जा सकेछ।

हमर विश्वास अइ जे कर्मचारी लोकनि सेहने हड़ताल नहि करैत छथि। हड़ताल फेसन किन्हु नहि थिक। बखन हुनका लग अन्न दावी अदा करबाक कुनू दोसर बात नहि रहैत छनि तखने ओ हड़ताल पर जाइ छथि। दोसर शब्द मे कहने ओ बखन हड़तालक लेल बाध्य कएल जाइत थथि—तखने हड़ताल करैत छथि। आव देखबाक ई अइ कि सरिपहुँ एहन स्थिति आवि तुलायल छलक?

हड़ताली कर्मचारी लोकनिक ओना त छोट-पेघ कष्टका माळ छनि परञ्च जे प्रधान माळ छनि आ जाइपर कर्मचारी आ सरकार मे बीच चलि रहल-ए ओ थिक चारिम तनखा संशोधन समिति (4th

इश्त? हम व्यर्थक विद्वान हेबाक दंभ पोसने छी...। एहि तरहे सोचेत विचारेत ओ गाम धुरि एलाइ।

परात मेने संगी-साथी सभ, जकरा सभ के हिनक गाम छोड़बाक विषय बुझल रहैक भेंट होइतहि धुरि एबाक कारण पुछनि। ठठपाल सभ के एके जबाब देथिन। ओ बनाव छलनि—बनपति देह पर लताफता नहि अवफी छथि पोआर अमर साहु के मरिते देखल भनहि नाम ठठपाल।

प्रस्तुति—अप्रदूत

Pay Revision Committee) क सलाह के १९७८ फरवरी सं लागू कएल जाय। कहवाक प्रयोजन नहि जे एहि तर-हक समितिक गठन सरकार करैत रहल-ए आ त ओकर नैतिक दायित्व भ जाइ छइ समितिक सुझाव के माननाइ। विगत अप्रैल मे बखन कि समिति अपने रिपोर्ट बमा केने छल तखन संसदक गर्मी—वेचक मे स्वयं मुख्य मंत्री डा० जगन्नाथ मिश्र बाबल छलाइ जे सरकार समितिक सुझाव के मानेए आ तकरा कार्य रूप देत। ओ आरो कहने रहथिन जे एहि लेल अर्थ कुनू समस्या नहि छेक। परञ्च कनिजे दिनक बाद सितम्बर मे केबिनेट निर्णय लेलक जे एकरा अवदूर सं कार्य रूप देल जायत आ फेर नवम्बर मे तीन आदमीक समिति बनल—एकर आर्थिक स्थितिक अध्ययन करैक। आइ मुख्य मंत्री कहि रहल छथि समितिक सुझाव लागू कैला सं २८० करोड़ क आर्थिक चाप सरकार पर पड़ैत आ बिहार जे भारतक गरीबतम प्रान्त मे सं अछि—एकरा बहन नहि क सकेछ।

एहि तरहे स्पष्ट बुझना जाइए जे सरकार आइपरि एहि संभव मे कुनू निर्णय नहि ल सकलए। संगहि दिन-पर-दिन गिरगिट सन रंग बदलेत रहल-ए आ एहना स्थिति मे कर्मचारी लोकनिक लेल हड़ताल छोड़ि दोसर बात नहि रहि गेल छलैक। जहाँपरि बिहारक गरीब हेबाक प्रश्न अइ, मुख्य मंत्री महोदयक बुद्धि पर लोक हँसिटा सकेइ। बिहार भारतक सभ सं धनी प्रान्त अइ, जकर प्राकृतिक सम्पदा कुनू प्रान्तक हेतु इर्ष्याक विषय छेक। जं गरीब अइ त एहि खिचड़ी प्रान्तक लोक—

बिहार! आ तकरा गरीब बना कए राखैक उद्देशे सं एहि खिचड़ी प्रान्तक निर्माण भेल छल। के नहि जनैए जे एहिदामक सम्पति सं बाहर कलकरखाना चलेत छेक आ लोक जीविका अर्जन करैए। एहिदामक लोक बनका दुआरिपर चाकरीक भीख मखेत फीरेए। दोसर बात—जं सरकार के अर्थ संकटक चिन्ता सत्ते छेक त किछक ने मंत्री लोकनिक खर्च मे कटौती कएल जाइए? किछक ने ओ लोकनि अपन जीवन पद्धति बदले छथि, योग-विलास के कमवेत छथि? एगो साधारणो मंत्रीक जीवन पद्धति अतीतक राजा महाराजा सं घाटि अइ की?

तँ स्पष्टतः कहल जा सकेछ जे एहि स्थितिक लेल पूर्णतः सरकार जिम्मेवार अइ। ई मानितो जे खास के बिहारक सरकारी कर्मचारीक जे चरित्र छेक से अति निन्दनीय रहल-ए आ त ओकरा प्रति लोकक सहायभूति मिसियो भरि नहि छेक।

एहनो बखन कि स्थिति खतरनाक रूप ल चुकल-ए, सरकार तसफीया करवा लेल उसुक नहि बुझना जाइछ। ओ सम-भौताक गप्प त करैत अइ परञ्च दोसर दिस लाठी-गोलीक बल पर हड़ताल के दबेबाक पूर्ण प्रयास मे लागल अइ आ तकरे प्रमाण थिक जे समस्त प्रान्त मे तीमा सुरक्षा दल आ केन्द्रीय सुरक्षित पुलिस के भरि देल गेल अइ। एहि सं स्थिति आर विस्फोटक भ चुकल-ए कारण कुनू आंदोलनक प्रतिरोध सं शक्ति भेटैत छेक। दोसर दिस सरकार समस्त अस्थायी कर्मचारीक चाकरी समाप्त करबाक आ बहुलांश स्थायी कर्म-चारीक चाकरी स्थगनक आदेश द चुकल अइ। १७ दिसम्बर के जे मुख्य मंत्रीक बाबा पर विसार भेल आ पाँच आदमीक समिति एहि स्थितिक निपटारा लेल गठित भेल-ए, ताइ मे एकोटा मंत्री नहि छथि 'ब्यूरोक्रेट' छथि, बनिकर सलाह सं ई स्थिति धन्य लेलकए। एहि सं इहो पता चलैछ जे मुख्य मंत्री के अपन सहयोगी लोकनि पर भरोसा नहि छनि, विश्वास नहि छनि आ ओ पूर्णतः 'ब्यूरोक्रेट' पर निर्भर छथि। एहना स्थिति मे समस्याक धिन्न समाधानक संभावना त नहि छेक देखा चाही एहि प्रतिष्ठाक लड़ाइ मे उंट कून मुँहे वेसैए।

—अप्रदूत

(दस दिनक बाद उपरोक्त हड़ताल समाप्त भ गेल। समझौताक अनुसार चारिम PRC क सलाह के विगत अप्रैल सं लागू कएल जायत। मुख्य मंत्रीक अनुसार बिहार सरकार के सलाना सत्तर कोटि टाका एहि मे लगतैक आ तीस कोटि लगतैक एनच ग्रेसिया भुगतान मे जे पाँच सय प्रति कर्मचारी के देल जेतैक।

—सम्पादक)

### चारि गोट मिनी कविता

<4/1/77 6/1/82>

#### (१) सूर्योदय

● माइक आंचरतर सं  
बहार कक मुँह अपन  
बिहुँसि देलक  
शिशु अबोध।

#### (२) राति

● दुःखमनियों कनियां बनि  
बन्न संम महफा मे  
बेटी प्रत्येक दिन  
चलि जाइछ  
देने बिछोड़ व्यथा  
पसारि मन पिरथी पर  
कारी धन अन्धकार।

#### (३) चन्द्रमा

● परदेशी पाहुन केर  
जोहैत होथि बाट जेना  
खिड़की लग ठाढ़ि  
कुनू राधिका।

#### (४) बर्खान्त

● इहो बर्ख  
ओहिना बीति गेल  
बुढ़ अथबल सूर्य  
बस गैरेजक  
पलुआर में हूबि गेल।

विज्ञापन दाता लोकनि सं—

‘देसिल बयना मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाव। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू

विज्ञापन व्यवस्थापक

अरुणोदय प्रकाशन,

लेखक/पाठक लोकनि सं निवेदन—

१—अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना ‘देसिल बयना’ मे प्रकाशनार्थ पठाव।

२—‘देसिल बयना’ मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक। आन्दोलन सम्बन्धी रचना के अप्राधिकार देल जायत।

३—मिथिला मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाव।

४—‘देसिल बयना’ स्वस्थ विचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत करैछ।



## लाल बुभुक्करक चिट्ठी

श्रीमानजी, संवादक जी, महोदयजी।

जय मैथिली।

आगा हाल-सुरति ई जे पूर्ण तामसक संग लिख्य पड़ि रहइ-ए जे हमर मना केलाक उपरान्तो अहाँ हमर पत्र केँ छापि देल आ मावा छापिष्टा नहि देल-तकर प्रति हमरो नामे सरकारी डाक सं पठा देल। बाबा वेद्यनाथ अहाँ के ततवोपर संतोष दितथि। किन्तु ताइपर सं अहाँ चिट्ठी लिखे छी जे एकरा सम्भक रूप मे देवाक नेवार अइ आ तँ हम नियमित रूपेँ एहि तरहक पत्र लिखि पठाओल करी। एकरे ने कहैत छइ 'वाच पर नून छिट-नाइ।' चिट्ठी पढ़ि मन त मेळ जे अहाँक मूँह नोचि छी परञ्च अहाँ त छी-असिया कोसपर आ तँ अपने केश नोचि संतोष करय पड़ल।

हेयो सम्पादक प्रवर! मिथिला मे एगो कहवी छइ—बाँफ की जानय प्रसव के पीड़ा? से तकरे परि। अहाँ त परदेश मे छी। दोसर राज, दोसर राजा। तँ अपने किजानय गेलिए जेँ एहिठाम लोक केना खेपैए। अहाँ सम सोचैत होइए जे मिथिला मे रहनिहार सभ भरिसक मुइल-मुदाँ थिक—जे मैथिलीपर ओहन पेश बज्जपात होइतहुँ करोट नहि फेरलक। किन्तु असलियत से नहि छैक। असल मे कचोट आ तामस ककरा ने भेल? किछु सरकारी कौरा पर पालित लोक केँ छोड़ि सभ भीतरे-भीतर महुँरायल अइ। परञ्च डर होइ छइ जान-मालक, जीविकाक। जँ अहाँ के विश्वास नहि हो त हमर इकार रहल, अपने श्रीमान् मुखमंजीरजीक क्षेत्र मे आवि जाउ। स्पष्ट भ जायत जे किछु बनी-मानी लोक, मुखिया-सरपंच तथा उनका पीताबला अफसर छोड़ि सभ तामसे विवश भेल अइ। परञ्च जहाँ कनियो केओ चूँ केळक कि उपरोक्त लोकक गिद-हठि ओकरापर पड़ि बाइत छैक। सरकारी बेसरकारी गुंडा ओकरा पाछा लागि जाइत छैक आ नाकै सूते पानि पिया दैत छैक। नहि किछु भेलै त थने-पुलिस करा देलक आ दू-चारि केस भुझा देलक। आ जेना कि कहवी छइ किने जे 'चोर न्याये नष्ट' से विरोधी अन्याये नष्ट भ जाइए। सर्वत्र आतंकक मेघ पसरल छइ।

ओना अहाँ कहि सकैछी जे एक आदमी के ने तंग कइल जाइ छइ, जँ लोक संगठित भय आवाज उठावय तखन। त हमर उत्तर रहत—श्रीमान बुधियार जी महराज, बते पोन पर हाथ चले छइ तते दोलपर चले तखन ने? जानथि दिनकर दिनानाथ जे मिसियोभरि फूसि कहैत होइ, समाज ने काब आबय एहिठाम वर्णवादक तेहन ने बिगल छिड़िया देल गेल

छइ—जे लोक के संगठित केनाइ सं तहज भरिसक झुमरीक फूल अननाइ होएत। एहिठाम त तथाकथित पेश आ छोट वर्ण मे भेड़ा-भहिसाक काहि चलेत छैक आ दुनू वर्णक मुँह पुसलसभ सकड़ीरी सुइ-कैए। ने त आइ मिथिला-मैथिलीक कती ई हालत रहिते? सभसँ अचरबक बात त ई जे जे सर्वहारा वर्ग मैथिली केँ अपन हिरदेक मणि आ कंठहार बना केँ रखलक—से आइ अपना केँ मैथिल कहितो ने अइ। मैथिल माने मेळ बाभन! आ बाभन सभ त बुभुके अइ—कनहा कुकुर माँड़े तिररीत। बाभने ने मुखमंजी छइ। ओना खुशीक बात जे बाभनो मे मध्य-वर्गीय आ निम्नवर्गीय समुदाय मे चेतना एलेए परञ्च बोलवाला समठाम बगलाबी मैथिलेक छइ। अहाँ के त बुभुके हँत जे एहि अंचल मे नोट अथवा सॉट सं भोट लेल जाइ छइ। आ तँ हमरा बिबन्टल भरि विश्वास अइ जे अगिलो चुनाव मे अहाँक मिथिलाक मिनीफर विपुल मत सं विजयी हेताइ आ अहाँक सपना-सपने रहि जायत।

तँ कहबाक आशय मे तात्पर्यक मतलब ई जे रामजीक इच्छा सं आ गुरु गंगाक परताप सं—विद्रोहक आगि नीक जकाँ पजरल छैक—मुदा उक लेसनाहर त चाही। से जँ साइत हो त हमर नोट-इकार रहल। आ नहि हो त सभसँ बुरिबक दीनानाथ—माने लाल बुभुक्कर केँ नहि बुझियनि। हमर पत्र ने छापी आ ने कुनू तरहक सम्पर्क राखी—से अनुरोध। ओना त हम पहिनिह सं वदनाम छी। कहलक किने जे नामी चोर महदेवा—से तकरे परि। जानथि बाबा वेद्यनाथ बहिया सं अहाँ हमर पत्रा छापि देलए तहिया सं हम निकाल भगवानक पूजा छोड़ि मस्तानक पूजा मे लागल छी जे कोनहुना एहि खेप बाँचि जाइ। गत अन्हरियाक एकादशी सं चमचा सहस्त्र नामक योजना पाठ सेहो आरंभ क देने छी। एही क्रम मे बगलाब चालीसा लिखनाइ जे आरंभ कइल से त आव लग्निएल सन अइ। विश्वास त अछिछ जे जँ कहियो आक्रमण भेल त ई कृतिसभ हमर कवचक काज करत। आगा त उगिलहे जानथि।

अपने सं फेर हमर आपाद-मस्तक प्रार्थना जे एइ पत्र केँ जुनि छापि दी। दोहाइ ओइपारक छी।

पत्रोत्तर नहि पेवाक प्रवल आकांक्षी

श्रीमान लाल बुभुक्कर

बुभुक्कर माम बासी

✱

एकटा आर गीत

## देश-दशा

की भेलै किए भेलै, 'भैया ई केना भेलै  
तीनू भुवनक परसिद्ध मिथिला, आइ किए पना भेलै  
आइ किए पना भेलै, आइ किए पना भेलै  
बल-बुद्धि-विद्या किछु ने रहले, सब कत' हेरा गेलै

जकर माटि सं जनमलि सीता, अहिलाक शाप भेटा गेलै  
देइ अछैत विदेह कहेलकै, से परताप कहाँ गेलै  
से परताप कहाँ गेलै, से परताप कहाँ गेलै  
सुगो शास्त्रक रूप करै छल, से परताप कहाँ गेलै

ओ शिवसिंह सलहेस कहाँ छइ, विद्यापति कहाँ गेलै  
नदोया कुकुर तीन कोटि छइ, सिंहक नाम भेटा गेलै  
सिंहक नाम भेटा गेलै, सिंहक नाम भेटा गेलै  
ठोहि पारि क कनै मैथिली, की छलै आ की भेलै

—राम लोचन ठाकुर

१. मिथिलाक छी : मैथिल छी ॥
२. मैथिली बचाव : हिन्दी हटाव ॥
३. मैथिली बाजू, पढ़ू, लिखू ॥
४. मिथिला मे यातायातक सुव्यवस्था लेल,  
रौदी-दाही सं मुक्ति लेल, कल-कारखानक  
विकास लेल—जनमत तैयार करू।  
मैथिली आन्दोलन केँ सफल बनाव ॥
५. मिथिला-मैथिल विरोधी जयचंद-मिरजाफर के चीन्ही क राखू।

निवेदक

मैथिली मुक्ति मोर्चा, कलकत्ता

मैथिली पोथी आ पत्रिका अपनो कीनू पढ़ू

आ अनको कीनवा पढ़वा लेल प्रोत्साहित करू।

किछु बहु चर्चित पोथी—

- |   |             |
|---|-------------|
| १. अर्द्धनारीश्वर ( उपन्यास ) / मणिपद्म       | दाम—२५ टाका |
| २. इतिहासहंता, कविता संग्रह ) / रामलोचन ठाकुर | दाम—४ टाका  |
| ३. वेताल कथा (हास्य-व्यंग्य) / कुमारेश काश्यप | दाम—४ टाका  |
| ४. जुआयल कनकनी ( नाटक ) / महेन्द्र मलंगिया    | दाम—२ टाका  |
| ५. निष्कलंक ( नाटक ) / जनाईन झा               | दाम—२ टाका  |

द्वैत बयना' कार्यालय सं भेटि सकैछ



## आइ भिक्षापात्र नांभ, चाहीं महाकालीक खप्पर

बन्धुगण !

युगों सं हमरा लोकनि विद्यापति स्मृति पर्व मनवैत आ प्रस्ताव पास करैत आवि रहल छी परञ्च मिथिला-मैथिलीक समस्या जते छल तते पड़ल अछि। कहनाक प्रयो-जन नहि, जे प्रस्ताव-पारित केनाइ तथा मंच सं बड़का-बड़का भाषण देनाइ, संगहि नेता लोकनिक आस्थासन देनाइ कोनो अर्थ नहि रखैत अछि। इ कटु सत्य हमरा लोकनि भरिसक एखनोघरि नहि बुझलौहें आ जाघरि नहि बुझव ताघरि समस्याक समाधान असंभव। तें, कोनो विभूतिक स्मृति-पर्व मनओनाइ बेजाय नहि, परञ्च प्रस्ताव पास केनाइक बदला अधिकार प्राप्ति लेल संघर्षक शपथ लेब परमावश्यक। मोन राखू जे हाथ पसारने भिख भनहि भेटि जाय मुदा अधिकार नहि। अधिकार छिनय पड़ैत छैक आ ताइ लेल त्याग, बलिदान आवश्यक। जे जाति मरनाइ नहि जनैत ओ ने त जीवाक महत्व बुझैत अछिवा ने जीवाक अधिकार रखैत। आ अपन भाषा-भूमिक उद्धार हेतु जे मरेत अछि, तकरा जे मरवै मानि लेल जाइ त अमरता भेलैक की ?

निज भू-भाषा हित मरय,  
मरय ने अमर बनेत अछि।

तकरे गाथा विश्व ई,  
गाओत, सदा गवैत अछि ॥

मैथिली मुक्ति मोर्चा एही सिद्धान्त मे विश्वास करैत आ तें संघर्ष पथ निर्माण मे लागल अछि। परञ्च कोनो जातीय संघर्ष, जातीय मुक्ति-संघर्ष-जन समर्थन आ जनबलक सहयोग सं सफल भ सकैत। उदाहरणक लेल आसामक आन्दोलन केँ ले जा सकैत—जकर आरंभ निश्चित छान वर्ग द्वारा भेल छलैक। परञ्च जे ओकरा विपुल जनसमर्थन नहि भेटितैक, ओहि संघर्ष पथ पर आवाल-वृद्ध-बनित एक संग नहि उतरि अवेत, त कि ओ एतेक प्रभावशाली भ पवेत ? तें हमरा लोकनि समस्त मिथिलावासी सं आ विशेष केँ छान युवा वर्ग सं अनुरोध करैत छी जे ओ लोकनि एहि निमित्त अपना केँ, अपन समाज केँ जागरुक करथि, तैयार राखथि। आन्दोलन दिनतका केँ नहि होइत छैक। आन्दोलनक आगि सुनगि रहल-ए ओ कलनो दावानलक रूप ल सकैत।

—जय मैथिली  
निवेदक :  
रामाधार मिश्र  
वास्ते—मैथिली मुक्तिमोर्चा,  
कलकत्ता

## चिट्ठी पुर्जो

'देसिल बयना'क अंक-२ प्राप्त भेल। आभारी छी। मुक्तिमोर्चाक ई प्रयास अति श्लाघनीय—हमर हार्दिक शुभेच्छा स्वी-कारी। यथा-योग्य सेवा छिली।

—धनचक्र

'देसिल बयना'क तीनटा अंक देखबाक-पढ़बाक अवसर प्राप्त भेल। मैथिली मे जाहि तरहक पत्रक आवश्यकता छलैक—तकरा ई पूर्ति करैत अछि। ओना तऽ एकर सब रचना उपरा-उपरी रहैत छैक परञ्च ग्राम सं दूर मिथिलाक मजदूर हमरा विचार सं सब सं महत्वपूर्ण स्तम्भ थिक। जे अन्य रचना केँ छोड़ियो देल जाइ तऽ एकमात्र एही स्तम्भक कारणेँ देसिल बयना अमर रहत। 'कह लोचन कविराय' (यद्यपि दोसर अंकक पूर्ण प्रभावित नहि कऽ सकल) बाळ-गीत तथा पहिल आ दोसर अंक मे प्रकाशित श्री रामलोचन ठाकुर जीक कविता तथा तेसर अंकक 'चोनिहारक गीत', दोसर अंकक 'संस्कृतिक सारापर सत्ताक बरू' तथा 'बुढ़ारी-भत्ता बनाम सत्ताक राजनीति' एवं तेसर अंकक समस्त रचना एकर उपलब्धि थिक। ओ कुणालक कथा 'डकैत' यद्यपि पत्रिका मे बेसी जगह छेने अछि—तथापि प्रशंसनीय अछि। बहुत दिनक बाद एहन नीक आ सशक्त कथा पढ़बाक मौका भेटल। और अन्त मे एकर सम्पादक केँ एहन समयो-पयोगी सुन्दर-सशक्त सम्पादकीय लिखबाक हेतु अशेष धन्यवाद। ई पत्र चिरजीवी हो से हमर कामना। —राजेन्द्र कुमार सिंह

'देसिल बयना' प्राप्त भेल। विषय बहुत देखि मन प्रफुल्लित भऽ गेल। ई एक आन्दोलनात्मक डेग थिक आ माइल-स्टोन प्रमाणित भेल अछि। हमर सहयोग संग रहत।

—अनिल सुधा

पढ़ि अत्यधिक प्रसन्नता भेल। हम जाहि क्षेत्र मे छी ततए मैथिली भाषाक प्रति जनमानस मे कोनो भावना नहि। परन्तु 'देसिल बयना' ओ जागरण एहू क्षेत्र मे स्वल्प समय मे यथासाध्य कए देलक अछि।

—शम्भुनाथ झा

'देसिल बयना' दू खेप सं पढ़बाक मौका भेटि रहल अछि। आइ-कालिहँ सेकड़ो पत्र-पत्रिका प्रकाशित भय रहल अछि। हमरा बुझलै किछु केँ छोड़ि बाँकी सब बिना आदर्श केँ सामने रखैत प्रकाशित भय रहल अछि। ओकर सबहक उद्देश्य छैक द्रव्यार्जन। द्रव्यार्जन लग आदर्श कतय भेटत ? तें 'देसिल बयना' सन-सन आदर्श पर आधारित पत्रिकाक प्रकाशन पर बल देमय पड़ैत। "हम प्रत्येक मिथिलांचलक वासी सं एहि पत्रक द्वारा अनुरोध करैत छियैन जे ओ सब 'अपन डकली अपन राग' नहि अलापि एकरा सहयोग अवश्य देथ। सहयोग अनेक दंगक होइत छैक—रूपया-पैसाक सहयोग, आदर्शोन्मुख करवाला लेल लिखि और यदि ताहि मे समर्थन नहि छी तें कम से कम एक-एक प्रति प्रत्येक मैथिल केर हाथ थम्हा केँ।

शुभकामनाक संग—  
—मदन मोहन झा, अधिवक्ता,

बालगोत

## क्रान्तिक पथ अपनाले मिथिलावासी रे

सीता कानि करै छथि मिथिलावासी रे  
मायक बोल बचा ले मिथिलावासी रे  
जे सभदिन सभसं आगू छल  
सँद वनल छथि मिथिला सिथिला  
विद्या-बुद्धि-कला वा हो बल  
चारि कोटि सुत के मां अवला  
नवतुरिया वठ जागै मिथिलवासी रे  
मायक लाज बचा ले मिथिलावासी रे  
सभसं मधुर मैथिली भाषा  
चारि कोटि मैथिल के आशा  
मिथिलाक्षर सन लिपि पुरातन  
करय उपेक्षा शासक राबण  
वठ युवागण बनै राम अविनाशी रे  
मैथिलीक मान बचा ले मिथिलावासी रे  
उभय भारती सीता छलिया  
गौतम विद्यापतिक भूमि ई  
जे कहियो सभठां पूजित छल  
आइ छिप सभठां अवहेलित  
आबहुं चेत, बनै जुनि सत्यानाशी रे  
क्रान्तिक पथ अपनाले मिथिलावासी रे

—सुभाष चन्द्र झा

## विशेष सूचना

मिथिलाक सर्वांगिन विकासक हेतु अपेक्षित जनजागरण आ जनान्दोलन पर विचार-विमर्शक सही मार्ग तत्कालक हेतु आगामी १० जनवरी के इन्द्रभवन मैदान (दड़िभंगा) मे प्रातः ६ बजे सं सां. ७ बजे करि मिथिलाक विकास मे अभिरुचि राखयवाला प्रत्येक संगठन आ राजनीतिक दलक एक दिवसीय प्रतिनिधि सम्मेलन, मिथिला जनसंघर्ष मोर्चा आयोजित करत। एहि सम्मेलन मे भाग लेबाक हेतु मिथिलाक प्रत्येक प्रगतिशील बुद्धिजीवी आ श्रमजीवी केँ बादर आमन्त्रण।

—धर्मेन्द्र कुमार

संयोजक, मि० ब० मोर्चा, दरभंगा

'देसिल बयना' चन्द्राक दर :-

१ प्रति	५० पइसा
१ बर्लक	५० टाका
५ बर्लक	२०० टाका

पाइ पठेबाक पता—

श्री जनार्दन झा,  
१७/६, उषा नगर,  
कलकत्ता-७०००६८

## कह लोचन कविराय

बारिक पढ़ा तीत आ, हो बाजारक मीठ  
कुहरि रहल तें मैथिली, छनियां टेरय गीत  
छनियां टेरय गीत, नचै पश्चिम गामक  
चाम-दाम सं मोहि, पुत सम मिथिला धामक  
कह लोचन कविराय, कलंकक लेपल कारिस  
मैथिल युवजन मानि, मैथिली पढ़ा बारिक ॥

अरुणोदय प्रकाशन, ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिंटर्स, ३२-बी, बुन्दारन  
बेशाल स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा



# स्मृति रचना

वर्ष—२ अंक—५

फरवरी, १९८२

मूल्य—पचास पाइ

## सम्पादकीय

### खगता मिथिलाक्षरक

लिपि आ भाषा में उद्देश सम्बन्ध छै जे देह आर मन मे। सुगठित स्वस्थ शरीर मात्र सुन्दर आ आकर्षक नहि होइत छै अपितु प्रबल मन आ स्वस्थ-सही चिन्तनक आधार सेहो होइत छै। तहिना सुन्दर-सुगठित लिपि सेहो कोनो भाषाक विकासक आधार होइत छै। इहए कारण छै जे लिपिक निर्माण मे विद्वान लोकनि के अकथ परीअम करय पड़ैत छनि आ एहि क्रम मे सुगहु लागि जाइत छै। इहए कारण छै जे कोनो जोवित जाति अपन लिपि के तेजि दोसर लिपि अपनेबाक लेल तैयार नहि होइत अछि।

लिपि जे हेतु भाषाक देह थिक ते ओकर पहिल पहिचान थिक। ई लिपिक विशेषता छै जे पहिले नजरि मे दर्शक के अपन अस्तित्वक, अपन विशेष परिचितक मान करा दैत अछि। कहवाक प्रयोजन नहि जे ई परिचित गमा देने कोनो भाषाक भविष्य संदिग्ध भ जाइत छै, ओकरा चारुकात संकटक मेघ सद्विखन मइराइत रहैत छै।

उत्तर-पूर्वांचलीय नव्य-भारतीय भाषा सभ मे सभ सं प्राचीन आ समृद्ध भाषा होइतहु मैथिलीक स्थिति आइ सभ सं दयनीय आ सोचनीय छै आ तकर जवर्द्धत कारण छै मिथिलाक्षरक अवहेलना ओ देवनागरीक अभ्यर्थना। हिन्दीक कारा पर पालित तथा-कथित विद्वान लोकनि द्वारा यदा-कदा मैथिली के हिन्दीक बोली कहि देवाक दुस्साहसक आधार निश्चित रूपे ई लिपिक थिक। जाइ विद्यापति के ल क हमरा लोकनि एतेक नचेत छी, जं हुनको मैतुस्कीट देवनागरी मे प्राप्त भेल रहैत तं निश्चित हुनका मैथिलीक कवि मान्य करो-ओनाइ ओतेक सहज नहि भ पवैत। ओना मिथिलाक्षर मे रहितहु प्राचीन मैथिली नाटक सभ के हिन्दीक नाटकक रूप मे अवस्थे लिखल गेल ए परञ्च ताहु मे मैथिलीक पाइपर पालित विह-नाइडि बला मैथिले प्रोफेसरक पड़यंत्र छै जे समस्त पोथीक सूची आ परिचय उपलब्ध करा देलथिन। आ से होइतहु मान्य नहिओ भ सकलैक।

थोड़ बहुत इहए कारण छै जे बहुत दिन धरि विद्यापति बंगालक कवि मानल जाइत रहलाह। ओना ई मैथिलीक हित मे रहलैक जे त कविपतिक प्रायः समस्त पदक संकलन-प्रकाशन जे कि मित्र-मजुमदार महोदय द्वयक प्रयासे भेल से अकर्मण्य मैथिल जाति सं किछहु संभव नहि भ पवैत। आइयो चर्चापद तथा मैथिलीक प्राचीन नाटक खास के मङ्गलालीन नाटक के बंगाली लोकनि अपन पोथी मानत छथि आ ताह पर बड़-बेसी काज भ रहल छै।

स्पष्ट छै जे मैथिलीक विकास मे सभ सं पेश बाबक भेल ए आ भ रहल देवनागरी लिपिक प्रचलन आ मिथिलाक्षरक तिरस्कार। एहि सं ई मात्र अपन विशेष परिचितिह टा नहि गमओलक-ए अपन जाति सं (पूर्वांचली भाषा-समूह सं) सेहो कटि गेल ए। आ जाइ विजातीय भाषाक संग जुटल वा जोड़ि देल गेल-से सुरसा सन एकर बाट मे बैसल अवसर पविते गीड़ि जेबाक ताक मे अछि। ई विजातीय भाषाक सामिथ्य एकर स्वरूप के धूमिल त करवे कैलके संगहि मिथिलाक संस्कृति तथा मैथिलक रूचि के सेहो विकृत कैलक आ ओकर जातीय चेतना एकता के, जातीय संस्कार के पूर्ण तरह नष्ट क देलक ए।

ते आइ जं सरपहु हमरा लोकनि अपन जातिक, भाषा संस्कृतिक अस्तित्व रक्षा करय चाहैत छी, ओकर विकास चाहैत छी त ई अनिवार्य छै जे अपन लिपिक रक्षा करी, ओकरा प्रयोग मे आनो। प्रश्न उठि सकै जे एते दिनुका बाद पुनः मिथिलाक्षरक प्रयोग मे बाबा-व्यवधान कि नहि होतैक। उत्तर छै—होतैक। कोनो नीक काज मे हजार बाधा-व्यवधान अवैत छै—परञ्च से स्थायी नहि, क्षणिक होइत छै। एते दिन हमरा लोकनि पांतर मे पथ विहीन बौआइत रहलौहें आ भाव जखन धरक बाट भेटि गेल त जतेक थाकल-ठेहिआएल किष्टक ने होइ—घरसुहा चल्वाक शक्ति-गति अप्रतिम होइत छै। निश्चित समय सं पहिने हमरा लोकनि पहुँचि सकैत छी।

संविधान बिनु मैथिलीक ओ  
मानचित्र बिनु मिथिला धाम  
डाहि-जारि सुझाह करब हम  
विद्रोही मिथिलाक जवान

मैथिली आन्दोलन

## मिथिलाक जन-आन्दोलनक सन्दर्भ मे

जीवैत रहनाक लेल मनुष्य के ने मात्र प्राकृतिक प्रतिकूलताक विरुद्ध सतत संघर्ष करऽ पड़ैत छै अपितु ओकरा समाजक ओहि प्रतिक्रियावादी शक्तिक विरुद्ध सेहो संघर्ष करऽ पड़ैत छै जे अपन रजानैतिक एवं आर्थिक वर्चस्व बनौने रहनाक लेल वर्गीय एवं जातीय शोषण उत्पीड़नक बल-पर समाज के जर्जर, कंगाल, मूक ओ बहिर बना, ओकर अग्रिम विकास के 'सील' कऽ देत छै। वर्गभेद बला समाज मे वर्गीय शोषण-उत्पीड़न, जातीय वा राष्ट्रीय शोषण-उत्पीड़नक माध्यम सं अभिव्यक्ति पवैत छै। मिथिलासन पिछड़ल क्षेत्रक जनता ने मात्र वर्गीय वरन् जातीय वा राष्ट्रीय शोषण-उत्पीड़नक शिकार होइत रहल अछि। जतऽ किछु अर्थ लोहप व्यापारी, पदसत्ता लोहप राजनीतिज्ञ आर किछु सामंतवादी विचारधाराक पोषक सभ एकजुट भऽ मिथिलाक अक्षिप्त एवं अविषित जनताक शोषण करैत आर ते आइ वर्तमान मे ई आवश्यक नहि अनिवार्य भऽ गेलैक अछि जे एहि राष्ट्रीय शोषणक विरुद्ध चलाएल जा रहल संघर्ष के अविलम्ब गति देल जाय। मिथिलाक संस्कृति, भाषा-साहित्य, कला-कोशल, वाणिज्य-व्यापार, उद्योग-धंधा आदि के उचित संरक्षण दऽ मिथिला क्षेत्रक विरुद्ध चलाओल जा रहल घटपट्टन के विफल कऽ देल जाय।

आबादी प्राक्तिक पश्चात् अपना देश मे जे प्रगति भेल अछि ओकरा नकारल नहि जा सकैत मुदा जाहिसरपर मिथिलासन अविकसित क्षेत्र उपेक्षित राखल गेल अछि ओ वस्तुतः विचारणीय अछि। ओना सरकारी स्तरपर कागजी उन्नति आर विकासक अम्बार लागल छै मुदा वस्तुस्थिति ई जे मिथिला के माध्यम बना, केन्द्रीय एवं राज्य सरकारक टहल सभ मात्र

अपन-अपन आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति के मजबूत आ स्थायी बनेबाक बन्दोबस्त कएलनि अछि आर किछु नहि। कृषि विकासक नामपर जे थोड़-बहुत खाद आ बीज उपलब्ध कराओल जाइत तं पानि रिपत्ता भऽ जाइत; सिंचाइक नाम पर जं पाँच-दस गोटा "बोरिंग" आदिक व्यवस्था कराओल जाइत तं बिबली विला जाइत भने जनता के मात्र आत्मासनक बोझ सं ताहि रूपे दवेबाक प्रयास कएल जाइत रहल अछि आइ आबादीक ३४-३५ वरखक पुरवातो मिथिला ओतहि अछि जतऽ आइ सं ३४-३५ वरखक पूर्व रहल—शिक्षाक अव्यवस्था; कृषिक हास; गाम-गाम भइल टूटली मइया; चाकरीक खोब मे बौआइत मिथिलाक शिक्षित युवा वर्ग; आवागमनक अव्यवस्था; सांस्कृतिक घेत मे जुझा छेपेटने रौरव नकई यातना भोगैत साबनहीन समाज; जीवैत रहनाक अभिलाषा नेने गाम गाम सं पंजाब-हरियाना, बंगाल-आसाम पड़ाइत बूढ़, जवान—मिथिलाक वर्तमान चित्र इहए रहि गेल अछि। आ रहबो करत एहिना यावत्परि भारतक मानचित्र मे मिथिलाक रेखांकन नहि भ जाइत—चाबि सरकारी रेकार्ड मे मिथिलाक अथन खेरा-खाता नम्बर नहि लिखा जाइत छै।

भौगोलिक दृष्टिकोण सं, भारतक सुरक्षा एवं अखंडताक लेल जतना महत्व मिथिलाक छै ओतेक महत्व ने दिहल के देल जा सकैत आ ने पटना के। भारतक सीमान्त प्रदेश इहवाक कारणे मिथिलाक अपन अलग महत्व छै। सामरिक-सुरक्षा के दृष्टि मे राखि सरकार एतहु विराट 'एरोझन'क निर्माण रातो-राति करा सकैत—डिबीजन डिबीजनक 'मलेटरी' एक्टडा कऽ सकैत मुदा मिथिलाक विका-

भारत मे एहनो साक्षरक संख्या पचीस प्रतिशत सं बेसी नहि छै। मिथिला मे त आरो कमे हएत। एहि मे शिक्षितक संख्याक अनुमान सहजहि लगभग भऽ सकैत। शिक्षितक लेल एक घंटाक समय जं रोज देथि त सात दिन सं बेसी मिथिलाक्षर लिखवा मे किछहु नहि लगतनि। जे नेना सभ अक्षरारंभ करत तकरा लेल जेहने रोमन वा देवनागरी तेहने अपन लिपि। बरू अपन हेबाक कारणे आर सहज होतैक। जहांतक पोथी प्रकाशनक गण्य छै ताहु मे विशेष अनुविधाक संभावना नहि। बंगला आ अवमियाक लिपिक संयोग सं सहजहि मैथिली अक्षर भेटि सकैत। खगतानुसार एकरा किछु नव-सहज रूप देल जा सकैत, जेना बंगला मे कएल गेल छलैक। खास के 'उ' कारक मात्रा मे एकरूपता आवश्यक छै कारण प्राचीन वर्तनीक अनुसार किछु आखर मे ई मात्रा लगने ओकर रूप बदलि जाइत छै आ सहजे चीन्हा मे नहि अवैत।

आद्याए नहि विश्वासो भ छै जे मैथिली प्रेमी विद्वान लोकनिक तथा आन्दोलनकर्ता लोकनि एहि पर ध्यान देताह आ गंभीरता पूर्वक सोचता। समय जते बीतेत अछि—अजबहो होइत अछि ते श्रिष्टता आवश्यक।

● जय मैथिली



सक नामपर सरकारी-तंत्र गुमही किएक लाबि लेत अछि ई एकटा अति विचार-णीय प्रश्न ! एहि परिप्रेक्ष्य मे जे गंभीरता सं विचार कएल जाए त ई स्पष्ट भऽ जाइत जे मिथिलाक विरुद्ध राजनीतिज्ञ लोकनि द्वारा एक गोठ भर्त्सक घटयन कएल गेल अछि जे मिथिलाक जनता के विक्रमभित कऽ शासन मे बनल रही— खाहे ओ राजनेता लोकनि कोनो पार्टी सं सम्बन्ध होखि । की तीन साढ़ेतीन करोड़ मैथिल के ई पथास्थिति के बनौने रहबाक चाही ? बौद्ध बनत, इन सभ एहि स्थिति के अपन प्रारम्भ धूमि हाथ पर हथ बखने बेतल रही ? केओ स्वामिनाथी मैथिल एहि दवनीय स्थिति के अपरा मोन सं स्वीकार नहि कऽ सकैछ—आर एतहि यक्ष-प्रश्न उत्पन्न होइछ—“कऽ पन्था ? यद्यपि एहि प्रश्नक उत्तर युष्मिष्ठिद्वार-युग मे वऽ चुकल छथि मुदा हुनकर उत्तर ( महाजनैन ) “बला । आधुनिक काल मे अप्रासंगिक भऽ वऽ रहि जाइछ कारण महापुरुष बला—निर्धारित पथक अन्वेषण सं पूर्व ‘महापुरुष’क अन्वेषण करऽ पड़त आर अपना मिथिला मे एहन महापुरुषक अभाव प्रायः सभ के खटकत मिथिला मे “कुर्वी पुरुष” अगति भेटि सकैछ मुदा ‘महापुरुष’ कतऽ पावी ? जे से रहैत त मिथिला सन पुण्य भूमि ई दर्शा ! मैथिलीक एहन अवहेलना !! मैथिलक ई अपमान !!

अतएव, हम सभ जे संवर्षप्रथ निर्धारित कएने छी ओकरा आर सुव्यवस्थित रूपे आगां वढ़ावऽ पड़त, अपन संवर्ष मे तीव्रता आनऽ पड़त आ तखनहि हम सभ कोनो फलक आशा कऽ सकैत छी । ई प्रायः सभ के आभास हैत जे एखनपर मिथिलाक जागरूक प्रहरी सभ भाषाबला फ्रांट पर अपन मोर्चा जमौने छथि एहरे किछु दिन सं मिथिलाक लेल “सम्पूर्ण-क्रान्तिक” परिभाषा प्रचारित ओ पारिभाषित कएल जा रहल अछि । एहिठाम ई कहब प्रासंगिक हैत जे भारत सन विशाल जनतांत्रिक देश मे केन्द्र सरकारक समक्ष ततेक ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्या सभ प्रस्तुत रहैत छैक जे मिथिला सन उपेक्षित मूलखण्डक भाषाक समस्या पर ओकर ध्यान आकृष्ट कराएव जे असंभव नहि त कठिनाई अवस्तः कहल जा सकैछ । त हमरा सभक ध्येय ई हएबाक चाही जे येन-केन प्रकारेण केन्द्र सरकारक ध्यान आकृष्ट करा सकी । एहि संदर्भ मे मात्र भाषाक सरकारी मान्यताक समस्या के पर्याप्त नहि कहल जा सकैछ । जे एकवेर केन्द्र सरकार के ई बात स्पष्ट रूपे आन करा देल जाइ जे मिथिला मे ओ सभ तत्व वर्तमान छैक—ओ सभटा सावन उललल छैक जे एक गोठ स्वतंत्र प्रांतक लेल आवश्यक कहल गेलैक अछि मने एक गोठ पृथक राज्य बनबाक सभटा योग्यता मिथिला रखैत अछि त एहिके बेर केन्द्र सरकारक भ्रम खुलि बघैत आर अनेरे मिथिलाक केकटा समस्याक समाधान स्वयं भऽ जय-तेक (एहि संदर्भ मे श्री दिनराज शाण्डिल्य जी द्वारा कएल गेल कार्य के नबर अन्दाज नहि कएल जा सकैछ) ।

मिथिलाक बौद्धिक वर्ग लगभग दू टुक सँ जनतांत्रिक माध्यम के अपना, केन्द्र सरकार सं आग्रह करैत रहल अछि जे ‘मैथिली’ के सरकारी मान्यता प्रदान कऽ (संविधानक सष्ठम अनुसूची मे सम्मिलित कऽ एकर प्राचीन प्रतिष्ठा के संरक्षण देल जाओ—प्रांतीय सरकार सं सेहो आग्रह करैत रहल अछि जे ओ एहि संदर्भ मे उचित वेग उठावऽ मुदा ओकरा सुई पर जुता मारैत बिहारक सुशेखर मैथिल सुख मंत्री जनाब जगन्नाथ मिश्र साहेब अनायास “हिन्दू मास” के वाचन”क रेकार्ड बना पेरिया उठलछ— “अस्तन्मास वाक्तेज्जम् !” पटनाक गोकुल घर पर चढ़ि अमान देवऽ लगलछ “ओ मैथिली भाषी लोकनि, कष्टः कऽ लिवऽ” वा लिलाह रह-लिलाह !!!” एकर कि अर्थ ? मने हम सभ स्वोण छी ? जायज मांग छल मैथिलीक लेल सरकारी मान्यता आ नाजायज रूप सं बदा गेल माथ पर उर्दू !! आव रेटैत रहू आलिख जे-पेटे” आर अदा करैत रहू नमाज !!! एहि सं बढि कऽ आर की दुर्भाग्य भऽ सकैछ हमर सभक ! मुदा एकरा मात्र दुर्भाग्य कहबा सं काब नहि चलत । जे समयानुसार एकर प्रतिकार नहि केल गेल त असम्भव नहि जे कांश्चिद्विहार सरकारक नवका अध्यादेश जारी होइक जे मिथिलाक जनता मे जे एखन बरि ‘टीक’ नहि कटवौने होइ आर ‘कट्टा’ नहि करवौने होइ से अविलम्ब ‘टीक’ कटवा लेथु आर ‘कट्टा’ करवा लेथु” आ पञ्च त जगन्नाथ बाबू गामे-गामे घोषणा करने फिरताह जे एहि काब मे विलम्ब नहि हएबाक चाही—ई दिछो दरबारक आदेश छियेक !! हमर कहबाक ई तात्पर्य नहि जे उर्दू भाषाक विरोध हएबाक चाही उर्दू अपना देशक एक गोठ अति सम्पृद्धि आर विकसित भाषा थिक । उर्दूक क्षमता पर कोनो प्रकारक प्रश्न चिह्न नहि लगाओल जा सकैछ आ उर्दू कि विश्वक कोनो भाषाक अनादर नहि हएबाक चाही कारण कोनो देशक भाषा-साहित्य, ओहि भूखण्ड विशेषक सम्भ्यता आर संस्कृतिक प्रतीक होइत छैक । ई इतिहास सिद्ध तथ्य छियेक जे जे कोनो भूखण्ड विशेषक तथ्यता ओ संस्कृति के नष्ट करव अमीछ हो त ओकर भाषा-साहित्य पर प्रहार कल । जतऽ बरि मैथिलिक प्रश्न अछि, एखनपर एकरा कोनो भाषा सं विरोध नहि रहलैक अछि आने रहतैक मुदा एकर अर्थ ई नहि जे समदर्शिताक दर्शनक कारणे एकर गरदनिएं मरोड़ि देल जाइ मिथिलाक प्राचीन

## मिथिला विभूति महाकवि डाक

मिथिलाक माटि जेहने उपजाउ अह तहिना एहि ठामक लोकक मस्तिष्क सेहो आ विशेष के एकरे बलपर मिथिला कहियो तीन लोक मे विख्यात छल । एहिठाम एक सं एक विभूतिक जन्म भेल अह जे सरिपहुं दोसर देशक हते इश्याक विभूति रहल । ते आश्चर्य नहि जे कतेको विभूति के कालक्रमे विचारा देल गेलह आ महाकवि डाक सेहो एहने विभूति मे सं छथि । ओना हरो निर्विवाद जे जे कुनू बात अपन विभूति के विवरि बाहर ओकर अन्तः पतन अनिवार्य छैक आ वर्तमान मिथिला एकर स्वतंत्र प्रमाण थिक ।

ओना त महाकवि डाकक सम्बन्ध अहपरि कुनू प्रामाणिक शोध नहि भ सकलह परजव हिनक अपनहि रचना जे युगो सं एक कंठ सं दोसर कंठ मे प्रवाहित होइत आबि रहलह ए हिनक व्यक्तित्व आ कृतित्वक नीक परिचय उपस्थित करैछ ।

हिनक जन्मस्थान तथा समवक सम्बन्ध एखनो बरि निस्तुकी नहि भ पओलकह परजव कहल जाइछ जे वर्ण सं ई यादव छलाह । एहि तथ्यक पूर्ति हिनक अपनहुं पद सं होइह—जं ओकरा हिनक सही रचना मानि लेक जाय—जेनाकि—कहि गेल डाक गोआर । एकर सत्यताक आचार

इहो थिक जे वर्णवादी कुर्वकार प्रथम समान ब्राह्मण-कर्णकायस्थ सं इतर वर्णक एहि प्रतिभा के नजि रहीकरि सकल आ इहो एगो कारण थिक जे एहन विराट प्रतिभा सम्मान विभूति के विचारा देल गेल ।

कारण भनहि जे हो परजव एतवापरि सत्य जे एहन प्रतिभा मात्र मिथिलेठा मे नहि, अन्यत्रो दुर्लभभाव अह । महाकवि डाक मे खुदुखी प्रतिभा छनि । हुनक साहित्यिक प्रतिभाक प्रत्यक्ष प्रमाण अह हुनक ग्रंथ ‘डाक वचनामृत’ सं सरिपहुं अमृत दुख थि” । ओना त ई पोथी सेहो अपाप्य सन अह आ तथा कश्चित मैथिलीक पोथी प्रकाशन संस्था जे जालो टाका खर्च के आलस-फालस पोथी छपेह—तकरा सभ के एहन पोथी छपवाक प्रयोजने ने बुझाइ छह, परजव मिथिलाक विशाल जनकंठ एखनो एकरा जोगओनेवार अवसरे अह आ भविष्यो मे रहत से विश्वास अनाया से होइह ।

महाकवि डाक मात्र कविह टा नहि छलाह, कृषि विज्ञान हिनका अतुलनीय पटुं व छनि ।

( शेर्पाथ पृष्ठ ५ पर )

सम्भ्यता ओ संस्कृति के नष्ट कऽ देल जाए । मैथिलीक संग अन्त्या कऽ बिहार सरकार अपन जाहि अदूरदर्शिताक प्रमाण देखक अछि, ओहि लेल कम सं कम जगन्नाथ बाबू के मैथिली भाषी कहियो माफ नहि करतनि ।

एहि सभ शोषण-उत्पीड़नक विरुद्ध, वैचारिक क्रान्तिक पड़ाव हम सभ पार कऽ चुकल छी—आव आवश्यकता अछि अपन संघर्ष के सही बरातलगर, सही योद्धाक माध्यमे गति दी—तीव्र करी । मुदा ई हमर सभक दुर्भाग्य कहल जा सकैछ जे सही योद्धाक निर्माण पूर्णरूपे एतावधि नहि भऽ सकल अछि त संघर्षरत मैथिल योद्धा लोकनिक ई प्रथम कर्तव्य आ दायित्व भऽ जाइत छनि जे एहि संघर्ष लेल सैनिकक चयन कऽ ओकरा युद्ध-स्तरपर प्रशिक्षित करथि । प्रशिक्षित सैनिकक युद्ध नियमबद्ध आ कौशलपूर्ण होइत छैक तथा विजयश्रीक संभावना शत-प्रतिशत बढि जाइत छैक ।

एखनपरि सरकार संग हमरा सभक जे संघर्ष होइत आबि रहल अछि ओकर सभ सं कमबोर पक्ष अछि सफल नेतृत्व एवं मिथिलाक जनसाधारणक सहानुभूतिक अभाव । अपन लक्ष्य के प्राप्त करबाक लेल हमरा सभक लेल ई आवश्यक नहि अनि-

वार्य भऽ जाइछ जे मिथिलाक स्थिर जन-मानस के हिकारी, अवचेतन मे पड़ल प्रभुत विवेक से तत्कालीन कऽ उठा दी आर एहि निमित्त हमरा सभ के मिथिलाक मुख्यभूमि सं सम्पर्क साधऽ पड़त, गामे-गाम जाकऽ खेतिहर श्रमिक के विश्वास दियावऽ पड़त जे ओकरा देह मे आव मात्र इडियेठा सावित छैक—मासु नोचा गेल छैक, शोणित बिबा गेल छैक—विद्यार्थी समुदाय के बुझावऽ पड़त जे हुनकर सभक शिक्षाक कोनो औचित्य नहि—जं मिथिला जीवैत नहि रहल त हुनको सभक गणना मृतके मे कैत जश्तनि—भ्रष्ट राजनैता लोकनि के चेतावऽ पड़त जे ओ लोकनि अपन भाभट समेटथु—मिथिला आव आर शोषण-उत्पीड़नक के वदास्त नहि कऽ सकैछ—जं ओ लोकनि राजनीति करऽ चाहैत छथि तं स्वच्छ राजनीति करथुः मिथिला के मिथिला के गौरव दियावथु, आर मिथिलाक दिगभ्रमित मतदाता के सिखावऽ पड़त जे ओलोकनि अपन मत मात्र मैथिल राजनीति के देबि भने एहि भीषण शोषण-उत्पीड़नक विरुद्ध संघर्ष मे मिथिलाक वचा-वचा के संग लऽ कऽ चलऽ पड़त तखनहि लक्ष्य-प्राप्ति संभव ।

— धनचक्र

With the best compliment from :—

**Technodying & Bleaching Works**

195/1, M. G. Road, Calcutta-71 0007



पाकिस्तान की

## इफ्तारी

भरिदुका उपासल छी। गरीब के एक टुकड़ी रोटी मैटौक। अछाह अहाँक भला करताह। ई आर्तखर, कलपनाइक पुनरावृत्ति, डिपटी कलक्टर साहेबक मकानक जनानीमइल से प्रवेश करेछ। डिपटी साहेबक धर्मपत्नीक मेजाज ओहिना सभ समय बदल रहैत छथि, ताइपर स भरिदुका उपास। स्वभावतः एहि शोकार्तखर सँ खोभा उठैत छथि। भरिदिन ई कपर-कपडा भीखमंगा सभ जानि ने कून चुहै मे रहत, मुदा सभ पड़िते जं कने चैन सँ रोजा खोख्य देखि कि बिनिना क बहार इहत।

अछाह अहाँक मेहरबानी पर दुआ करताह—उएह कपितखर लगातार बहरा इत रहल।

नवीन ! ओ नवीन !! परसुका मधुर सभ जे रहै से भीखमंगा कैद दही।

नवीन—अर्थात् नोकरी—बचिया-छठल। जाइत-जाइत माथपर अँधारा राखि लेलक। बेगम साहिबा बरंडाक खोफा पर ओकरल दुनू बेटा आ स्वामीक बाट ताकि रहल छलीह। सामनेक टेबुल उअर दपदप कपडा सँ भाँपल छलेक आ ताइपर नाना तरहक सुवाडु खाद्य-सामग्री। सामग्री ततेक छले जे आर जे बस्तु आइब बाँकी छले, तकर रखवाक जगहो नहि। छने-छन ओ घड़ी देखि रहल छलीह आ अपेय भ रहल छलीह जे कखन रोबा भांगि एक खिछी जर्दीपान मुँह मे देती।

एक त ओहिना बेगमक छिटछिटाइ मेजाज सँ नोकर-चाकर तंग रहैत छल ताइपर रमबानक समय त ई मेजाज आर द्रुग पर चढ़ि जाइल। प्रायः सभ तामस चिन्ता छइ नवीनक कपारपर। बेचारीक कुलकुट मे कैओ छेक ने आ तें सम्पूर्णरूपे बेगम पर आश्रित। बेगम साहिबा सेहो अपना दिव सँ कनियो कमी नहि रखैत छथिन। मारि-रोट सँ कहियो कनियो कुठित नहि होइ छथि। वरन एहि विशेष काजक लेल बाइ-गमी नारहोमास छतीसो दिन एगो पंखा हाथे रहैत छनि।

ओ निकम्मी ! ओतय जा क मरि गेलै ने की ? बहरा किछ ने होइ छी ?

नवीन चट-पट मुँह पोछैत बरंडा दिव अगुआइल। हाथ मे कइकटा मधुर नेने बिंदी दिव चढ़ल।

‘हमहर आ त देखिबौ केटा छी ?’

मन मसोसि क नवीन बुझि गेल आ बेगम साहिबाक सामने जा हाथ पसारि देलक।

‘अंय ! माव दूटा ?’ बेगम गरजलह।

ओ पणियाही राजसनी ओते मधुर सभ मेले

की ? निश्चिते भीड़ि गेलै। देखिबौ, लग आ।

‘नजि-नजि, हम नजि खेलेहैं’—नवीन कहैत रहल आ बेगम साहिबाक ओखि रंजन रंजित जकाँ नवीनक मुँहक भीतर चुकाएल एक टुकड़ी मधुर पर पहुँचि गेल। बेगमक पंखा तैयारे छल, तरातर लगडी ओकरा डंगावय। ‘नोरनियाँ, चुड़ैल। इएह रोजा होइ छइ ?’

‘खोदातछा दुआ करता। बुद्ध, आन्हर अफाहिज के कने इफ्तारी मैटौक।’ बाट पर सँ ई खर लगातार आवय लागल।

‘ओ...बाप रे ! आर नजि मलिका-इन। अहाँक पहर पड़ै छी बेगम साहिबा फेर कहियो ने लेब। इह बेर छोड़ि दिअ हम खोदा कसम कहै छी।

‘बम्ह ने तोरा हम कसम खोअये छी।

आह तौही ने की हमही ने।’

‘अछाह अहाँक बाल-बच्चा के भला करताह।’ फेर उअर करणखर।

एकदम हकमि गेलाक बाद बेगम साहिबा नवीन के पहर सँ ठेलैत बजली जो मुँहभड़की। मधुर सभ भीखमंगा के देने आ। कखन सँ ने बेचारा कंठ फाड़ि क चिचिया रहल। आ इहो द दिअही। चंगेरी सँ कने भूखल मुगक दालि देत कहथिन। अँचरी सँ अपन नोर पोछैत नवीन बहरान दिव अगुआइल।

नया-रास्ता निश्चिते कहियो नव-रहल हते परछव एखन खाबि-खुबि भरल छइ। दुनू कातक मकान सभक हालात सेहो तेहने। खाडी एगो मकान एखनो रहय जोगर छइ। बाट ततेक चौड़ा जे एक कात मे ताँती, लोहार, कुम्हार सभ दोकान सवा क बेचि सकैछ। गरमीक राति मे त तते ने खाट पसारल रहै छइ जे कुनू गाड़ी-घोड़ा भरि टोलक लोकक बिनु निम्न तोड़ने जाइए ने सकैए।

टोलक लोक सभ तीनटा मसजिद रहवाक कारणे खूब-गर्वित। गरीब-गुरबा सभक कुसंस्कारक सुयोग ल मोट हेबा लेल मुझा सभ मे वेश प्रतिदिनता। बच्चा सभ के कोरान स शुरू क क तंत्र-मंत्र, यंतर-मंतर खिलौनाइक सभ समय प्रतिदिनता चलिह रहैत छैक। एक शब्द मे कहने लोक के ठकवाक समस्त कौशल अपनौने।

एहि सभ सत्परीश्रमी लोकक बीच तीनटा फालतू-आलसी परिवार बास करैए, जेना खवन वनक उजरा पीपड़ी सभ सजीव गाछ के नष्ट करवा लेल। मुझा सभक पोछाक वेश साफ सुथारा दोसर दिव जकरा सभक फाह पर भार राखि ई सभ मौज करैछे, से सभ मैज-मुचेल मे पड़ल। मुझा सभ भद्र लोक मेले आ बोनहार सभ नीच जगतक—असभ्य।

प्रायः गोर जीसे सुदखोर खान सोझा सोझी इह इलाकाक लोकक शिकार पर निर्भर अह। दहल दनमनाएल एगो

मकानक छत पर कचराक बीच ओ सभ रहैए। उत्तर पश्चिम सीमान्त सँ आवल एहि वनेया दलक सभ सुदखोर। लोक एकरा सभ सँ डेराइए। कुनू एवगदआ स्त्री ओकर सभक लग द क नहि बा सकेछ। इह इलाकाक प्रायः सभ लोक एकरा सभक रिनियाँ अइ आ मोटाउ सुदि सवेवा मे सभक स्थिति प्रजातक।

दिनभरि एकरा लोकनिक घरक केवार बल रहैतक आ ई सभ हिय बानवर जकाँ भरि बाहर टहलान मारत। सभखन रोटी माउस लेने फोरत। कैटलीइ एकर सभक शारीक काज करैत। सभ एकैठाम लायत इहो सुवेत-सुवेत एखन उअर भ जेत त बाटपर फेकि देत। ओइ इहड़ीपर हमला लेल बाटपर कुकुर सभ जेना तैयारे रहैछ। शेष रातिभरि कुकुरक कटाउभ सुनल जाइछ।

खान सभ खेताइ-पीनाइ शेष क हिसाबक खाता ल बेचि जायत। एक-एक पाइक हिसाब करत। फेर कैओ-कैओ हुकाल क मैल कुचेल कमलपर पड़ि रहत। जे कने कुर्बीवाज रहल शहरक एक चकर मारेलेल बहरा जायत।

सुदि खेनाइ सुलमानक लेल धर्म-शास्त्रक निषेध छैक। किन्तु निर्दयतापूर्वक सुदि अमुलेतो ई सभ नमाज पढ़वा आ रोबा रखवाकाल बड़ निष्ठावान जेना खोदा ताल्ला के भूष द क प्रसन्न राखय चाहैत हो। स्वभावतः रमबानक समय भुखे काहिज मेले सभ पड़ैत-पड़ैत फोरि अबैत। स्यासक ठीक घण्टा भरि पछिछा सभ जना वीते ने चाहय। कैओ-कैओ भानसो मे लांगि जाइत आ वांकी बरंडा-पर टहलान दीत। लग दने कुनू असगर जनानी के जाइत देखि आर घंट नमरा दीत आ अश्लोक शब्दक बाण छोड़ैत। मुदा कान सदिकन सतर्क रहिते जे कखन मस्जिद मे अजान पड़ैतक-मानेभरि दिनक उपास समा-तिक बोधना हतेक।

एकरे सभक हंगामाक कारणे दोसर कातक मकान खाली पड़ल छलेक। परछव बजारक हते लग आ हते पेश मकान मात्र बीस टाका भाड़ा मे पावि एह टोलक नव बासिंदा असगर अली खोचने छल जेना ओ कुनू नव वस्तुक आविष्कार केने हो। तें बेसी खोज-खबरि नहि ल अपन माय बीबी आ बच्चा के ल क सोम्ते एह मकान मे आवि गेल। बीबी नवीमा के सेहो बड़ पसिन्न पड़ैल। ओ बस्तु जात सरियावय मे लांगि गेल। परंच पहिले दिवक सभ मे कने सुस्तेवाक हेतु ओ उपरतलाक खिड़की लग ठाढ़ि भय नीचा नेना-सुटकाक खेल देखैत छल कि इठात ओकर बाशु आवि ओकरा भीतर ल जाय चाहलक।

ओइ ! मझिपा खान सभ के ल देखू। केना ताकि रहलए जेना आखिक डिम्हा बहार भ जेतैक।

बबीमा घरकर मे देखलक जे बरंडापर भीड़ केने खान सभ ओकरे दिव ताकि

रहल छैक आ हंसि-हंसि इशारा क रहल छैक। बखन खान सभ देखलक जे नवीमा ओकरा सभ दिव देखेछइ त आर बोर सँ ठिठिभाव लागल। नवीमा निलित भावे चुपचाप देखैत छल-ता ओकर बाशुक श्वर कान मे पड़ैलक—बं मौगीइ के कनियो लाज-बाल न’अ होइ त मनुषाक कून दोल ?

कइ बल सँ नवीमा आ असगरक बीच एगो दुर्वीव दूरी बनल छइ। दुनू पितिओते भाइ बहिन छलभा ने ने मे बागदान मेले रहै। परंच रेवाज एहन जे भेंट-वांट प्रायः नहि जे जकाँ होइ। ओना कहियो काळ बुढ़वा-बुढ़ियाक आखि मे छाउर भोकि दुनू भेंट क लेत छल। जाइठाम जनानी के भन्तपुरक बासी बना राखल जाइ छइ ताइठामक लेल एहि तरहक घटना साधारण बात मेले। बाद मे ओकरा दुनूक बीच प्रेम बढ़ैल आ चिह्नी पुरबी सेहो चल्य लगलक आ तकर बाद असगर नवीमा के स्कूल मे भर्ती करावेलेक बोर करय लगलक।

ज्वानीक शक्ति, अस्वाह-उमंग कॉलेज जीवनक आरम्भ मे असगर ओहन छात्र सभ मे सँ छल जे सभ देशक स्वाधीनताक बात छोड़ि आर किछु सोचिब ने सकेत छल। किसानक गरीबी, भूमिन्दारक शोषण बोनहार सभक दुर्दशाग्रथ अवस्था आ पूँजी पति सभक सर्वग्राही ज़िंसा भादि सभ विषय पर गर्म-गर्म भाषण देवाक लेल ओ वेश जनप्रिय छल। जेहने सुबका, तेहने अध्ययन छात्र सभ ओकरा उदीयमान नेता हिसाबे देखितैक। नबीमा लग सेहो नाय-कोचित, चर्महुक मामिला मे कनियो कम नहि। नवीमा लग ओ अपन रंगीन कार्यावलीक रूप उपस्थित करैत। अख-बार मे ओकर नाम देखि नवीमाक छाती सुप्तन भ जहतैक। ओकर सली-वहेली, परिखन-पुरजन मे कैओ इहन नजि छले ओकरा मे असगर सँ बेसी देश प्रेमक भावना होइक। नवीमा सेहो ओकरा संग नव जीवन आरम्भ करवाक हेतु अपना के तैयार करय लागल। अत्यन्त संवेदनशील, बुद्धिमती एहि बालिकाक चिन्ता बारा के एहि पथपर अग्रसरित करै लेल मात्र कने इंगितक खगता छले। शिष्ट ओ भारत वर्षक समस्या सभ सँ परिचित होमय लागल आ सम्भाव्य समाधान सोचि ओकर मन आनन्द विभोर भ जाइ। भारतक स्वाधीनता क्रमशः ओकरामन मे स्थान बनबैत गेलै आ देशक लेल प्राणो देवाक हेतु ओ तैयार भ गेल।

असगर काळेज जीवन शेष होइतहि विवाह कैलक आ तकर बाद आइब पढ़नाइ आरम्भ। नवीमा ई देखि अवाक रहि गेल जे असगर ओकरा अशन कइक-टा राजनैतिक संगी सँ परिचय करौनाइ आ गर्म-गर्म भाषण तक सीमावद्ध अइ। फेर सोचैत जे भ सकैए पढ़नाइक कारणे इना होअय आ पढ़नाइ शेष होइतहि ओ पूर्ण-रूपेण राजनीति मे भाग लेत।



वस्तुतः नवीमाक राबनेतिक उस्ताह जेना दिन-दिन बढ़त गेले, असगरक उमंग ठंडा पड़त गेले। नवीमाक प्रश्नक उत्तर मे ओ नाना तरह बहना बतियाय लागल। कहियो कहिते- शिप्र हमरा लोकनि के संतान इष्ट। फेर कहिते बच्चा एखनो तते छोट अइ जे एकरा छोड़ि बड़ा बेमार उचित नहि। बखन बच्चा कते दिनक मेले आ हमर नवीमा केरो अपना के राजनेतिक कार्यस्य तयार क लेलक तखन एकदिन असगर कहलके जे आइतक रीका लेल ओकरा नीक बर्बाद करय पड़ते। आ पाव देलाक बाद नौकरीक प्रयास मे लागि गेल।

से जे होइ, सय बात, कम व कम पत्नी सं, बेची दिनबदि नहि तुकाओल जा सकैए। ओना दोस-महिम सं ओ इष्ट कहिते जे पारिवारिक काज मे तेना ने बाकि गेलख जे पलखतिष्ट ने होइ छइ। दोस-महिम सोचेत—सरिपहुँ बेचारा बियाह क फंसि गेल।

किन्तु तकर बाद ? नवीमा अन्ततः बुझि गेल जे पेच-पेच देख्यर छोड़ि असगर सं आर किछु पार नहि लगते, से साइव ओकरा ने नहि छइ।

बीरे-बीरे असगरक कन्व-कन्वक रजिस्टर किछु ओकील आ करकारी कर्म-कारी बरि सीमाबद्ध भ गेले, जे सभ दिन-परि टाकाक चिन्ता ने स्पष्ट रीत छल। नवीमा के त जे आब ओकरा बेत अस्वस्थि बोब होइक कारण बुझबा ने भावठ नहि रहल जे नवीमा ओकरा दसपागी बुझेत छइ आ मनहि-मन वृणाओ करै छइ। नवीमाक जुपी सं ओ ततेक विरक्त भ बाइत जे कलनो-कलनो ओकर सुनर गालपर थप्पर मारेक इच्छा होइतेक। वरु नवीमाक उपहास, भगड़ा केनाइ एहि जुपी सं नीक ओ सोचेत।

इफ्तारीक समय भ गेले। खानसम खमा भेल। इष्ट गोटे बरंडा पर आ बांडी बाइ बनावे ने अस्त। नवीमा खिड़की लग ठाढ़ि नीचा बाट पर देखि रहल छल। भरिस्क माव छ एक मेळ हते ओकरा सभ के इष्ट मकान मे बना। खान सभ सेहो ओकर मुँह निहारेत अभ्यस्तसन भ गेल छल। ताइ पर एकर उदासीनता देखि ओहो सभ आव बेसी रुचि नहि लेत। आ ठीक एहि समय ओकरा खभक ध्यान केन्द्रित रहैक लगक मसबिद पर, जतय सं जे कुनू समय अज्ञानक ध्वर सुताइ पड़ि सकै छले।

कुनू गली सं एगो बूढ़ भीखमंगा येहैत-येहैत आबि हाबिरे भेल। हाथक लाठी पर भार देलाक बादो ओ अपन देह के सोझ नहि क पावि रहल छल। ओकर खर्चा कपे छले। नवीमाक मकानक सामनेक बाट पार करैत ओ जेना हँसि गेल हो आ ते एगो देवाल मे पीठ भरा ठाढ़ भ गेल।

नवीमाक नान्हिटा बच्चा असलाम सेहो ता खिड़की लग आबि गेले। ओकर नजरि सामने भीखमंगा पर पड़ले। ओ पुछलके— माँ देखही त, ओइ भीखमंगाक हाथ मे की छइ ?

‘की जानय तेजिदे बेटा, भरिस्क खेबाक कुनू मय हते ?’

—तखन साइ किइ ने छइ ?

—म क्केर जे रोबा रखने हो आ ते मकानक बाट लकेते हो।

—तो रोबा नहि करै छै माँ ?

नवीमा अचोब बेसा रिठ देखि कने बिहु-लेत सन नकारात्मक ज़ही हिसा देखे।

—तखन कन्व-कन्व के इन्वैकधर के कहलथिन ? ओ फुलि बाबब रहथिन ?

नवीमा किछु सोचि बाजलि—से बात तो अपन अन्वेबान सं पूछि लिअहुन।

—किन्तु माँ, तो किइ ने रोबा करै छै ?

नवीमा सिनेह सं बेटा के हुलारेत बाजलि—तौ नहि करै छै ने—तौ।

—हम त बच्चा छी। बाइ कइ छइ जे जे रोजा नहि करैए तकरा ने कि नर्क मे बाय पड़े छइ। अन्धा—नर्क बैहन होइ छइ माँ !

—नर्क ! इष्ट त हमरा लोकनि क सामने अइ—नीचा मे। तीर वृणाक सं नवीमा कहलके।

असलाम साइ बाक भर तकेत पुछल के—कतय ?

—नीचा मे—उष्टर जतय ओ भीख-मंगा ठाढ़ अइ, जतय लोहार, कुम्हार, तांती, बोनहार सभ रहैए।

—सुरा दाइ त कइ छथि ज नर्क मे आगि होइ छइ ?

—हँ सोना, ठीके।

—आ स्वर्ग केहन होइ छइ ?

—इष्ट छइ स्वर्ग जतय तौ, हम आ तोहर दाइ रहै छथुन। जाइ ठाम पेच-पेच, साफ-सुथरा भ्रमभ्रम करैत घर छभ छइ। मारितेराव नीक-नीकुत खेबाक, नीक-नीक पहिरनाक छेक, नाना तरह लेकभोना सभ छइ।

—शहर मे तखन किइक ने सभ स्वर्ग मे रहैए ?

—कारण स्वर्गक लोक अनका स्वर्ग मे नहि आवय दे छइ। ओकरा सभ सं काल करा ले छइ आ फेर बकिया क नर्क मे ठेलि दे छइ ?

—आ ओ सभ आन्हरो भ जाइ छइ ?

—हँ सोना, नर्क आन्हर लोक सं भरल छइ।

आ ठीक एही समय अज्ञानक ध्वर सुताइ पड़ल। भरिदिनुका उपासक समा-स्तिक घोषणाक संग प्रबलित भेल रंग-विरंगक आतिशबाजी। खान सभ बरफर करय लागल।

ओ बूढ़ अशक्त भ्रमलीगा अपन हाथक वस्तु मुँह मे देवाक प्रयास कैलक परञ्च उत्तेजना सं ओकर हाथ कापय लगलक आ

हठात मधुर खसि पड़ले। ठेहन पर भर द क ओ मधुर उठेवाक प्रयास करय लागल। ओकर आँगुर-मधुर बरि जाइ-जाइ ता केन्द्रो सं एगो कुकुर आबि लूझि लेलके। शिप्र आर कष्टकटा कुकुर जूमि गेले आ कटाउभ करय लगले। दुर्वल कंठे कुकुर सभ के दबारेक प्रयास कैलक परञ्च कुकुर समक आवाज भार तेज भ गेले। भूख आ व्यर्थता त अभुष्य ओर बूढ़ माटि पर खसि पड़ल आ बच्चा बर्बाद हिचुकय लागल। ओहिरि चनि दू गो खान गरदिन नमरा काय देखलक आ खुशी सं हँसय लागल।

‘माँ !’ माइक पाछा मुँह तुकभोले डेराल असलाम फिचफिच क आवेहन बनओलक। आ इष्ट प्रथम ओकर अचोब मन नर्क शब्दक प्रकृत व्यञ्जना उपलब्धि कैलक।

‘शयतान’ ! खान सभ दिव देखि

नवीमा घृणा भरल स्वरें आले सं बाजलि।

‘माँ !’ भरल कंठे फेर असलाम कहलके।

नवीमा ओकरा जोरा मे उठा छाती सं चाटि लेलक आ आबि मिलेत आइत कंठे बाजलि—सोना, पच भ क तो सभ सं पहिने इष्ट काज करिहै बाइ सं आर ककरो नर्क ने बाव नहि करय पड़े !

—आर तौ माँ ! तौहँ खवे किने ?

—हम ! हम की काज कर ? हम त एही जइल मे बन्म मेक बूढ़ि भ बायन”

—तौ त कनियो बूढ़ नहि छै।

दाइ बर्बाद नहि। आ तौ नहि रहने जे हम एक दम सं असगर भ बायन।

—अजि सोना ! हम किन्तु ने अपन सोना बेटा के असगर होमय देव। हमहुँ रहव-अवसे रहव।

—रखीद जहान

मैथिली—अप्रदूत

### दू गोटे गीत

#### महा जागरण गीत/पकड़ा किसानक लेल

बूट हो किसान भइया फुटलइ किरिमा !  
पूरुब सं बदलल जाय दुनियाँ जमनमा !  
रान्दीवीक राज बंटय सुफुते जनेरा  
पुहुप विमान चढ़ि मन्त्रीक फेरा  
दूचे पुते बड़ ‘सोम’ मान धान धनमा ! बूटऽ  
हाति सं डेरा देने फौती मलेरिया  
ओरे प्रधारल घर मे पाहुन समरिया  
भोट माँगअयला सतराजिया सजनमा ! बूटऽ  
रहऽ ने बहाना कयने  
भूखकैर घऽत थयने  
अपना करम सं मरिऽ भूखकैर बहनमा ! बूटऽ  
—सोमदेव

#### मिथिलाक वसन्त

तीन कात मे, नदिया रे नदिया बसर दिख पहाड़े हो  
बिराजै माभे  
रामा हमरो मिथिला देश हो बिराजै माभे ॥  
तीन लोक मे सुनार मिथिला पावन ओ मनभावत हो  
लोभाओन लागे  
रामा थलै मास फगुनमे हो लोभाओन लागे ॥  
तीसी जे फुलेलै रामा सरिसो जे फुलेलै हो  
फुलाइए गेले  
रामा बन के बनफुलबा फुलाइए गेले ॥  
सजल धजल पिरथी लागे नव कनिये हो  
अबैया भेलै  
रामा पहुना राज बसन्तक जनु अबैया भेलै ॥  
छीटै अतर बसात हुलसि केँ बेनिया जनु डोलाबै हो  
अलापे लगलै  
रामा कोइली कनियां परछिन गीत अलापे लगलै ॥  
—राम लोचन ठाकुर



वाल-सम

## वाचस्पति मिश्रक जन्मस्थान मिथिलाक तीर्थस्थान

षडदर्शन टीकाकार वाचस्पति मिश्र अपन जन्म सं कोन स्थान के विभूति कहलन्हि ई हुनक कोनो ग्रन्थ मे स्पष्ट रूपेण बर्णन नहि अछि। परन्तु वर्तमान अम्बराठाढ़ीक पूर्व मे एक उच्च स्थान छेक, ओहिठाम दु गोठ पोखरि छेक, जाहि मे एकक नाम मिश्राइन तथा दोसरक नाम बचही छेक। वृद्ध परम्परा सं ई सुनि रहल जे एहिठाम वाचस्पति मिश्रक आवास तथा विद्यालय छलन्हि। एहिठामक ई परम्परा अखन बरि छेक जे लोक अपन सन्तानक अक्षरारम्भ वाचस्पतिक बराहीक माटि सं करवेत छथि। लोकक ई बाराणा छन्हि जे एहि डोहक माटि सं अक्षरारम्भ करबोने ओ व्यक्ति विद्वान होइत छथि। वाचस्पति मिश्रक आवास सं उत्तर प्रायः पाँच सड़ बीघा जमीन एहन छेक जे प्राचीन कालक पेशलोकक आवास भूमि सदृश लागत। एहि ग्रामक नाम अम्बराठाढ़ी पड़बाक वृद्ध मत अछि जे राजाद्वय आन्धर छलाह हुनक राजधानी रहबाक कारणे एकर नाम अम्बराठाढ़ी नहि अम्बराजधानी दु खण्ड मे परिवर्तित भऽ गेल प्रथम अम्बरा द्वितीय धानी सं धानी आ कमला ठाढ़ी भेल, जे सम्प्रति दू टोक रहितहुं एके ग्राम अम्बराठाढ़ी सं सम्बोधित होइछ। राजा द्वयक राजधानीक प्रति किछु मतभेद अवश्य छेक। डा० गंगानाथ झा सांख्यतत्त्व कौमुदीक भूमिका मे राजाद्वयक राजधानी नेपाल

प्रान्त मे सिमरांव गढ़ मानने छथि, मुदा डा० झाक मत म० म० डा० उमेश मिश्र पूर्ण रूपेण सहमत नहि छथि। प० श्री वासुदेव झा, अत्यन्त नीक विद्वान जे सम्प्रति हाई स्कूल अम्बराठाढ़ी मे हिन्दीक प्राध्यापक छथि हुनका मत ई बुझना जाइछ जे सिमरांव गढ़ मे राजा द्वयक राजधानी रहला होइन्हि तथापि वाचस्पति मिश्र सम्प्रति रहबाक कारणे हुनक एक छोट राजधानी अम्बराठाढ़ी मे अवश्य रहल होइतन्हि। वाचस्पति मात्र अद्वितीय विद्वाने या नहि छलाह अगिष्ठ उच्च कोटिक साधको छलाह, एकलव्य भगवानहि के स्वयं अर्पण करने छथि ताहि सं दिनक आध्यात्मिकता क परिचय होइछ। कतेक विद्वानक विश्वास छन्हि जे सुरेश्वराचार्य पुनः वाचस्पतिक रूपे प्रकट भेल। वाचस्पति मिश्र छथो दर्शनक टीका मे तत्तत् सिद्धान्तक समर्थक निष्पक्ष भावे कहलन्हि ताहि लेल हिनक परम प्रामाणिक टीका सं छथो दर्शन सर्वथा पुष्ट भेल। हिनक टीकाक अध्ययन मुख्य साधन मानल जाइछ। अस्तु! एहन विद्वान परमपूज्य वाचस्पति मिश्र जे, मिथिला मे अवतीर्ण भए जग के समुचित कयलन्हि, हुनक जन्मस्थान रूपी तीर्थक तीर्थाटन करव हम मिथिलावासीक पुनीत कर्तव्य एवं धर्म थीक।

— अनिल “सुधा”

वाल—कविता

उदघोष

मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित, लए ‘पाञ्चजन्य’ उदघोष करब।  
अपन मातृ भाषाक हितक हित, स्व स्वत्व ग्रहण क जाय लड़क।  
अभिलाषा भाषा सुविकापक, युव जब आन्दोलन मे आवथु।  
कछिया काछि बान्हि दृढ़ बल लए, स्व भाषा अधिकार देखावथु।  
हम छातो फुल बढब आगां, दय नारा, कारा सं न डरब।  
मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित, लए ‘पाञ्चजन्य’ उदघोष करब।  
बनि मातृभूमि केर सबल पूत, निज भाषा केर अस्थान करब।  
मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित, लए ‘पाञ्चजन्य’ उदघोष करब।

— भूतनाथ

मिथिला विभूति .....

हिनक पद—

‘योड़ के जातह, अविष महिषविह,

उंच क बनिह भारि।

जं खेत तेयो ने उपजह,

डाक के पदिह गारि॥’

एहनो किसानक लेल पथ प्रदर्शनक काज करेछ। ई पद मात्र हिनक कृषि सम्बन्धी ज्ञानहिक नहि, अपितु आपना पर अटूट विश्वासक सेहो प्रमाण थीक।

एहिना—

‘कुसि भमबरा, चोठोवान,

आवहुं बेसह घर किसान।

मारे बिया, बोक्के धान,

आव कि रोपवह धान किसान।

धनरोपनीक उचित समयक सम्बन्ध मे

प्रामाणिक मानल जाइछ आ प्रायः किसान लोकनि एकर पुनरावृत्ति करैत सुनल जाइ छथि।

‘साभोन पछवा, भादव पुरिवा,

आसिन बह इशान।

कार्तिक कंठा सिकियोने डोलय,

कत’क रखवह धान।’

जं पुरवा पुरवेया पावए,

सुखले नदिया नाव बहावए।

हिनक ज्योतिष ज्ञान गणनाक अप्रतीम

उदाहरण अह।

महाकवि डाकक पद सभ जाइ ठाम

सहज बोचगम्य अह ताइ ठाम किछु पद

सभ दृष्ट कृतक पर्याय मे से हो अवैए,

जेना कि कबिर दासक उनट बांधी। एहि

तरहक एक पद अह—बढ़दा मूते खेत

दहाय, खसे खेत त बढ़त पड़ाय।’ कबिर

दासक संग आरो समता छलनि हिनका

मे। जेना कि कहल जाइए—ई पदल-

लिखल नहि छलाह—कबिरदासक मसी

कलम छभोनही सन। सत्य जे हो परंच ई

## लाल बुझकरक चिट्ठी

श्रीमान् सन्वादक जी. महोदय जी!

जय मैथिली!

बाद समाचार ई जे हमर बेर दो मना कैलाक उपरान्तो अहाँ अपन आदति सं बाज नहि एलहुं आ हमर दोसरो चिट्ठी केँ छापिये देलहुं। त कान खोलि क सुनिह लेल जाओ जे आहाँ केँ जे बेर-पनक विशेष दाबी हो त ताई सं मिथियो भरि भुल लाल बुझकर केँ नहि छनि। कहलकेँ किने जे ‘चोरैक डर भगवा तुक-ओनाइ—से तकरे परि’ आइ कालिक दोआही नेताक डर लाल बुझकर बनन मुँह मे ताला किहूँ ने लगा सकै छथि। तखन त खुदो खा क भूल नष्ट करवाक पक्ष में हम कहियो नहि रहौं आ जे हेतु अहाँ लोकनिक पत्रिका से हो कहीं आयल पानि गेठ पानि बाटे विशयक पानि सन नै हो—तँ एक आब अँक लेल किहूक देवार-विन्दार होइ—उइहो चिट्ठी नहि छापे लेल लिखने रहौं। हँ, तखन ई बात बरि सत्त जे फरमाइवी रचना हम नहि लिखे छी—माने आर्डर सत्तावर नहि छी।

आहाँ लिखैत छी जे देश मे महगी आकास छवि रहल-ए, अगहने सं चारुकर दाम चारि टकै भ गेल छेक ताई ठाक सरकार २ लाख टन बाउर पठा बदला मे तेल लेबाक जे रुसक संग संधि केँक-ए तकर विरोध हेवाक चाही। हमरा त अपनेक बुद्धि पर हँसी लागै। कहूँ त भला, कहाँ राजा भोज आ कहाँ भोजन तेही। तेलक संग कतौ बाउरक तुलना हो। एही बुद्धिक कारणे ने मैथिल एते पिछड़ल अह। जे जाति सूति उठि केँ सर्वांग शरीर मे तेल लगवैए आ तेलन शान करैए, स्नानक बाद पूजा करैए आ भगवानो केँ तेल दैत छनि, भोजन मे रोज जं तिलकोरक तबआ नहि भेलैक त अदौरी-दनौरियो अवैए चाही आ से बिनु तेल भूजल नहि जाय अचार दो बल्लौ-तीन बल्लौ जोगओने रहत आ बल्लौ-बल्लौ तेल पलटत, राति सूते सं पहिने तेल पणर मे लगवै करत आ तँ पेट मे खड़ ने सिंग मे तेल बला कहवी केँ चरितार्थ करत—माने तेल सं पलो भरि फराक नहि रहत तकरा लेल तेलक विरोधक बात केँहन लजाएत थिक सेहो त सोचि-तहुँ ?

त माने पढ़त जे पूर्वकाल मे समक लेल पढ़वा-लिखवाक सुविधा नहि छलैक। परंच कबिरदास सं फराक दिनक अधिकांश कविता सहज अह जनगणक हँडा आकांक्षा दर्पण भाई। महाकवि डाक सरिपहुँ लोक कवि छलाह—मक कवि नहि श्रृंगारिक नहि... एहन जे महाशानी पंडित छलाह डाक तनिक मृदुलक सम्बन्ध मे कहल जाइछ जे पोखरि मे डूबि अकाले कालक माल मे चल गेलाह। ओना प्रतिभाक प्रायः अकाले मृत्यु होइत रहलैए परंच एहू-सम्बन्ध मे महाकवि अनजान छलाह से नहि। ओ स्पष्ट कहै छथि—ई जुनि बुझि डाक निहुँ दि, नाशक काल विनाश बुझि।

आइ समय आवि गेठइ जे हमरा लोकनि अपन एहन एहन विभूति केँ ताकी बीयाबी आ अपन नातोय मर्यादा केँ बढ़ावी।

—मुजतबा अली

सम्पादक जी, तेलक उइहो मरत्व छेक जे जे काज शक्ति सं संभव नहि तकरा सहजहि संभव क सकैछ जं रमैन पढ़ने हब त बुझलै एत जे राबण आ बालि सन बीर पुइष अपटी खेत मे मारल गेलाह आ बिभीषण-सुग्रीव सन पछःपुआ मात्र तेलक बले राब्याधिकारी बनि गेलाह। महाभारत काल मे युधिष्ठिर सन अगाधक लोक धर्मराजक उपाधि पञ्चोलनि आ कर्ण-भीष्म पितामह सन सत्यवादी योद्धा अकाले कालक मुँह मे चल गेलाह। कहवाक आशय मे तारीयक मतलब ई जे एहन जे महत्वपूर्ण वस्तु मेल तेल—तकर विरोध नहि क उपयोग केनाइ सिखूँ जे भविष्य बनत। हेयो महानुभाव हमरा लोकनिक पुरखा मुल नहि छलाह जे बहुत पहिनेहि कहि गेल छथि—तिर तेल, ई कैमहर इंगित करैए—ताइ पर ज्ञानभांड योग द केँ त सोचू।

सम्पादक जी जं अपने लोकनि हमर सलाह मानौ त हम कहब जे व्यर्थक मैथिली आन्दोलनक नाम पर अन्न सर्वस्व नहि गमा—तेल आन्दोलन आरंभ कर। सफलता सुनिश्चित मानि लिहइ आ मिथिला-मैथिलीक सम्पूर्ण समलयाक समाधान तथा सर्वांगिण विकासक एक मात्र ई पथ जानि लिहइ। ओना अपन खर्चा खा केँ एहन सलाह देवे केँ करत—तथापि हम त गारंटियो देवे जे जं हमर बात फुलि प्रमाणित हो त हमरे नाम पर एक दर्जन एससिसियन पोसि लेव। हेयो बाबू—एकर त साक्षात प्रमाण छथि अपना लोकनिक मुख्य मंत्री डा० श्री जगन्नाथ श्री मिश्र। हँ तेल लगवैक कला अखरे ज्ञानल रहक चाही ने त इनुमान जी जकाँ भरि बीनगी तेल लगवैत रहि जायव आ हाथ बंचत सुखा।

सम्पादक जी, अहाँ केँ त बुझलै अह जे श्रीमान लाल बुझकरक जेठ बालक एह बेर मैट्रिक परीक्षा देयन परंच एखनहि सं कन्यागत लोकनिक लाइन लगले रहैत छनि हुनका ओतय। एकर कारणो छेक जे ओ दहेज विरोधी छथि आ तँ वेठा मे टाका गनेवाक प्रश्ने ने उठैत। किन्तु एमहर आवि केँ ओ निर्णय लेखनिहै जे वेठाक विवाह ओकरै ओतय करओताइ जे लाइसेंस प्राप्त तेलक डोलर होथि। जं अहाँ केँ एहि तरहक कथा जानल-बूझल हो त घटकैनी क सकैत छौ।

अन्त मे अने केँ सूचनार्थ-लिखि दी जे हम एखन तेल पर शोक रहल छौ। शोकक विषय थिक—तेल किहूक आ केना। परंच दुखक बात जे तेलक अभाव मे घर मे सर्वांगो ने पड़ेछ आ तँ शोक कार्य ठर पड़ल अह। एही अलगा केँ बाट ताकि रहल छौ जे कइया रुसक सामग्र्यदो तेल भारत मे पदार्पण करत जे हमरो घरक दीप जलत आ शोक कार्य पूण भ सकैत। एही दुभारे एखन रचना पठैत सं सेहो अवसर्था छौ किन्तु तेलक अगमन होइते रचना अवसरे पठाएव से विवश अछि। आर की?

अनेक पत्रोत्तर नहि पेशक प्रवल आकांक्षी श्रीमान लाल बुझकर बुझुक ग्रामवासी



## सभा-समिति

ड्योद १० जनवरी, ८२। आइ एतय डा० ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्मक अध्यक्षता मे विद्यापति पर्व समारोह मनाओल गेल। वर्माजी कहलनि जे लोहनाक पूव ई पहिल विशिष्ट आयोजन थिक। उद्घाटन भाषण करैत डा० कांचीनाथ झा किरण जनौलनि जे मैथिली भाषी क्षेत्र भाषाई उपनिवेशवादक शिकार अछि। ओ संस्कृत आ हिन्दी सं घोषित अछि। जापरि घर, मन्दिर आ पाठशालाक भाषा एक नहि होयत, तापरि ई मूभाग पिछड़ले रहत।

श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर जनौलनि जे मातृभाषाक माध्यम सं शिक्षा नहि देवाक कारणे एतऽ एतेक दिनक बादो शिक्षाक प्रतिशत—साक्षात्कार प्रतिशत पचीस सं आगां नहि पुगल अछि।

आचार्य नाजिम रिजवी कहलनि जे अपन अधिकार लेल मुखिया, बी० डी० ओ०, विद्यापक आ सांसद लोकनिक घेराओ करू जाहि सं सरकारी कार्यालय मे मैथिली भाषा मे काज भऽ सकय।

श्री सुभाषचन्द्र यादव जनौलनि जे मिथिलाक लोक मे संघर्ष चेतना जगववा लेल विद्यापति पर्वक उपयोग करवाक चाही। एहि समारोह मे मंच संचालन कऽ रहल छलाह श्री जीवकान्त।

कवि सम्मेलनक संचालन कएलनि श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर। एहि मे भाग लेलनि मणिपद्म, किरण, चन्द्रभानु सिंह अमर, प्रवासी साहित्यालंकार, जीवकान्त, उदयचन्द्र झा विनोद, शोतिबर्द्धन, नाजिम रिजवी, पवन कुमार, विमलेश किंकर प्रो० डा० दयानन्द झा, प्रो० देवकान्त मिश्र, प्रदीप मैथिली पुत्र इत्यादि।

सांस्कृतिक कार्यक्रम मे अपन आकर्षक गीत सभ सुनौलनि शशिकान्त सुषाकान्त, चन्द्रमणि, सुमन माया कान्त, गगन सुवन आ गंगाधर झा। एहि कार्यक्रमक संचालन क रहल छलाह जीवकान्त आ ज्ञानचन्द्र।

विद्यालयक छात्रा लोकनि उषा, इन्दु, गिन्नी कार्यक्रमक आरंभ विद्यापतिक गोसाउनिक गीत सं कमलनि।

आचार्य नाजिम रिजवी राधवाचार्य शास्त्री आ दामोदर लाल दासक मृत्यु पर शोक प्रस्ताव अनलनि।

किरण जीक प्रस्तावक अनुमोदन करैत जीवकान्त बिहार सरकार सं माछ कयलनि जे मैट्रिक परीक्षा मे निर्धारित मैथिली गद्य पद्य संग्रह अनुपयुक्त आ छात्र लोकनिक स्तर सं बाहर अछि, ते अनुभवी शिक्षक लोकनिक नव सम्पादक मण्डल नव गद्य-पद्य संग्रह सम्पादन करय।

भोला उच्च विद्यालय ड्योदक प्रधानाध्यापक श्री बिलट झा स्वागत भाषण कयलनि आ कार्यक्रमक अन्त मे धन्यवाद ज्ञापन कयलनि विद्यालयक वरिष्ठ शिक्षक श्री लोचन झा।

जेना कि वर्माजी कहलनिह जे ई आयोजन एहि अंचलक पहिल विशिष्ट

आयोजन निक से जे सत्य त कह्य पड़त जे एकर श्रेय श्री जीवकान्त के छनि जे हालहि मे खजौली छोड़ि ड्योद मे खेमा खसओलनिहैं। किन्तु एहू बात के अन्वीकार नहि जा सकैछ जे हुनका लोकक सहयोग भेटलनिहैं जकरा बल पर आयोजन सफल भ सकलए। एहिठाम ई स्पष्ट आइ जे मैथिल चेतना मुहल नहि अइ अपितु सुसुप्तावस्था मे पड़ल अइ जकरा भूकम्पोजि के जगेवा लेल नेताक प्रयोजन छइ अगुआक प्रयोजन छइ जकर नितान्त अभाव रहल-ए।

एहि अवसर पर किरण जी कह्य जे मैथिली भाषी क्षेत्र भाषाई उपनिवेशवादक शिकार अइ सतप्रतिशत सत्य अइ। सतप्रतिशत सत्य अइ जे मिथिलांचल संस्कृत हिन्दी द्वारा शोणित होइत आवि रहल-ए आ आव एहि मे निश्चित उर्दूक सहयोग सेहो रहलक। ते आइ आर वेदी प्रयोजन छेक जे मन्दिर-मस्जिद, स्कूल आ घरक भाषा एक मात्र मैथिली हो आ एहि लेल अनहि जे कुनू मूल्य चुकावय पड़य-हमरा लोकनि के तैयार रहक चाही।

जहाँवरि मैट्रिक परीक्षाक निमित्त निर्धारित मैथिली गव-पद्य संग्रहबला प्रस्तावक प्रश्न अइ प्रायः समस्त मैथिली भाषी एहि सं सहमत हेताह जे हुनका विषय बोध हेतनि। परंच प्रश्न त ई अइ प्रस्ताव पारित केनहि टा सं की समस्याक समाधान भ सकैछ? सरकार मैथिलीक हित चाहैह नहि आतैं ओकरा पर एहि प्रस्तावक कुनू प्रभाव पड़वाक संभावना कएल नहि जा सकैछ। की आशा करी जे एकर सम्पादक लोकनि जे निश्चित मैथिली भाषी विद्यान छथि हुनका लोकनिक आखि खुजतनि आ ओसभ एहि काज सं अपना के फराक राखि उपयुक्त लोकक लेल स्थान खाली करताह? थोड़ेक कालक निमित्त मानिली जे इहो लोकनि से नहि क बिहारक मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र तन मातृधनक सूची मे अपन नाम लिखेनाह मे बढपन बूमति त की छात्र शिक्षक लोकनिक एहि संदर्भ मे कुनू कर्तव्य नहि?

जहाँवरि हमरा लोकनिक विश्वास अइ जे एकर समाधान छात्र-शिक्षक लोकनिक हाथ मे छनि। ओ लोकनि निश्चित एहि निमित्त प्रयोजन मेने पैघ सं पैघ आन्दोलन इडताल क सकैत छथि। छात्र आ शिक्षक लोकनिक संगठन सरिपहु सशक्त अइ जे सरकार के नमरा सकैछ आ अपन/अपन नेनाक भविष्यक बाट परिष्कार क सकैछ। मातृभाषा मातृभूमिक मर्यादा बढ़ा सकैछ।

कलकत्ता, २७-१२-८१। स्थानीय निरामय पालि विज्ञानिक मे नवगठित नव जागरण मैथिल संघ'क पहिल सभा मेळ जकर अध्यक्षता कएलनि मैथिलीक वयोवृद्ध सेनानी श्री हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु'। एहि अवसर पर मिथिलेन्दु जीक अतिरिक्त सर्वश्री बाबू साहेब चौबरी, रामलोचन ठाकुर योगेन्द्र ठाकुर ब्रह्मानारायण झा, चन्द्र किशोर मिश्र ओहि वक्ता लोकनि संस्थाक प्रति अपन-अपन शुभकामना प्रकट कएलनि

तथा सहयोग सुभाषक आवस्यन देलनि। मिथिला मैथिलीक सर्वांगीण विकास लेल एकजुट भ काज करवाक आवश्यकता पर जोर देल गेल। संस्था दिस-सं संयोजक श्री वैद्यनाथ मिश्र आगत यतिथि लोकनिक प्रति आभार प्रकट करैत संस्थाक उद्देश पर प्रकाश देलनि तथा अनुभवी मैथिली सेनानी लोकनिक अतिनिर्देशक आवेदन कएलनि।

तत्काल श्री वैद्यनाथ मिश्रक संयोजकत्व मे एगो एड्हुक कमिटीक निर्माण कएल गेलह जाइ मे सर्व श्री राजबली ठाकुर, रामनारायण कुमार, सुरेश झा, चन्द्र कुमार झा, लखन मिश्र सदस्य रहलाह-ए।

मैथिली मे प्रायः संस्था ननेत रहल अइ संस्थाक निर्माण नीकै नहि आवस्यको छेक खासकें मिथिलाक मैथिलीक वर्तमान स्थिति मे। परंच संस्थाक निर्माण अपना अपा मे कुनू महत्व नहि रखेछ महत्व-पूर्ण होइछ ओकर काज' इहए कारण छेक जे कतेको संस्था आयल पानि गेल पानि बाटे विद्यालय' पानि बला कहबी के चरितार्थ करैत रहलह। नव जागरण मैथिल संघ' एहि कहबीक विपरीत अपन कार्य सं अपन अस्तित्वक भान मैथिल समुदाय के करा-ओत तथा मैथिली आन्दोलनक आगामी

इतिहास मे अपन स्थान बनाओत से आशा हमरा लोकनि करैत छी। विश्वास अइ जे एकर कार्यकर्ता लोकनि निरास नहि करता। 'देसिल बयनाक शुभकामना।

### देसिल बयना

पाठकीय परिवारक सलियाना सदस्य

१. श्री अभय नाथ झा, कलकत्ता
२. श्री उदय कान्त मिश्र, कलकत्ता
३. श्री वैद्यनाथ मिश्र, कलकत्ता
४. श्री राम नारायण कुमार, कलकत्ता
५. श्री लखन चौबरी, कलकत्ता
६. श्री रामानन्द मिश्र, कलकत्ता
७. श्री ब्रह्मानारायण झा, कलकत्ता
८. श्री हरे प्रसाद, कलकत्ता
९. श्री विद्यापति झा, वरौनी
१०. श्री दास किरण, राउरकेला
११. श्री नागेन्द्र झा, ..
१२. श्री के० के० मिश्र, ..
१३. श्री बी० झा, ..
१४. श्री सत्यरंजन, ..
१५. कुमारी ज्योति झा, दिल्ली

देसिल बयनाक संवाद प्रतिनिधि श्री सूर्यनारायण मंडल- नवको दिल्ली अनिल सुधा-बिरोल मिथिला

### देसिल बयना चन्दाक दर :-

एक प्रति-	पचास पाइ
सलियाना 'बारह प्रति	पांच टाका
पांच सालक ( साइट प्रति )	बीस टाका

### विज्ञापनदाता लोकनि सं-

'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दय लाभ ठाढ़। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू

विज्ञापन व्यवस्थापक

अरुणोदय प्रकाशन

### अरुणोदय प्रकाशनक पहिल पुस्तकांजलि :-

## प्रतिध्वनि

माओ त्से तुक, हो चि मिन्ह, लू शुन, नेरुदा, ब्रेख्त, लुमम्बा, गुंटर प्रास, महमुद दारभिस, लेंडन हिउब, द्विती बोतेव जोस क्रेमिर्न्हा, डेविड डियोप, शेख अयाज, आदि विश्वक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी कवि लोकनिक चूनल कविता सभक मैथिली रूपान्तर।

दाम-चारि टाका मात्र

संकलन, सम्पादन ओ रूपान्तर

राम लोचन ठाकुर

## कह लोचन कविराय

तेल इजोतक उत्स थिक तेल शक्ति केर खान  
तेलक बल डिबिया जरय तेलहि उड़य विमान  
तेलहि उड़य बिमान तेलबल मंत्रीक आसन  
ते जनसेवक राज तेल पर कएलक रासन  
कह लोचन कविराय रूश सं कएल गेल-ए मेल  
बदला मे द चाउर गरीबक लेल अबैए तेल



# समिति रचना

वर्ष—२ अंक—६

मार्च, १९८२

मूल्य—पचास

## सम्पादकीय

### फगुआ

मैथिली में हगो देव प्रचलित कहवी छइ—जे जीवद से खेजव फागु। कहवाक प्रयोजन नहि जे फगुआ जीवतताक प्रतीक छि आ जीवतताक जखन होइत आनन्द उमंग उछास। तें फगुआ आनन्द-उछासक पावनि छि। परञ्च आनन्द उछास कहरो एकक नहि।

मनुष्य सामाजिक प्राणी छि। ओ मात्र अपने सुख सं सुखी आ दुख सं दुखी नहि हाइर नहि भ सकै। अववादक गपर फराक छइ। अपवाद से बताइ भ सकै, पशु प्रवृत्तिक वा दानवीय प्रवृत्तिक मनुष्यक मेपबारी अन्तु भ सकै। तें फगुआ सामूहिक उत्साह उमंगक पावनि छि। पारस्परिक सहयोग, सद्भावनाक परिचायक छि। एकर सभ सं प्रत्यक्ष प्रमाण मिथिलावलक गाम-घर मे पाओल जा सकै—आइठाम धर्ग, भर्म, सम्प्रदायिक भेद-भाव विसरि लोक—एक संग—आनन्दोत्सव मनवै—रंग-अबीर खेलाइ—माटि केँ लाल क देख।

फगुआ समृद्धि परिपूर्णताक पावनि छि। अभावी मन मे आनन्द उमंगक लहकिक कहना केनाई मूर्खता छोड़ि आर किछु नहि भ सकै। पेट मे अन्न आ देह पर वस्त्र नहि रहितो बताइ चदिखन हँसेत रहै। तें बताइ एहि निमग्न संगहि प्रत्येक सामाजिक नियमक अपवाद छि।

फगुआ सामाजिक पावनि छि। जातीय पावनि छि, राष्ट्रीय पावनि छि। सुगो सं हमरा लोकनि एकरा एहि रूप से मनवैत भावि रहल छी। परञ्च भरिसक कहियो सोचवाक क्षमता नहि हुनक जे वास्तव मे वर्तमान संदर्भ मे हमरा मिथिलावासीक छेक एहि जातीय आनन्द उमंगक पावनि कि सरिपहुँ कुन अर्थ शेष रहि गेल अइ ? जँ सरिपहुँ सोचितहुँ त निश्चित अइ—मिथिला-मैथिल-मैथिलीक दोसर रूप रहैत।

हमरा अनतवे मैथिल जाति मरि चुकल अइ आ मृत जाति मे एकता, सहयोग सहभाविना केँ ताकब 'चोबटिया पर रतौन्ही तकनाइ' सं बेसी आर किछु नहि भ सकै। ओकरा मे उत्साह उमंग केँ ताकब 'हुक बाटो मे अनन्त भगवान केँ ताकब' छोड़ि आर किछु नहि। ओना मधुरिक नाम महात्मा गाँधी होइते छइ आ तें लोक केँ रतौन्ही छुटि साइ छइ आ अनन्त भगवान भेटि अइ छनि। परञ्च ई—आत्मघाती प्रक्रिया छि। लोक अनका भनहि ठकि लोक—अपना आप केँ ठकनाइ—संभव नहि भ सकै।

आइ मिथिला विश्व मानचित्रपर नहि अइ, मैथिली भारतीय संविधान सं बारल अइ मैथिल अनहि चर-आडन मे हुनकार अइ। कहियो किछुबन विस्मृत मिथिलाक नाम आइ ओकर अपनो सन्तान ने बने छइ। आइ मिथिला मे रौदो-दाही सुखमरी महामारीक स्थायी वास छेक। आर्थिक विभ्रमता एकर रीढ़ केँ तोरो देने छेक आ सरकारी अवहेलना प्रहारना बेमनस्यताक सम वा स्वाधन सन नाइहि हिकेत अपने सन्तानक अभ्युत्थान एकर माथ लाजे मुरा देने छेक। तेहना स्थिति मे आनन्द उत्साह उमंग कतय पावो। ई भ्रम कथा जे अंधिधपर बढ़ैक लासक शरीर संकोचक कारणे हिलनाइ-डोलनाइ केँ ओक जीवतताक जखन मानि लिअव।

कहल जाइत जे एही तिथि केँ श्रीरामचन्द्र रावण केँ मारि लंका विजय कैलनि आ मैथिलीक संग अयोध्या घुरल। सीता सभक आश्रमनक उपलक्ष्य मे ई उत्सवक आयोजन मेल छल आ तहिया सं प्रतिवर्ष होइत चलि आवि रहल अइ। सीता-रामक धिरवाक पाछा अपन आत्मीय केँ पैवाक आनन्द त छेक संगहि हुनक विजय गाथा स्वजातीयक विजयतीय पर विजय, मानवीय चरित्रक दानवीच चरित्रपर विजयक महान गाथा केँ अपना मे समेटने अइ। आइयो भारतक कश्क क्षेत्र मे रावणक प्रतिभा बराबोळ जाइत आ तकर बादक दिन रंग अवीरक संग आनन्द उत्सव मनाओल जाइत। मिथिला मे पहिल दिन रातिमे 'सम्मत' जराओल जाइत, दोसर दिन फगुआक उत्सव होइत।

जँ आजुक संदर्भ मे नीक जंका बिचार करी त स्पष्ट हैत जे मैथिली एखनो लंकाक अशोक वाटिका मे मरणावन्त छेथि। राम स्वयं हुनका रावणक आल मे फंसा देने छनि आ लव-कुशक जन्म मेव नहि कहल फेर आनन्द-कथिक ?

संविधान बिनु मैथिलीक ओ  
मानचित्र बिनु मिथिला घाम  
छाहि-जारि सुझाह करव हम  
विद्रोही मिथिलाक जवान

## श्री मार्कण्डेय प्रवासी पुरस्कृत

मैथिली क सुपरिचित कवि आ लेखक श्री मार्कण्डेय प्रवासीक सद्यः प्रकाशित महाकाव्य 'अगस्त्यायनी' केँ वर्ष १९८१ क सर्वश्रेष्ठ रचना मानिकेँ साहित्य अकादमी पुरस्कृत कयने अछि। गत २६ फरवरी केँ बणजी (गोवा) मे साहित्य अकादमीक एकटा प्रम्य समारोह मे कविकर प्रवासी केँ पाँच सहस्र टाका उतरीय तथा सरस्वतीक प्रतिमा अर्पित कयल गेलनि।

बनखीपुर (बिहार) बीलाक गवआरा गाम मे २ मई १९४२ केँ एकरा मध्य-वर्गीय कुपक परिवार मे जन्मल श्री प्रवासी संप्रति पटना मे 'आर्यावर्त' दैनिक क सम्पादकीय विभाग मे सेवारत छथि। हिन्दी आ मैथिलीक पत्रकारिताक क्षेत्र मे दिनक लिखत 'सुटकुलानंद की चिट्ठी' आ 'आमलाक' आमा स्तम्भ रचनात्मक दृष्टिकोण आ व्यंजनापूर्ण भाषाक कारण एकटा विशिष्ट उपलब्धि मानल जाइत अछि।

बहुचर्चित महाकाव्य 'अगस्त्यायनी' क अतिरिक्त दिनक तदर्थ काव्य संग्रह 'इतदर्थ' 'अभिधान' उपन्यास तथा विभिन्न पत्र-पत्रिका एवं ग्रंथ सभ मे प्रकाशित प्रायः एक सहस्र रचना मैथिलीक अमूल्य रत्न मानल जाइत। हिन्दी मे सेहो ई 'कविता

बोलती है' तथा 'शंखध्वनि' सन काव्य संग्रह एवं छाताधिक रचना क माध्यम सं एकटा सम्मानित स्थान प्राप्त कयने छथि। रचनाकारक अभाव भी प्रवासी एकटा नीक समाज सेवक रूप मे हिन्दी आ मैथिलीक एक दर्शन सं आर्थिक संस्था सं सम्बद्ध छथि।

श्री प्रवासी सन कक-कदम-रहित, भाविष्णु, प्रभविष्णु, प्रतिभाशाली, विनम्र आ विपशयी, साहित्यकारकेँ पुरस्कृत कऽ साहित्य अकादमी पहिल बेर मैथिली क तक्षण वीटोकेँ सम्मानित कयलक अछि। ई एकटा नीक प्रवृत्ति अछि, जकरा हमरा लोकनि स्वागत करैत छी। 'देखिल-बयना' परिवार प्रवासी जो केँ पुरस्कृत मेला सं अत्यधिक हर्ष आ गौरवक अनुभव क रहल अछि। एहि वासन्ती परिवेश मे भव वसंत क अग्रदूत क रूप मे परिवार श्री प्रवासी अभिनंदन करैत अछि आ कामना करैत अछि जे ओ अपन विशिष्ट सर्जनशील प्रतिभा सं अहिना मैथिली भाषा आ साहित्य केँ समलंकित करैत रहथि।

'देखिल बयना'क अगिला अंक मे पुरस्कृत महाकाव्य 'अगस्त्यायनी' पर श्री बुद्धिनाथ मिश्र क समीक्षामक लेख प्रकाशित भऽ रहल अछि।

## वसंत केहन होइत !

घर क देवाल क उड़ल पलखर  
सौम क सौम आगिक सुँह  
नहि देखऽबला चूड़ि  
खाली धारी-वासनक छटपट्टी  
पेम्द लागल साढ़ी  
बनिया - बैताल क तगादा  
धीया-पुताक पाकल पात-सन  
पीयर हबहब आँखि  
हम तँ नहि बूझै छी  
की होइत फागुन,  
की होइत वसंत।  
जँ अहाँ बुझैत होइ तँ  
कने हमरो बता दियऽ  
वसंत कोन बाध मे  
आबि केँ  
अटक गेल अछि।  
—बुद्धिनाथ मिश्र

तें ई समयक माळ छि जे हम मिथिलावासी एहि पर्वक अवसर पर अपनाबीच एकता-सहयोग-सद्भावनाक बीजारोपण करी—जातीय मुक्तिक मैथिलीक मुक्तिक, मिथिलाक मुक्तिक शपथ ग्रहण करी। आर्थिक विभ्रमता, कुशिक्षा-कुपंकार-बेमनस्यता आ एहि सभक छेक दायी मिथिला-मैथिल विरोधी तथा कथिक गणतांत्रिक सरकार सं बड़वा, जड़ि केँ अपन न्यायोचित अधिकार प्राप्त करवाक प्रतिज्ञा करी। तेखन वास्तविक उत्सव, आनन्द-उमंगक सार्थकता।



## लुइ एवं अन्यान्य पाद लोकनि

मैथिलीक प्राचीन पोथी सभ जे आइ-परि उपलब्ध भ सकल-ए ताइ मे 'चर्चापद' वा 'चर्चागीत' सभ सं प्राचीन मानल जाइत। एहि मे कुल पचास टा गीत कुल जाइ मे २४, २५ आ ४८ म गीत पन्ना हेरा जेवाक कारणे प्राप्त नहि भ सकल। उपलब्ध संस्कृतलिखित गीतक रचयिता चौबिस गोटा पाद लोकनि छथि, जं कान्हू ओ कान्हू पाद एके व्यक्ति होथि, कृष्णा-चार्य पाद ओ कृष्णपाद अभिन्न होथि। जं भिन्न होथि त निश्चित ई संख्या चौबिसक बदला छविस होइत। पाद लोकनिक नाम ओ पद संख्या निम्न प्रकारे भइ :-

नाम	कुल पद
१. लुइ पाद	२
२. सरह पाद	४
३. कुकड़ी पाद	१
४. विरव पाद	१
५. गुणवरी पाद	१
६. चोटिल पाद	१
७. भुतुक (कु) पाद	८
८. कान्हू पाद	५
९. कान्हू पाद	१
१०. कम्बलाम्बर पाद	१
११. कृष्णाचार्य पाद	१
१२. कृष्ण पाद	२
१३. खोम्बी पाद	१
१४. शान्ति पाद	२
१५. महीबर पाद	१
१६. वीणा पाद	१
१७. कृष्ण बभू पाद	१
१८. शबर पद	२
१९. आर्यदेव पाद	१
२०. टण-टण पाद	१
२१. दोरिक पाद	१
२२. भादे पाद	१
२३. तारक पाद	१
२४. कौकण पाद	१
२५. जयनन्दी पाद	१
२६. जाम पाद	१

चर्चापदक रचनाकालक सम्बन्ध मे एखनोपरि निरुद्धी नहि भ पाओल-ए परन्तु विभिन्न विद्वान लोकनि जे एहिपर खोज-खोज केलनिहें हुनका लोकनिक अनु-सार दसम शताब्दीक लगभग एकर रचना भेल होइत। स्वभावतः रचनाकार लोकनिक काळ सेहो ताइ सं निर्धारित होइत। एहि समस्त पाद लोकनिक मे लुइ पाद सभ सं पहिले भेलाह से शोधकर्ता लोकनिक मत छनि।

एहि मे संग्रहित समस्त पद मे बौद्ध धर्म ओ दर्शनक स्पष्ट चित्र भइ। कहवाक प्रयोजन नहि जे सभ पाद लोकनि बौद्ध धर्मावलम्बी छलाह। परञ्च तंत्रक प्रभाव सेहो स्पष्ट परिलक्षित होइत जे तत्कालीन मिथिला मे तंत्रक प्रभाव क संगहि बौद्ध धर्म पर सेहो तंत्रक प्रभाव केँ रेखांकित करैत।

चर्चागीत पर एखनोपरि विवाद अहिज के वास्तव मे एकर उत्तराधिकारी कैथिक? बंगाली लोकनि एकरा अपन आदि ग्रंथ मानैत छथि आ एहिपर बड़ बेसी कार्य भेल। डा० हर प्रसाद शास्त्री आ डा० सुनीति कुमार चटर्जी सन उद्भट विद्वान लोकनि एहिपर बड़ बेसी श्रम कैने छथि आ एहि ग्रंथ केँ बंगाल प्रमाणित करवाक आधार तर्क जुटओने छथि। एकर तुलना मे मैथिल विद्वान लोकनि लगभगपद भावे पलुभाइल रहबाइत। आ निर्विवाद एकोटा स्तरीय प्रामाणिक पोथी आइपरि प्रकाशित नहि भ सकल-ए। परञ्च से होइतहु एहि गीत सभक भाषा, वर्ण विन्यासओ शब्द शिल्प विषय वस्तु तथा एकर दीर्घ परम्परा जे पदावली कालपरि भक्षण रहल एकरा मैथिलीक आदि ग्रंथ होइवाक अकाट्य प्रमाण थिक।

एहि पोथीक महत्ताए एकर रचनाकार लोकनिक महत्ताक परिचायक थिक / जाइ समय मे संस्कृत भाषाक एक छत्र राज छलेक भनहि ई लोक भाषा कहियो ने रहल हो विद्वानक भाषा छल, राजकीय भाषा छल, ताइ युग मे लोक भाषा मे काव्य रचनाक उहि वा चेतना साधारण वात किन्नहुँ ने कहल जा सकैत। तँ एहि चेतनाक अभ्युदय लुइ पाद मैथिलीक छेल प्रातः स्मरणीय छथि, मैथिली साहित्य मे अमर छथि आ नव्य भारतीय भाषाक आदि पुरुष छथि। ई हिनकेँ कृतित्व छनि जे हिनक परवर्ती अन्यान्य पाद लोकनि लोकभाषा मैथिली मे काव्य स्रजनक प्रेरणा प्रयोजन तवा आगा चलि केँ विभिन्न भारतीय भाषाक रचनाकार लोकनि केँ अपन मातृभाषा मे रचनाक प्रेरणा ओ दिशानिर्देश भेटलनि।

ताइ युग मे लोकभाषा मे रचना करव सहज नहि रहैक। रचनाकार केँ पवाँत व्यंग-वाचाक सामना करव पड़नि। हमरा लोकनि जनैत छी जे स्वयं कविपति विद्यापति केँ—जे हिनका लोकनि सं उग-भग चारि-पाँच सय वर्ष पश्चात भेलाह—लोकभाषा मे रचना करवाक कारणे विद्वत मंडली द्वारा मखौल उदाओल जाइन। तेहना स्थिति मे पाद लोकनिक संग जे एहन बात नहि भेल होयत से मानेवला किन्नहुँ नहि। परञ्च एकक बाद एक पादक आविर्भाव आ तदुपरान्त अविच्छिन्न मैथिली साहित्यक परम्परा केँ देखैत हिनका लोकनिक आत्मवलक, लोक चेतना आ वास्तव बुद्धिक परिचय सहजहि प्राप्त होइत।

ओना त ई काज बहुत पहिनहि हेवाक चाहैत छले, परञ्च से जे हेतु नहि भेलैत तँ आइ एकर बड़ बेसी प्रयोजन छइ जे हिनका लोकनिक कृति केँ प्रकाशित क मैथिली पाठक केँ सहज उपलब्ध करा-ओल जाइत। कुनू जातिक, ओकर भाषा

संस्कृतिक विकासक छेल ई परम आवश्यक नहि परञ्च अधुनातन ओ एहि सं कटल छइ जे ओकर जड़ मजबूत होइत आ जाइ सं ओकर सम्पर्क अविच्छिन्न होइत। जड़ सं कटल रहने वा बिनु जड़िक कुनू जाति, ओकर भाषा-संस्कृतक दीर्घ जीवन संदिग्ध रहैत छैक—ताइ ठाम विकासक बाते की? मैथिल आति, ओकर भाषा-संस्कृतक जड़ माटि मे छैक, ओवंत आ सद्यक छैक ताइ मे संदेह

नहि परञ्च अधुनातन ओ एहि सं कटल जाई अइ। सम्पर्क कये की बखन कि ओ एहि सं नीक जाँ परिचितो नहि भइ। तँ हमरा लोकनि केँ अपर बिलम्ब नहि क यिन एकरा सं परिचित हेवाक भइ आ एकरा अपर सद्यक करवा छेल जागि जेवाक अइ अन्यथा अस्तित्वो पर संकट भावि वकैत—विकास के बाते की? —सुजता अली

## आबह हे शोणितक बुमकार

लेव-मूनि कऽ कत्तेकाळ रखतै कयो  
ज्वालामुखो मुँह केँ ?  
सुरुज केँ कत्तेकाळ सपने रहतै  
बादलक झुण्ड ?  
केँ मोड़ि सकत गंगाक प्रवाह केँ ?  
सनसनाइत बयार कँ रोक्वाक सामर्थ्य ककरा छैक ?  
केँ भुंका सकत हिमालयक माथ ?  
केँ देखाओत सूर्य केँ आङ्कुर ?  
आगिक चिनगोला सं  
केँ खेलायत गोटरस ? / आगि !  
दह दह करैत चिनगोला !!  
रञ्जनाक जनक !!!  
चिताहल खड़ केँ खड़ा रहलैए  
आस्ते-आस्ते।  
कए देतै सुझाइ  
तोनु लोक, चौदहो भुवन के  
पिरथीए सऽ सड़तै—  
लाखक लाख बका-पत्ता  
भको भन्न क देतै दुनिया के  
चीरी थौत कऽ देतै—  
आसमानक चादरि केँ।  
सनसना रहलैए  
हँसक-हँस ककराहा  
धमनीक जहल सं मुक हेवा लय  
आफन तोड़ि रहलैए,  
शोणितक बुमकार।  
जे घड़ी ने कुसियार जकाँ  
दू दालिक फटलैए धमनो,  
शोणितक पैमाल बहलैए / —जे घड़ी ने।  
कमला-बलान मे जे क्षण ने / निर्मल जलक बदला  
लाल-टुह-टुह शोणितक धार बहलैए।  
बजरङ्गीक गदा रावणक पीठ पर  
“गहा रे गोई गोई” खेलाइ लय  
सनसन करैत छनि। / दुर्गाक भाला महिषासुर सं  
घाड़ा-जोरी करव'ल्य—  
तन-तन करैत छनि।  
आबह हे शोणितक बुमकार !  
निश्चिन्त भऽ कऽ बहऽ तौ !  
कालीक कत्ताक कंठ  
तरासे सुखा रहल छनि,  
खरपर मे एक बुन्न रक्त बिना  
चट्ट पड़ैत छनि,  
जीह पर गर्दा उड़ियाइत छनि,  
घोरि दहक तरभारि केँ  
खरपर कँ भरि दहक ऊम-डाम कए  
जुरा एहन काली केँ,  
भरि छाक टटका लेहक पोट स  
उन्मत्त भ, करतौ काली—  
ताण्डव नृत्य।  
आबह !  
आबह हे शोणितक बुमकार !!  
अलदी आबह !!!

—रमेश



## फगुआक उपाधि

कवि चूड़ामणि श्री काशीकान्त मिश्र मधुप—नयन न तिरपिन भेल ।

प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'—बुढ़ारी में बिहारी ।

महाकवि यात्री—पैर में चुरचुरा बान्हल अइ ।

कविवर किरण—हम पारसे लेब ।

श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर—हम पंखी एक डाल के ।

डा० ब्रजकिशोर वर्मा मणि पद्म—आब अगिला साल ।

प्रो० राधा कृष्ण चौधरी—खाधि खुनवाक सुख ।

श्री जोब कान्त—कय बंडल पठाव ?

॥ सोमदेव—ककवा पर टेंकल लागय ।

॥ कीर्ति नारायण मिश्र—किदुन तं कहै छइ, तकरे परि ।

॥ हंपराज—मानसरोवर कहिया जायव ?

॥ गंगेश गुंजन—भागलपुर कइल गुलजार ।

॥ धन चक्र—यक्ष प्रश्न ।

॥ ज्येन्द्र दोषी—असकरे हमही दोषी नहि ।

॥ महा प्रकाश—भोर भेलै हे पिया ।

॥ सुभाष चन्द्र यादव—लिखि केँ की होयत ?

डा० धीरेन्द्र (जनकपुर वासी)—विधि ककरो न सक ।

श्री महेन्द्र मलंगिया—कमलाकातक रसिया ।

॥ रामभरोष कापड़िभर—गोनू माक बिछाड़ि ।

॥ धूमकेतु—नव एराटक तैयारी मे ।

॥ मदीप मैथिली पुत्र—वारह बाजस दिथो ।

॥ उदय चन्द्र झा बिनोद—सभ सँ झोट कबिता तीन हाथक ।

॥ रमानन्द रेणु—एखन भदवा छै ।

॥ ललित—कापर करब सिंगार ।

डा० गौरी मिश्र—डिविया लेखै छी ।

श्री मायानन्द मिश्र—माछक मुड़ा ।

श्रीमती लीली रे—आब फुराइत अछि ।

श्रीमती शेफालिका वर्मा—निहुरि फूकू आगि ।

श्रीमती शान्ति सुमन—पितरस्तयन्ताम ।

श्रीमती स्वाकिरण खान—नकबसर कागा ले भागा ।

श्रीमती पद्माशा—हलो ! मंत्री जी के यहाँ से बोल रही हू ।

डा० सुभद्र झा—किरिब करिअ मन लाइ ।

डा० जयकान्त मिश्र—मैथिली हमरे चारक कदीमा छी ।

डा० सुधाकान्त मिश्र—आब ककरा चून लगाबी ?

डा० शैलेन्द्र मोहन झा—बरिसाइत कहिया छइ ?

डा० रामदेव झा—डस्का काहे कोड ।

डा० आनन्द मिश्र—भनहि विद्यापति ।

डा० आनन्द ना० शर्मा—मुँगेरी गंजक 'सर' ।

डा० सीताराम झा श्याम—भुतराकस पंडित ।

डा० जयमन्त मिश्र—हमरा सँ उद्वादन कराव ।

श्री दमन कान्त झा—एखन टोकू जुनि ।

॥ श्रीकान्त ठाकुर (विद्यालंकार)—आर केओ बांचल छी ?

॥ हीरानन्द शास्त्री—एक धक्का थार ।

प्रो० श्री हरिमोहन झा—बनै तां शारदा मिति खट्टर ।

श्री आरसो प्रसाद सिंह—अहुना कतौ भेलैय ?

॥ सुधांशु शेखर चौधरी—एकदन्त ।

॥ भीमनाथ झा—हमर अभाग हुनक कोन दोष ?

॥ गोकुलनाथ झा—चिक्कापार ।

॥ प्रबासी जी—एक त दाइ गोरे बड़ि-दोसर नहेली हे ।

॥ राजमोहन झा—हम गुमसुम तक छी ।

॥ ज्येन्द्र नाथ झा व्यास—हमरा लेखे बन सन ।

॥ गोबिन्द झा—केसब केसन अस करी ।

॥ गौरी कान्त चौधरी कान्त—चौबालक जाठि ।

॥ ज्ञानानन्द सिंह झा—हम की सभ दिन बटुके रहब ?

॥ प्रभास कुमार चौधरी—कने मुस्ता लियस ।

॥ संजेश्वर झा—भारत-भारती एकप्रिय ।

॥ मोहन भारद्वाज—तनी एहरो बैली, एओ !

॥ कुलानन्द मिश्र—ऐ चंडलवा राज मे ।

॥ रमानन्द रमण—सुकुर जे लखनउ नहि गेलौ ।

॥ पद्म नारायण झा 'बिरंचि'—खरपी सँ समीक्षा गढ़े छी ।

डा० इन्द्रकान्त झा—विद्यापतिक फेरा : एकटा सूक्ष्म विवेचन ।

डा० वासुकी नाथ झा—साढ़ू पुरक गोसाइ ।

श्री अग्निपुष्प—जनमतक थौक व्यापारी ।

॥ पूर्णेन्दु चौधरी—तेहन मुहदुंजर नहि छी हम ।

॥ विभूति आनन्द—रठा रहल घोब तिलक ।

॥ सियाराम झा सरस—शिव मठ पर ।

श्री बिहंगम—पांचो आङूर घो मे ।

॥ शम्भुनाथ मिश्र—जात न पूछो साधु की ।

॥ रबीन्द्र नाथ ठाकुर—सिलेमा मे काज करब दाइ ?

॥ महेन्द्र झा—गावि सुनाओल हे ।

॥ फजलुर रहमान हासमी—हम मिथिले मे रहबे ।

प्रभावती + गोपेश—आब कहु मन केहन लोप ?

प० देवतारायण झा—प्रोसेपेकटस छइ ।

डा० दिनराज शाण्डिल्य—खराती प्रमाणपत्र बितरण केन्द्र

श्री बाबू साहेब चौधरी—लोड रोडिंग ।

आचार्य रिजबो—हम मैथिल, हँ हम मैथिल ।

डा० प्रबोध ना० सिंह—जन्तर-मन्तरक नामो दोकान

डा० धीरेन्द्र मल्लिक—एडाइ सोचय दिअ ।

श्री सुकान्त सोम—राइटर्स बिल्डिंगेर इडुर (मूष) ।

॥ तुद्धिनाथ मिश्र—बलम कलकषा पहुँच गये ।

॥ राम लोचन ठाकुर—हम की की करब ?

॥ अनिल ठाकुर—हम आत्म समर्पण नहि करब ?

॥ कुणाल—कहूँ न करै यहाँ थार ।

॥ राजनन्धन लाल दास—संतो, करमन की गतिन्यारी ।

॥ निरखन लाभ—मोड़ पसौलनि जीरा ।

॥ जनार्दन झा—'वैखिल बयना' दांत करय खटा ।

॥ सुशील—बराही चल गेल—खेतक चिन्ता ।

॥ रामाधार मिश्र—जाइत ली गाछी ओगारय ।

॥ महेश्वर झा—समय आबय दियौ ।

॥ ब्रह्म नारायण झा—मोड़ा खाली अइ ।

॥ श्रीकान्त मंडल—ललका पाग ।

॥ शरद चन्द्र मिश्र—गइयो हँ बरदो हँ ।

॥ भोगेन्द्र झा—पबित्र पापी ।

॥ शिवचन्द्र झा—हमहुँ छी ।

॥ हुकुमदेव नारायण यादव—भगजोगनीक इजोत ।

॥ राजेन्द्र प्रसाद यादव—हम किसी से कम नहीं ।

॥ भागवत झा 'आजाद'—ताला कहिया खूबत ?

॥ बालेश्वर राम—खेत चढ़ने किसान ।

॥ लक्ष्मी कान्त झा—निर्बल के बल राम ।

प० श्री हरिनाथ मिश्र—काशी से ले के भगइ जा के पटकी ।

श्री जगन्नाथ मिश्र—कुहूँ, कुहूँ S S S ।

॥ राधानन्दन झा—जय सन्तोषी मां ।

॥ कुमुद रंजन झा—कतही कहय हमहँ ।

प्रो० नागेन्द्र झा—हम थोटंगर नहि फूटब ।

प्रो० रामाकान्त झा—बसे सँ बेबस छी ।

श्री कमलनाथ सिंह ठाकुर—डोरिक चूकल ।

॥ कपूरी ठाकुर—कनटा अत्तरा ।

॥ राज कुमार पूर्ब—आगते रहो ।

॥ दिगम्बर ठाकुर—सभ गुन गोबर भेल ।

॥ रघुनाथ झा—सरा खेलाएल छी ?

॥ विद्याकर कवि—छंद-बैरकीक अभ्यास ।

नोट : महासभा लोकनि सँ आपइ जे ओ लोकनि अपन उपाधि-पत्र

श्रीमान फगुआनन्द श्री महाराजक रंग-अधोर, कार्यालय सँ

यथा शिघ्र प्राप्त क लेखि । जाइ साहित्यकार, नेता लोकनि के

एहि खेप उपाधि नहि भेटलनि-हुनका लोकनि सँ आपइ जे

नयका बजट के न्यान मे रखैत हमरा लोकनिक असुविधा केँ

बुझथि आ न्यथे प्राण नहि गमा अगिला सालक प्रतीक्षा करथि ।



## दिल्ली सं सूनारारायण मंडल

नवकी दिल्ली, १४ फरवरी ८२।  
अ० भारतीय मिथिला संघ द्वारा इन्डियन मेडिकल एसोसियेशन संभागार मे प्रातः १० बजे सं 'सिमिनार तथा मिथिला विभूति स्मृति समारोह'क आयोजन कएल गेल। समारोहक उद्घाटन करैत उपराष्ट्र-पति श्री मु० हिदायतुल्ला कहलनि जे भारतक अनेकता मे एकताक जे कोनो जीवित उदाहरण अइ त ओ मिथिला अइ। प्राचीनकाल मे मिथिले मे एहन एकटा राधा मेहता जे सर्वप्रथम परिश्रमक महिमा के स्वीकृति देलनि आ ते राधा बन-कक राज्यपताका मे (मिथिलाक भंडा मे) हरक छाप छल।

उपराष्ट्रपति मिथिलाक गौरवशाली अतीतक चर्चा करैत आगा कहलनि जे वस्तुतः मिथिला अवतार आ विद्वानक भूमि अइ। मिथिले महाकवि विद्यावति के अन्त देलक जिनकर अनमोल बोल आशु सभताम गुंजित अ रहल अइ। ओ आशा अछि के मिथिलाक लोक अपन गौरवशाली परम्परा के अक्षुण्ण रखैत धर्ममानक विविध समस्याक समाधान हेतु कइए सं कइए मिला के अग्रसर रहत।

उपराष्ट्रपतिक स्वागत करैत केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री श्री बालेश्वर राम मिथिला-चलक विकट आर्थिक समस्या पर प्रकाश देलनि। केन्द्रीय पटौनी मंत्री श्री कैदार पाण्डेय मिथिला-विभूति लोकनि के श्रद्धा-जलि देत ह० ललित ना० मिश्र द्वारा मिथिला-चलक विकास लेल, बनाओल योजना तथा काज पर प्रकाश देलनि एवं ओइ अपूर्ण काज के पूरा करैत बात कहलनि।

विचार गोष्ठीक उद्घाटन करैत आर्थिक प्रशासन सुधार आयोगक अध्यक्ष श्री लक्ष्मीकांत झा भी कहलनि जे एइ क्षेत्रक औद्योगिकरणक दिशा मे क्षेत्रक प्रबुद्ध जनता के आगा आवक चाही।

एहि अवसर पर श्री भोगेन्द्र झा, श्री राजेश्वर प्र० दादव, श्री रमानन्द रेणु, श्री वनेन्द्र कुमार आदि वक्ता लोकनि सेहो अपन मत प्रकाश कएलनि। 'सम' के सभ प्रायः मिथिलाचलक दशनीय वाता-यातक व्यवस्था, कृषीक अवस्था एवं उद्योग-धंधा नहि रहबा पर चिन्ता व्यक्त कैलनि आ एहि मे सुधारक लेल जोर देलनि। वाहिक सं भुक्तिक संगहि विजु-लीक आपूर्ति तथा सिंचाई लेल कोसी नहरिक संगहि कमला-नागमती बाधक शिप जगता पर प्रकाश देल गेल।

● अखिलभारतीय मिथिला संघ, नवकी दिल्ली, एनहर किछु दिन सं पूर्ण सक्रिय अइ—जे हम लक्ष्य कहबाक चाही। मोना हरी निर्विवाद अइ जे एहि तरहक सक्रियता जे शहर छोड़ि ग्राम मे देलाओल जाय त किछु आशाओ केन जा सकैत। उपराष्ट्रपतिक वक्तव्य उद्वाह-बर्देक थिक अवस्था आ हुनका सं बेसी

आशाए की कएल जा सकैत। जहांवरि भोगेन्द्र बाबूक गण्य अइ, ओ अन्यान्य नेता सं एहि संदर्भ मे बहुत अग्रभाषक छथि आ ते तत्काल हुनको छोड़ि देल जा सकैत। किन्तु प० लक्ष्मीकांत झा एगो पुरान हस्ती होइतहु आइ पर्यंत मिथिला-मैथिलीक संदर्भ मे उल्लेखनीय काज त नहि केन केनहि, तेहन इच्छा-उत्साह सेहो नहि देखलोलनि। एमहर जे सरिपहु हुनका अपन भूमि-भाषाक ख्याल भेलनि है—देरियो सं सही-नीक थिक—परञ्च हमरा लोकनि सं नीक थका ओ स्वयं भनेत होइताइ जे मान वक्तव्य सं समझाक समाधान असंभव। एहि बेर हुनका पूर्ण सक्रिय होमय पड़तनि आ अपन प्रभाव-क्षमता के व्यावहारिक रूप देमय पड़तनि। हमरा लोकनि जनैत छी जे भाषा के संविधान मे स्थान भेटलैक तकर पाछां इहने किछु प्रभावशाली व्यक्ति हाथ छल, जनता त किछुओ नहि केने छल। एहि संदर्भ मे मैथिली भाषी त वइ अग्रभाषक अछि। श्री झा भी भरिबक नीक जकां जनैत हेताइ जे जनता पेव सं पेव आन्दोलन अग्रसर क लेख परञ्च ओसत त पाछू रहैत अछि—आगू नेता रहैत छैक। ते जनता—मले ओ बुद्धिजीवीए के किछक ने आह्वान केने छथि—तेहन किछु करत, जखन कि ओकरा सुयोग्य नेता अग्रभा भेटैक।

एमहर श्री बालेश्वर राम जी सेहो एहि क्षेत्र मे सक्रिय छथि परञ्च हुनक बात जे ओहो मंचेवरि सीमित छथि। श्री राजेश्वर प्रसाद दादव आ श्री हुकुम-देव दादव सेहो कहियो काल भगजोगनी जकां भकइजोत कय फेर निजुआन भ जाइ छथि। एहि तरहक प्रवृत्ति बातके थिक—नीक नहि। हमरा मन अइ जे श्री भगवत झा आजाद एहि संदर्भ मे कहियो बाजल छलाइ जे कि हुनका लोक-निक मुंह मे ताला लागल छनि। पता ने ई केहन ताला थिक—आ कहियापरि लागल रहल? अन्यान्य विषय लेल कहां ताला रहैत छनि? दोसर प्रान्तक नेता लोकनि के अपन भूमि-भाषाक विकास लेल मात्र वलवैक नहि कार्योक स्वाधीनता रहैत छैक—तेहना ठाम दिनके लोकनिक मुंहपर ताळा किछक लागि जाइत छनि जे विचारणीय।

जहांवरि श्री कैदार पाण्डेय जीक प्रश्न अइ, एहि सं पूर्वो जखन कि रेल मंत्रालयक भार लेलनि, ललित बाबूक सपना साकार करैक बात बाजल छलाइ। परञ्च हुनसं लिखय पड़ेइ जे एहि संदर्भ मे ओ पूर्ण निष्क्रिय रहलाइ आ मिथिला-चलक लोक—जे कि हुनका सं वइ बेसी आशा करैत छल—पूर्ण निराश भ गेल। आव ओ पटौनी मंत्री भेल छथि—आ कोसी समस्याक निदान, जे चाइथि त

## स्वर्गलोक मे मजदूर

'ब्रह्मा' जिनका हम देवता कहै छथिनि, वास्तव मे एकटा मजदूर छलाइ, जे विभिन्न उपकरणक सहायता स प्राणी एवं एहि संसारक निर्माण कयलनि। तकरा बाद हुनक सहायक विश्वकर्मा भेलनि। एहि प्रकारे हम देखैत छी जे मजदूर आइये नहि बरि सतयुग मे सेहो छलाइ। ओहु युग मे एक कात पूंजीपति विष्णु अपन सहधर्मिणी लक्ष्मी के साथ कुंकरा छोड़ैत शेषनामक स्यवा पर आसन जमौने रहैत छलाइ, दोसर तरफ ब्रह्माजी एवम् विश्व-कर्मा जी फाटल-पुरान कपड़ा पहिरने अर्थात् केवल एकटा पोती पहिरने सुष्ठिक निर्माण करैत रहथि। ब्रह्माजी विभिन्न प्रकारक चीज बनेलनि जाहि मे एकटा सेफ्टीरेजरो छइ जाही स विष्णु जी दाढ़ी के के कहे पूरा मोछो मुइया लेबि किन्तु ओही ठाम ब्रह्मा जी वइका-वइका अर्थात् हाथ तक दाढ़ी केने अपन कार्य करैत रहथि। आइकालिह एहि मर्त्यलोक मे मार्क्स तथा लेनिनक कान्तिक फलस्वरूप मजदूर के सेहो रह-परि क किछु सुविधा भेटि रहल छइ, विभिन्न Unions & Trade unions क द्वारा ओकरा सब के किछु सुविधा देल जाइ छइ किन्तु सुष्ठिक निर्माता ब्रह्मा जी के कतहु जगइ नहि भेटैत छइ। जखन पूंजीपति विष्णु हुनका कतहु जगइ नहि देखैत छइ त ओ स्वतंत्र क्षितिज मे लटकल रहि गेलाइ।

मजदूर के त अहोभाग्य मानक जाही जिनकर इष्टदेव अर्थात् पूर्वज ब्रह्माजी छथि अर्थात् ब्रह्माजी सब मजदूर के वइका भाइ भेलाइ। आइ कालिक मजदूर पूंजीपति वर्ग अथवा बोपक वर्गक विरुद्ध हड़तालों करै छइ किन्तु ब्रह्माजी त किछु नहि क सकै छथि। आखिर बेचारे ब्रह्माजी केवल विश्वकर्मा के साथ पूंजीपति विष्णु क कतेक विरोध कय सकैत छथि? कने अपने सब विचार क क देखियउ, जेहि प्रकार स वइका-वइका पूंजीपति वर्गक सामंतवादी वर्गक सहायक अर्थात् चमचा सब विभिन्न विशासन द्वारा अग्रन मालिकक गुणगान करैत रहैत छइ चाहे ओ कतबो जनताक शोषक होथि, ओकर सभक

निश्चित यथा शिघ्र क सकैत छथि आ से भेले उत्तर हुनक प्रति लोकक हेराएल विश्वास फिर सकैत छैक।

मिथिलाचलक बड़ बेसी समस्या छैक। एगो अवहेलित भूमि थिक ई। एकर नेता लोकनि समर्पित सं एहिठामक लोक के ठकैत रहलनि हैं। किन्तु कुनू वस्तुक एगो सीमा होइत छैक। जनताक धैर्य सीमा छैक। ते आबो जे ई लोकनि, जेना कि वजैत छथि, कार्य करथि त ने मात्र मिथिलाचलक अपितु समस्त देशक कल्याण ताही मे छैक।

× × ×  
कलकत्ता, २३-१-८२। आइ स्थानीय मित्र संघक दिव सं विदाओ

प्रतिमा स्थापित करवैत रहैत छइ आर ओहि सेठसभक मिल फेक्ट्री सब चञ्चल्य बला मजदूर के नामो नहि छइ छइ, ओहि प्रकार स स्वर्गलोकक पूंजीपति विष्णु के स्वाधीन एजेंट पंडित जी प्राचीनकाल स लय क अखन तक भूमि-भूमि क एहि मर्त्यलोक मे विष्णु क गाथा गवैत छथि और कोमती पत्थर स निर्मित मन्दिर मे हुनक मूर्ति स्थापित करवैत रहैत छथि किन्तु एहि पंडित सबके तथा पूंजीपति वर्गक निर्माता मजदूर ब्रह्मा जी के कतो धरण नहि भेटैत छइ। ई गण मजदूर सभक लेल कतेक अपमानजनक छइ? अइ लेल आइकालि के मजदूर सब के अग्रन वइका भाइ ब्रह्माजी तथा विश्वकर्मा जी के यथा-पूर्वक सहायता करक चाही। मजदूर सब के ब्रह्माजी तथा विश्वकर्मा जी के नेतृत्व मे एक बहुत बड़का सामूहिक जुलूस के साथ स्वर्गलोक मे निश्चितता पूर्वक वसल पूंजीपति विष्णु के दरबार मे "स्वर्गलोकक तथा मर्त्यलोकक मजदूर एक होथि के नारा एक स्वर स जुलूस क इमका कर क चाही। भ सकैत मर्त्यलोक स कुनू, 'ट्रेड्स', जुता, चपल इत्यादि विरोध प्रदर्शित करवाक लेल ल जेसक चाही कारण जे स्वर्गलोक मे ई सब चीज कहाँ स अभोतइ? एहि प्रकार स विरोध प्रदर्शित कयक ब्रह्माजी के अग्रन भविष्य मांगक चाही बाइ स विविध भ कय विष्णु जी ब्रह्माजी के रहवाक लेल एकटा टूटलो भोपड़ी आर किछु वस्त्र देवा लेल बाध्य होथि—

—सुधा झा  
दसम वर्ग

## फगुआ समाचार

● सुनवा मे आयल-ए जे प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी संसद मे एगो नव विधेयक आनय जा रहल छथि। एहि विधेयकक अनुसार एहि बेर फगुआ मे लोक लेल से रंग नहि सानि सकइ। मोना केन्द्रीय मंत्रीक संगहि प्रदेशीय मंत्री तथा भविष्य मे मंत्री बनबाक सपना पावनिहार कांग्रेसी नेता लोकनि एकर परिधि सं बाहर राखल गेल छथि। किन्तु हुनको लोकनिक संग शर्त ई राखल गेलइ जे जे लोकनि लेल से रंग सनबो करथि त तकर उपयोग मात्र प्रधानमंत्रीक सीमित हो।

सदस्य श्री जखन राय भीक सम्मान मे सभा भेल तथा हुनका सभ सदस्य भाव-भीनी विदाइ देलनि। एहि अवसर पर संघक अध्यक्ष श्री सूनारारायण राय लोक पदोन्नति उपलक्ष्य मे सात्व प्रदान कएल गेल। श्री राय अग्रन परीश्रम आ बुद्धिक बल पर एगो साधारण ल्याफ सं पंचेज आफिसरक पदवरि पहुँचि चुकलाइ-ए से निश्चित संघक लेल सर्वक विषय थिक तथा सदस्य लोकनिक लेल शिधाप्रद। संघ आशा करैत छै एहिना आनो सदस्य लोकनि आगू बढ़ताइ आ अपन संघक संगहि समाजक गौरव बढ़ोताइ।

—रामाधर मिश्र  
सचिव  
मित्र संघ



# समिति रचना

वर्ष—२ अंक—७

अप्रैल, १९८२

मूल्य—पचास

## सम्पादकीय

### भीख नहि अधिकार चाही

संसद मे फेर एक खेप मैथिली के संविधानक आठम अनुच्छेद मे सम्मिलित करवाक प्रश्न आयल। श्री योगेन्द्र झा जतने सहजता सं ई प्रश्न रखलनि सरकारी पक्ष ततवे सहजता सं एकरा अव्वीकारि देलक आ फेर ततवे सहजता संग योगेन्द्र बाबूक संगहि समस्त मिथिलांचलक संसद लोकनि मुनि लेलनि। खिसा खतम पेसा हबम।

भोगेन्द्र बाबूक एहि तरहक प्रश्न-प्रस्ताव एहि सं पूर्व राखि चुकल छथि। प्रस्ताव आनो सदस्य (इन्दिरा गांधीस छोड़ि) राखि चुकल छथि। किन्तु एहि दिशा मे भोगेन्द्र बाबू आ हुनक दल सभ सं आगू अछि—से बरि निर्विवाद।

भोगेन्द्र बाबूक अतिरिक्त आर जे सदस्य मैथिलीक चर्चा संसद मे कहियोकाल करैत छथि ताहि मे सर्वश्री राजेन्द्र प्रसाद यादव आ शिवचन्द्र झाक नाम लेल जा सकैछ। ओना शपथ ग्रहणक समय भानुपाषा मैथिली मे शपथ लेबाक लेल दृढ़पतिव श्री हुकुमदेव नारायण यादवक बात बिसरल नहि जा सकैछ जे अन्ततः संस्कृत मे शपथ लेलनि परञ्च हिन्दी मे नहि। यादव जी एहि लेल सन्यवादक पात्र छनि। शिवचन्द्र झा अपन वक्तव्य मैथिली मे नहि राखि सकबाक विरोध मे प्रश्न त्वांगि कए एगो उदाहरण प्रस्तुत केने छथि। परञ्च दुखक संग लिखप पड़ि रहल अछि जे बखन मैथिलीक संवैधानिक मान्यताक प्रश्न उठैत छैक त ई लोकनि एकवद्ध नहि भ पवैत छथि—जेना पंजाब, तामिलनाडु वा बंगालक संसद लोकनि मे देखल जाइछ। जुता-चप्पल आ कुर्ची फेकनाइक कथा संसदक इतिहास मे पुरान अइ परञ्च हिनका लोकनिक न्यायोचित मांड बलन लतिबा देख जाइत छनि तखन ई सभ चिन्चिआयो ने पवैत छथि से अचरजक बात अव्वे थिक। एहि सं कम सं कम एतेवरि त अव्वे होइतेक जे किछु कालक लेल संसदक कार्यवाही ठर रहितेक आ प्रेसबलाक ध्यान एहि दिश पड़ैतक। परञ्च जे हेतु ई लोकनि प्रस्तावटा राखि चुा भ जाइत छथि ते हिनका लोकनिक नेत पर संदेह स्वाभाविके।

जहांवरि सरकारक प्रश्न अछि, हमरा लोकनि कतेको बेर लिखि चुकल छी जे कांतिवी सरकार जन्मजात मिथिला-मैथिली विरोधी अछि, ओ एकर कल्याण नहि देखय चाहैछ। ओकर एहि बात मे कनियो दम नहि छैक जे संविधान मे नहि रहनो सभ भाषा के समान विकाशक सुयोग सुविधा देख जेतैक। ई निहाइ पूछि थिक—चालाकी थिक, ठकपनी थिक। हमरा लोकनि जनैत छी जे सरकार ओही भाषाक विकासक हेतु खर्च करैछ जे संविधान मे छैक। संविधान मे नहि रहबाक कारणे मैथिली केन्द्रीय लोक सेवा आयोगक परीक्षा सं बारल अछि। केन्द्र सरकारक पोआ विहार सरकार जखन उर्दू के दोसर राजभाषा घोषित केने छल त ओ स्पष्ट कहने छल जे मैथिली के राजभाषा एहि लेल नहि बनाओल जा सकैछ जे ओ संविधान मे नहि अछि। ओना हमरा लोकनि जनैत छी जे नेपाळी संविधान मे नहि रहितो बंगालक दोसर राजभाषा बिक। हमरा लोकनि जनैत छी जे संविधानक बहजना बना के बखौ पढ़िने विधान सभाक सदस्य श्री नर्मदेश्वर सिंह आबाद के मैथिली मे शपथ ग्रहण करवा सं रोकल गेल छलनि आ हाल मे श्री हुकुमदेव नारायण यादवक संग संसद मे सेहो एहने घटना मेळल। संविधान मे नहि रहबाक कारणे सं सरकारी कोनो विस्तार मैथिली मे नहि छपैत अछि आ एहि राशि सं मैथिली पत्र-पत्रिका के वंचित राखल जाइछ। संविधानक कारणे आकाशवाणी वा दूरदर्शन सं मैथिली प्रोग्रामक प्रसारण नहि कएल जाइछ आ एहि तरहे मिथिलाक प्रतिभा के सुयोग सं तथा सहयोग सं वंचित कएल जाइछ। जं सरिपहुँ एहि सं फर्क नहि पड़ितेक, जेना कि बेर-बेर सरकारी पक्ष दलौज पेश करैत रहल-ए, त संविधानक एहि अनुच्छेदक प्रयोजने की छलैक ? किछु ने एकरा फाड़ि फेकल जाइछ ?

थोड़ेकालक लेल जं मानियो ली जे सरकार अपन वचनक पालन करत आ संविधान बहिर्भूत भाषाओ के ओ समस्त सुविधा देतैक जे संविधान समस्त भाषा के देल जाइछ त कि ई भीख देनाइ नहि भैक ? सरकार के ई जानि केबाक चाहियेक जे मैथिलि जाति

संविधान बिनु मैथिलीक ओ  
मानचित्र बिनु मिथिला धान  
डाहि-जारि सुझाह करब हम  
विद्रोही मिथिलाक जवान

## श्रमएव जयते

अपना देश मे कहियो सत्यक जीत होइत छलैक। ई ओ समय छल बखन भारत सोन-चिड़ैयाक रूप मे जानल जाइत छल आ एहठाम दूबक नदी बहैत छलैक। तहिया हमर नेता लोकनि मे स्तरहीनता अव्वे छलनि, काबिलतीक अभाव छलनि, परञ्च ओ लोकनि बहमान नहि छलाह। जं बहमानी कतौ बुझाओ पड़ैत छल त से मूल्यहीनताक कारणे नहि अपितु दूरदर्शिताक अभाव। ते हुनका लोकनिक मन मे सत्यक एकगोट आमइ छल आओर ओ लोकनि सत्यमेव जयतेक नारा लगवैत छलाह। किन्तु आइ सत्य हारि के एक कोन मे अपन मुँह नुकाओने बेसल अछि आ झूठक तिरंगा फहरा रहल छैक। हमरा सभके तत्कालीन नेतागणक मोन मे ई प्रश्न उठलनि जे बखन सत्यक विजय होइते ते छैक तखन सत्यमेव जयते कहबाक अर्थ की।

‘सत्यमेव जयते’क ओनहुना अन्वयमूल्यन भ गेल छैक। जाइ भारत सरकार द्वारा चलाओल गेल टाका पर अशोक स्तंभक नीचा सत्यमेव जयते लिखल रहैछ ओकर अविकाश भाग (मेहनति के छोड़ि के) झूठ-चाळाकी सं कमाएल जाइछ। चोरी-चलाकी सं कमाएल टाकापर ‘सत्यमेव जयते’ ओहने मलौल थिक जेना कचहरी मे भाराक अनाइ द्वारा गीतापर हाथ राखि कहनाइ—जे बाजब सत्य बाजब।

इन्दिरा गांधी एहि बातक अवलियत के जनताक नाड़ीइ जकाँ पकड़ि लेलनि आ ओ एक गोट नव नारा देलनि—श्रम

एव जयते। अर्थात् श्रमक जीत हो। हुनका मेहनति जे एहि सं भारतक अमजीबी खुशी सं नचैत-नचैत कहत—देश के नेता इन्दिरा गांधी। आओर इहो जे हुनकर पहिलक पुरिये बका इहो छूइ उड़ि जायत।

श्रमक जीत होइ एहि मे भला ककरा आपसि भ सकैत छैक। परंच इन्दिरा गांधी ई नहि कहलनि जे ओ कोन श्रम थिक जकर विजय मे हुनका दिलचस्पी छनि ? ओ इहो नहि कहलनि जे जुमान बेरोजगार लोकक श्रम मे हुनका दिलचस्पी छनि वा नहि। हुनका कम से कम एतवो त खुजावा कहक चाहैत छलनि जे ‘रोजगार दफ्तर’ खाता मे नामांकित बेरोजगार सभक श्रमक जीत हेतैक वा नहि। हाथ-पंथर दुकलत रहितो जे जुमान सभ बखौ सं देशलग हाथ पसारने श्रम करबाक अवसरक याचना क रहल आ ओकरा सभके से नहि देल जा रहल छैक—ओकरा सभक श्रम के की हेतैक ? भरिखक इन्दिरा गांधी एहि पर सोचबाक श्रम नहि केलनि अपन्या किछु दोसर परिणाम हुनका सामने होइत।

पहिल परिणाम त ई चहाराइत कि श्रमक परिभाषा ओ जानि बइठथि। हुनका एकरो अन्दाज लगतिनि कि एगो रिश्तावाला आ ठेठावलाक एक घंटा श्रमक दाम पांचो टाका नहि होइत छैक बखन कि बिड़लाक एक घंटा श्रमक दाम पांचो लाख सं बेसी होइत छैक। भारतक एगो मिल मालिक लाखों-करोड़ों सं खेलाइए बखन कि ओही मिलक मजदूर ‘ओवर

मे आन कोनो वस्तु भले नहि होइक परञ्च आत्माभिमान अव्वे छैक। अयाचीक संतान भीख कश्मपि नहि ग्रहण क सकैछ। जगन्नाथ मिश्र तथा अन्य कांतिवी नेता जकाँ जं ओ चारि कोट मैथिल सन्तान के खान प्रवृत्तिक मानैत हो त ई ओकर अर्थकर भूल थिकैक।

मिथिलावासी के अपन अधिकार चाहियेक। जं सरकार ओकरा भारतीय नागरिक मानैत अछि त अन्यायने नागरिक जकाँ ओकरो समस्त अधिकार भेटक चाहियेक। आ जं से नहि भेटैत छैक त नागरिकोचित कर्तव्यो करैक लेल ओ बाध्य नहि अछि। जाइ संविधान मे मैथिलीक चर्चा नहि, जाइ मानचित्र पर मिथिलाक नाम नहि तकरा सम्मान देबाक लेल ओ बाध्य नहि अछि आ ओ दिन दूर नहि जे मिथिलाक गाम-गाम मे सार्वजनिक स्थान पर एहि संविधान आ मानचित्रक होलिका दाह कएल जायत। जाइ भंडा पर ओकर अधिकार नहि छैक तकरा उतारि अपन स्वतंत्र भंडा फइवेबाक लेल ओ सतत तैयार रहत—जं सरकारक इइह रवेया रहतैक।

कोनो वस्तुक सीमा होइत छैक। सदन-सक्तियोंक सीमा छैक। पैतृस बर्ख सं मिथिलावासी सदैव आयल-ए परञ्च ई बान्ह जहिया दू टै जेतैक भारत सरकारक खेमाता नहि छैक जे ओकरा बान्हत। मिथिलाक भौगोलिक-ऐतिहासिक अवस्था के सरकार एक बेर नीक जकाँ मन पाड़ि लिख आ समय रहिते समझि बाय ताही मे सरकारक संग राष्ट्रीय कल्याण छैक। संगहि मिथिलाक नेता लोकनि के सेहो सचेत भ जेबाक चाहियनि। ओ हिड़वा छवि मैथिल के आर अधिक दिन श्रम मे नहि राखि सकैत छथि। समय ककरो लेल बेसल नहि रहैछ। कार्तिक भागि दिन तका के नहि पजरेछ।

• जय मैथिली



अमएव जयते...

टाइम'क अम बैलाक बादो अपन स्त्री-बच्चाक आवश्यक आवश्यकताओंके पूर्ति नहि क पवेछ। पता ने इन्दिराजी एहि दुनू अम मे सं कर विजय चाहैत छथि।

जाह देश मे अमक आदर होइ छह ताह ठाम लोक बेरोजगार नहि होइह। किन्तु महान भारत वर्ष मे इन्वीनियरो हजारोंक संख्या मे बेरोजगार अछि। एष्य अछि जे अरब देश मे पाव विकासक योजना नहि अछि। अगर योजना रहिते त कोनो इन्वीनियर के बेरोजगार हेवाक प्रश्न ने उठैत। आओर अपना देशक इन्वीनियर ठीकैदारीक लेक घनासेठह सामने संक्षिप्त याचक बनि ठाढ़ नहि होइत।

भारत आर, पूरा देश मे रोग आओर रोगीक संख्या मे रोजीना वृद्धि भ रहल छैक, किन्तु अपना देशक डाक्टर बेरोजगार अछि। एहि सभक बावजूदो जे इन्दिरा गाँधी अमक विजय चाहैत छथि त एहि मे हुनकर कोन दोष ?

इन्दिरा गाँधी एखन जाह भोलापनक संग अमक विजय चाहलनिहें, ताही भोलापनक संग बीस सूत्री केर विजय सेहो चाहैत छथि। ओही भोलापनक संग ओ पछिला दिन इहो कहलनि जे 'अमीर चाहे आर बेसी अमीर किछक ने भ रहल हो किन्तु गरीब आओर गरीब नहि भ रहल अछि।' वृष्णि पड़ेछ जेना अपना देशक गरीबक हुनका प्रतिफल सूचना सेटैत होनि। ओना एमहर दीर्घ दिन सं ओ एहि बात के दोहरा रहल छथि जे चीज वस्तुक दाम घटि रहलह। परञ्च मजाक बात त ई छि जे सरकारी-बेसरकारी आफिस मे प्रत्येक आदमीक महगाइ भत्ता बढ़ि रहल छैक। अगर चीज-वस्तु दाम घटि रहल छैक तखन महगाइ भत्ताक बढ़नाइक गणित त बेयो ज्योतिषीक सकेत छथि।

ओना भ सकैछ जे कोनो दिन भोरे नीज टुटिते इन्दिराजी के मन मे ई बात भायल होनि जे पहिलका समस्त नारा पुरान भ गेल, तें बीमार देश के एक नव औषधक खगता छैक। हुनका भरिषक इहो भेल होनि जे जाह संस्थान मे पहिने लोक अम करे सं हिचकिचाइत नहि छल, तते आइ-कालि ताह खेलाइत देलाइ पड़ि रहलह। जेना कि बैंक कर्मचारी, फोयला उद्योगक वरिष्ठ कर्मचारी। हुनका एहनो बुझाएल होनि जे रेल के देरी सं चटनाइ अमक प्रति लजाभावक कारण छि। तें ओ नारा देखनि कि हे रघूथ-कुत संस्थानक कर्मचारी लोकनि आबो अहां सब के अम करे मे लजेवाक नहि चाही। किछक त अन्ततः बीत अमे के होइत छैक।

अर्थात् आव सत्य नहि विजयी भ सकत। सत्य सं पैष चीज अम छि। हुनकर एहि बात के यदि सभ लोक गंभीरता सं ग्रहण करब त नेता भूठ बाजवा मे आर बेसी परीअम शुरू करताह। बेरोजगार नभोजुआन जे अर्थात् आ कुष्ठाक कारणे गलत दिशा मे डेग उठा चुकलह-

## कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर

कविपति विद्यापति के जं मैथिली भाषा-साहित्यक पिता मानल जाय त कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर के विदु संकोचक जनकक स्थान पर प्रतिष्ठित कएल जा सकैह। दुर्भाग्यवत बात जे एहन अपतीम पदक अधिकारी, मिथिला-विभूति-वर ज्योतिरीश्वरक परिचय हमरा लोकनि के बड़ बिबन्ध सं भेटल, आ आइवोरि पूर्ण परिचय नहो प्राप्त भ सकल। एक दिन जं ई 'मिथिला-मैथिलीक' हेतु दुर्भा-

ओ ओह दिशा मे आर बेसी सक्रिय भ जायत। किछक त आव ओकर अमक विजय हेतैक।

एहि सभक संग ई प्रश्न अहाँक मन मे जाठि सकैछ जे आव अमक बीत हेतैक त कि पहिने अमक बीत नहि होइतछैक ? त आइ, हमर एक विमल सलाह मानू जे एहि विषय पर आर अपन माब जुनि घमाउ। किछक त हमरा लोकनिक प्रधान मंत्रीके कहियो काल एहन 'नाराजुमा' मजाक करवाक आदति रहलनिहें।

ओनहुना अपना ओतय नाराक पुरान परम्परा रहलह। सुभाष बोस कहने छलाह—तो हमरा रक्त दे, हम तोरा आजादी देबौक। एक निर्दोष तरहक अम ओहो मे छल। लोक रक्त देवाक लेब तैयारो भेल। अन्ततः आजादी भेटलैक। किन्तु रक्त देवा मे ओहो कसरि रहि गेलैक आ हमरा लोकनि के जे आजादी भेटल से असली आजादी नहि, कारण ओ लड़ाई सं नहि समझौता सं भेटल छल। एही कारणे बिजु सवाल तहिया नहि हल भ सकल आ हमरा लोकनि के माउन्ट बेटन क बदला नेहक भेटि गेलाह। आओर जे हेतु माउन्ट बेटन अपना संग कुर्सी आ अपन व्यवस्था नहि ल गेलाह आ तकरा उपहार मे भारत के देने गेलाह, तें उहह व्यवस्था एहिठाम फुलाइत फेरैत रहत आ ओहि मे जखन फल भेलैक त ओकरा संजय के रूप मे एहिठामक जनता देखलक। ओहो अपन पांच सूत्री लक्ष्यक हमरा लोकनि समझ आयल छल।

आजादीक जाह लड़ाई मे तिलक 'आजादी हमर जन्मदिन अङ्कित अछि' कहने छलाह, तकर अर्थ आजुक नेतागण गलत अंगअोलनि। तें इन्दिरा गाँधी हड़ताल आओर उचित मांगक लेल आवाज उठओनाइ पर पावयदी लगा देलनि। लाल बहादुर कहलनि—जय जवान जय किसान। 'जय जवान' पर लिखवाक छूट नहि कारण प्रतिरक्षाक मामिला छैक, परञ्च 'जय किसान'क बारे मे त एते कहिह सकैत छी जे ओकर स्थिति कफरो सं तुकलहल नहि छैक। अज उपजा क भरि देशक पैठ भरनिहार किसान अपने भूखे मरि रहलह। एहना हावत मे जं इन्दिरा गाँधी अमक विजय चाहैत छथि त एहि मे हुनकर कोनो दोष नहि।

—अनिल ठाकुर

यक विषय थिह त दोसर दिव मैथिल जातिक निमित्त ओर लयाएवद एवं पतनो-न्मुखी प्रवृत्तिक परिचायक। एहिठाम ई कहनाइ अनर्गल नहि हएत जे प्रतिबल मैथिली मे दर्जो 'विज्ञान' पी०एच०डी०, डि० लिट प्राप्त करैत छथि परञ्च किनको ध्यान एहि बा एहने कतेको विभूति—जनिक परिचय एखनो अज्ञात अह दिव नहि गेलनि। अथवा एना कही जे विज्ञता नहि मात्र उपाधिक भूखल, मिथिला-मैथिलीक नहि मात्र आन स्वार्थ पूर्ति लेल आकुल तथाकथित विद्वान लोकनि एहि मे अपन अमूर्त समय बेरबाद केनाइ उचित नहि वृष्णि—विद्यापति, जनिका पर बड़ बेसी काज भेलह—अनहि ओ सभ फालतूह किछक नहि हो—तिनका पर ओष केनाइ श्रेयस्कर बुझैत छथि, कारण विभिन्न पोथी सं दस-बीस लाइन नकल क लेने सहजहि पैष पोषा तैयार भ जाइत छनि आ उपाधि छेल ताह सं बेसी चाहे की करी !

'धूर्त समागम', पंचायक तथा रंग-शेखरक रचयिता कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर संस्कृत साहित्य मे पूर्ण प्रतिष्ठित आ परिचित रहितहु मैथिली जगत मे अपरिचित छलाह। १९४० मे जखन म० म० हरप्रसाद शास्त्री द्वारा नेपाल राज लाइब्रेरी सं प्राप्त हिनक मैथिलीक आदि गद्य ग्रंथ वर्ण रत्नाकरक प्रकाशन भाषाचार्य सुनीति बाबूक प्रयासे हुनकहि सम्पादन मे एशिष्टिक सोसाइटी सं भेल—तकर बादे अपन विभूति के हमरा लोकनि चीन्हि सकलौं।

'धूर्त समागम'क अनुसार हिनक समय तेरहम शताब्दी छल तथा ई रामेश्वरक पीत्र ओ श्रीश्वरक पुत्र छलाह। स्व० ईशानाथ बाबूक अनुसार ई बाबू पाली (पाली मोहन) गामक छलाह। संभवतः ईशानाथ बाबूक एहि मान्यताक आधार सेहो उक्त पोथीह हो जाह मे श्रीमत्पण्डि जन्मभूमिना.....'क चर्च कवि शेखर स्वयं केने छथि। ओना नगेन्द्र नाथ गुप्त महाशयक अनुसार ज्योतिरीश्वर ठाकुर कविपति विद्यापतिक पितामहक पितृव्योत छलाह। वास्तविकता जे हो, परञ्च ईषरि सत्य जे एहि संदर्भ मे अपेक्षित अनुसन्धानक त कथे की—वर्ण रत्नाकरक एगो नीक संस्करणो आइषरि मैथिली मे प्रकाशित नहि भ सकल।

कविशेखराचार्यक विज्ञता कुनू एक दिशा मे सीमित नहि छल। दर्शन, साहित्य, संगीत मे हिनक समान अङ्कित छलनि तथा कतेको भाषाक प्रकांड पंडित छलाह। पंचसायक मे ई अपना सभ्यता मे कहैत छथि—

अखि प्रत्यहमर्थिताप्रहरणः

लक्ष्मणक दीक्षा गुः

श्रीकण्ठाचर्यनतपरो भुवि

चतुःपष्टेः कलानां निधिः।

संगीतागमवत्पमेय रचना

चातुर्य चूडामणिः (स्व०)

स्वातः श्रीकविशेखराचितपदः

श्री ज्योतिरीश्वर कविः ॥

एहिपोथीक शेष ओ निम्न श्लोक सं देने छथि—

यावच्च कला क्रिटीट दुरये

शेखरमहा तिष्ठति

यावद् कसि माववस्य सकला

सानन्दमादिस्थति।

यावत् कामकला विवर्त चटुका

शोभीतले सर्वदा

तावत् श्री कविशेखरस्य कृतिना

तावत्पदे दीव्यताम् ॥

धूर्त समागम मे ओ लिखैत छथि—

तस्योदण्ड-भुजगताप दहन

श्रवाला निरस्ताप्यदो

राशः सर्वगुणानुराग पदवी

विद्योतनाचार्यकः।

यो श्रीशेखर वंश मौलितिलको

दातावदाताशयम्,

तस्य श्री कविशेखरस्य कविता

सच्चिन्मात्मवते ॥

तदनेन सकल संगीत विशेष विद्योत-नाभिनव भरतेन पुरमजन-पदारविन्द द्वन्द्व-वन्दाकरपल्लवेन-निखिल भाषोपभाषाभूष-भाषुक सरस्वती कण्ठाभरणेन अनवरतबोम-रसास्वादकायककण्ठ कन्दलीनरी-वृत्तमान मीमांसा महोत्सवेन रामेश्वरस्य पौत्रेण तत्र भवतः पवित्र कीर्ते श्रीशेखरस्यारमणेन महा-शासन श्रेणीशेखर भ्रामरपण्डि (श्रीमत्पण्डि-  
Nepal N.S.) जन्मभूमिना कविशेखरा-चार्य ज्योतिरीश्वरेण निजकुलह विरचितं धूर्त समागम नाम नाटकम्; प्रहसनं अभि-नेतृमाण्डियोऽस्मि।

एवंप्रकारे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक व्यक्तित्व आकृतिक परिचय हमरा लोकनि के हुनके लेखन द्वारा प्राप्त होइछ।

वर्णरत्नाकर मैथिलीक आदि गद्य-ग्रन्थ हेवाक गौरव जाह पोथी के प्राप्त छैक से थिक वर्ण-रत्नाकर—कविशेखरक एकमात्र मैथिली कृति जे आइषरि हमरा लोकनि के प्राप्त भ सकलह। ओना बहुतो विद्वान हिनक 'धूर्त समागम' के सेहो मैथिलीक मानि एकरा मैथिलीक प्रथम नाटिका कहैत छथि, परञ्च एहि पर मतभय नहि भ सकलह।

वर्ण-रत्नाकर मात्र मैथिलीक अदि गद्य-ग्रन्थ नहि, अपितु समस्त नव्य भार-तीय भाषाक आदि गद्य ग्रन्थ छि कारण आइषरि कुनू भाषा मे एहि सं पहिलक वा एकर सम सामयिक गद्य-ग्रन्थ नहि प्राप्त भ सकलह।

म० म० हरप्रसाद शास्त्री तथा सुनीति बाबू एकरा 'वर्ण रत्नाकर' कहने छथि आ एही सं एकर महत्ता ओ विषय वस्तुक परिचय प्राप्त होइछ। हिनका लोकनिक मतानुसार एहि पोथीक उद्देश-भावी कवि ओ कश्चक लोकनिक निमित्त एकटा पञ्च-प्रदर्शक ग्रन्थ बनाएव छलनि, यथा, यदि (शेखर पृष्ठ पांच पर)



## नारी, विधवा काटर आ हमर समाज

## अज्ञुत-अनटोटल

“आ, विवाहक दुइए-तीन बर्ख बाद कादम्ब विधवा भ’ गेलीह। कादम्ब अर्थात् कादम्ब विधवा छथि आ जखन एहि अष्टादशवर्षीया विधवा के देखैत छी त’ मोन होइत अछि जे आगि नैसि दी वेद आ पुराण मे आ मनुस्मृति मे आ एहि देशमे जत’ कादम्ब सन स्त्रीक शरीरके वैधव्यक आगिमे भस्म क’ देल जाइत अछि। ओहि दिन कादम्ब भेंट करय आइल छलीह त’ कहौलीवालीक नवजात शिशु के केहन सिनेहसँ कोरामे कुन्बय लगलि छलनि, कतेक दुबार करैत रहलि छलीह। ओखिमे केहन मातुल छलनि—“ओखि निहुड़भोने दोकान लग ठाढ़ युवक सभक पिआसक दृष्टि अंग-अंगकें नुहभोने, नहुए-नहुए डेग करैत कादम्ब बछनबीक दरवाजाक अंदमे सन्ध्या जाइत छथि—जीवनक अन्हार आकाश मे भविष्यक जाइत जल-शरत् उच्चर मेघ सन कादम्ब।

“जेना निन रंगल, निन माटि चढ़ा-ओल भगवतीक-भूतिक खदक सौचा” रोगक मारल, सुखायल देह, कोटरगत, चंचल-चंचल ओखि, ज्योतिहीन, मन्द-मन्दिन दृष्टि, मेल, परम मेल नूआ आ तेओ हबार टा चेकरी लागल आ तेओ हबार ठाम फाटल नूआसँ जीवनक दरिद्रता, देहक दरिद्रता, अस्तित्वक दरिद्रता, प्रदर्शित होइत।

“आह निर्मला दीदी मेनका छथि, काहि कादम्ब हेतीह, परसू कपूर दाह हेतीह; कतेक कपूर दाह हेतीह आ कोनो कपूर अछि नहि हेताह जे मेनका-सन्तानक रक्षा करथि। सभ विस्वामित्र हेताह, मेनकाक शरीर सँ वात्स्यायनक कामसूत्रक अभ्यास करयवला, सभ दुष्यन्ते हेताह, मेनका पुत्रीक देह-रास-लीला करयवला”

राज कमल चौबरीक एक कथा “सहस्र मेनका” सँ लेल ई तीन अवतरण छि। एहि कथाक तीन ठामसँ उठाओल गेल तीन टा अवतरण मे एकटा बात छेक, एक गोठ पीड़ा छेक। ई पीड़ा हबार-लाज बर्खक पीड़ा छि। एहि पीड़ाक कोनो मानवीय समाधान नहि अछि। सभ पीड़ाक हल छेक, मुदा एहि पीड़ाक कोनो हल तकबाक कोनो प्रयास आइयो नहि भऽ रहल अछि।

मिथिला आइ पछड़ल-पछुमायल अछि। दरिद्रता छेक। अशिक्षा छेक। कुरीति छेक। धर्म आ धार्मिक कर्मकाण्डसँ उत्पन्न अन्धारमे नौआइत जनना छेक। दरिद्रक शोषण होइत छेक।

दरिद्रमे दरिद्र छथि मैथिल नारी। शिक्षा नहि बन नहि। बापक घन मे व्यावहारिक हक नहि। अपन रोजगार करवाक छरि नहि। नोकरी आ दोकानदारी करवाक कोनो सामाजिक परम्परा नहि।

मैथिल नारीक जतेक शोषण आ दमन भऽ रहल अछि। तकर जोड़ा संसारक तेनो भागमे, कोनो कालमे नहि मेयत।

संयुक्त राष्ट्रसंघक मानवाधिकार समिति जेहेन-जेहेन शोषण दिख-विश्व-जनमतक ध्यान आकृष्ट करैत अछि, ताहिसे भयावह आ अमानवीय ई शोषण छि। मुदा संयुक्त राष्ट्रसंघो एम्हर ध्यान नहि देत, तकर कारण छेक जे मनु महाराजक शिकंजा मे कछि कऽ गलाइल मैथिल नारी धर्मक अपिनकुण्ड मे जीविते जराओल जाइत अछि। धर्मक लक्ष्मण-रेखामे राजनीति, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र घोंसिअवना मे डेराइत अछि।

लोक कहैत अछि जे अहाँ लोकनि समाजक नेता छी। अहाँ लोकनिक कलममे बड़ शक्ति अछि। समाज केँ सुचारु। व्यवस्था-प्रस्थापर हमरा कल। विधवा-विवाह छेक समाज केँ प्रेरित कर।

हम कहैत छिएक जखन कुमारि कन्याक विवाहमे वरपक्ष हजार-लाख मखैत छेक, तँ विधवाक विवाहमे वरपक्ष कतेक मखैत ?

कुमारि कन्याक रूप-गुण-शिक्षाक कोनो मूल्य जखन एहि समाज मे नहि छेक, तँ विधवाक मूल्य केँ वृद्धत ? तँ विधवा-विवाहक सामूहिक-सामाजिक प्रयासो कय-लापर कोनो लाभ होबवाक संभावना नहि अछि। कोनो नव रीति चलायन हमरा बुझने सम्भव नहि लगैत अछि।

लोक कहैत अछि जे व्यवस्था-प्रथा आकाश लागि गेल। कन्या सभ अजगि मेल जा रहल अछि। एहि व्यवस्थाक कोनो आ कचहु अन्त छेक की नहि ?

हमरा बुझने एखन आ एहि स्थिति मे ई प्रथा एखन बढ़त आ एकर अन्त एखन सम्भव नहि अछि।

काटर-प्रथा जाहि रूप मे एखन प्रचलित अछि, ओकर इतिहास नव छेक। पहिने, आइ सँ तीस-चाहीस बर्ख पूर्व जातिक मूल्य चुकाओल जाइत छेक। ओ एकदिशाह वरमूल्ये नहि छेक, कन्योक मूल्य छेक। आ ने ओ वरमूल्य छेक आ ने कन्यामूल्य छेक, ओ जातिक मूल्य छेक। एहि मे नगदीक कारवार भैयो सकैत छेक आ नहियो भऽ सकैत छेक। तँ एक प्रकारे ई जातिगत श्रेष्ठताक मूल्यांकन आ स्वीकार छेक। ई कटु आ भयावह नहि छेक। ई समाजक अभिशाप नहि छेक।

शिक्षाक प्रचार-प्रसार, युरोपीय शिक्षाक व्यापक होववा सँ हम आजुक व्यवस्था-प्रथा केँ जोड़ैत छी।

बाबरि वर डाक्टर-इंजीनियर नहि होइत छलाह, नोकरीक कोनो योग्यता-क्षमता हुनका मे नहि रहैत छलनि, तहिया वरि लोक जाति सँ कुल सँ श्रेष्ठ वृक्षल जाइत छल। आजुक लोक घन सँ, घन कमयवाक क्षमता सँ, पद सँ पेश वृक्षल जाइत अछि।

बहिया वरि लोक आइ बर्को युरोपीय कुशिक्षा सँ पीड़ित नहि छल, तहिया वरि

\* जेना कि पता चलाइल, मिथिलांचलक संगहि सम्पूर्ण खिचड़ि-प्रदेश ( बिहार ) मे प्राथमिक कक्षाक छात्र लोकनिक बीच पोथीक छेड़ हाहाकार मचल अइ। मार्च मास बीति गेलैक परञ्च पोथीक कतौ पत्ता नहि छैक। बिहार मे एहि तरहक पोथी बिहार टेक्स बुक कर्पोरेशन छपेइ आ ओकरे द्वारा एकर वितरणो कएल जाइए। ई संस्था बिहार सरकारक निजी संस्था छि। ओना एहि संस्थाक लेल ई कुनू नव घटना नहि। प्रायः प्रति बर्ख एहिना होइत छेक। विशेषता एहि खेप ई छेक जे मैथिलीक संगहि आनो भाषाक पोथी उपलब्ध नहि छैक जखन कि आन-वेर आन-आन भाषाक पोथी त समय पर भेटि जाइत छेक परञ्च मैथिली-पोथी अगस्त-सितम्बर सँ पहिने नहि पठाओल जाइत छल। भ सकैछ मैथिलीक शुभ-चिन्तक मुख्यमंत्री पर फेर ने कही मैथिली विरोधक आरोप लागनि आ तँ ‘खोप सहित कपुआय नमः।

ओना बिहार मे छात्र लोकनिक छेड़ ई एकमान-समस्या नहि छैक, एहन कतेको समस्या छैक। उक्त संस्थानक पोथी सभ खुबरा पोथीक दोकान सँ बिसाबी सभ कीनैह। मुदा ई पोथी ओकरा तखनहि दोकानदार देत छैक जखन कि ओ ओइ विषय नोटक पोथी कीनै छैक तैयार हो। नोटक पोथी त एहने रहैछ जे ओकर

व्यवस्था-प्रथा एतेक भयावह नहि भेल छेक। जेना-जेना हमरा लोकनिक युवक नोकरी वला शिक्षा पनेत जयताह, नीक घन बटोरऽ वला पद आ नोकरी पनेत जयताह, हुनक दाम बढ़ल जयति। आजुक प्राश्नात्य शिक्षा आ शिक्षाक बल नोकरी तकबाक ई दोड़ व्यवस्था केँ बढ़ौल अछि, बढ़ा रहल अछि आ आगुओ बढ़ाओत। लोक शिक्षाक प्रति साक्षात्-सावधान भेल अछि। लोक नोकरी मे पाइ-कमायवाला पदक प्रति साक्षात् भेल अछि। तँ लोक व्यवस्था आ वर-मूल्यक प्रति दिनानुदिन बेस आसक्त भेल जा रहल अछि। तँ हम देखैत छी जे व्यवस्था प्रथा घटबाक स्थान पर बढ़ैत अछि।

लोक कहैत अछि जे शिक्षा बढ़ैत, जागरण बढ़ैत, लोक व्यवस्थाक क्रूरता, अमानवीयता आ अनुपादेयता केँ वृद्धत आ काटर-प्रथा समाप्त भऽ जायत। हम एकर उनटा देखैत छी, शिक्षा बढ़ैत, सड़-सड़ काटर-प्रथा बढ़ैत अछि, घटैत नहि अछि।

हम आजुक प्रचलित शिक्षा-प्रणाली केँ, युरोपीय शिक्षा प्रणाली केँ कुशिक्षा कहल अछि, से हम जानि कऽ कहल अछि। आजुक शिक्षा नोकरी करऽ वला लोक जनमा रहल अछि, विवेकशील मनुष्यक निर्माण नहि कऽ रहल अछि। प्रचलित शिक्षा सँ लोक घन-लोखर भेल

एको पांती शुद्ध नहि रहैत छैक आने टेक्सटक संग कुनू सम्पर्क। दाम टेक्सटबुक सँ ठामहि दोबर-तेवर रहैत छैक। परञ्च से नहि कीनने जे हेतु दोकानदार टेक्सट बुक देतैक नहि तँ बाध्य भ लोक केँ ओहो कीनहिटा पड़ैत छैक। असल मे टेक्सट बुक कमिटीक संग खुबरा विक्रेता सभक खांठि-गांठि रहैत छैक आ रहैत छैक नोट लिखनिहार छपनिहारक। आ एहि संगठित पड़यंत्रक शिकार बनैत अइ छात्रक अभि-भावक सभ। सरकार सभ जनैत अइ—परञ्च ओकरा छेले छल स।

मैथिली माध्यम सँ पढ़निहार तथा मैथिली पढ़निहार छात्रक लेल त ओकरो समस्या ई छैक जे जखन कि ओही बर्गक आन भाषाक पोथीक दाम दु-तीन टाका रहैत छैक ताह ठाम मैथिली पोथीक दाम ठामहि दोबर रहैत छैक आ से सोपेस राखल जाइत छैक ताकि लोक मैथिली नहि पढ़ि हिन्दी वा अन्य भाषा पढ़य।

टेक्सट बुक कमिटी आ बिहार सरकार ई सम्मिलित पड़यंत्र बनेल सँ चलि रहल अइ आ पता ने कहियावहि चलेत रहत। अचरजक बात त ई जे तेसो छात्र अभिभावक लोकनिक कान ठाढ़ नहि होइत छनि जे एहि तुंगित पड़यंत्रक विरोध करता। शिक्षाक समुदायक एक पेश (शेपाक पृष्ठ पात्र पर)

अछि। बेतनैक पाइ नहि, बाइली पाइबोक लोभ नोकरी पेशा बला सभ मे दूरि-दूरि भरल छैक, ई लोभ येह शिक्षा उत्पन्न कयल अछि। काटरक लोभ आ नोकरी द्वारा बेच-अबैच दंग सँ अर्जित कयल बाय बला घनक लोभ केँ हम फाक-फाक नहि बुझैत छी।

बाबरि ई शिक्षा विलासी, लोभो, समाज-चेतना सँ बिहीन लोकक निर्माण करैत रहैत, तावरि ई शिक्षा कुशिक्षा रहबै करत। कुशिक्षा ओ थिक जे व्यक्ति केँ वैयक्तिक लाभ-हानिक चिन्ता सँ उपर उठा कऽ ओकरा सामाजिक हानि-नाभक चिन्ता सँ उदार, बलिदानी आ श्रेष्ठ बनावय।

मिथिला मे जागर-पाठीक मूल्य छेक, बड़द-महीसक मोल होइत छेक, कुमारि कन्याक कोनो मोल नहि छे। भऽ कुमारि कन्याक मोल नहि छेक, ततऽ विधवा स्त्री आ साधारण स्त्रीक को मोल होयतैक ?

मिथिलाक स्त्री जखन मनुष्य नहि छथि। कन्यादान शब्दो सूचित करैत अछि जे नारी दान मे देवाक वस्तु थिक। जनानी लोक नहि थिक। जनानी घान, चाउर, गाछ आ दूकही-एकटकही बर्को दान देवा योग्य तुच्छ वस्तु थिक। ‘बवत्सा वेतु’ बर्को एक गोठ वस्तु, एक गोठ “कमोडीटी थिक।

● जीविकान्त



## लालबुभुकरक चिट्ठी

श्रीमान् सभादक जी महोदय  
बय मैथिली ।

आगा हासुरति ई जे अपनेक पत्रिकाक फगुआ अंक मे अपना लेल कुन उपाधि घोषित नहि देखि बर्षाटलभरि कष्ट लाल बुभुकर के मैथिली । परञ्च करवे की करितथि, बहन कपाडे बरल छनि त अहाँक दोषे की ? सभादक जी जं सत्त पुछी त कम सं कम एहि सन्दर्भ मे लाल बुभुकर शत प्रतिशत मैथिल छथि । तें जं कुन प्राप्यो वस्तु नहि मेटेत छनि त अपन भाष्य के दोष दय संतुष्ट भ जाइत छथि । ओना ई गणपत अहूँ के बुभुके हस्त जे बखन लोक के काब पड़ेत छेक त एतेको सं तेरक जोगार कष्ट लाल बुभुकर लग दोइए किन्तु जहाँ कि काब भ गेले त फेर केसी तेरी रंगा । तें ने आइवरि केहनो काज उदेम कतौ होइक, लालबुभुकर के लोक नोटो हकार देवाक खगता नहि बुझे । आ एक छथि लाल बुभुकर, जे बिनु हकारहि सभठाम उपस्थित । से कहै छी सभादक जी, भनहि मन बड़ि गेल, गत फरवरी मे पुर्णिया मे बाबा विद्यापतिक बर्षा बड़े धूम-धाम सं मनाओल गेल छल । भरि जबार मे बरबरना नोट छल । बारल छलह त लालबुभुकर । मुदा लाल बुभुकरो त तेहने, भनकी पबिते उपस्थित । ओना गाम सं जेवा मे कने विलम्ब भ गेलनि आ तें ओ दोसर दिन पहुँचि सकल । परञ्च जेना कि कहबी छेक—  
बाएव नेपाल कपार संगहि, सेह परि हुनको संग भेटनि । नाइते देखेत छथि जे मंत्रपर मैथिल कुलदूषण—मुख मंत्री डा० श्री जगन्नाथ मिश्र गरबि रहल छथि । से कहैत छी देखिते देरी त लाल बुभुकर के तुरबाक लहडि टिकासन चढ़ि गेलनि । परञ्च करता की ? छलाहो त बिनु नोटले ।

सभादक जी, अहाँ एक पत्र मे लिखने रही जे वाङ्मयक कारणे स्मरण शक्ति कमजोर पड़ि गेलह । एहि निमित्त हम नियमित शीर्षासन करेक सलाह देने रही । जं अपने से करैत हैव त निश्चित स्मरण शक्ति बढ़ल होइत आ तें अवसरे स्मरण होइत जे पटनाक चेतनाहीन समितिक मंच सं जगन्नाथ बाबू बाबल छलाह जे ओ मैथिलीक हेतु किछुभोटा नहि करताह । परञ्च एहिठाम ओ फेर स्पष्ट भाषा मे कहलनि जे मैथिलीक संवैधानिक मान्यता दिहवा लेल बिहार सरकार बचन-बद्ध अह । ओ आरो कहलनि जे प्रवान मंत्री आ एह मंत्री ने कि आश्वासन देने छथिन जे संविधान संशोधनक समय एहि पर गम्भीरता पूर्वक विचार कइल जायत ।

सभादक जी अहाँ के भनहि जनाव जगन्नाथ बाबूक बोली परिवर्तनपर अचरज लागय परञ्च जानथि दिनकर दिनानाथ

जे लाल बुभुकर के कनियो जगन्नाथ लागल होइन । अखल मे लाल बुभुकर के नीक जका बुभुकर छनि जे भारतीय नेता लोकनि के बात बदले मे ओतबो समझ नहि जगेत छनि बते बसेया विनेमा कृतयिका के कपड़ा बदले मे । तें जं मुख्यमंत्री महोदय कथनी मे परिवर्तन सेवे केलेनि त एहि मे अचरजक गुंजाइश कतय छेक ? आव गण रहल प्रवान मंत्री आ एह मंत्रीक आश्वासनक । जं अपने खखबार पढ़ेत हएव त नीक जका बुभुकर हएत जे किछुए दिन पहिने साम्यवादी दलक नेता श्री भोगेन्द्र भा बीक प्रबन्धक जवाब मे एहमंत्री साफ कहने रहथिन जे मैथिली के संविधान मे स्थान नहि देल जेतक । बहना ई जे संविधानक संशोधन बड़ भूमिटिया होइ छ । ओना अहूँ के बुभुकर हएत जे अपना बेगरेते सरकार—उदेत-बसेत एहि मे संशोधन करैत रहब-ए । आ भाषा कइएक छोट-छोट राब्योक निर्माण करिते रहब-ए ।

जहाँवरि प्रवान मंत्रीक बात अह त तिनका त हमरा सं नीक जका अहाँ चिन्तित होइवनि, कारण १९७० मे जे प्रतिनिधि मंडल हुनका सं भेट केने छल ताह मे अपनो रहबे करी । ई फर्क एते-अरि अवसरे अह जे तखन प्रतिनिधि दलक संग अध्ये ललित बाबू छलाह आ प्रवान मंत्री 'सहायभूति पूर्वक' विचार करवाक आश्वासन देने छलथिन । एहि खेप ललित बाबूक अनुग्रहमे स्थात धूचकारी जगन्नाथ बाबूक एकान्ती मे ओ 'गम्भीरता पूर्वक' विचार करवाक बात बजलीह-ए ।

त से कहै छी सभादक जी, स्थिति त अहूँ सं आव तुकाएल नहिने रहल हएत । परञ्च लाल बुभुकर के दुख एहि बातक सेलनि जे जनाव जगन्नाथ बाबूक उपरोक्त घोषणा पर ओहिना जपड़ी गढ़-गढ़ा उठल जेना सुकराती मे सूप गड़ग-डाइए आ जिम्मे-तिम्मे सं खाडी ओकरे आवाज सुनाइ पड़ेत छेक । मुदा अहाँ के इहो बुझत जे ओह सं दलिद्रा नहिजेटा पढ़ाइत छेक । ने त कहू भजा, पुर्णिया जे कि मिथिलाक एक महत्वपूर्ण स्थान अह, मैथिलक गढ़ अह ताह ठामक कालेब मे मैथिली-प्रतिष्ठाक पढ़ाइ एखन चरि नहि छेक । हमरा त सरिपो बुभुको ने छल ई बात । आ एहू लेल मैथिली भाषी के माउ करय पड़लनिह । आरो हंसीक बात त ई भेल जे खाँ साहेब पुर्णिया मे विद्यापतिक मंदिरक निर्माण लेल एक लाख टाका देवाक आश्वासन देलनिह । अहाँ के बुभुके हएत जे विद्यापतिक जीहपर विषफी मे संस्मृति सं नदिया कानब आरम्भ क देल । सभादक जी बलिहारी कहो मैथिलक विवेक के जे मात्र हइन मातृवातो सभ के आर्माविते नहि करैत, तकर पूजा-चर्चाओ करैत आ ओकर वक्तव्य पर

कविता

## मीताक नाम

लिखबा ले बैसै छी

गंगा अवतरण-कथा

लिखने चलि जाइत छी

कोशी-प्रांगणक व्यथा

स्वाभाविक

छन्द-मंभ

अभिशापित कौशिकीक

आतनाद कोलाहल

मैरवीक नृत्यक क्षंग

क्रन्दन चिरकालिक थिक

संभव श्मशान मे

किन्तु नहि स्तोत्र-पाठ

घंटा ध्वनि

शंखनाद

रक्तहीन, मांसहीन

कंकालक देश

हमर मातृभूमि *मिथिला* इ

'विख्याता भुवनत्रयम्'

सिद्धिदा ई

विसरल कि जाइत अछि

मानै छी सीत

सत्य सरिपहुँ आरोप तोहर

ब्रोजि गेल हमर, असय

लिखि नहि सकै छी आव

व्यर्थ करै छी प्रलाप

संकुचित विचार बोध राहने चलि जाइत अछि

किन्तु

हम वाध्य छी

जबय त चाहै छी

आशक आलोक नव

निराशाक बिड़ोरी

सिद्धाओने चलि जाइत अछि

लिखबा ले बैसै छी

कथा आजादी के

व्यथा बेरबादी के

*लिखल* के सिद्धाओने चलि जाइत अछि ।

—राम लोचन ठाकुर

अपदीयो पीटैछ । अखल मे मिथिला मे एक बड़ प्रचलित कहबी नहि छेक—  
वर्काऽक प्रत्याशा बला—से भरिषक मैथिलगण ताही प्रत्याशा मे छथि । आ फल जे की हएत से त अहाँ सन बुभुको लोक सं तुकाएल नहिने हेवाक चाही ।

हं त कहैत जे छलहुँ, ओहीठाम सं फिरोलाक पश्चात लाल बुभुकर आत्म-इजानि ब्याधि सं ग्रस्त भय ओछाभन बने छथि आ ते अहाँक आदेशानुसार रचना पठेवा मे अवसर्थ छथि । भरोस राखू जे स्वल्प-मेला पर रचना अवसरे पठओताह ।

ओना अपने के रचनाक अभाव नहि हो ताह निमित्त ओ अपन श्रिय-वस्तु 'विश्व-वंपक' बी के सेहो अतुरोप पत्र सरकारी डाक सं पठा-तुल छथि आशा करैत छथि जे शिघ्रे हुनक सहयोग अहाँ के प्राप्त हएय । एखन हतवे ।

अपनेक पत्रोत्तर नहि पठेवाक प्रवल आकांक्षी

श्रीमान् लाल बुभुकर  
बुभुको ग्रामवासी



## अज्ञुत अनटोटल...

हिसा में हेतु एहि पदार्थ में सम्मिलित अह—ते ओ सभ किछु करत से आशाए नैनाइ व्यर्थ—

× × × × ×

०० पश्चिम बंगाल सरकार एमहर वाट बामक बहना बनाके 'टाना-रिक्शा' बन करे लेल उनाहुअ अह। ओना लोक जनैए जे बड़ाबाजार सन व्यस्त हलाका के टूक आ टेम्पू बाम केने रहैत छैक ने कि रिक्शा। परञ्च गरीबक हिमायती हेवाक दावी केनिहार मातृवादी सरकार टूक-टेम्पू पर कुन कारवाह करवा मे पूर्ण अव-मर्भ अह, जखन कि भरिदिनक भी-तोड़ परिश्रमक बाद ५-१० टाका उपार्जन केनि-हार श्रमिकक सुहक आहार ओ छीनि रहलए।

सरकारक कहब जे एहि ठाम लाइसेंस प्राप्त रिक्शा स' वेही चितु लाइसेंसक रिक्शा छैक आ मात्र तकरे पर रोक लग-वह चाइछ। किन्तु ज' सवाल मात्र लाइ-सेंसक रहितेक त लाइसेंस देनाइ सरकारक लेल पैस बात नहि छलैक। जे ओकर मासिक सहयोग नहि करैत छैक त रिक्शा चालक नामे किछु पाइयो ल के लाइसेंस देल जा सकैत छलैक। एहि स' सरकारी के किछु आमदमी होइतेक आ गरीबक आहारो नहि छिनैतेक। मुदा बात से रहैक ए तखन ने। जेना कि पता लागलए, सरकार लाइसेंस प्राप्त रिक्शाओ के आठ वजे सकाळ स' आठ वजे राति धरि मुख्य पथपर चलनाइपर प्रतीविष्व लगेवाक सोचि रहलए। एहए छैक जे आठ वजे रातिक बाद स' आठ वजे सकाळ धरि रिक्शाक चलनाइ-नहि चलनाइ एक बराबर थीक—कारण जे एही समय मे सवारी भेटवै कते करैतेक।

एहि स' जे मात्र रिक्शेवाक क्षति हेतैक से बात नहि। साधारण लोक, जेकरा ने त अपन गाड़ी छैक आ ने टेक्सी पर चढ़वाक लेल जेवी मे पाइ, तकरा लेल त इहए सुलभ साबन छैक। गरीबहाक घोडा-पुता के झूल पठेवाक लेल एहि स' सस्त आ विवश दोसर साबन की भेटतेक ?

जखन जहाँ तहाँ पुलिस सभ रिक्शा जमा करे मे वेश सक्रिय देखल जाइछ। जे पहिने चौअञ्जो-अठञ्जो ओसुलेत छल एखन रिक्शा के पुलिस भेन पर लादि खाना मे जमा क रहल-ए। सुनल जाइछ जे सभ के तोड़ि वो जरा देल जायत। बाट-बाट खाली पड़ल छैक आ रिक्शावाहक सभ हताश भेल अह। ओकरा सभक ने कुनू संगठन छैक आ ने कुनू नेता—ओकरा लेल सोचनिहार।

जेना कि पता लागल-ए आ लोकसभ बस-ट्राम मे बजेए, जे हेतु रिक्शा लिच-निहार प्रायः सभ के सभ अवेगाळी थिक ते ओकरा देखवाक लेल ई सरकारी चालि थिके। ज' ई बात सत्य हो त एहि क्षेत्रीय दृष्टिकोणक जते निन्दा कएल जाए ओइ हएत। एहि विषय पर मानवीय दृष्टिकोण स' सोचल जेवाक चाही। ज' सरिपहुं

रिक्शा अवरोधक तत्व थिक त सरकार ओकरा हटा रोक, परञ्च ताइ स' पहिने लगभग दस हजार लोकक रोजी-रोटीक व्यवस्था त ओकरा करैक चाहिऐक।

× × × × ×

खजौळी स' रामचन्द्र वियोगी लिखैत छथि—दक्षिणंगा आकाशवाणी केन्द्र बिहार राज्यक सभ स' बटिया केन्द्र अछि। एकर अतेक प्रसारण खनता छैक ताइ स' वेही गुटवाबी, भाइ-भतीजावाद, जातिवाद आ आपाजारी एतय आत अछि। ओतवे नहि कार्य-क्रमक स्तर आओर वेही बटिया रहैत छैक। कतेको वाचाकार, कथाकार आ अन्य रचनाकारक रचना एहन लगेछ जेना हुनका पढ़नाइ-लिखनाइ स' कोनो मतलब नहि होइन। मुदा केन्द्र मे जे हेतु हुनक सम्बन्धी छनि ते हुनका रोकव असंभव।

आकाशवाणी दक्षिणंगा केन्द्र मे गुच-वाबी आ जातिवादक बोझाळ अछि। असली रचनाकार त पावनि-तिहार अपन रचना द पवैत छथि, परञ्च जे रचनाकार नहि छथि तिनका वेर-वेर सुनल जा सकैत अछि। कार्य-क्रमक संयोजक एकटा विशेष वर्ग के कार्यक्रम दय बन आ यश देवाक निश्चयसन क लेने छथि। एक दोसर के लाभ पहुं चेवाक व्यवसाय खुब जोड़-पकड़ने अछि।

प्रतिष्ठित रचनाकारक मामिला मे आकाशवाणी प्रायः ई करैत अछि जे स्वतः रचनाकार के हुनक पता स' अनुबन्ध पठा देछ। मुदा एहिठाम ठीक त कर उनटा होइछ। रचनाकार द्वारा प्रेषित रचनाओ गुमा देछ जाइछ अथवा हेरा जेवाक बहना कएल जाइछ। अनुबन्ध पत्र त हुनके पठा-ओल जाइछ जे संयोजक स्वजातिक छथिन, सम्पत्तिक छथिन, पीयावे छथिन वा कमि-शन देत छथिन।

एहि केन्द्र स' जे कार्यक्रम प्रसारित होइछ ताइ मे एकलपता नहि रहैछ। मिथिलाक भाषा मैथिली थिक आ ते एहि केन्द्रक मुख्य भाषा मैथिली हेवाक चाही। परञ्च मैथिली के सुविज्ञ स' घंटा भरि समय देल जाइछ आ जे कार्यक्रम प्रसारित होइछ से जातिवाद, भाइ-भतीजावाद मे फंसल रहैत अछि।

एहि केन्द्रक कर्मचारी लोकनि आवे-वला निदेशक के अपना बाल मे फंसा लेत छथि जकरा ओ तोड़ि नहि पवैछ आ ते कोनो समाधान-सुधार नहि क पवैछ। ओ कर्मचारी सभक हाथक खेलओना मात्र वनि के रहि जाइछ।

उचित त छलैक जे केन्द्रीय सूचना ओ प्रचारण मन्त्रालय एहि दिश ध्यान दित आ एहि घोटालाक जांच करवैत। जाति-वाद, गुटवाद के तोड़ि सांस्कृतिक अछाचार के रोकव परम आवश्यक तैखन सही रच-नाकार के अवसर भेटतैक, लोक के नीक रचना स' परिचय होइतेक आ एहि केन्द्रक सार्थकता सिद्ध होइत। की सरकार एकरा आवश्यक नहि बुझेछ ? की ओकरा एते पल्लवति छैक जे एहि दिश ध्यान देत।

३६

## कवि शेखराचार्य...

नाथकक वर्णन करवाक हो त कोन-कोन विषयक उल्लेख करव उचित, यदि नायि-काक वर्णन करवाक हो त की सभ निरूपण करव आवश्यक।

वर्ण-रत्नाकर सात कछोळ मे विभा-जित अह। यथा—(१) नगर वर्णन (२) नायिका वर्णन (३) आस्थान वर्णन (४) ऋतु वर्णन (५) प्रयानक वर्णन (६) भट्टादि वर्णन (७) समान वर्णन। एह सात कछो-लक प्रवान वर्णनक संगहि कतेको अप्रवान वर्णन अह। एवम् प्रकारे ई वर्णनक हेतु सरिपहुं रत्नाकरे थिक।

वर्ण-रत्नाकर पढ़ला सन्ता दू गोठ बात स्पष्ट परिलखित होइछ। पहिल त ई जे एकर भाषा शिष्ट तथा विषय वस्तु एहि बातक अकांक्ष्य प्रमाण थिक जे मैथिली भाषा साहित्यक शुभारंभ एहि स' कम स' कम ५ दस वर्ष पहिनिह भेल होइत।

दोसर ई जे कवि शेखरक अन्यायो मैथिली रचना अवसरे होइत जे आइपर समुचित प्रयासक अभाव मे प्राप्त नहि भ सकलए। कहवाक प्रयोजन नहि जे इहो पोथीक प्रकाशनक लेल हमरा लोकनि बंगाळी विद्वानक आभारी छी—जेना कि 'चयी-पद' आ 'विद्यापति पदावली'क निमित्त। इहो अचरजक विषय थिक जे जकर पूर्वज भारतीय दर्शन साहित्य-संस्कृतिक आकाश मे सूर्य-चन्द्रादि नखन सन आलोकित हो, से मैथिल जाति आइ भगबोगनी स' गेळ-गुलछ हां। ओना हमर विश्वास अह जे सूर्यक सन्तान भगबोगनी नहि भ सकैछ ओहो जखन नखन होइछ। खगता छैक ओकर आन शक्ति के बिम्बवाक, अपन आत्माभिमान के जगेवाक आ से मैने निश्चिते मिथिला-मैथिलीक पताका फेर विश्वाकाश मे फहराएत।

—सुजतबा अली

## मैथिली विश्वविद्यापीठ केन्द्रीय

मिथिला राजभवन, संकटमोचन बाम, दरभंगा, द्वारा आयोजित निम्न परीक्षा यथा :—मध्यमा विशारद अभियन्तणा विशारद आयुर्वेद विशारद तंत्र विशारद एह विज्ञान, विज्ञान विशारद कला विशारद कृषि विशारद पशुविज्ञान विशारद पाक विज्ञान विशारद शिक्षा विशारद विधि विशारद पत्रकारिता विशारद पुस्तकालय विज्ञान विशारद कौटिल्य विशारद चिकित्सा शिक्षा विशारद आराध विज्ञान विशारद (मात्र आरक्षी सेवाधी) वाणिज्य विशारद चिकित्सा विशारद शास्त्री शास्त्री प्रतिष्ठा शिक्षा शास्त्री अभियन्तणा शास्त्री विधि शास्त्री शास्त्री वाणिज्य शास्त्री प्रतिष्ठा पुद्गल प्रकाशन सम्पादन कला शास्त्री समाज शास्त्री विज्ञान शास्त्री कौटिल्य शास्त्री अरराध विज्ञान शास्त्री (मात्र आरक्षी सेवाधी हेतु) विज्ञान शास्त्री प्रतिष्ठा पुस्तकालय विज्ञान शास्त्री कर्मकाण्ड शास्त्री विक-बांक शिक्षा शास्त्री वेद शास्त्री क्रीड़ा शास्त्री तन्त्र शास्त्री एह विज्ञान शास्त्री कृषि शास्त्री आयुर्वेद शास्त्री योग विज्ञान शास्त्री प्राणी विज्ञान शास्त्री कर्म शास्त्री कला शास्त्री आचार्य शिक्षाचार्य विधानाचार्य अभियन्तणाचार्य प्रशासनाचार्य महालेखाचार्य साहित्याचार्य व्याकरणाचार्य दशरथ रय मंदाचार्य कौटिल्याचार्य श्रुतिपाचार्य विक्रान्त शिक्षाचार्य वेदाचार्य तंत्राचार्य प्राणाचार्य आयुर्वेदाचार्य योगाचार्य वीराचार्य धर्माचार्य आगमाचार्य नियमाचार्य संगीताचार्य विधानिधि विद्याशास्त्र आयुर्वेद रत्न प्राणशत विद्या भास्कर विचारत वाणिज्य रत्न पत्रकार रत्न समाज रत्न देशरत्न मिथिला रत्न मैथिली रत्न विधि रत्न शिक्षारत्न वेदरत्न विद्या वारिधि विद्यावाचस्पति महामहोपाध्याय तांत्रिक चिकि-त्सा रत्न यौगिक चिकित्सा रत्न यौगिक चिकित्सा रत्न चिकित्सा विज्ञान रत्न प्राणी विज्ञान रत्न प्राकृतिक चिकित्सा रत्न यूनानी चिकित्सा रत्न वनौषिक चिकित्सा विज्ञान रत्न पशु चिकित्सा रत्न यौगिक चिकित्सा विज्ञान रत्न परीक्षा मे सम्मिलित हेवाक हेतु २५॥—अनुमति शुल्क क संग आवेदन पत्र परीक्षा संचालक क नाम स' प्रस्तुत कएल जाय।

डा० दिनराज शाण्डिल  
कुलपति

डा० हरिनारायण ठाकुर  
कुल सचिव

## सम्बन्धन तथा परीक्षा केन्द्र स्थापना

मैथिली विश्व विद्यापीठ केन्द्रीय विश्वविद्यालय संकटमोचनबाम दरभंगा स' जे शैक्षणिक संस्था सम्बन्धन परीक्षा केन्द्र स्थापना अथवा मान्यता चाहैत छथि ओ कृपा चारि सौ टाका निरीक्षण शुल्क संग अपन विवरणी अविलम्ब प्रस्तुत करबि।

डा० भोमप्रकाश शाण्डिल कुलमित्र

## नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड, संकटमोचनबाम, दरभंगा द्वारा आर० एम० पी० ६० पी०, आर० एम० एम० तथा आर० एम० ए० क प्रमाण पत्र अनुभव एवं मौखिक परीक्षाक आधार पर प्राप्ति करवाक लेल १५/- टाका मे नियमावली एवं प्रश्न प्राप्त कएल जा सकैछ।

डा० जयनारायण शर्मा सचिव

(विज्ञापन)



## देसिल बयना

पाठकीय परिबारक (सलियना) सदस्य

१६. श्री कन्हैयालाल भा.	कलकत्ता	२७. " श्याम नारायण भा.	बर्णपुर
१७. " मोहित मिश्र	"	२८. " कृष्ण बिहारी भा.	लिछाब
१८. " राजचन्द्र भा.	"	२९. " तारा नन्द भा.	नरुमार
१९. " विष्णुकान्त भा.	"	३०. " दुर्गानन्द राय	"
२०. " देव कुमार भा.	"	३१. " शुभकान्त भा.	हवड़ा
२१. " कृष्ण कान्त चौबरी	"	३२. " गीतानन्द चौबरी उपानगर, कल०	"
२२. " गोपी कृष्ण भा.	"	३३. " हेम भा.	"
२३. " शिवनाथ राय	"	३४. " रामाश्रय सहनी	नवकी दिछी
२४. " आदित्य नाथ भा.	"	३५. श्रीमती अर्बनी भा.	"
२५. " रामानाथ राय	"	३६. श्री देव भा.	हिन्द मोटर
३. " वंशीधर भा.	"	३७. श्यामा भगवती 'पुस्तकालय, मछैता,	दड़िभंगा

## विशेष-सूचना

मैथिली मुक्ति मोर्चा, कलकत्ताक एक आवश्यक बेसार आगामी १८ अप्रैल १९८२ के बेरिया ४-३० सं उपानगर स्कूल में होएत। मोर्चाक प्रत्येक सदस्य तथा सहयोगी लोकनि सं एहि बेसार में उपस्थित होवाक अनुरोध कएल जाइए।

एहि बेसार में आमद-खर्चक हिसाब सेहो प्रस्तुत कएल जाइत। प्रत्येक सदस्य सं निवेदन जे हुनका पास जे रसीद वही अव्यवहृत/अव्यवहृत होनि तथा चन्दाक पाइ होनि से ३१ मार्च १९८२ धरि संयोजक लग (देसिल बयना कार्यालय में) अथवा श्री जनार्दन भा., उपानगर लग जमा के देबि। एहि सम्दर्भ में प्रत्येक सदस्य के १५ मार्च १९८२ क पोस्ट कार्ड सेहो लिखल जा चुकल छनि। कुनू कारणवश जिनका पत्र नहि सेटल होनि से ११ अप्रैल १९८२ धरि रसीद वही तथा चन्दाक पाइ जमा क सकैत छनि।

कुनू कारण वश जे किनको उक्त तिथिपरि रसीद वही वा पाइ जमा करवा मे असुविधा होनि आओर। अथवा बेसार मे उपस्थित होएवा मे असुविधा होनि त ओ तकर पूर्व सूचना 'देसिल बयना' कार्यालय मे लिखित रूप मे पठावनि से अनुरोध। बेसार मे विचारणीय विषय रहत—

१. आमद-खर्चक हिसाब
२. अगिला कार्य-क्रम निर्धारण तथा
३. अन्योन्य

बिनीत :  
रामलोचन ठाकुर  
संयोजक

'देसिल बयना' चन्दाक दर :—

१ प्रति	५०) पइसा
१ बर्लक	५) टाका
५ बर्लक	२०) टाका

पाइ पठेवाक पता —

श्री जनार्दन भा.,  
१७/६, उषा नगर,  
कलकत्ता-७०००६८

विज्ञापन दाता लोकनि सं :—

'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाव। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं अधिक प्रचार एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू

विज्ञापन व्यवस्थापक

अरुणोदय प्रकाशन,

## बाल गीत

## झिझिर कोना

झिझिर क'ना झिझिर क'ना कान काना जाउ  
मिथिला के आडन मे समतरि खेलाउ -  
उत्तर हिमालय आ दक्षिण मे गंगा छइ  
कोशी आ गंडक मे हेलू नहाउ।

उत्तर आ दक्षिण के भेद बिसराउ  
मिथिला के सन्तति छी मैथिल कहाउ  
कन्हो स कन्हो जोड़ि जाति-पाति आड़ि तोड़ि  
मिथिला के माटि उठा माथ सं लगाउ॥

माय, मातृभूमि, मातृभाषा महान  
कखनी ने होमय एकर अपमान  
सायक जे बोल छुनि बाजै मे लाज करी  
अपनी बाजू आ अनको सिखाउ॥

राखू नमस्कार कोठी के कन्हो  
चीन्हल ने जाएत के अप्पन वा आन  
मेंट जखन होइ वा जाइए लगै छी  
'जय मैथिली' केर आदति लगाउ॥

— रामलोचन ठाकुर

• ई गीत एहि सं पहिनुहु एकठाम प्रकाशित भेल छल। 'देसिल बयना'क पाठक लेल पुनः प्रकाशित कएल जाइछ।

## 'देसिल बयना'क पाठकक लेल विशेष उपहार

राम लोचन ठाकुरक तीन गोट बहुचर्चित पोथी—

१. इतिहासहंता (कविता संग्रह)
२. बेताल कथा (हास्य-व्यंग्य रचना)
३. प्रतिष्ठा (विदेशी कविताक मैथिली रूपान्तर)

बारह टाकाक पोथी मात्र आठ टाका मे।

सलियाना सदस्यक हेतु मात्र सात टाका मे।

बी० पी० खर्च अतिरिक्त।

इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करथि—

अरुणोदय प्रकाशन

३३/५, डा० देवदार रहमान रोड,  
कलकत्ता-७०००३३

## कह लोचन कबिराय

सरकारी फरमान थिक श्रमिक मजूरक नाम  
ई उत्पादन वर्ष थिक सुनू खोलि सभ कान  
सुनू खोलि सभ कान न बिसरू एसमा नासा  
मूह जाबि करू काज, न हो अधिकार-तमासा  
कह लोचन कबिराय श्रमिक काजक सरकारी  
लामक मालिक मात्र घोषणा थिक अधिकारी

अरुणोदय प्रकाशन, ३३/५, देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री महेश्वर भा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिंटर्स, ३२-बी, बुन्दावद  
बेहाल स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा



# समिति रचना

वर्ष—२ अङ्क—८

मई, १९८२

मूल्य—पचास पाइ

## सम्पादकीय

### मैथिली आन्दोलन आ माटि-पानिक प्रश्न

मैथिली नाम न आइ करि जे किछु मेर-ए से प्रवात से भेलह । यद्यपि एहि आन्दोलनक उद्देश्य से सकारण नहि जा सकैछ, तथापि इतबाधरि मानहि पड़त जे जाइ नूळ समस्याक समाधानार्थ एहि आन्दोलनक श्रीगणेश भेल छल, से एखनहुँ ओहिनी पड़ल अइ । चारि कोटि मिथिलावासी मैथिलक संगे स्वाधीनता प्रातिक पैंतीस वर्ष परचातो भारत सरकार दोसर सरक नगरिक सन व्यवहार कए रहल अइ । ओकर भाषा-संस्कृति मात्र अवहेल्ला नहि छैक, अपितु ओकर विनासक लेल नाना तरहें पड़यंत्र रचल जाइत रहल-ए, आइत-कानून बनावल जाइत रहल-ए । ओकर आर्थिक विकासक कया त कात रहल, उनटे एहि पैंतीस वर्ष ने कमे-कमे ओकर रीढ़ तोड़ि अंग बना देल गेलह । आइ मिथिला देशक स्थिति हुनू साम्राज्यवादी-पूँजीवादी देशक उपनिवेशों से अघराह छैक । कहबाक प्रयोजन नहि जे एहि स्थिति से उपरबाक एक मात्र पथ छैक संघर्ष, जनसंघर्ष । संस्कृति संघर्ष ।

आब प्रश्न उठैल जे ई संघर्ष करत के ? सोफ उत्तर छैक—मिथिलाक जनता । हुनू जाति क्षेत्रक अपन फराक विशेषता होइत छैक, फराक समस्या होइत छैक आ तकर सभ से नीक आ सटीक जानकारी ओही जाति क्षेत्रक लोक होइत अइ । तहिना समस्याक समाधान से क्षेत्रक विकास से लाभान्वित ओही ठामक लोक होइत अइ । बहरिया शोषक-शासन के त एही मे लाभ छैक जे ओ क्षेत्र विशेष पिछड़ल रहै, ओही ठामक लोक पिछड़ल रहै आ एकरा लोकनिक शोषण अबाध रूपे चलैत रहैक । आ एही ठाम जन्म लेख संघर्ष—शोषक आ शोषितक बीच संघर्ष, मुक्ति संघर्ष । मैथिली आन्दोलन उएह मुक्ति संघर्षक एक । मिथिला-मैथिल-मैथिलीक जीवाक अनिवार्य शर्त छैक ।

आब के प्रश्न उठैल जे एहन अनिवार्य शर्त होइतहुँ एहि दीर्घ अवधि मे मैथिली आन्दोलन सफलता के के हदय चरमताओ के किछक ने प्राप्त क सकल ? विद्वान लोकनिक कहल छनि जे एकर प्रश्न कारण छैक जे प्रवात मे एकर जन्म भेलैक आ ओते पसरबो करल । मिथिलाक माटि-पानि से ई नहि जुड़ि सकल । एहि बात के हमरो लोकनि मानित नहि छी, पूरा विश्वासक संग मानैत छी । हमरा लोकनि मानैत छी जे अपन देवकोट, परितन-पुरजन के छोड़ि पुरदेश के ओ सेहते नहि, खगते जाइछ आ इएह खगता ओकर शक्ति-सामर्थ्य के सीमित क दैत छैक । त आइधरि जे मैथिली आन्दोलन सफल नहि भेल त सेहो स्वाभाविक छैक । तहिना स्वाभाविक छैक मैथिली आन्दोलन के प्रवात मे जन्म लेनाइ—कारण प्रवात मे लोकक चेतना विकसित होइत छैक, अपन माटि-पानिक प्रति समर्थ बढ़ैत छैक । इतिहास साक्षी अइ जे कतेको आन्दोलनक जन्म एहिना प्रवात मे भेलैक आ परचातो ओ क्षेत्र मे पहुँचल-ए । कतेको एहन आन्दोलन भ सकलैक जकर पूर्णता-सफलता धरि संचालन प्रवासे सं होइत रहल छैक आ लड़ाइ क्षेत्र मे लड़ल गेल अइ ।

इएह सन लोक के 'मैथिली मुक्ति मोर्चा' गत वर्ष २३, २४ आ २५ मई के दिवसोंक नगर भवन मे तीन दिना सम्मेलनक आयोजन केने छल । एहि आयोजनक इरमय उद्देश्य छैक मैथिली आन्दोलन के माटि-पानि से जोड़नाइ, मिथिलाक माटि आ मैथिली आन्दोलनक संग संघर्ष ।

एहि आयोजन मे मिथिलाक विभिन्न मैथिली सेवा संस्थाक प्रतिनिधि, शिक्षक संघ नेता, जय नेता, राजनेताक संघ प्रतिनिधि एवं साहित्यकार लोकनि उपस्थिति छल । सभक विचार-विमर्श मोर्चाक प्रधान कार्यालय दड़िभंगा मे वनदबाक घोषणा करल गेल एवं एकरा संस्थाक एगो कमिटीक गठन भेल । वर्ष दिनक प्रोग्राम लेल गेल । कदम मे संकोच नहि जे कमिटी मे विभिन्न अंचल आ वयस्क प्रतिनिधि सभ छलाह जनिका लोकनिक मैथिली आन्दोलनक क्षेत्र से पर्याप्त नाम-यश छनि । परञ्च खेदक संग लिख पड़ि रहल-ए जे सभ श्रम आ अर्थ व्यर्थ मे चल गेल । प्रोग्रामक कथा त कात जाओ, कमिटीक एकोटा बैसरो नहि भेलैक । आ एहि तरहें मैथिली आन्दोलन के माटि-पानि से जोड़बाक अपन पहिल प्रयास मे मैथिली मुक्ति मोर्चा पूर्णतः असफल रहल ।

मैथिली मुक्ति मोर्चाक पहिल काज ६ दिसम्बर १९८० के पटनाक प्रदर्शन छलैक जाइ मे पटनाक निखिल भारतीय मैथिली भाषी छात्र संघ एकर सहयोगी छलैक । ६

संविधान बिनु मैथिलीक ओ  
मानचित्र बिनु मिथिला धाम  
डाहि जारि सुझाह करब हम  
विद्रोही मिथिलाक जवान

मिथिलाक विभूति—४

## कवि विद्यापति

आइ से लगभग साढ़े छठो सए वर्ष पूर्व मधुबनी जिलाक बिसफी ग्राम मे विद्यापति ठाकुरक जन्म भेल छलनि । दिनक पिताक नाम राणपति ठाकुर ओ पितामहक नाम जयदत्त ठाकुर रहनि । दिनका नेना मे दुलार से खेलन कहल जाइत, जकर कतेको ठाम वर्च अइ ।

विद्यापति नेने से संस्कारी छलाह आ कनिओ अवस्था मे पूर्ण पाण्डित्य के प्राप्त केलनि । काव्य रचनाक प्रवृत्ति सेहो दिनका नेनहि सं छल जे वयस्क संगहि बढ़ैत आ संशुद्ध होइत गेल । हिनक प्रतिभा बहुमुखी छल—जकर प्रत्यक्ष प्रमाण हिनक उपलब्ध पोथी सभ अइ । हिनक रचित पोथी जे आइधरि उपलब्ध भ सकल-ए निम्न अइ :

- (१) कीर्तिलता
- (२) भू परिक्रमा
- (३) कीर्ति पताका
- (४) पुरुष परीक्षा
- (५) शिव सर्वस्वसार
- (६) गंगा वाक्यावली
- (७) विभागसार
- (८) दान वाक्यावली
- (९) दुर्गाभक्ति तरंगिणी
- (१०) व्यालि भक्ति तरंगिणी
- (११) विद्यापति पदावली

मिथिला संस्कृत पंडितक गढ़ रहल ए आ विद्यापति से हो संस्कृतक विद्वान छलाह

एवं परम्परागुण से संस्कृत मे लिखनाइ आरम्भ केलनि । परञ्च जेना कि कवि के सुगंध आ ओ लपटा कहल गेल—विद्यापति एकर प्रमाण छलाह । संस्कृत से अवहेल आ अवहेल से मैथिली मे रचना कए ओ कवि शोकाचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक परम्परा के आगू बढ़ौलनि । असल मे मैथिलीक रचना हुनक लोकप्रियता ओ लोक परिचितिक आधार भेल । हुनक कोमलकान्त पदावली की शिक्षित की अशिक्षित वृद्ध श्रेणी मे समान रूपे प्रवेश कएलक आ आदित भेल । जनभाषा के साहित्यिक भाषाक मर्यादा दिव्योनाइ आ साहित्य के पंडित वर्ग से जनतामान्य धरि ल गेनाइ हुनकेतन प्रतिभा से संभव भेल जकर उदाहरण भारतीय वाङमय मे अप्रतीम अइ ।

विद्यापति जाइ युग मे भेल छलाह ताइ युग मे देशपर दुर्दिनक मेघ मड़ाइत छल । मुसलमानी आक्रमण से छोट-पेघ कतेको राज-रजवाड़ा ध्वस्त भ चुकल छल आ तें मिथिलादेशक रक्षार्थ—एकर गौरव-शाली साहित्य-संस्कृतिक रक्षार्थ ओ लेखनी बयने छलाह । बाहरी शत्रु सं लड़ैक लेल तरुआरिक प्रयोजन छलैक—वीरताक प्रयोजन छलैक आ तें कीर्तिलता ओ कीर्ति पताकाक सिरजन ओ कयलनि । विभागसार द्वारा सम्पत्तिक उचित भाग कए आपसी सहयोगक आधार संस्था केनाइ हुनक

दिसम्बरक प्रदर्शन पूर्ण सफल रहलैक तथा प्रमाणित क देलक जे मिथिलावासी सेहो अपन अधिकार लेल संघर्ष क सकैए रक्त बहा सकैए । हमरा जनैत एहि मे दू मत नहि भ सकैछ । अपन दोसर काज मे असफल होइतहुँ मोर्चा बैसि नहि रहल । तेसर डेग भेलैक 'देसिल बयना'क प्रकाशन । मैथिली आन्दोलनक निमित्त आन्दोलन पत्रक खगता के जहिना अस्वीकार नहि जा सकैछ तहिना देसिल बयनाक भूमिकाओं के पूर्वाग्रह मुक्त व्यक्ति अस्वीकार नहिने छैक क सकैने छथि । देसिल बयना के ई आठम अंक छिक परञ्च जाइ रूपे एकर स्वागत मिथिलांचल से प्रवासधरि भेल छैक आ जेना सहयोग भेटि रहल छैक खास के दिल्ली राउडकेला आदि प्रवासक मैथिल वन्दु लोकनि सं तकरा देखैत एकर दीर्घजीवनक प्रति निश्चित हमरो लोकनि विश्वस्त छी आ आशा करैत छी जे निकट भविष्य मे एकरा पाक्षिक बनेबा मे सफल भ सकब ।

एतना होइतहुँ ई मानबा मे आपत्ति नहि जे पत्रिकाए सभ किछु नहि छिक आ एही से मोर्चाक दायित्वक निर्वह भ जेतैक । पत्रिका आन्दोलनक वातावरण तैयार क सकैछ, आन्दोलन के गति प्रदान क सकैछ परञ्च मैथिलीक मुक्ति लेल जाइ लेल 'मोर्चा' क जन्म भेल छैक—चाही ताकि आन्दोलन जे मिथिलाक माटि-पानि पर होएत । दड़िभंगाक अवसरता से हमरा लोकनि के एते शिक्षा अवलोक सेहो जे मंचीय नेता सं, विद्यापति एवं मात्र के आन्दोलन बुझनिहार नेता सं वास्तविक आन्दोलन संभव नहि । एहि लेल जगजग पड़ैत सामक लोक के, छात्र-युवा वर्ग के आ ताइ लेल सीधा-समर बाहि गाने-गान वृत्त पड़ैत हल्ल छलैक मे जोआय पड़ैतैक । मैथिली मुक्ति मोर्चाक अगिला प्रोग्राम उएह होइत जकर विस्तृत विवरण शिब प्रकाशित होएत ।

अन्त मे लिखि देनाइ आवश्यक जे दड़िभंगाक आयोजनक समय से मोर्चाक बहुतेको सहयोगी उदासीन बा फराक भ गेल छथि । हुनका लोकनि सं पुनः पुनः निवेदन जे 'तेरह पाक' बला बहवी चरितार्थ नहि करथि ओ । जं सरिपहुँ मैथिली-मिथिलाक मुक्ति चाहैत छथि त पहिनिह जकां संग मील काज करथि । हुनका लोकनिक स्वागत लेल सतत हमरा लोकनिक बाहि पसारल अइ । संगहि नवीनो संस्था । व्यक्ति विशेष जे मोर्चाक संग काज करबाक इच्छुक होथि त हुनको स्वागत छनि । मोर्चाक नारा छैक पूर्ण स्वाधीनता अथवा मृत्यु ।

—जय मैथिली



सदेश छल कारण आपसी मतभेद शत्रु प्रवेशपथ उन्मुक्त क सकैत छल । जर्म वर्तमानो काल धरि एहन तत्व मानल जाइए जकरा नाम पर जातीय-एकता ओ संगठन सहजतर होइत छैक आ बाहरी आक्रमण सं देश के रक्षा लेल ई संगठन आवश्यक छलैक—तै हेतु ई हुनका भक्ति रसक गीत लिखय पड़लनि ।

कविपति विद्यापति महान समाजवादी, ओ दार्शनिक छलाह; महान राजनीतिज्ञ सांघि-विमर्शक युगद्रष्टा आ स्रष्टा आ तै महान कवि छलाह । ओना बेर पढ़ने ओ तत्त्वआरियो पकड़ने छथि सन्धि वातावरण छोदीक दरवार तक पहुँचल छथि—परञ्च सभ होइतहु ओ मूलतः कवि छलाह आ लेखनीय हुनक हथियार छल । एकर जाइ ठाम जेहन प्रयोग अपेक्षित बुझलनि—तहिना प्रयोग केलनि । मैथिलीएक नहि समस्त आधुनिक भारतीय भाषाक पहिल कवि छलाह । हुनक पश्चात् ओ हुनके सं प्रभावित भय विभिन्न भाषाक कवि लोकनि अपन-अपन भाषा मे काव्य रचना आरम्भ कएलनि । ब्रजभाषा मे सूर, अवधी मे तुलसीदास आ राजस्थानी मे मीरासन प्रतिभाक पथ निर्देशक सरिपहुँ विद्यापतिह भेलाह ।

कविपति विद्यापति केँ वीर कवि, भक्त कवि, शृंगारिक कवि आदि आख्या देल जाइछ आ सरिपहुँ अपन रचनाक आधार पर से ओ छलाहो किन्तु ओ मात्र वीरकवि वा भक्तकवि वा शृंगारिक कवि नहि अपितु एके संग सभ छलाह जे विद्यापतिह सन प्रतिभा सं संभव छल । परञ्च सभ रहितहुँ मूलतः ओ महान प्रगतिशील कवि छलाह लोक कवि छलाह जे मात्र लोकभाषा मे रचनाएत नहि बेलनि अपितु लोकक वात लिखलनि । सर्वसाधारणक व्यथा—कथा, ओकर इच्छा-आकांक्षा केँ ओ अपन रचनाक आधार बनओलनि । एकदिस सामाजिक दुखदैन्यक सजीव चित्रण कए जं लोकक ध्यान एहि दिस आकृष्ट कएलनि त संगहि दोसर दिस एहि सं मुक्तिक निमित्त दिशा संकेत सेहो कएलनि । 'केहुन केहुँ भोला गरिबक दिन, एकटा जे लोटा छलनि बेटा छलनि तीन' एवं 'नित उठि गौरी शिव सं मनावथि, करु ने कटा दस खेत' मे जं पहिल गरीबीक चित्रण अइ त दोसर भ्रमक महत्ताक परिचालक । एहिना 'पिया मोर बालक हम तछणी' मे सामाजिक कुरीति अन मेल विवाह पर तिखार व्यंग्य कएल गेलए । अपन एहीसभ विशेषताक कारणे कविपतिक गीत सभ ओतेक लोकप्रिय भेल जे एतेक दिन बीतलक पश्चातो अपन लोकप्रियता केँ मात्र अक्षुण्ण नहि रखने अइ, अपितु ताइ मे पूर्ण वृद्धि करवा मे पूर्णरूपेण सफल रहलए । सात-सात सए बरस धरि लोककंठ मे अविकल प्रवाहित होइबला काव्य विश्वसाहित्य मे भरिसक एकर अतिरिक्त आन नहि भेटि सकैछ । ओतबे नहि अपन मूल रूपहि मे मिथिलाक सीमा अतिक्रमण करैत बंगाल, असम, उड़ीसा, नेपाल धरि एकर पूर्ण प्रचार-प्रसार भेलक आ सभ ठामक लोक एकरा अपन मानलनि । ई कविपतिक लेखनीक जादू छल जे पदावलीक

परम्परा सम्पूर्ण पूर्वी उत्तरी भारत मे चलि पड़ल जकर अन्तीम कड़ीक रूप मे रवीन्द्र नाथ ठाकुर विरचित भानुसिंहरे पदावली थिक । ई हिन के मधुर गीतक प्रभाव छल जे मैथिली सं अनिमित्त होइतहुँ परवर्त कवि लोकनि मैथिली मे काव्य रचनाक प्रवास बेलनि आ मूलरूप सं भिन्न होइबाक कारणे से ब्रजबुलीक नामे पदावली साहित्यक विशेष भाषाक रूप मे परिचित पओलक ।

कविपति विद्यापतिक गीतक नायक कृष्ण आ उगना अलौकिक नहि लौकिक छथि—लोकप्रतिनिधि छथि । राधाकृष्णक प्रेमलीलाक आधार मानवीय थिक जाइ मे सत्य शिव आ सुन्दरक सन्निवेश अइ । विद्यापति निर्विवाद सौन्दर्यापाशक छलाह कारण सुन्दरताए सत्य थिक आ सत्ये शिव थिक । तहिना विद्यापतिक उगना साधारण चाकर थिक, सेवक थिक आ सेवा धर्म मानवक सबसेँ पैघ धर्म थिक—इश्वरीय थिक—तै उगना केँ विद्यापति महादेव बना देत छथि । एकरा उदारतावादी वा वास्तवतावादी भनहि जे कुनू दृष्टिकोणक नामे अविहित कएल जाय परञ्च ई थिक कविपतिक दृष्टि हुनक अपन मौलिक दृष्टि । ओना धार्मिक दृष्टिकोण रखनिहार समा-लोचकगण उगना केँ देवाधिदेव महादेव मानैछ जे विद्यापतिक भक्तिभाव सं प्रभावित भए हुनक सन्निध्य लेल चाकर बनि आएल छल । जं एहूँ दृष्टि देखल जाए त भारतीय साधक श्रेणी मे विद्यापतिक स्थान सबसेँ उपर अइ । रामकृष्ण परमहंस केँ कालीक दर्शन मात्र भेल छलनि त ओ अवतारी मानल जाइत छथि, ताइठाम महादेव जनिक चाकर होथि तनिकर कये की ? ओ सरिपहुँ अतुलनीय छथि । किंवदन्ती अइ जे देहावसान काल मे स्वयं गंगा चारि कोस अगुआ केँ अपन प्रिय सन्तान के कोरा मे उठा लेलनि । विश्वसाहित्य मे विद्यापतिक जोरै—से जे कुनू क्षेत्र मे भरिसके प्राप्त होइत ।

कविपतिक रचना एकदिस सं हुनका सर्वसाधारण सं राजदरबारधरि आदर सम्मान देलकनि त दोसर दिस पंडित वर्ग द्वारा उपालंभ - उवहास सेहो । नव कविशेखर अभिनव जयदेव, कविकोकिल कविपति आदि उपाधि सं जे हिनका विभूषित कएल जाइछ ताइ मे सत्यतः कविपतिह एहन अइ जे हिनक प्रतिभाक सही मूल्यांकनक आधार पर देल गेल अछि हिनक परवर्ती कवि गोवीन्द दास द्वारा । कविकोकिल त हिनक उपहास मात्र लेल तत्कालीन पंडित द्वारा कहल जाइन आ तहिना अभिनव जयदेव हिनक प्रतिभा केँ छोट क अंकबाक षडयंत्र थिक । ई निर्विवाद जे गीत गोविन्दक रचनाकार जयदेवक परम्परा केँ आगू बढ़बैत एवं सही आ सशक्त घरातल देत ई राधाकृष्णक गीत लिखलनि परञ्च ई ओतबे धरि सीमित नहि रहलाह । पहिनहि कहि चुकल छी जे हिनक प्रतिभा बहुमुखी छल आ ई निसन्देह जयदेव सं बहुत आगू बढ़ि चुकल छथि । राजदरबार मे रहितहुँ ई दरबारी नहि बनि एकलाह सदा लोक कवि रहलाह । ई दरबार सं प्रभावित नहि भेलाह अपितु दरबार हिनका सं प्रभावित नहि भेल ।

किछुदिन पूर्व मैथिली साहित्य मे एहन चर्च उठल छल जे साहित्य महिसक पीठ पर नहि जा सकैछ । परंच विद्यापतिक साहित्य महीसक पीठ पर खेत-खरिदान मे, गोसा-उनिक सीरा लग, घर आहूँन मे सर्वत्र-त्मान रूपेँ व्याप्त देखल जा सकैछ । जन-भाषा मे जनगणक बात लिखबाक कारणे पंडित वर्गक उपहासक उत्तर स्वरूप कविपति कहने छलाह—

बाल चन्द बिजवाइ भाषा  
दुहु नहि लग्गइ दुबजन हाता  
ओ परमेसर हर सिर सोहइ  
ई णिचवइ नापर मन मोहक  
देसिल बयना सब जन मिह  
तइसन जाम्पओ अवहट्टा

ई पंक्तिये कविपतिक आत्मबल आत्माभिमानक परिचायक थिक ।

आइ कविपति विद्यापति मै अपरनाम छथि, मैथिल संस्कृतिक अंग छथि । मिथिला मे कुनू शुभ क हिनक गीतक किन्तु नहि होइछ । एहन मिथिला वाली स्त्री-पुरुष नहि ताइ बनिका हिनक गीतक दु कंठस्थ नहि होइ ।

कविपतिक देहावसान लगभग १ ने भेल जाइ सम्बन्ध मे हिनक विख्यात अइ—

विद्यापतिक देह अवसान, व भवल त्रयोदशी जान ।

## मैथिली विश्वविद्यापीठ केन्द्रीय विश्वविद्या

मिथिला राजभवन, संकटमोचन धाम, दरभंगा द्वारा आयोजित निम्न पः—मध्यमा विशारद अभियन्त्रा विशारद आयुर्वेद विशारद तन्त्र विशारद विशान विशारद कला विशारद कृषि विशारद पशुविज्ञान विशारद पाक वि विशारद शिक्षा विशारद विधि विशारद पत्रकारिता विशारद पुस्तकालय विशान चिः कौटिल्य विशारद-विकलांग शिक्षा विशारद अपराध विशान विशारद (मात्र आ सेवाधी) राज्य विशारद चिकित्सा विशारद शास्त्री प्रतिष्ठा शिक्षा शास्त्री अभियन् शास्त्री विधि शास्त्री वाणिज्य शास्त्री प्रतिष्ठा मुद्रण प्रकाशन सम्पादन कला शा मात्र शास्त्री विशान शास्त्री कौटिल्य शास्त्री अपराध विशान शास्त्री (मात्र आ सेवाधी हेतु) विशान शास्त्री प्रतिष्ठा पुस्तकालय विज्ञान शास्त्री कर्मकाण्ड शास्त्री ि लोक शिक्षा शास्त्री वेद शास्त्री क्रीडा शास्त्री तन्त्र शास्त्री गृह विशान शास्त्री शास्त्री आयुर्वेद शास्त्री योग विशान शास्त्री प्राणी विशान शास्त्री कर्मकाण्ड शास्त्री शास्त्री आचार्य शिक्षाचार्य विधानाचार्य अभियन्त्रणाचार्य प्रशासनाचार्य महालेखा साहित्याचार्य व्याकरणाचार्य दर्शनाचार्य ग्रंथाचार्य कौटिल्याचार्य ज्योतिषाचार्य विक शिक्षाचार्य वेदाचार्य तन्त्राचार्य प्राणाचार्य आयुर्वेदाचार्य योगाचार्य वीराचार्य धर्मा आगमाचार्य निगमाचार्य संगीताचार्य विद्यानिधि विद्यासगर आयुर्वेद रत्न प्राणरत्न वि भास्कर विद्यारत्न वाणिज्य रत्न पत्रकार रत्न समाज रत्न देशरत्न मिथिला रत्न मैथिली विधि रत्न शिक्षारत्न वेदरत्न विद्या वारिधि विद्यावाचस्पति महामहोपाध्याय तांत्रिक चिा त्सा रत्न मात्रिक चिकित्सा रत्न यांत्रिक चिकित्सा रत्न चिकित्सा विशान रत्न प्राणी विश रत्न प्राकृतिक चिकित्सा रत्न यूनानी चिकित्सा रत्न वनौषिक चिकित्सा विशान रत्न चिकित्सा रत्न यौगिक चिकित्सा विशान रत्न परीक्षा मे सम्मिलित हेवाक हेतु २५५१ अनुमति शुल्क क संग आवेदन पत्र परीक्षा संवाष्क क नाम सं प्रस्तुत कएल जाय ।

डा० दिनराज शाण्डिलय  
कुलपति

डा० हरिनारायण ठा  
कुल सचिव

## सम्बन्धन तथा परीक्षा केन्द्र स्थापना

मैथिली विश्व विद्यापीठ केन्द्रीय विश्वविद्यालय संकटमोचनधाम दरभंगा सं शैक्षणिक संस्था सम्बन्धन परीक्षा केन्द्र स्थापना अथवा मान्यता चाहैत छथि ओ कृप चारि सौ टाका नरीक्षण शुल्क संग अपन विवरणी अविलम्ब प्रस्तुत करथि ।

डा० ओमप्रकाश शाण्डिलय, कुलमित्र

## नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड, संकटमोचनधाम, दरभंगा द्वारा आर० एम० पी ए० पी०, आर० एम० एम० तथा आर० एम० ए० क प्रमाण पत्र अनुभव एवं मौखि परीक्षाक आधार पर प्राप्ति करवाक लेल ३५१-टाका मे नियमावली एवं प्रपत्र प्रा कएल जा सकैछ ।

डा० जयन्तारायण शास्त्री, सचिव

( विज्ञापन )



## दू गोट कविता

( गत अक्टूबर में कलकत्ता में मैथिलीक एक पत्रिका टूटि रहल जल आ दोसर पत्रिकाक जन्म देवाक नेआर आ ओरिआओन भऽ रहल जल । अक्टूबरक चारिम सप्ताह में एही मनःस्थिति में लिखल दू गोट कविता )

( १ )

हमरा लोकनि भाखाकें  
भाखा नहि रहऽ दऽ कऽ मगड़ौआ खुरचनि बनौने छी  
एहि खुरचनि केँ अहाँ पूबसं धिचैत छी  
हम ओकरा पच्छिमसं धिचैत छी  
पचीस बरसं एहि खुरचनि पर बहस करैत  
हमरा लोकनि अपन-अपन जोह बहार कयने  
इकमि रहल छी  
बकरा लोक मन्दिरमे स्थापित करैत अछि  
तकरा हमरा लोकनि बच्चोंक नोक पर टकने  
भिरैत छी  
एहि देशक बुझनुक लोक  
बुट्टीक धारी में चलैत अछि  
ई बुट्टीक धारी अनुशासित तं एहने अछि  
जे दिन-राति चिन्नीक बोरा तकैत अछि  
प्रत्येक बुट्टीक धारी  
चिन्नीये दिख बनैत अछि

( २ )

हमरा लोकनि भाखा केँ कहियो नाओ बना दैत छी  
एहि नाओकेँ खेबबा छेल सभ कथो तैयार होइत छी  
नाओ ज्ञाबत गाड़ी पर रहैत अछि,  
हमरा लोकनि बसात में कहुआरि घुमबैत छी  
नाओकेँ अखन पानि में धऽ दिशौक  
तं बेसी काल खुब तमाशा होइत अछि  
लोक कहुआरि केँ पानि में  
चलबबाक बदला में  
ओकरा दहोदिस चलबैत अछि  
नाओ ने आगाँ जाइछ, ने पाछाँ  
ओ ठामहि ठाम  
चकभावर देबऽ लगैत अछि  
चारक कछेर पर ठाढ़ कतेको लोक  
बेर-बेर एक्के तमाशा देखैत अछि  
ई नाओ कहियो कोनो मोहनिमे नहि  
सुखल बालु पर डूबल अछि  
प्रत्येक बेर बुट्टी सभ  
चिन्नीक बोरा में मुइल अछि

—जीवकान्त

## मृत्यु अभिमन्युक

( जीवकान्तक निमित्त—हुनक दुनू कविताक संदर्भ में )

शत्रु निर्मित  
सात-सात टा चक्रव्यूह तोड़ि  
अपराजेय अभिमन्यु  
अखन आपस अमेछ  
त  
आलिगन छेल आकुल  
इबार-इबार खजनक हाथ  
ओकरा आबद क लैत छैक  
आ तैखन  
पहैत छैक ओकरा पीठ पर  
सवधानक  
एक नहि अनेका छूरा—  
ओ आर्तनाद त नहि करैछ  
अनहि केँ तकैतटा अछि  
आ खसि पड़ैछ—  
ओना  
महाभारतक ओ कथा  
सुन्दरे नहि  
आकर्षको अबसे छैक  
जे  
सातम द्वार भेदनकला सं अनिभिन्न  
शत्रु सं घेरछ  
असगर अभिमन्यु  
मृत्यु केँ प्राप्त भेल जल  
आ सरिपहुं  
अभिमन्युक मृत्यु  
एहीठाम होइत छैक ।

—राम लोचन ठाकुर

## मिथिलांचलक विकास

मिथिलांचलक प्रायः पचहत्तर फी सदी आवादी केँ नीक जेका भोजनो प्राप्त नहि होइत छन्हि । प्रति वर्गमील आवादीक लेखा-जोखा सं शात होइत अछि जे संसारक कोनो भाग सं आवादीक दबाव ऐहि क्षेत्र में बेसी अछि । कारण यह भ सकैत अछि जे मिथिलांचलक सामाजिक वातावरण बदलि रहल अछि । अनुशासन लुप्त भ गेल अछि । भाई-चाराक स्थान पर मालोन्यता आओर धोखा-धरीक बाजार गर्म अछि । आध्यात्मिक शानक लोप भए रहल अछि । श्रुत सेहो रंज बुझना जाइत छथि । आम, खान, मरवा आदि कतहु मेल आ कतहु नहि होइत अछि । वेद सं सोधल कार्यक्रम तथा मुण्डन उपनायन, विवाह, श्राध, दश-कर्म आब एक परिपाटील रूप में मनावल ज रहल अछि । समालोक लोक केँ एक दोसर केँ शंकाक दृष्टि सं देखैत छथि विश्वास नामक चीज समाप्त भए रहल अछि । पाहुन केँ रात्रि विश्राम हेतु आग्रह करब लोक छोड़ि रहल छथि । एहि प्रकार समाजक जे एक शृंखला छल टुटि रहल अछि । मुदा ई सभ कियेक, कोन लाभक प्रयोजन सं ? एकेटा उत्तर अछि जे आध्यात्मिकताक तिलांजलि दए भौतिक वादी

विचार धारा में सकल समाज बहि रहल अछि । टाका कोनो सुख-सुविधा प्राप्त करवाक साधन भए सकैछ मुदा साध्य कएनो नहि छल, नहि होएत । सर्वत्र टाका कमप-बाक होइ लागल अछि । जीवन स्तर, रहन सहन, शिक्षा-दीक्षा, खान-पान, आमोद-प्रमोद, हास्य-विनोद, संगीत-नृत्य, कला-कौशल, साहित्य, आध्यात्म आदि कछुगुगी रूप धारण कए लेने अछि । विवेक, त्याग, स्नेह, सहिष्णुता, अनुशासन, परोपकार, संत संगम, शुद्ध भोजन-आदि केँ पैघ सं पैघ व्यक्ति देखा देखी में अपन संस्कृति केँ नष्ट क रहल छथि । किछु लोक अपन पत्नी आ पारिवारिक सदस्य सं अंग्रेजी किम्बा शुद्ध हिन्दी में बजैत छथि । मैथिली बजबा सं घबराइत छथि ।

शीर्षक पुरान अछि मुदा अवसर आवि सकल अछि जे मिथिलांचलक विकास कार्य गतिशील बनावल जाए । एहि लेल परमावश्यक अछि जे ग्राम, प्रखंड, अवर, प्रमंडल आओर राज्य स्तर पर विचार गोष्ठीक आयोजन हो आ गोष्ठी द्वारा पारित प्रस्ताव केँ सरकारक समक्ष राखल जाय । गोष्ठी द्वारा एक रूपक प्रस्ताव पारित करब आवश्यक अछि ।

मैथिली पोथी/पत्र कीचू आ पढ़ू  
नेपाल सं प्रकाशित मैथिली दू मासिक

अचं ना

संपादक :—राम भरोस कापड़ि भ्रमर  
सरस्वती सदन, जनकपुरधाम, नेपाल

ग्वालिअर सं प्रकाशित मैथिली + हिन्दी दू मासिक मासिक

मिथिला दीप

संपादक : बन्धन बिहारी

१४६, ललितपुर कोठोनी ग्वालिअर-४७४००६



हमरा सभक सबस पैघ समस्या अछि मैथिलीक स्थान अष्टम अनुसूची में सुरक्षित करायब, अराजपत्रित कर्मचारीक नियुक्ति परीक्षा में मैथिली के ऐच्छिक विषयक रूप में राखब, राजकाज मैथिली भाषा में सेहो तकर प्रयत्न करब, प्राथमिक शिक्षा के लोक-प्रिय बनयबाब लेल पोथीक प्रकाशन आ वितरणक सुविधा प्राप्त करब, मिथिला पेट्रिस, हस्तकला, कारीगरी आदिक विकासक लेल योजना बनायब आओर कार्यान्वित करब, जनमानस के अपन अधिकारक ज्ञान करवाक लेल प्रचार-प्रसार करब आदि सम्मिलित अछि। प्रश्न उठैत अछि जे ई सभ कार्य होएत कोना? डेढ़ सए वर्ष सँ पीड़ित एवं उपेक्षित मिथिलाक उद्धार करवाक साधन की भइ सकैछ ?

प्रश्न गंभीर अछि। सबस पहिने आवश्यकता अछि जे चेतना समिति के आर्थिक रूपे स्वावलम्बी बनावल जाए। बाएँ। सरकारी अनुदान पर जीनिहार संस्थाक अपेक्षा जे संस्था अपन साधन पर निर्भर करैत अछि वो अधिक विकासशील रहल अछि तकर साक्षी इतिहास अछि। मिथिला-चलक दुर्भाग्य अछि जे औद्योगिक विकास, लघु उद्योग विकास एखन प्रारम्भ होयब बाकी अछि। कोनो वर्ष बाढ़ सँ सर्व साधारण अक्रान्त होइत छथि—तँ कहियो सुझावक भीषण स्थितिक सामान करए पड़ैत छन्हि। वस्तुक दाम नित्य-प्रति बढ़ि रहल अछि। खेतक उपजा बारी मुख्यतः भगवानक अक्षुब्धता पर निर्भर करैत अछि। आर्थिक विपन्नताक भयङ्करता सँ मिथिला-चलक जरि-मरि रहल अछि मुदा देखनिहार के। लोकक प्रतिनिधि जखन पटना निवास करब शुरू करैत छथि तँ गामक लोक के विसरि जाइत छथि। लाल-पीयर रोशनी सँ जगमगायल शहर, रंग-धिरंगा वस्त्र-सुन्दर-सुन्दर भवन, सिनेमा आदि सहसा ककरो आकृष्ट कए छैत अछि। पटनाक मायानगरी में सभ मायावी भ जाइत छथि।

त ई सब देखि कि हाथ-पर-हाथ जए, सांस रोकि समाजक मालिक अस्तित्वक विनाश देखैत रहबाक चाही किम्बा स्कुल भए मिथिलाचलक प्राचीन गौरव, परम्परा, साहित्य, हस्त-कला, पांडित्य, सामाजिक स्थिति, संस्कृतिक रक्षा करवाक संकल्प लए पुनः समाज के समुन्नत करवाक प्रयास करी ? ई दू गंभीर समस्या अछि। समाधानक लेल चेतना समिति अपनेक स्नेह आ सहयोगक आकांक्षी अछि। जाति, धर्म आ अवस्थाक संकलणता सँ पृथक सौहार्द आ सौमनस्यक भावना सँ एक बड़ भए समस्त मैथिली भाषीक समुन्नयन आ मिथिलाचलक सर्वांगीण विकास में सहयोगी बनी तकर आमंत्रण दैत अछि।

निवेदन अछि जे 'चेतना' शब्द के चरितार्थ कयल जाय।

—श्री राजेन्द्र भा  
सचिव, चेतना समिति, पटना

(भाषा शिल्पओ विचार लेखक  
निजी छनि तँ ओकरा यथावत राखल गेल  
अछि—सं०)

## लाल बुभुकरक नाम

(सारफत देसिल बयना)

श्रीमान लाल बुभुकर जी—महाराज,  
अब मैथिली आदाब अर्ज।

शक्त कुशल। बाद समाचार ई जे एक तऽ अहाँ चिट्ठी लिखैत छी विप्राह आ ऊपर सँ ओकरा पत्र पत्रिका में प्रकाशित करवा कऽ नीक लोक के देखार करैत छी से ओ वावू ई आदति छोड़ू। अहाँ त कलकत्ता वाली बनल छी आ भोगऽ पड़ैत छनि मिथिलावासी के। कहाँदत अहाँ पत्रिका में बिहारक बजरीआला जनाब जगन्नाथ मिश्रजीक अदखोइ-बदखोइ लिखि देने रहियेक से बेचारे जीक साहेब के ओल जकाँ कवकवा कऽ लगलनि आ तकर प्रति-क्रिया स्वरूप ओ घरे-घर भुक्कुकी लऽ क मैथिली पढ़निहार, बजनिहार आ लिख-निहार के गंगालाभ करवाक लेल तकने फिरैत छथि। अहाँ पूछब से कोना आ प्रमाण मांगब तँ लालबुभुकरजी, हम अहाँ के सम्पूर्ण वृत्तान्त संक्षेप में सुना दैत छी। अहाँ त छीहि लालबुभुकर, एकर सरलार्थ, भावार्थ ओ विशेषार्थ लगावेब।

घटना छोटछीन रहैक मुदा भयावह। मेलक ई जे दिल्लीक संसद में जखन बजट अधिवेशन प्रारंभ भेलक तँ मजग में कीड़ा सभ सुगबुगाय लागल—नाना तरहक विचार तरंगक उतार-चढ़ाव प्रारंभ भऽ गेल आ लागल जे हो ने हो-एहि खेप मैथिली के संवैधानिक मान्यता भेटि कऽ रहैत कारण मिथिलाक संपूर्ण आ मैथिली-भाषी (सरकारी लोक) क आराध्य श्री जगन्नाथ बाबू अपना मुँह सँ केकटाँ बाजल रहथि जे मैथिली के संवैधानिक मान्यता देवाक लेल बिहार सरकार, केन्द्रसरकार के एकटा जोरदार—असरदार चिट्ठी लिखलक अछि तँ भावाधिष्णक कारणे अपना के नहि तँ भारि सकलहुँ आर बिदा भेलहुँ मिथिलाचल में अपन स्वेच्छा आइडियाक प्रचार-प्रसार करऽ। ओना मोन में एकमोट पैघ स्वार्थ सेहो रहए जे यात्राक अवधि में भोजनादि निःशुल्क प्राप्त हएत, लोकसम्पर्क हएत, अपन आइडिया के भविष्यवाणीक रूप दए प्रचार करब आर जे माताजीक कृपा सँ मैथिली के संवैधानिक मान्यता भेटि गेलक तँ अगिला एलेक्शन धरि देखल जयतक मने लांगटर्म प्रोग्राम रहए मुदा ओ वावू कि कहू—नाम हमर विश्ववंचक ठगी करवाक अधिकार हमरा मुदा मुझ गेलहुँ हम स्वयं—आ सेहो मुफ्ते मुदा संतोष एतवे अछि जे जान वॉचि गेल। संयोग एहन भेलक जे एकटा गाम में हमरा सँ एक जिज्ञासु व्यक्ति टकड़ा गेलाह। परिचय-पातक पश्चात जखन हम हुनका अपन भविष्यवाणी सुना हुनकर विचार पूछलनि तँ ओ तीनहाथ छड़पि उठलाह आ चिचिया-चिचिया कऽ नारा लगावऽ लगलाह—“अपूर्व आइडिया” ओरि-जनल आइडिया “विश्ववंचक जिन्दावाद” देखिते, देखिते संपूर्ण गाम ओहि जिज्ञासुक दरबजा पर जमा भऽ गेलक आ नारा पर नारा पड़ए लगलक। जिज्ञासुजन हमर पीठ थपथपा कऽ बजलाह—“भाइ एहि गाम में

पुरुष सभ मैथिली नहि बजैत अछि तँ की... मैथिलीक एकोगोट पत्रिका एहि गाम में नहि अखैत छैक तँ की... कोसक पोथी छोड़ि कोनो घर में मैथिलीक आन पोथी नहि भेटि सकैत तँ की... अहाँक आइडिया मुदा अपूर्व अछि... एहि खेर मैथिलीकेँ सरकारी मान्यता भेटिकऽ रहैतक... बूभुजे मान्यता भेटि गेलक... आब किछु करियौक खर्च-बर्च मैथिलीक नाम पर दियौक किछु टाका... भऽ जाइक एकगोट छोट-छीन पार्टी।” से लालबुभुकरजी चक्कर में पड़ि गेलहुँ। घड़ी ओहिगाम में बन्दकी लागि गेल। कोनो धरानी राति कटलहुँ आ अन्द-रोखे सिताहल नदिया जकाँ पड़लहुँ मुदा बाहरे करम। कहथी छैकने जे ‘जयबह नेपाल-कपाड़ संगे जयतह...’ तकरे पड़ि भेल। ओहि गामक सिमानो ने टपने रही कि धड़ा गेलहुँ। एकगोट सज्जन पुरुष हमर वाट छेकि उलहन देवऽ लगलाह—“आहि-रेवा, ई कि ओ? एना किएक भागल जा रहल छी? चाह पीबि लिअ तखन जायब चाह पीबि ओ सज्जन जखन व्यवस्थित भेलह तँ रतुका पार्टीक रेफरेंस दैत हमरा अपन बचनानुसृत सँ तृप्त करऽ लगलाह—“ओ, अहाँ ई कोन केरा में पड़ल छी? मौका भेटल अछि तऽ ओकर लाभ उठाउ ई कि मैथिली-मैथिली पेंपिया रहल छी? जयप्रकाश बाबूक आन्दोलनमें जनज त तोड़वनिहि हैब अहाँ। आब जे हमर विचार मानी तऽ टीक सेहो कटवा लिअ आ प्रारंभ कऽ दिअ अलिक बे-प-ते हँ हम. एम. एल. ए. तँ नहि मुदा जे अहाँ सन भाषा प्रेमी केँ हम एम. एल. सी. नहि बनौलहुँ तँ हमरा नामे कुनूर पोस्तिव। आइधरि हमर एकटा आग्रह नहि टाड़लनि अछि मिसरजी... ओ हमर साक्षाते...।

हम ओहि सज्जनक मुँह निहारऽ लगलहुँ। चाहक प्वालीकेँ टेबुल पर राखि हम बजवाक साहस छोटलहुँ—“प्रियवर। हमर अभिप्राय से नहि छल। हम एम. एल. ए. एम. पी. वाला बात तँ ओहिना बाजि देने रही। असल में हमर कहवाक तात्पर्य छल जे एहि बेर मैथिली के संविधानक अष्टम अनुसूची में स्थान भेटि जयवाक चाही मुदा भऽ सकैछ जे बिचबहि में कोनो विघ्न उप-स्थित भऽ जाय तँ हमरा सभकेँ साकांक्ष रह-वाक चाही... हमर बात केँ बिचबहि में लोकिकऽ, ओ समस्त राजनीतिज्ञ जकाँ भाषण देवऽ लगलाह—“ओ वावू, हम सभ किएक साकांक्ष हएब? मैथिली-कैथली सँ हमरा सभकेँ कोन लाभ? साकांक्ष होयताह मैथिली एकेदमीवालासभ... चेतना समिति वाला सभ... साकांक्ष होयताह साहित्य अका-दमीक प्रतिनिधि... सरकारी विज्ञापन प्रका-शित करऽ वाला साहित्यकार लोकनि जिनका सभक लेल सरकार ‘कौरा’ क-व्यवस्था करैत छनि... अनेरे हएर सभ किएक माथ-कमार पीढ़... हमरा सभकेँ किछु कबेक हएत तँ

उर्दूक हेतु करब आ कि ई मौगी सभक भाषाक लेल? देखूगऽ हमर बेटा भातिजकेँ फटाफट उर्दू लिखैत-पढ़ैत अछि। ओ वावू, चाहक केँचा दिओक आर अपन रास्ता धरु एहन ने हो कि छौड़ा सभकेँ पता लागि जाइब आर अहाँ मुफ्त में...।” हम अकचका कऽ पूछलनि—“से कि ओ?” अहाँ केँ नहि पता अछि ??? सरकारी आदमी सभ मैथिलीक ओकालत कएनिहार सभ केँ पकड़ि-पकड़ि कऽ पटना लऽ जा रहल छैक... गंगापुलक उद्घाटन अवसर पर ओकरा सभकेँ गंगालाभ करवाक प्रोग्राम छैक। हम अवाक रहि गेलहुँ।

ओ सज्जन पुरुष भभाकऽ हंसलाह आ हमरा सांखना दैत पुनः ‘बजलाह—“गंगा-लाभ सँ हमर तात्पर्य गंगालाभ सँ छल। कहाँदत आब मैथिलीक किछु पत्रिका सभ सेहो मिसरजी के देखार करय पर लागल छनि तँ ओ बड़ गरम भऽ गेलाह अछि... छुट्टा साइजका चरवाक प्रवृत्ति छनि तँ हाहकारी सुनला पर भड़कि उठैत छथि। हुनका शंका भेलनि जे गंगापुलक उद्घाटनक अवसर पर अपन घरेक लोक सभ ने इन्दि-राजीक समक्ष होहला कएब, तँ मिथिला-चलक प्रत्येक कोन सँ एहन संवेदास्पद व्यक्ति सभकेँ सरकारी आशपर पकड़ि-कऽ पटना पार्सल करवाक अभियान चलल छैक... अहाँ चुप्पे-चाप निकलि जाउ... कोनो डर नहि... हँ, जहक केँचा दऽ देवैक।” बाजि ओ लोटा पकड़ि पोखड़ि दिस विदा भऽ गेलाह। हमरा अपन सभटा आइडिया निर-र्थक बुझाय लागल—अधुना पथता कऽ उठलहुँ जे आब अपन गामक वाट धरी मुदा होनी केँ के टारि सकैछ? जावत हम भोड़ी भ्रमटा लऽ उठी-उठी, पाँच-सात गोठ नव-युवक ओहि दोकान पर अवलोक आ अवि-तहि दौरा मजिस्ट्रेट जकाँ जवाब तलब करय लागल। हमं लाख प्रयास कयलहुँ मुदा नहि मानलक “राय्य द्रोही... सी. एम. द्रोही... पी. एम. द्रोही आदि विशेषण सँ भूषित कऽ, माल-चाल जकाँ हाँकि कऽ हूति देलक सरकारी टुक में आर अपन कमीशन प्राप्त कऽ ओ सभ नाचि-नाचि कऽ फिल्मी गीतक कीर्तन कए लागल—

‘मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है,  
मेरे अंगने में...।’ से लालबुभुकरजी,  
अपन फजीहतक वर्णन की कल... जे सांगो-  
पांग वर्णन करब तँ एकगोट छोट-छीन उप-  
न्यासे तैयार भऽ जायत। संक्षेप में इहए  
बुभुजे हमरे सन केकटा दिवास्वप्नदृष्टा  
मैथिल सभ मिथिलाक कोण-कोण सँ बम-  
ओल्लेख रहथि... सभक मुँह सँ मिसरजी  
जिन्दावाद... माताजी जिन्दावाद नारा  
लगवाउल्लेख आर फेर पुनः हमसभ कोन  
धरानी महात्मागांधी सेलुक उद्घाटन उत्सव  
में सम्मिलित भेलहुँ... सी. एम.क संग राज-  
नीतिज्ञ आर भाषा समस्या पर कोन तर्क-  
वितर्क भेल आ हम सभ गंगालाभ करैत-  
करैत कोना केँ वॉचि गेलहुँ—ओहि विषय  
अल्ला सँ एक गोठ विशेष रपट बना कऽ  
‘देसिलबयना’क सम्पादक केँ पठा रहल  
छिअनि मुदा सम्प्रति एक गोठ मर्मक बात  
लिख रहल छी—लालबुभुकरजी, मिथिला-  
चल में ओतेक चक्कर कटलहुँ—मिथिला

शे ११-५५ १०५५



## अजगुत-अनटोटल

महाराष्ट्रक भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्रीमान अंतुले साहेबक बाद सभसं विवादास्पद मुख्य मंत्री छथि बिहारक स्वयंयू जनसेवक डा० श्री जगन्नाथ मिश्र। ओना त हिनका में बड़-बड़ गुण अछि—को बड़ छोट कहत अपराधू—परञ्च सभसं पैघ गुण—जेना कि पत्रकार लोकनि कहैत छथि—छनि, फूसि बजवा मे प्रवीणता। मिथिला मे एगो बड़ प्रचलित फकड़ा छैक—लादय, पादय ओ औंघाय, सत्य न बाजय जौं मरि जाय। लोकक कहव छैक जे जे उपरोक्त तीनू श्रेणीक लोक भनहि सत्य बाजियो जाय किन्तु आजुक राजनेता आ खास के कांग्रेस (इ) क नेता किछहुँ सत्य नहि बाजि सकैत छथि। आ जे एकाध गोटे भूल सं एक-आध सत्य बाजियो लेथि तयो स्वनामधन्य डा० साहेब त सत्य नहिनेटा बाजि सकैत छथि। जेना कि सुनवा मे अवेछ, मुख्य मंत्रीक शपथ लेबा सं पहिने डा० साहेब दू गोटा महत्वपूर्ण शपथ से हो लेने छलाह। पहिल त मिथिला, मैथिल-मैथिलीक विनाशक आ दोसर सत्य नहि बजवाक। पहिल शपथक निर्वाह ई नीक जकां करैत आयल छथि—से त सभके शते छनि परन्च दोसरोक निर्वाह मे ई पाछू नहि छथि तकर टटके उदाहरण भिक—मधुवनी मे अपन दलक भवनक उद्घाटनक समय हिनका द्वारा देल गेल भाषण। एहिठाम ई कहलनि जे हिनक सरकार मैथिलीक संवैधानिक मान्यता लेल 'कृत संकल्प' अछि तथा मैथिली अकादमी के एहि बरस चारि लाख सरकारी अनुदान भेटलक-ए। पहिलक संदर्भ मे जेना कि ई अपने बजैत छथि एगो व्यक्तिगत चिन्ही प्रधान मंत्री के लिखने छथिन—“जहाँ धरि दोसराक बात अछि मिथिला मिहिरक सम्पादकीय सं स्पष्ट पता चलैत छै जे मात्र पचहत्तर हजार टाकाक अनुदान अकादमी के देल गेलक-ए। ओना ई दिगर बात मेल जे जगन्नाथ मिश्र चारि कोटि लोकक भाषाक उत्थानक नाम पर बनल अकादमी के (ओना काजक लेल ई अकादमी हिनके स्वजनक पोषण करैत) जे अनुदान देत आवि रहल छथि ताह अनुपात मे भोजपुरी अकादमी, एको प्रति-ज्ञात लोकक भाषा नहि रहैत हिन्दी अकादमी आ हुनके अनुसार 'दश प्रतिज्ञात लोकक भाषा' उर्दू अकादमी के कतेक अनुदान देत छथिन से नहि बजैत छथि। से जे हो, किन्तु हमरा लोकनिक सुभाव जे 'नोबेल पुरस्कार कमिटी' मानय त ओकरा फूसि बजनिहारक लेल सेहो पुरस्कारक घोषणा करक चाहियेक आ एकर पहिल पुरस्कार डा० श्री विहारक मुख्य मंत्री जी जगन्नाथ मिश्र साहेब के देबाक चाहियेक।

नवकी-दिल्ली, १३ मई १९८१ केन्द्रीय सरकार-एक खेप फेर परिछा देलक जे संविधानक आठम अनुच्छेद मे ओर बेसी भाषा के शामिल नहि कएल जायत। ओना परितोषक लेल, ओ कहलकए जे राज्य सरकार सभ-अपन-अपन राज्यक ओहु भाषा सब के, जे संविधान सं बाइल अइ

विकासक लेल सुविधा सुयोग देक - से उचित।

प्रश्न उठल छलक मैथिली, नेपाली, डोगरी आ मनिपुरी भाषाक संवैधानिक मान्यताक। नेपालीक लेल ५० बंगालक सरकार विधान सभा सं एहि संदर्भ मे प्रस्ताव पास कए केन्द्र सं बहुत पहिने अनुरोध जना चुकल अइ तथा नेपाली भाषा अंचल मे सरकारी समस्त काजक माध्यम भाषाक रूप मे एकरा मान्यता ओ ब्यावहारिक रूप द चुकल अइ। मनिपुरीक लेल सेहो ओकर सरकार केने छैक। पाछू अइ डोगरी आ सब सं पाछू मैथिली। मैथिली मात्र बिहार सरकार द्वारा, अब्बेलेलेटा नहि अइ, अपितु घृणित षडयंत्रक शिकार भेल अइ। ओना जनता के आवो अवसे बुझक चाहियेक जे जगन्नाथ मिश्रक डोरो शंखी भाषण मे कते सत्यता छैक आ हुनक नोर सरिहूँ धरिपाली नोर सं बेसी नहि।

आजुक युग मे राजकीय मान्यता



सारदा देवी

पुत्री : स्व० प० गणेश भा  
कोकन

पत्नी : स्व० सुरति ठाकुर  
बाबूपाली

मैथिलीक युवा साहित्यकार एवं मैथिली मुक्ति मोर्चा कलकत्ता संयोजक श्री राम लोचन ठाकुरक पुजनीया मां श्रीमती सारदा देवीक आकस्मिक देहावसान लगभग साठ बरसक अवस्था मे अपन गाम बाबूपाली मे विगत २ अप्रील १९८२ के भय गेलनि। ई कुछ बरस सं गैस्टिक व्याधि ग्रस्त छलीह। ई लिखिया-पढ़िया, गीत-नाद मे पूर्ण पंडु व्यवहार कुशल ओ धर्मपरायण महिला छलीह। स्व० सारदा देवी अपना पाछा एक मात्र पुत्र, पुत्रवधु, तीन पौत्र ओ दू पौत्री के छोड़ि गेल छथि।

'देसिल बयना' चन्दाक दर :-

१ प्रति	५०, पइसा
१ बरसक	५) टाका
५ बरसक	२०) टाका

पाइ पठेबाक पता :-

श्री जनार्दन मा,  
१७६।६, उषा नगर,  
कलकत्ता-७०००६८

विज्ञापन दाता लोकनि सं :-

'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाउ। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं अधिक प्रचार एक मात्र साधन।

सम्पर्क कल  
विज्ञापन व्यवस्थापक  
अस्पादय प्रकाशन,

## देसिल बयना

पाठकीय परिवारक ( सलियाना ) सदस्य

३८. श्री रामचन्द्र भा, उषानगर, कलकत्ता
३९. ,, प्रबोध भा ,, ,,
४०. ,, कमल नारायण कर्ण ,, ,,
४१. ,, सूर्यकान्त मिश्र, उषा फैन, ,,
४२. ,, सत्यनारायण भा ,, ,,
४३. ,, कान्ति बिहारी मिश्र ,, ,,
४४. ,, सुरेन्द्र नाथ भा, रंगकल, ,,
४५. ,, खुशीलाल भा, बड़ाबाजार, ,,
४६. ,, राम नारायण मिश्र, उषा फैन, ,,
४७. ,, अजु न लाल करण, कलकत्ता
४८. ,, ललन मिश्र, नदारी, दड़िभंगा
४९. ,, विश्वम्बर मिश्र, ,, ,,
५०. ,, कुमारी श्योति भा, कलकत्ता
५१. ,, बाबूनाथ भा, डानरकेस

—रचित वक्ता

### मिथिलावासीक विकास

मेटल, मैथिल मेटलह मुदा मैथिलीक दर्शन कतहु नहि मेल ॥ मैथिलीक जिज्ञासा पर सर्वत्र एकेटा उत्तर मेटल—'मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है ???'

पत्र सुरसाक मुँह जकां अनेरे बढल जा रहल अछि तँ आव पत्र के समाप्त करैत अपने सं करबद्ध प्रार्थना कऽ रहल छी—जे लालबुभुकरजी, अहाँ के जे मोन हो से लिखू—जं चाही तँ एडवान्स मे अपन मस्यु गीत पर्यन्त लिख सकैत छी मुदा भाइने—जगन्नाथबाबूक विरोध मे किछु नहि लिखी ओ मैथिल थिकाइ, हुनकर मातृभाषा मैथिली छनि मने ओ खांटी अपन लोक छथि तँ अपन लोक के देखार करव उचित नहि। शेष कुशल।

अहाँक  
—विश्व रचित

## मिथिलावासिक माड

१. मिथिला राज्यक निर्माण हो।
२. मैथिली के उन्नति विलम्ब संविधानक आठम अनुच्छेद मे स्थान हो।
३. समस्त सरकारी। अर्ध सरकारी प्रति-योगितामूलक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान हो।
४. मिथिला मे निम्नतम सं उच्चतम स्तर धरि शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली हो।
५. मिथिलाक प्रथम राजभाषा मैथिली हो।
६. मिथिला मे सरकारी कल-कारखानाक स्थापना ओ विकास हो।
७. मिथिलाक कृषिक अवस्था मे सुधार हो आ एहि निमित्त रौंदी-दाही सं मुक्तिक व्यवस्था हो तथा यातायातक सुव्यवस्था हो।

—रामाधार मिश्र -  
बास्ते—मैथिली मुक्तियोर्चा,  
कलकत्ता